छात्रोपयोगी-अध्ययन-सामग्री

कक्षा -12 वीं

विषय- हिन्दी (आधार) (302)

सत्र 2022-23

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

क्षेत्रीय कार्यालय , रायपुर

विद्यार्थियों के लिए संदेश

केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी केन्द्रिक पाठ्यक्रम की यह अध्ययन सामग्री सौंपते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति का इस अध्ययन सामग्री में विशेष ध्यान रखा गया है। परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करना हर विद्यार्थी का सपना होता है। इस सामग्री का निर्माण करते हुए इस बात का ध्यान रखा गया है कि इसमें विद्यार्थियों की अवधारणात्मक स्पष्टता, अनुप्रयोग कौशल, आलोचनात्मक एवं चिंतन कौशल, योग्यता निर्माण कौशल का विकास हो सके।

इस सामग्री को परीक्षा प्रश्न-पत्र नए 'प्रारूप' के अनुसार विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु का अभ्यास कराने के साथ—साथ उनके आत्मविश्वास को मजबूत बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूलभूत बातों एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। अपठित गद्यांश, पद्यांश, जनसंचार अभिव्यक्ति एवं माध्यम एवं पाठ्य पुस्तकों (आरोह व वितान) के पाठों का सारांश, केन्द्रीय भाव, आलोचनात्मक एवं चिंतन आधारित प्रश्नों, अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के अतिरिक्त बोध और अधिगम पर आधारित सामग्री को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी विषय के शिक्षकों द्वारा यह सामग्री विशेषज्ञों के पर्यवेक्षण में तैयार की गई है| उद्देश्य यह है कि इससे विद्यार्थियों को सघन, संक्षिप्त और समेकित रूप में अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो सके, जो उनके अधिगम में सहायक हो|

इस सामग्री का निर्माण सी.बी.एस.ई.के सत्र 2022-23 के पाठ्यक्रम में किए गए नवीनतम संशोधन के अनुरूप एवं प्रश्न पत्रों के डिजाइन को ध्यान में रखकर किया गया है| इसके द्वारा विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारियाँ संक्षिप्त रूप में उपलब्ध कराई गई हैं | साथ ही इसमें वे सभी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बिंदु शामिल किए गए हैं, जो संबंधित विषय को भली प्रकार से दोहराने के लिए आवश्यक हैं| इस पाठ्य सामग्री की विषयवस्तु और डिजाइन में मानकता तथा प्रस्तुतीकरण में एकरूपता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इसे केंद्रीय विद्यालय संगठन संभागीय कार्यालय रायपुर के स्तर पर अंतिम रूप दिया गया है| आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि इस सामग्री से विद्यार्थी पाठों को शीघ्रता से हृदयंगम कर सकेंगे| विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों के लिए सुनियोजित कठिन परिश्रम, बेहतर समय प्रबंधन तथा निष्ठापूर्वक अध्ययन द्वारा सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचने में अवश्य सहायक सिद्ध होगी।

मैं पूर्णतः आशान्वित हूँ कि इस अध्ययन सामग्री का विद्यार्थियों द्वारा भरपूर उपयोग किया जाएगा और बोर्ड परीक्षाओं में यह उनके लिए लाभदायी सिद्ध होगी | हमारे विद्यार्थी प्रगति-पथ के सजग पथिक बनकर अपने माता-पिता, गुरुजनों और केंद्रीय विद्यालय संगठन को गौरवन्वित करेंगे।

मंगलकामनाओं सहित!

विनोद कुमार

उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

छात्रोपयोगी-अध्ययन–सामग्री

कक्षा –12 वीं

विषय- हिन्दी (आधार)

(302)

(सत्र 2022- 23)

प्रधान संरक्षक

श्री विनोद कुमार

उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

संरक्षक

श्री अशोक कुमार मिश्र

सहायक आयुक्त,

के० वि० सं०, रायपुर संभाग

श्रीमती बिरजा मिश्र

शैक्षिक सलाहकार

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय , रायपुर

समन्वयकर्ता एवं निदेशक

श्री धीरेन्द्र कुमार झा,

प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय बिलासपुर

संपादन समिति

श्रीमती अर्चना मर्सकोले,

के.वि. बिलासपुर

डॉ. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय,

स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी

के.वि.राजनांदगाँव

सुनील कुमार पांडेय

स्नातकोत्तर शिक्षक

के.वि. बिलासपुर

श्री धर्मेन्द्र सिंह

स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी

के.वि. झगराखण्ड

सुश्री नज़मा फिरदौस

स्नातकोत्तर शिक्षक,

केवि बैकुंठपुर

डिजाइनिंग एवं तकनीकी सहायक

सुश्री सुमन कश्यप

संगणक अनुदेशक

के.वि. बिलासपुर

श्री संदीप साहू

संगणक अनुदेशक

के.वि. बिलासपुर

अध्ययन सामग्री निर्माण समिति

क्र.	नाम	के.वी.का नाम
1	श्री राकेश कुमार पांडे	केंद्रीय विद्यालय धमतरी
2	श्री शिव कुमार साहू	केंद्रीय विद्यालय रायपुर न .1 (प्रथम पाली)
3	सुश्री नजमा फिरदौस	केंद्रीय विद्यालय बैकुंठपुर (एस.ई.सी.एल)
4	श्रीमती मीना गुप्ता	केंद्रीय विद्यालय डोगरगढ़
5	श्री अच्छे लाल मौर्य	केंद्रीय विद्यालय दन्तेवाडा (बैलाडीला)
6	श्री धर्मेंद्र कुमार	केंद्रीय विद्यालय झगराखण्ड
7	श्रीमती नीता दास	केंद्रीय विद्यालय दुर्ग
8	श्री .बी.डी.मानिकपुरी	केंद्रीय विद्यालय रायपुर न.2
9	श्रीमती मोहिनी साहू	केंद्रीय विद्यालय खैरागढ़
10	श्री.अजय कुमार साहू	केंद्रीय विद्यालय कोरबा न.2 (एन.टी.पी.सी.)
11	डा.मोना अली	केंद्रीय विद्यालय कोरबा न.3(एस.ई.सी.एल.)
12	श्री अमित कुमार पाण्डेय	केंद्रीय विद्यालय कोरबा न.4
13	श्री विजेंद्र प्रताप सिंह	केंद्रीय विद्यालय मनेन्द्रगढ़
14	श्री अनिल कुमार शर्मा	केंद्रीय विद्यालय नारायणपुर
15	श्री जेम्स लकरा	केंद्रीय विद्यालय रायगढ़
16	श्रीमती जी.एक्का	केंद्रीय विद्यालय रायपुर न .(द्वितीय पाली)
17	डा.योगेंद्र कुमार पांडे	केंद्रीय विद्यालय राजनांदगॉव
18	श्रीमती अर्चना मर्सकोले	केंद्रीय विद्यालय बिलासपुर

विषय सूची

क्रम संख्या	पाठ्य विवरण
1	पाठ्यक्रम
2	अंक विभाजन
3	अपठित बोध गद्य एवं पद्य
4	अभिव्यकित और माध्यम निर्धारित प्रकरण
5	गद्य विधाएं –कहानी और नाटक
6	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग २) पद्य
7	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-२) गद्य
8	पूरक पुस्तिका (वितान भाग -२)
9	आदर्श प्रश्न पत्र

कक्षा – 12

- प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खंड 'अ' और 'ब' का होगा|
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होगें |
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे| प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे |

भारांक 100 **निर्धारित समय 3 घंटे**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1	**अपठित गद्यांश**		**15**
	अ	एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का) (1 अंक x 5 प्रश्न)	05
2	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित**		**05**
	बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)		05
3	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
4	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित पाठों पर दस बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**		**20**
	1	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (6 अंक x 1 प्रश्न)	06
	2	कहानी का नाट्यरूपांतरण / रेडियो नाटक / अप्रत्याशित विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में)	06
	3	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (4 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 80 शब्दों में)	08
6	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2**		**20**

	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	2	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	3	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	4	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
7	**(अ) श्रवण तथा वाचन**		**10**
	(ब) परियोजना कार्य		**10**
कुल अंक			**100**

प्रस्तावित पुस्तकें :

1. **आरोह, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम'**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	काव्य खंड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी – गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे – चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		• एन फ्रैंक - डायरी के पन्ने

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिये कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2022-23
विषय हिंदी (आधार)
(विषय कोड -302)
कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय -3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 13 हैं।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

	खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)	
	अपठित गद्यांश	
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए: -**	**(1x10=10)**

उपवास और संयम ये आत्महत्या के साधन नहीं हैं । भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथाः', जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन में जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता ज़िंदगी की दो सूरतें हैं । एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए, और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अंधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। इस गोधूलिं वाली दुनिया के लोग बंधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है?

जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। ज़िंदगी से, अंत में, हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमे पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना ज़िंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। ज़िंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकार चलता है की ज़िंदगी कभी भी ख़त्म न होने वाली चीज़ है।

अरे ! ओ जीवन के साधकों! अगर किनारे की मरी सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक - कोष को कौन बाहर लाएगा ?

दुनिया में जितने भी मज़े बिखेरे गए हैं उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है । वह चीज़ भी तुम्हारी हो सकती है जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मान कर लौटे जा रहे हो । कामना का अंचल छोटा मत करो, ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है ।

(i) 'त्यक्तेन भुंजीथाः' कथन से लेखक के व्यक्तित्व की किस विशेषता का बोध होता है?

(क) परिवर्जन
(ख) परिवर्तन
(ग) परावर्तन
(घ) प्रत्यावर्तन

(ii) मंज़िल पर पहुँचने का सच्चा आनंद उसे मिलता है, जिसने उसे -

(क) आन की आन में प्राप्त कर लिया हो
(ख) पाने के लिए भरसक प्रयास किया हो
(ग) हाथ बढ़ा कर मुट्ठी में कर लिया हो
(घ) सच्चाई से अपने सपनों में बसा लिया हो

(iii) 'गोधूलि' शब्द का तात्पर्य है-

(क) गोधेनु
(ख) संध्यावेला
(ग) गगन धूलि
(घ) गोद ली कन्या

(iv) 'गोधूलि वाली दुनिया के लोगों से अभिप्राय है -

(क) विवशता और अभाव में जीने वाले
(ख) जीवन को दाँव पर लगाने वाले
(ग) गायों के खुरों से धूलि उड़ाने वाले
(घ) क्षितिज में लालिमा फैलाने वाले

(v) जीवन में असफलताएँ मिलने पर भी साहसी मनुष्य क्या करता है ?

(क) बिना डरे आगे बढ़ता है क्योंकि डर के आगे जीत है
(ख) पराजय से निबटने के लिए फूँक-फूँककर कदम आगे रखता है
(ग) अपने मित्र बंधुओं से सलाह और मदद के विषय में विचार करता है
(घ) असफलता का कारण ढूँढकर पुनः आगे बढ़ने का प्रयास करता है

(vi) आप कैसे पहचानेंगे कि कोई व्यक्ति साहस की ज़िंदगी जी रहा है?

(क) जनमत की परवाह करने वाला
(ख) निडर और निशंक जीने वाला
(ग) शत्रु के छक्के छुड़ाने वाला
(घ) भागीरथी प्रयत्न करने वाला

(vii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।
(II) मनुष्य अपने दृढ़ मंतव्य व कठिन परिश्रम से सर्वोच्च प्राप्ति की ओर अग्रसर रहता है

	(III) विपत्ति सदैव समर्थ के समक्ष ही आती है, जिससे वह पार उतर सके। उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं? (क) केवल I (ख) केवल III (ग) I और II (घ) II और III **(viii) 'ज़िंदगी को दाँव पर लगा देने' में कोई आनंद नहीं है? लेखक इससे सिद्ध करना चाहते हैं कि ज़िंदगी-** (क) रंगमंच के कलाकारों के समान व्यतीत करनी चाहिए। (ख) में सकारात्मक परिस्थितियाँ ही आनंद प्रदान करती हैं। (ग) में प्रतिकूलता का अनुभव जीवनोपयोगी होता है। (घ) केवल दुखद स्थितियों का सामना करवाती है। **(ix) किन व्यक्तियों को सुख का स्वाद अधिक मिलता है?** (क) जो अत्यधिक सुख प्राप्त करते हैं (ख) जो सुख-दुख से दूर होते हैं (ग) जो पहले दुख झेलते हैं (घ) जो सुख को अन्य लोगों से साझा करते हैं **(x) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए -** कथन (A) : 'ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है' । कारण (R) : ज़िंदगी रूपी फल का रसास्वादन करने के लिए दोनों हाथों से श्रम करना होगा । (क) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण(R) सही है। (ग) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों गलत हैं। (घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण(R) उसकी गलत व्याख्या करता है।	(1x5=5)
प्रश्न 2.	**निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प-चयन द्वारा दीजिए-** चिड़िया को लाख समझाओ कि पिंजड़े के बाहर धरती बड़ी है, निर्मम है,	

वहाँ हवा में उसे
बाहर जाने का टोटा है
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिये का डर है
यहाँ निर्भय कंठ स्वर है।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू ज़ोर लगाएगी
और पिंजरा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

(i) पिंजड़े के भीतर चिड़िया को क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
(क) खाने की स्वतंत्रता, सम्मान और स्नेह
(ख) नीर, कनक, आवास और सुरक्षा
(ग) प्यार ,पुरस्कार , भोजन और हवा
(घ) निश्चितता, निर्भयता, नियम और नीरसता

(ii) बाहर सुखों का अभाव और प्राणों का संकट होने पर भी चिड़िया मुक्ति ही क्यों चाहती है?
(क) वह अपने परिवार से मिलना चाहती है।
(ख) वह आज़ाद जीवन जीना पसंद करती है।
(ग) वह जीवन से मुक्ति चाहती है।
(घ) वह लंबी उड़ान भरना चाहती है।

(iii) चिड़िया के समक्ष धरती को निर्मम बताने का मंतव्य है-
(क) भयावह स्थिति उत्पन्न करना
(ख) छोटे जीव के प्रति दया भाव
(ग) बहेलिये से बचाव की प्रेरणा
(घ) जीवनोपयोगी वस्तुएँ जुटाने का संघर्ष दर्शाना

(iv) पद्यांश का मूल प्रतिपाद्य क्या है?
(क) पिंजरे में पक्षी रखने वालों को सही राह दिखाना
(ख) पिंजड़े के भीतर और बाहर की दुनिया दिखाना
(ग) पिंजरे के पक्षी की उड़ान और दर्द से परिचित कराना
(घ) पिंजरे के पक्षी के माध्यम से स्वतंत्रता का महत्त्व बताना

(v) कवि के संबंध में इनमें से सही है कि वह-
(क) प्रकृति के प्रति सचेत हैं
(ख) चिड़िया की सुरक्षा चाहते हैं
(ग) आज़ादी के समर्थक हैं
(घ) अन्न-जल की उपयोगिता बताते हैं

अथवा

हैं जन्म लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही-सी चाँदनी है डालता।
मेह उन पर है बरसता एक-सा,
एक सी उन पर हवाएँ हैं बही
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उंगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भँवर का है भेद देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में
भँवर को अपना अनूठा रस पिला,
निज सुगंधों और निराले ढंग से
है सदा देता कली का जी खिला।

है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर शीश पर,
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

(i) प्रस्तुत काव्यांश किससे संबंधित है?
(क) फूल और तितलियों से
(ख) फूल और पौधे से
(ग) पौधे और चाँदनी से
(घ) बड़प्पन की पहचान से

(ii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
(I) सद्गुणों के कारण ही मानुस प्रेम का पात्र बनता है ।
(II) परिवेशगत समानता सदैव अव्यवस्था को जन्म देती है।
(III) भौगोलिक परिस्थितियाँ प्राकृतिक भिन्नता का कारण हैं।
उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं?
(क) केवल I
(ख) केवल III
(ग) I और II
(घ) II और III

(iii) इस काव्यांश से हमें क्या सीख मिलती है?
(क) मनुष्य के कर्म उसे प्रसिद्धि दिलाते हैं।
(ख) समान परिवेश में रहते हुए मनुष्य समान आदर पाते हैं।
(ग) किसी भी कुल में जन्म लेने से ही मनुष्य बड़ा हो सकता है।
(घ) समान पालन-पोषण होने पर अलग व्यक्तियों के स्वभाव समान होते हैं।

प्रश्न 3.	**(iv) 'फाड़ देता है किसी का वर वसन' में 'वसन' शब्द का अर्थ है-** (क) व्यसन (ख) वस्त्र (ग) वास (घ) वासना **(v) कवितानुसार फूल निम्न में से कौन-सा कार्य नहीं करता?** (क) भँवरों को अपना रस पिलाता है। (ख) तितलियों को अपनी गोद में खिलाता है। (ग) फल बनकर पशु-पक्षियों और मनुष्यों का पेट भरता है (घ) सुरों के शीश पर सोहता है । **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-** **(i) मुद्रित माध्यमों के लेखन में सहज प्रवाह के लिए ज़रूरी है--** (क) तारतम्यता (ख) उपलब्धता (ग) एकरेखीयता (घ) साध्यता **(ii) संबंधित घटना के दृश्य बाइट व ग्राफिक द्वारा खबर को संपूर्णता से पेश करना कहलाता है-** (क) एंकर विजुअल (ख) एंकर बाइट (ग) एंकर पैकेज (घ) ड्राई एंकर **(iii) छह ककार के लिए उचित क्रम का चयन कीजिए-** (क) क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों, कैसे (ख) किसने, कब, क्यों, कैसे, कहाँ, किधर (ग) कैसे, किससे, कब, क्यों, कितना, कौन (घ) क्यों, कैसे, कब, कहाँ, किससे, किसने **(iv) कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए-** **कॉलम 'क'** **कॉलम 'ख'** (i) बीट रिपोर्टर (i) निवेशक (ii) फीचर (ii) संवाददाता (iii) कारोबार (iii) घुटने टेकना (iv) खेल (iv) कथात्मक (क) (i)-(iii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(ii) (ख) (i)-(ii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(iii) (ग) (i)-(iv), (ii)-(iii), (iii)-(ii), (iv)-(i) (घ) (i)-(ii), (ii)-(i), (iii)-(iv), (iv)-(iii) **(v) विशेष लेखन के लिए सबसे जरूरी बात है-** (क) चील-उड़ान और शब्द-विवेक	**(1x5=5)**

	(ख) गिद्ध-दृष्टि और पक्का इरादा (ग) शब्दावली और उपलब्धियाँ (घ) प्रभावशीलता और बुद्धिमत्ता	(1x5=5)
	निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए-	
प्रश्न 4.	प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे भोर का नभ राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है) बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो। और... जादु टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है। **(i) नील जल में किसी की गौर, झिलमिल देह जैसे हिल रही हो' में कौन-सा भाव है?** (क) तरलता का (ख) निर्मलता का (ग) उज्ज्वलता का (घ) सहजता का **(ii) नीले नभ में उदय होता हुआ सूर्य किसके जैसा प्रतीत हो रहा है?** (क) शंख जैसा (ख) गौरवर्णीय सुंदरी जैसा (ग) सिंदूर जैसा (घ) नीले जल जैसा **(iii) इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र उपस्थित किया है?** (क) छायाचित्र (ख) रेखाचित्र (ग) शब्दचित्र (घ) भित्तिचित्र **(iv) अलंकार की दृष्टि से कौन-सा विकल्प सही है?** (क) बहुत नीला शंख जैसे उपमा अलंकार	

	(ख) जादू टूटता है इस उषा का अब — उत्प्रेक्षा अलंकार (ग) सूर्योदय हो रहा है — रूपक अलंकार (घ) गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो — अन्योक्ति अलंकार **(v) कवि द्वारा भोर को राख का लीपा हुआ चौंका कहना प्रतिपादित करता है कि भोर का नभ –** (क) अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है। (ख)रात के समान गर्म हवा फैला रहा है। (ग)सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है। (घ) नए परिवर्तन व आयामों का प्रतीक है।	(1x5=5)
	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए-	
प्रश्न 5.	कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषिवल की भाँति खींच लेते थे, जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा- 'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हम में आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्तव्य है।' फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है। **(i) कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि कैसी थी?** (क) स्थूल और बाहरी (ख) सूक्ष्म और संपूर्ण (ग) आसक्ति और आडंबरों (घ) अतिक्रम और अभ्रभेदी **(ii) कौन-से गुण के कारण कालिदास, सुमित्रानंदन पंत और रवींद्रनाथ टैगोर कविताओं के साथ न्याय कर पाए?** (क) गंतव्यता (ख) निर्दलीयता (ग) कृषिवलता (घ) तटस्थता **(iii) फूलों और पेड़ों से हमें जीवन की---------- की प्रेरणा मिलती है--** (क) निरंतरता (ख) भावपूर्णता (ग) समापनता (घ) अतिक्रमणता	

	(iv) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए - कथन (A) : पुष्प या पेड़ अपने सौंदर्य से यह बताते हैं कि यह सौंदर्य अंतिम नहीं है। कारण (R) : भारतीय शिल्पकला विशेष रूप से प्रसिद्ध है। विभिन्न कवियों ने इस बात की पुष्टि की है। । (क) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण(R) सही है। (ग) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों गलत हैं। (घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण(R) उसकी गलत व्याख्या करता है। **(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-** (I) कला की कोई सीमा नहीं होती। (II) शिरीष के वृक्ष को कालजयी अवधूत के समान कहा गया है। (III) कालिदास की समानता आधुनिक काल के कवियों के साथ दिखाई गई है। उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं? (क) केवल I (ख) केवल III (ग) I और II (घ) I और III	**(1x10=10)**
प्रश्न 6.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-** **(i) 'सिल्वर वेडिंग' कहानी की मूल संवेदना आप किसे मानेंगे-** (क) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (ख) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य (ग) पीढ़ी अंतराल (घ) सिल्वर वेडिंग के परिणाम **(ii) 'सिल्वर वेडिंग' पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य का अर्थ है-** (क) पाश्चात्य विचारधारा के संदर्भ में (ख) परिवार की संरचना के संदर्भ में (ग) किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में (घ) यशोधर बाबू की नियुक्ति के संदर्भ में **(iii) दादा कोल्हू जल्दी क्यों लगाना चाहते थे?** (क) काम जल्दी समाप्त करने के लिए (ख) दूसरी फसल के लिए (ग) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए (घ) खेत में पानी देने के लिए **(iv) 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में लिखा गया है?**	

(क) हिंदी
(ख) अंग्रेज़ी
(ग) मराठी
(घ) गुजराती

(v) लेखक आनंद यादव की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है?
(क) कुत्ते के समान
(ख) शेर के समान
(ग) जंगली सूअर के समान
(घ) चीते के समान

(vi) सिंधु घाटी की सभ्यता के संबंध में कौन सा कथन सही नहीं है?
(क) सिंधु घाटी की सभ्यता प्राचीनतम सभ्यता थी।
(ख) सिंधु घाटी की सभ्यता आडंबरहीन सभ्यता थी।
(ग) सिंधु घाटी की सभ्यता छोटी होते हुए भी महान थी।
(घ) सिंधु घाटी की सभ्यता में राजतंत्र स्थापित नहीं था।

(vii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
(i) महाकुंड स्तूप में उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं।
(ii) मोहनजोदड़ो सभ्यता में सूत की कताई, बुनाई और रंगाई भी होती थी।
(iii) सिंधु घाटी सभ्यता में जल निकासी की व्यवस्था अत्यंत बुरी थी।
(iv) मोहनजोदड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट बहुत छोटा था।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं?
(क) केवल I
(ख) केवल III
(ग) I,II और III
(घ) I,II और IV

(viii) राखालदास बनर्जी कौन थे?
(क) शिक्षक
(ख) भिक्षुक
(ग) पुरातत्त्ववेत्ता
(घ) व्यापारी

(ix) जूझ' कहानी लेखक की किस प्रवृत्ति को उद्घाटित करती है?
(क) कविता करने की प्रवृत्ति
(ख) पढ़ने की प्रवृत्ति
(ग) लेखन की प्रवृत्ति
(घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति

(x) किशोर दा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता क्यों नहीं कर पाए थे?
(क) यशोधर बाबू की पत्नी किशन दा से नाराज़ थी।
(ख) यशोधर बाबू का अपना परिवार था, जिसे वे नाराज़ नहीं करना चाहते थे।
(ग) यशोधर बाबू के घर में किशन दा के लिए स्थान का अभाव था।
(घ) किशन दा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा था, जिसे किशन दा ने

	स्वीकार नहीं किया।	
	खंड 'ब' -(वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न 7.	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –** (क) लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका (ख) दिया और तूफ़ान : मानव जीवन का सत्य (ग) झरोखे से बाहर (घ) आज़ादी का अमृत महोत्सव: स्वर्णिम 75 साल	(6x1=6) (3×2=6)
प्रश्न 8.	**किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** (क) 'कहानीकार द्वारा कहानी के प्रसंगों या पात्रों के मानसिक द्वंद्वों के विवरण के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में काफ़ी समस्या आती है।' इस कथन के संदर्भ में नाट्य रूपांतरण की किन्हीं तीन चुनौतियों का उल्लेख कीजिए। (ख) रेडियो श्रव्य माध्यम है। यह ध्वनि के माध्यम से ही संप्रेषण करता है। इसलिए नाटक में ध्वनि संकेतों का विशिष्ट महत्व है। रेडियो नाटक में ध्वनि संकेतों की महत्ता स्पष्ट करते हुए कोई तीन बिंदु अवश्य लिखिए। (ग) रर्टत या कुटेव को बुरी लत क्यों कहा गया है? नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन द्वारा इस लत से कैसे बचा जा सकता है?	(4×2=8)
प्रश्न 9.	**निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए-** (क) समाचार लेखन की एक विशेष शैली होती है। इस शैली का नाम बताते हुए समाचार लेखन की इस शैली को स्पष्ट कीजिए। (ख) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग के अंतर को स्पष्ट कीजिए। (ग) फीचर क्या है? फीचर को परिभाषित करते हुए अच्छे फीचर की किन्ही तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	(3×2=6)
प्रश्न10.	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** (क) 'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है? (ख) 'रस का अक्षयपात्र' से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित	(2×2=4)

	किया है? (ग) 'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' पंक्ति में 'विप्लव' से क्या तात्पर्य है? 'छोटे ही हैं शोभा पाते' ऐसा क्यों कहा गया है?	(3x2=6)
प्रश्न11.	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-** (क) 'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं'-बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध है? (ख) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते है किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है कैसे? (ग) कवितावली के छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।	(2x2=4)
प्रश्न12.	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** (क) बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म, क्षेत्र नहीं देखता, बस देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय शक्ति को, और इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है।आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट करके लिखिए। (ख) कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?	
	(ग) जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती जा रही है? क्या यह स्थिति आज भी है ?स्पष्ट कीजिए।	
प्रश्न13.	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-** (क) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है? (ख) लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक-मडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आप को इंद्रसेना कहकर क्यों बुलाती थी? (ग) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?	

****

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2022-23

विषय- हिंदी (आधार)

कक्षा -12

अंक योजना

निर्धारित समय -- 3 घंटे | अधिकतम अंक—80

सामान्य निर्देश :-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- खंड- अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए
- खंड -ब में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

		खंड --अ वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर	
प्रश्न क्रम संख्या		उत्तर	अंक विभाजन
प्रश्न 1.	(i)	(क) परिवर्जन	1
	(ii)	(ख) पाने के लिए भरसक प्रयास किया हो	1
	(iii)	(ख) संध्यावेला	1
	(iv)	(क) विवशता और अभाव में जीने वाले	1
	(v)	(घ) असफलता का कारण ढूँढकर पुनः आगे बढ़ने का प्रयास करता है	1
	(vi)	(ख) निडर और निशंक जीने वाला	1
	(vii)	(ग) I और II	1
	(viii)	(ग) में प्रतिकूलता का अनुभव जीवनोपयोगी होता है।	1
	(ix)	(ग) जो पहले दुख झेलते हैं	1
	(x)	(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
प्रश्न 2.	(i)	(ख) नीर, कनक, आवास और सुरक्षा	1
	(ii)	(ख) वह आज़ाद जीवन जीना पसंद करती है।	1
	(iii)	(क) भयावह स्थिति उत्पन्न करना	1
	(iv)	(घ) पिंजरे के पक्षी के माध्यम से स्वतंत्रता का महत्त्व बताना	1
	(v)	(ग) आज़ादी के समर्थक हैं	1

		अथवा	
	(i)	(घ) बड़प्पन की पहचान से	1
	(ii)	(क) केवल I	1
	(iii)	(क) मनुष्य के कर्म उसे प्रसिद्धि दिलाते हैं।	1
	(iv)	(ख) वस्त्र	1
	(v)	(ग) फल बनकर पशु-पक्षियों और मनुष्यों का पेट भरता है	1
प्रश्न 3.	(i)	(क) तारतम्यता	1
	(ii)	(ग) एंकर पैकेज	1
	(iii)	(क) क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों, कैसे	1
	(iv)	(ख) (i)-(ii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(iii)	1
	(v)	(ख) गिद्ध-दृष्टि और पक्का इरादा	1
प्रश्न 4.	(i)	(ख) निर्मलता का	1
	(ii)	(ख) गौरवर्णीय सुंदरी जैसा	1
	(iii)	(ग) शब्दचित्र	1
	(iv)	(क) बहुत नीला शंख जैसे उपमा अलंकार	1
	(v)	(ग) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्‌भुत मिश्रण है।	1
प्रश्न 5.	(i)	(ख) सूक्ष्म और संपूर्ण	1
	(ii)	(घ) तटस्थता	1
	(iii)	(क) निरंतरता	1
	(iv)	(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।	1
	(v)	(घ) I और III	1
प्रश्न 6.	(i)	(ग) पीढ़ी अंतराल	1
	(ii)	(ग) किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में	1
	(iii)	(ग) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए	1
	(iv)	(ग) मराठी	1
	(v)	(ग) जंगली सूअर के समान	1
	(vi)	(घ) सिंधु घाटी की सभ्यता में राजतंत्र स्थापित नहीं था।	1
	(vii)	(घ) I, II और IV	1
	(viii)	(ग) पुरातत्त्ववेत्ता	1
	(ix)	(घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति	1
	(x)	(ख) यशोधर बाबू का अपना परिवार था, जिसे वे नाराज नहीं करना चाहते थे।	1
		खंड 'ब' - (वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न 7.		**किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख**	(6x1=6)

		लिखिए:- आरंभ –1 अंक विषयवस्तु --3 अंक प्रस्तुति -- 1 अंक भाषा -- 1 अंक	
प्रश्न 8.	(क)	नाट्य रूपांतरण की चुनौतियां :- • पात्रों के मनोभावों की • मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की • पात्रों की सोच के प्रस्तुतीकरण की उदाहरण के लिए ईदगाह कहानी का वह हिस्सा जहाँ हामिद इस द्वंद में है कि क्या खरीदे, क्या ना खरीदे	(3×2=6)
	(ख)	रेडियो नाटक में ध्वनि संकेतों की महत्ता • मंच नाटक लेखन, फ़िल्म की पटकथा और रेडियो नाटक लेखन में काफी समानता • रेडियो में ध्वनि प्रभावों व संवादों के ज़रिये ही दृश्य का माहौल पैदा किया जाना • इसलिए संवाद व ध्वनि सबसे महत्वपूर्ण होना • दृश्य की जगह कट/हिस्सा लिखा जाना • दृश्यों को ध्वनि -संकेतों से दिखाया जाना	
	(ग)	रटंत का अर्थ है-दूसरों के द्वारा तैयार सामग्री को याद करके ज्यों- का-त्यों प्रस्तुत कर देने की आदत। लत कहे जाने के कारण- • असली अभ्यास का मौका ना मिलना • भावों की मौलिकता समाप्त हो जाना • चिंतन-शक्ति क्षीण होना • सोचने की क्षमता में कमी होना • दूसरों के लिखे पर आश्रित होना अप्रत्याशित विषयों पर लेखन द्वारा इस लत से बचा जा सकता है क्योंकि इससे अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है । नए विषयों पर विचार अभिव्यक्ति से मानसिक और आत्मिक विकास होता है।	
प्रश्न 9.	(क)	समाचार लेखन की एक विशेष शैली का नाम 'उलटा पिरामिड शैली' है, जिसमें क्लाइमैक्स बिल्कुल आखिर में आता है। इसे उल्टा पिरामिड इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना सबसे पहले दी जाती है और तत्पश्चात उससे कम महत्त्वपूर्ण और फिर सबसे कम महत्त्वपूर्ण समाचार लिए जाते हैं। इसमें इंट्रो, बॉडी और समापन समाचार प्रस्तुति के तीन चरण होते हैं।	(4×2=8)
	(ख)	• बीट रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं। • बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र की जानकारी और उसमें दिलचस्पी होना ही पर्याप्त है। उसे केवल सामान्य खबरें ही लिखनी पड़ती हैं जबकि विशेषीकृत रिपोर्टर को अपने विषय-क्षेत्र की घटनाओं, मुद्दों व समस्याओं का बारीक विश्लेषण करके उसका अर्थ भी स्पष्ट करना होता है। • बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में	

		जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करना आवश्यक है। • बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग से संबंधित उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।	
	(ग)	फीचर एक सुव्यवस्थित सृजनात्मक और आत्मिक लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ-साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है। फीचर समाचार की तरह पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं कराता। समाचारों से विपरीत फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है। फीचर लेखन कथात्मक शैली में किया जाता है।	
प्रश्न10.	(क)	• कवि का सांसारिक कठिनाइयों से जूझने पर भी इस जीवन से प्यार करना। • संसार और विपरीत परिस्थितियों की परवाह ना करना • उसे संसार का अपूर्ण लगना • अपने सपनों का अलग ही संसार लिए फिरना	(3×2=6)
	(ख)	• रचना कर्म का अक्षयपात्र कभी खाली नहीं होता। • रचना कर्म अविनाशी और कालजयी । • कवि की रचनाएँ हमेशा अमर रहती हैं ।पाठकों को अच्छा संदेश और जीवन में सही मार्ग दिखाती हैं। • बार-बार पढ़े जाने पर भी कविता का रस समाप्त ना होना। • इन्हीं विशेषताओं के कारण रचना कर्म को रस का अक्षयपात्र कहना	
	(ग)	• 'विप्लव-रव' से कवि का तात्पर्य क्रांति से है। • क्रांति गरीब लोगों या आम जनता में जोश भर देती है। • गरीब और आम जनता ही शोषण का शिकार होती है। • समाज में क्रांति इन्हीं से आरंभ होती है, इसीलिए यही क्रांति के जनक होते हैं। • क्रांति का आगाज होते ही ये नए और सुनहरे भविष्य के सपने संजोने लगते हैं, जिसकी चमक इनके चेहरे पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होना। • इसीलिए छोटे ही क्रांति (विप्लव- रव) के समय शोभा पाते हैं।	
प्रश्न11.	(क)	• बच्चों को पतंग का बहुत प्रिय होना • आकाश में उड़ती पतंग देखकर बच्चों के मन का उड़ान भरना • पतंग की भाँति बालमन का ऊँचाइयों को छूने की चाह • आसमान से पार जाने की चाह • पतंग की उड़ान का बच्चों के रंग-बिरंगे सपने के समान होना • बालकों का मन चंचल होना	(2×2=4)
	(ख)	• बात भाव है और भाषा उसे प्रकट करने का माध्यम। • बात और भाषा में चोली-दामन का साथ • कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी होना।	

		• मनुष्य का शब्दों के चमत्कार में उलझकर इस गलतफहमी का शिकार होना कि कठिन और नए शब्दों के प्रयोग से अधिक प्रभावशाली ढंग से बात कही जाती है। • भाव को भाषा का साधन बना लेना। • भाव की अपेक्षा भाषा पर अधिक ध्यान दिए जाने के कारण भाव की गहराई समाप्त होना।	
	(ग)	तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ थी क्योंकि 'कवितावली' में उनके द्वारा- • समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण • समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण • गरीबी के कारण लोगों द्वारा अपनी संतान तक बेच देने का वर्णन • दरिद्रता रूपी रावण का हाहाकार दिखाना • किसानों की हीन दशा का मार्मिक वर्णन	
प्रश्न12.	(क)	उचित स्पष्टीकरण पर उचित अंक दिए जाएँ हम इस कथन से पूर्णतः सहमत हैं क्योंकि - • बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म और क्षेत्र नहीं देखता सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शक्ति देखता है। • उसे इस बात से कोई मतलब नहीं कि खरीदार औरत है या मर्द, हिंदू है या मुसलमान,उसकी जाति क्या है या वह किस क्षेत्र-विशेष से है । • यहाँ हर व्यक्ति ग्राहक है। • आज जबकि जीवन के हर क्षेत्र में भेदभाव है ऐसे में बाज़ार हर एक को समान मानता है। • बाजार का काम है वस्तुओं का विक्रय,उसे तो ग्राहक चाहिए फिर चाहे वह कोई भी हो। इस प्रकार यह सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है	(3x2=6)
	(ख)	कहानी के आरंभ में लुट्टन के माता-पिता का चल बसना और सास द्वारा पालन-पोषण किया जाना। कहानी के मध्य में दंगल जीतकर उसका मशहूर पहलवान बन जाना, सुख-सुविधा के सब सामान पास होना, दो जवान बेटों का पिता बन जाना पर पत्नी का स्वर्ग सिधारना। कहानी के अंत में हैजे से दोनों बेटों की मृत्यु और स्वयं भी हैजे का शिकार होकर संसार से चला जाना।	
	(ग)	• जाति-प्रथा के बंधन के कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं होती। • इसी कारण उसे भूखों मरने तक की नौबत आ जाती है। • जाति-प्रथा पैतृक पेशा अपनाने पर ज़ोर देती है, भले ही वह इस पेशे में पारंगत ना हो। • जाति-प्रथा व्यक्ति को पेशे विशेष से बाँधकर रखती है, जो समाज में बेरोज़गारी और भुखमरी का कारण बनता है। आज समाज की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। आज व्यक्ति को अपना पेशा चुनने और बदलने का अधिकार है।	
प्रश्न13.	(क)	• संन्यासी की तरह ही सुख-दुख की परवाह ना करना • जीवन की अजेयता के मंत्र की घोषणा करना • बाहर की गर्मी,धूप,बारिश से प्रभावित ना होना	(2x2=4)

		• धैर्य के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों में अजेय जीवन व्यतीत करना • भावनाओं की भीषण गर्मी में भी अजेय रहना	
	(ख)	• गाँव के लोगों का किशोर लड़कों की उछल-कूद से चिढ़ना • उनकी वजह से होने वाले सड़क के कीचड़ से चिढ़ना • इंद्रसेना कहे जाने के कारण • भगवान इंद्र से वर्षा की विनती करना • स्वयं को इंद्र की सेना के सैनिक मानना	
	(ग)	भक्तिन भोली-भाली,बुद्धिमान, सेवाभाव वाली थी किंतु उसकी भक्ति में कुछ दुर्गुण भी थे, जैसे- पैसों को भंडार घर की मटकी में छुपाकर रखना लेखिका से बेवजह तर्क-वितर्क करना लेखिका से झूठ बोलना शास्त्रों में लिखी बातों की व्याख्या अपने अनुसार करना	

****

हिन्दी (आधार) कक्षा-12वीं (2022-23)

प्रश्न पत्र प्ररूप एवं अंक विभाजन

- **प्रश्न पत्र दो खंडों- खंड 'अ' और 'ब' का होगा**
- **खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे**

भारांक-100 **निर्धारित**

समय - 3 घंटे

खंड 'अ' वस्तुपरक प्रश्न

	विषयवस्तु	भार
1.	**निम्नलिखित गद्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों कस चयन कीजिये**	**10**
2.	**निम्नलिखित दो काव्यांश में से किन्ही एक को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों केउत्तर लिखिए-**	**05**
3.	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**	**05**
4.	**पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए-**	**05**
5.	**पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए-**	**05**
6.	**वितान पाठों के आधार पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-**	**10**
खण्ड ब (वर्णनात्मक प्रश्न)		
7.	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए –**	**06**
8.	**किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए**	**06**
9.	**निम्नलिखित 3 में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए-**	**08**
10.	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में-**	**06**
11.	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में-**	**04**
12.	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में-**	**06**
13.	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में-**	**04**
	श्रवण तथा वाचन	**10**
	परियोजना कार्य	**10**
कुल अंक		**80**

अपठित बोध

अपठित का शाब्दिक अर्थ है जिसे पहले पढ़ा न गया हो | दूसरे शब्दों में गद्य / पद्य का वह अंश जो निर्धारित पाठ्य- पुस्तक में सम्मिलित न रहा हो | वर्तमान सत्र 2022-23 की वार्षिक परीक्षा में अपठित बोध के अंतर्गत लगभग तीन सौ शब्दों का एक गद्यांश एवं एक सौ पचास शब्दों का एक काव्यांश (विकल्प सहित) दिया जाएगा | गद्यांश से सम्बंधित दस बहुविकल्पीय प्रश्न एक –एक अंक के पूछे जाएंगे | काव्यांश से सम्बंधित पांच बहुविकल्पीय प्रश्न एक – एक अंक के पूछे जाएंगे |

इन प्रश्नों का उद्देश्य विद्यार्थी के विचार कौशल , चिंतन कौशल, अभिव्यक्ति एवं अवलोकन क्षमता आदि का मूल्यांकन करना होता है | इसलिए इस भाग में परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए विभिन्न अपठित रचनाओं को पढ़ते रहना आवश्यक है | इसके बोध से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने का अभ्यास निरंतर करते रहना आवश्यक है | अपठित खंड के प्रश्नों के उत्तर लिखते समय निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है –

(1) अपठित खंड को ध्यान से पढ़कर उसमें निहित मूल भाव को समझना |

(2) प्रश्नों के उत्तर का चयन करते समय सर्वाधिक सही उत्तर का चयन करना |

(3) शीर्षक दिए गए अंश के मूल भाव के अनुरूप ही चयन करना |

(4)अपठित खंड के भीतर के कथ्य के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तरों का चयन करना चाहिए |

अभ्यास हेतु उदहारण – प्रश्न - निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक को पढ़कर को पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चयन कर उत्तर लिखिए - (1 x 10=10)

गद्यांश (1) - जीवात्मा संसार में आते ही भिन्नत्व को प्राप्त होता है|कोई गरीब है, कोई अमीर है| कोई झुग्गी- झोपड़ी में जन्म लेता है और पूरा जीवन अभाव ग्रस्त,रोग, भूख , शोक,अपमान की स्थिति में रहकर हर पल जीता हुआ संसार से कूच कर जाता है| कोई किसी संपन्न घराने में जन्म लेता है, जहाँ सब सुख-सुविधाएँ, पद-प्रतिष्ठा ,मान-सम्मान का बाहुल्य होता है । कोई दीर्घायु प्राप्त करता है, तो कोई अकाल ही कालग्रस्त हो जाता है । इस विषमता का कारण संसार में जीवात्मा के साथ सभी जानना चाहते हैं ,जो प्रत्यक्ष या परोक्ष में दृष्टिगोचर नहीं होता । तब साधारणतया हम सब सोचने लगते हैं कि तकदीर का ही खेल है । भाग्य प्रबल होता है । ऐसा भी मानना पड़ता है कि आत्मा अविनाशी है और यह विषमता हमारे साथ पूर्व जन्म के कर्मों के कारण उपस्थित है । कोई मिट्टी में हाथ डालता है ,तो उसके पास अपार धन आ जाता है और कई बार कोई सम्पन्न्ता की उँचाई से ऐसा गिरता है कि सब कुछ मिट्टी हो जाता है । शायद इसीलिए हम लोग तकदीर का रोना रोते हैं और भाग्य पलटने की कई उल्टी-सीधी जुगतें लगाते हैं । कई लोग तो जादू-टोना ,धागा-ताबीज ,झाड़-फूँक या फिर किसी पाखंडी ज्योतिषी का सहारा लेते हैं । जब ऐसे मिथ्याचार व अंधविश्वासों से कुछ नहीं होता तो भाग्य को प्रबल मान कर बैठ जाते हैं । मनीषी कहते हैं कि पुरुषार्थी भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं । केवल आलसी भाग्य को कोसते हैं । पुरुषार्थी आलस्यरहित रहना ठीक समझता है । साधारणतया जिसे हम भाग्य या प्रारब्ध कहते हैं वह हमारे पूर्व-संचित कर्म ही होते हैं । श्रेष्ठ पुरुष दौड़ लगाते हैं ,आगे चलते हैं , उनके पीछे और लोग चलते हैं । जो दौड़ता है उसे लक्ष्य मिलने की सम्भावना अधिक होती है । घर के अन्दर पलंग पर पड़े-पड़े हम केवल कमरों को ही देख सकते हैं । महाराज भर्तृहरि ने मनुष्यों की तीन श्रेणियों में बाँटा अधम, मध्यम, उत्तम । अधम क्लेश के डर से कोई काम प्रारम्भ नहीं करते । मध्यम लोग कार्य प्रारम्भ तो कर देते हैं,परंतु कोई विघ्न पड़ने पर दुखी होकर बीच में छोड़ देते हैं । परंतु उत्तम लोग बार-बार विघ्न आने पर भी प्रारम्भ किए काम को नहीं छोड़ते,वरन उसे पूरा करके ही दम लेते हैं । ऐसे लोग पुरुषार्थी कहलाते हैं ।

उपनिषद कहते हैं - चरैवेति ,चरैवेति अर्थात चलते रहो ,चलते रहो।हर स्थिति और परिस्थिति में आगे बढ़ने का नाम जीवन है । गुरु नानक ने कहा था कि आयु का एक क्षण संसार के सब रत्नों को देकर भी नहीं पाया जा सकता । जो हमारा समय निकल गया उसकी चिंता छोड़ें । जो जीवन शेष बचा है उसके बारे में विचार करें, सँभालें । गीता का सर्वप्रिय उपदेश भी यही है कि फल की चिंता किए बिना सत्कर्मों में प्रवृत्त हो जाएं और अपने इस देव-दुर्लभ जीवन को सफल बनाएं ।

(i) जीवात्मा के भिन्नत्व से तात्पर्य है-

(क) अमीरी-गरीबी (ख) दीर्घायु-अल्पायु जीवन

(ग) विनाशी-अविनाशी आत्मा (घ) 'अ' और 'ब' दोनों

(ii)निम्न कथनों पर विचार कीजिए –

(I) सांसारिक विषमता हमें निराश करती है I (II) सांसारिक विषमता मेहनत का प्रतिफल है I

(III) सांसारिक विषमता इसे भाग्य का खेल मानने को विवश करती है I

(क) केवल I (ख) केवल I व II (ग) केवल I व III (घ) I , II व III

(iii) पुरुषार्थी क्या करते है-

(क) भाग्य का रोना रोते हैं (ख) हारकर बैठ जाते हैं

(ग) भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं (घ) सरकारों को कोसते हैं

(iv) प्रारब्ध क्या है-

(क) आत्मा का रूप (ख) पूर्वसंचित कर्म

(ग) भिन्न-भिन्न जीवन (घ) आदर्श व्यक्ति

(v) भर्तृहरि के अनुसार मनुष्य होते हैं-

(क) अधम (ख) मध्यम (ग) उत्तम (घ) दिये गए तीनों

(vi) मध्यम श्रेणी के लोग-

(क) कार्य प्रारम्भ करते हैं (ख) कार्य पूर्ण करते हैं

(ग) कार्य बीच में ही छोड़ देते हैं (घ) "क" और "ग" दोनों

(vii) आलसी व्यक्ति को किस श्रेणी में रखा जा सकता है-

(क) सर्वोत्तम (ख) मध्यम (ग) उत्तम (घ) इनमें से कोई नहीं

(viii) 'चलते रहो, चलते रहो' किसका उपदेश है-

(क) गुरुनानक का (ख) उपनिषद (ग) आलसी व्यक्ति का (घ) अंधविश्वासी का

(ix) गीता का उपदेश है-

(क) अवसर खोजो (ख) अंधविश्वासी बनो (ग)कर्म करो, फल की चिंता नहीं (घ) फल की चिंता करो,कर्मों की नहीं

(x) 'अविनाशी" शब्द का अर्थ नहीं होगा-

(क) जिसका विनाश न हो (ख) पुरुषार्थी (ग) अमर (घ) नष्ट होने वाला

उत्तर - (i) घ (ii) ग (iii) ग (iv) ख (v) घ (vi) घ (vii) घ (viii) ख (ix) ग (x) ख

गद्यांश (2) - हम जिस तरह भोजन करते हैं , गाछ-बिरछ भी उसी तरह भोजन करते हैं। हमारे दाँत हैं ,कठोर चीज खा सकते हैं। नन्हें बच्चों के दाँत नहीं होते , वे केवल दूध पी सकते हैं। गाछ-बिरछ के भी दाँत नहीं होते इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। गाछ-बिरछ जड़ के द्वारा माटी से रसपान करते हैं। चीनी में पानी डालने पर चीनी गल जाती है। माटी में पानी डालने पर उसमें बहुत-से द्रव्य गल जाते हैं। गाछ-बिरछ वही तमाम द्रव्य सोखते हैं। जड़ों को पानी नहीं मिलने पर पेड़ का भोजन बंद हो जाता है , पेड़ मर जाता है।

खुर्दबीन से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ देखे जा सकते हैं। पेड़ की डाल अथवा जड़ का इस यंत्र द्वारा परीक्षण करने पर देखा जा सकता है कि पेड़ में हजारों-हजार नल हैं। इन्हीं सब नलों के द्वारा माटी से पेड़ के शरीर में रस का संचार होता है।

इसके अलावा गाछ के पत्ते हवा से आहार ग्रहण करते हैं। पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। खुर्दबीन के जरिये अनगिनत मुँह पर अनगिनत होंठ देखे जा सकते हैं। जब आहार ग्रहण करने की जरूरत न हो तब दोनों होंठ बंद हो जाते हैं। जब हम श्वाँस लेते हैं और उसे बाहर निकालते हैं तो एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं। अगर यह जहरीली हवा पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव जंतु कुछ ही दिनों में उसका सेवन करके नष्ट हो सकते हैं। " जरा विधाता की करुणा का चमत्कार तो देखो जो जीव-जंतुओं के लिये जहर है , गाछ-बिरछ उसी का सेवन करके उसे शुद्ध कर देते हैंपेड़ के पत्तों पर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है तब पत्ते सूर्य उर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार नि:शेष कर डालते हैं। पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर बच नहीं सकते।

गाछ-बिरछ की सर्वाधिक कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाएयदि खिड़की के पास गमले में पौधे रखो , तब देखोगे कि सारी पत्तियाँ व डालियाँ अंधकार से बच कर प्रकाश की ओर बढ़ रही हैंवन में जाने पर पता लगेगा कि पेड़-पौधे इस होड़ में सचेष्ट हैं कि कौन जल्दी से सर उठाकर पहले प्रकाश को झपट लेबेल-लताएं छाया में पड़ी रहने के कारण प्रकाश के अभाव में मर जाएंगी। इसीलिए वे पेड़ों से लिपटी हुई,निरंतर उपर की ओर अग्रसर रहती हैं। अब तो समझ गए होंगे कि प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है।

(i) गाछ-बिरछ से क्या तात्पर्य है-

(क) गाय-बैल (ख) कीड़े-मकोड़े (ग) पेड़-पौधे (घ) स्त्री-पुरुष

(ii) गाछ-बिरछ किस प्रकार भोजन प्राप्त करते हैं-

(क) दाँत से चबाकर (ख)जड़ों से तरल द्रव्य सोखकर (ग) अपने फलों को खाकर (घ)अन्य पेड़ों से भोजन साझा करते हैं

(iii) निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है-

(क) खुर्दबीन से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ देखे जा सकते हैं (ख) पेड़ की जड़ या डाल का खुर्दबीन से सूक्ष्म परीक्षण किया जा सकता है

(ग) पेड़ में नल लगाकर हम उसका रस पी सकते हैं (घ) पेड़ जड़ के द्वारा मिट्टी से रसपान करते हैं

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यान पूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए –

कथन – (A) पेड़ जड़ और पत्तों से आहार ग्रहण करते हैं |

कथन – (R) प्रकाश और हवा पेड़ के लिए आवश्यक है |

(क) कथन A तथा कारण R दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है | (ख) कथन A सही है कारण R गलत है |

(ग) कथन A तथा कारण R दोनों गलत है | (घ) कथन A सही है लेकिन कारण R उसकी गलत व्याख्या करता है

(v) पत्तों के विषय में निम्नलिखित में से क्या सही है-

(क) पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। (ख) दूरबीन के द्वारा पत्तों के मुँह/होंठ देखे जा सकते हैं।

(ग) पत्ते ठोस आहार के द्वारा पेड़ को भोजन देते हैं। (घ) ''क'' और ''ख'' दोनों

(vi) 'अंगारक' वायु क्या है-

(क) गर्म वायु (ख)अंगों को सुकून देने वाली वायु (ग) विषाक्त वायु (घ)पड़ से निकलने वाली वायु

(vii) 'अंगारक' वायु से विषाक्तता पत्ते किसके सहारे दूर करते हैं-

(क) जल के सहारे (ख) अग्नि के सहारे (ग) सूर्य के प्रकाश के सहारे (घ) मिट्टी के सहारे

(viii) गाछ-बिरछ की सर्वाधिक कोशिश रहती है-

(क) थोड़ा-सा आराम मिल जाए (ख) थोड़ी-सी सुरक्षा मिल जाए (ग) थोड़ी-सी छाँव मिल जाए (घ) थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए

(ix) गद्यांश के अनुसार जीवन का मूलमंत्र है-

(क) भोजन (ख) रसपान (ग) प्रकाश (घ) खुर्दबीन

(x) 'तमाम' शब्द का अर्थ नहीं होगा-

(क) पूरा (घ) सम्पूर्ण (ग) समस्त (घ) थोड़ा

उत्तर - (i) घ (ii) ग (iii) ग (iv) ख (v) घ (vi) घ (vii) घ (viii) ख (ix) ग (x) ख

गद्यांश (3) - लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है | लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का स्तर विकसित नहीं हो पाया है, फलस्वरूप देश की विशाल मानव शक्ति अभी खरीटे लेती पड़ी है और देश की पूंजी उपयोगी बनाने के बदले आज बोझ रूप बन बैठी है| लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है | किसी भी देश को महान बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग | लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे हैं | चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ-सफाई की बात हो, जहाँ – तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं, फिर चाहते हैं सब कुछ सरकार ठीक कर दे | सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है | वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बांध बनवाए हैं, फौलाद के कारखाने खोले हैं, इस प्रकार बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं, पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है |

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझबूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे | उदाहरण के लिए गाँव योजनाएँ व वाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय नहीं समझ सकेंगे पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गांव में कहाँ कुआं चाहिए, कहाँ सिंचाई की जरूरत है, कहाँ पुल की आवश्यकता है, बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं |

(i) लोकतंत्र का मूलभूत तत्व है

(क) कर्तव्य पालन (ख) लोगों का राज्य (ग) चुनाव (घ) जनमत

(ii) किसी देश की महानता निर्भर करती है

(क) वहाँ की सरकार पर (ख) वहाँ के निवासियों पर (ग) वहाँ के इतिहास पर (घ)वहाँ की पूंजी पर

(iii) सरकार के कामों के बारे में कौन सा कथन सही नहीं है

(क) वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ बनवाई हैं (ख) विशाल बांध बनवाए हैं (ग) वाहन चालकों को बिगाड़ा है (घ) फौलाद के कारखाने खोले हैं

(iv) कथन I – गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका नहीं होनी चाहिए

कथन II – गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की प्रभावी भूमिका होनी चाहिए |

कथन III – गाँव वाले समस्याओं को ठीक तरह से नहीं समझते | समस्या बढ़ा देते हैं |

इनमें से सही है -

(क) केवल I (ख) केवल I , II (ग) केवल II ,III (घ) केवल II

(v) ''झकझोर कर जागृत करना'' का भाव गद्यांश के अनुसार होगा-

(क) नींद से जगाना (ख) सोने ना देना (ग) जिम्मेदारी निभाना (घ) जिम्मेदारियों के प्रति सचेत करना

(vi) लोकतंत्र में लोग समझते है -

(क) सरकार सब कुछ देगी (ख) हमें सबकुछ करना होगा (ग) राजनीतिक पार्टी हमें सब देगी (घ) समाज हमें सब कुछ देगा

(vii) गाँव वाले कौन सी बात नहीं समझ सकेंगे -

(क) कहाँ पुल की आवश्यकता है (ख) कहाँ कुआँ चाहिए (ग) पंचवर्षीय योजनाओं को नहीं समझ सकेंगे (घ) कहाँ सिंचाई की जरूरत है

(viii) सरकार के कामों के बारे में कौन सा कथन सही है

(क) वैज्ञानिक प्रयोगशाला बनवाई है (ख) विशाल बांध बनवाए हैं (ग) फौलाद के कारखाने खुले हैं (घ)उपरोक्त तीनों

(ix) देश के नागरिकों को अपनी कौन सी ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए ?

(क) साफ-सफाई की (ख)नियमानुसार सड़क पर चलने की (ग) नियमानुसार सड़क पर वाहन चलाने की (घ) उपरोक्त सभी

(x) लोगों को कैसा होना चाहिए ?

(क) अपनी सूझ-बूझ से काम न करने वाला (ख) अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े होने वाला

(ग) उपलब्ध साधन- सामग्री से काम शुरू नहीं करने वाला (घ) उक्त सभी

उत्तर - (i) क (ii) ख (iii) ग (iv) घ (v) घ (vi) क (vii) ग (viii)घ (ix)घ (x) ख

गद्यांश (4) - सुव्यवस्थित समाज का अनुसरण करना अनुशासन कहलाता है। व्यक्ति के जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासन के बिना मनुष्य अपने चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता तथा चरित्रहीन व्यक्ति सभ्य-समाज का निर्माण नहीं कर सकता। अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए भी मनुष्य को अनुशासन बद्ध होना अति अनिवार्य है। विद्यार्थी जीवन मनुष्य के भावी जीवन की आधारशिला होता है, अतः विद्यार्थियों के लिए अनुशासन में रह कर जीवन यापन करना अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समाज में सर्वत्र अव्यवस्था का साम्राज्य फैला हुआ है। विद्यार्थी, राजनेता, सरकारी कर्मचारी, श्रमिक आदि सभी स्वयं को स्वतंत्र भारत का नागरिक मानकर मनमानी कर रहे हैं। शासन में व्याप्त अस्थिरता समाज के अनुशासन को भी प्रभावित कर रही है। यदि किसी को अनुशासन में रहने के लिए कहा जाए तो वह 'शासन का अनुसरण' करने की बात कहकर अपनी अनुशासन हीनता पर पर्दा डालने का प्रयास करता है। वास्तव में अनुशासन शब्द का अर्थ अपने पर नियंत्रण ही है। विद्यार्थी जीवन में अबोधता के कारण उन्हें भले बुरे की पहचान नहीं होती। ऐसी स्थिति में थोड़ी सी असावधानी उन्हें अनुशासन हीन बना देती है। आजकल विद्यार्थियों की पढ़ाई में रूचि नहीं है। वे आधुनिक शिक्षा पद्धति को बेकारों की सेना तैयार करने वाली नीति मान कर इसके प्रति उदासीन हो गए हैं तथा फैशन, सुख-सुविधापूर्ण जीवन जीने के लिए गलत रास्तों पर चलने लगे हैं। वर्तमान जीवन में व्याप्त राजनीतिक दलबंदी भी विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता को प्रोत्साहित करती है। राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ के लिए विद्यार्थियों को भड़का देते हैं तथा विद्यार्थी वर्ग भले–बुरे की चिंता किए बिना तोड़-फोड़ में लग जाता है।

आधुनिक युग में अति व्यस्त जीवन पद्धति के कारण माता-पिता अपनी संतान का पूरा ध्यान नहीं रख पाते। चार-पांच घंटे कॉलेज में रहने वाला विद्यार्थी उन्नीस-बीस घंटे तो अपने परिजनों के साथ ही रहता है। पारिवारिक परिवेश का उस पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि उसके माता-पिता अनुशासित जीवन नहीं जीते तो उसे भी उच्श्रृंखल जीवन जीना पड़ता है। वे माता पिता जो अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते, उनके बच्चों में भी समय पाबंदी और मूल्यों को लेकर संदेह बना रहता है तथा बच्चे भी शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं दे पाते। विद्यार्थियों में अनुशासन बनाए रखने के लिए विशेष योजना चलानी चाहिए; ताकि उनमें नैतिक व चारित्रिक उत्थान को बढ़ाया जा सके। इस प्रकार के प्रोत्साहनों से उन्हे अपने कर्त्तव्य का बोध कराया जा सकता है। अतः हम कह सकते है कि अनुशासन से ही विद्यार्थियों के साथ-साथ राष्ट्र को ऊंचा उठाया जा सकता है। इससे उसके स्वभाव व सद्वृत्तियों को ऊंचा उठाया जा सकता है। ऐसा विद्यार्थी समाज और राष्ट्र का नाम करता है। उसमें सद्गुण और कर्मठता के गुण आते है। परिश्रम और कर्त्तव्य के द्वारा वह देश सेवा करता है।

(i) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(क) परिश्रम और कर्तव्य (ख) जीवन में अनुशासन का महत्त्व (ग) युवा-शक्ति (घ) जीवन की सीख

(ii) अनुशासन से क्या अभिप्राय है ?

(क) दूसरों पर शासन (ख) कानून व्यवस्था को तोड़ना (ग) नैतिक व चारित्रिक शिक्षा (घ) स्वयं पर नियंत्रण न रखना

(iii) माता पिता का बच्चों के प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिए ?

(क)उनको सही दिशा और मार्गदर्शन देना चाहिए (ख) उनको दंड देना चाहिए

(ग)उन्हें हर निर्णय हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए (घ) उन्हें हमेशा संरक्षण देना चाहिए

(iv) मानव जीवन के विकास हेतु क्या आवश्यक है?

(क)जो मन में आए वह करना (ख) आज्ञा का पालन करने वाला (ग)अनुशासन का पालन (घ)जीवन का प्रतिबंधों के अधीन होना

(v) वर्तमान समाज में किस प्रकार की स्थिति होनी चाहिए?

(क)नैतिक शिक्षा अनिवार्य हो (ख) अनुशासन,सद्गुणों का पालन करता कर्मरत समाज

(ग)बच्चों में समय की पाबंदी व मूल्यों का विकास (घ) उपरोक्त सभी

(vi) कथन (A) – आजकल विद्यार्थी पढ़ाई के प्रति उदासीन है |

कथन (R) – सामाजिक , घरेलू और आसपास की परिस्थितियाँ राह नहीं दिखा रहीं हैं |

(क) कथन A और R दोनों सहीं है , कारण कथन की व्याख्या करता है

(ख) कथन A गलत है ,कारण R सही है |

(ग) कथन A और कारण R दोनों गलत है |

(घ) कथन A सही है लेकिन कारण R गलत व्याख्या है |

(vii) परिश्रमी और कर्मण्य शब्दों के विलोम शब्द लिखिए |

(क) अपरिश्रमी,अकर्मण्य (ख) मेहनती,अकर्मण्य (ग) अपरिश्रमी,भाग्यवादी (घ) इनमें कोई नहीं

(viii) विद्यार्थियों का दृष्टिकोण आजकल क्या होने लगा है

(क) आधुनिक शिक्षा पद्धति के प्रति उदासीनता (ख) मूल्यों को लेकर संदेह

(ग) राजनैतिक दलबंदी की ओर आकर्षण (घ) उपरोक्त सभी

(ix) संतान को लेकर आजकल माता-पिता की क्या स्थिति है?

(क) वे बच्चों की पूरी देखरेख करते हैं (ख) बच्चों पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते

(ग) बच्चों के काम में हस्तक्षेप नहीं करते (घ) बच्चों से कठोरता करते हैं

(x) कर्मठता शब्द में कौन सा प्रत्यय है?

(क) कर्मठ (ख) कर्म (ग) ठता (घ) ता

उत्तर - (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) घ (vi) घ (vii) क (viii) ख (ix) ख (x) घ

गद्यांश (5) - यदि हम चाहते हैं कि भविष्य में अच्छे नागरिक मिलें तो हमें विद्यार्थियों को सभी दृष्टि से योग्य बनाना पड़ेगा | पहली बात उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार करने की है | हमारा विद्यार्थी वर्ग स्वयं को राष्ट्र की धरोहर समझकर अपनी रक्षा करें | उसे यह बात मन में ठान लेनी है कि उसके ऊपर भारत की रक्षा का भार है | उसे स्मरण रखना होगा कि वह महान राष्ट्र का नागरिक होने जा रहा है जिसने आदिकाल से ही 'वसुधैवकुटुम्बकम' की उद्घोषणा की थी | उसे इसका पूर्णतया पालन करना है | दूसरी बात यह है कि उसे कर्मठ बनना है | आलस्य को ही अपना महान शत्रु समझकर उसकी छाया से घृणा करनी है | आज आवश्यकता है अधिक से अधिक उत्पादन करने की | अधिक से अधिक कर्तव्य परायण, अधिक से अधिक प्रगतिशील बनने की | विदेशों से होड़ करने के लिए हमारे हमारे छात्रों को समय से काम करने की आदत डालनी होगी | अधिक समय तक काम करने के लिए धैर्य का विकास करना होगा | आज सामूहिक प्रयत्नों की आवश्यकता है तभी देश से दरिद्रता भागेगी और अज्ञान का अंधकार दूर होगा |

(i) देश के विकास के लिए विद्यार्थियों को क्या करना आवश्यक है?

(क)उन्हें कर्मठ बनना चाहिए. (ख)उनके मन में राष्ट्रभक्ति की भावना होनी चाहिए.

(ग)उसे आलस्य त्यागकर समय का सही उपयोग करना चाहिए. (घ)उपर्युक्त सभी

(ii)विद्यार्थियों पर किसका भार है?

(क)माता-पिता का (ख) भारत की रक्षा का (ग)शिक्षकों का (घ) अपने घर का

(iii)आज राष्ट्र के विकास के लिए किस चीज की आवश्यकता है?

(क)अधिक से अधिक प्रगतिशील बनने की (ख)अधिक से अधिक उत्पादन करने की

(ग)राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य परायणता की (घ)उपर्युक्त सभी कार्यों की

(iv)देश की दरिद्रता कैसे दूर होगी?

(क)खाना खाकर सोने से (ख)सामूहिक प्रयत्नों से (ग)स्वयं भाग जाएगी (घ)क और ख दोनों से

(v)इस गद्यांश का उचित शीर्षक होगा-

(क)युवा शक्ति (ख) राष्ट्र निर्माण (ग)राष्ट्र के प्रति विद्यार्थी के कर्त्तव्य (घ)राष्ट्रीय विरासत

(vi)विद्यार्थी शब्द का संधि विच्छेद होगा –

(क) विद्या +अर्थी (ख) वि + द्यार्थी (ग) विद्यार्थ +ई (घ) उपरोक्त सभी

(vii)अन्धकार शब्द का विलोम नहीं होगा

(क)प्रकाश (ख) रोशनी (ग) उजाला (घ) तम

(viii) सबसे महान शत्रु किसे खा गया है

(क) मेहनत (ख) मित्रता (ग) आलस्य (घ) इनमें से किसी को नहीं

(ix)नागरिक शब्द में प्रत्यय है –

(क) नगर (ख) नगर (ग) रिक (घ) इनमें से कोई नहीं

(x) दरिद्रता से आशय है –

(क) गरीबी (ख) अमीरी (ग)सुन्दरता (घ) गहराई

उत्तर - (i) घ (ii) ख (iii) घ (iv) ख (v) ख (vi) क (vii) घ (viii) ग (ix) घ (x) क

गद्यांश (6) - यदि हमारे वृक्ष स्वस्थ हैं, तो निश्चित मानिए हम भी स्वस्थ हैं | हमें तो प्राणवायु उन्हीं से मिलती है | हम कार्बनडायऑक्साइड छोड़ते उन्हें देते हैं और वे बदलें में हमें ऑक्सीजन प्रदान हैं, जो हमारे जीवन की हर गतिविधि के लिए आवश्यक हैं | हमारे स्वास्थ्य का हरेक बिंदु ऑक्सीजन की उपलब्धता से अनुप्राणित है | हम यदि आसपास के वृक्षों की रक्षा का जिम्मा अपने कन्धों पर उठा लें तो निश्चित मानिए कि अपने आपको लम्बे समय तक स्वस्थ रखने की गारंटी प्राप्त कर ली है | वृक्षों की रक्षा में ही हमारे जीवन की सुरक्षा का राज़ छिपा है | कहा जाता है कि एक स्वस्थ मन हजारों सोने के सिंहासनों से कहीं अधिक मूल्यवान होता है, क्योंकि स्वस्थ मन ही स्वस्थ देश की रचना करने में समर्थ है | कुत्सित विचारों वाले लोग अपना जीवन तो चला सकते हैं, लेकिन समाज और देश को नहीं चला सकते | करोड़ों परिवारों के सुनहरे भविष्य के बारे में वहीँ चिंतन, मनन और सृजन कर सकता है, जो व्यर्थ के लालच, लोभ और षड्यंत्रों से मुक्त हो और जिस पर किसी प्रकार का कोई अनुचित दवाब न हो |

(i) हमारा स्वास्थ्य वृक्षों पर किस तरह निर्भर हैं?

(क) वृक्षों के नीचे हम निवास करते हैं | (ख) वृक्ष हमें दवाइयां देते हैं |

(ग) वृक्ष हमें प्राणवायु देते हैं | (घ) उपरोक्त सभी |

(ii) हमारे पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में वृक्षों का क्या महत्वपूर्ण योगदान है?

(क) वृक्ष कार्बनडायऑक्साइड लेकर हमें ऑक्सीजन देते हैं (ख) वृक्ष नाइट्रोजन देते हैं.

(ग) वृक्ष हमें कार्बनडायऑक्साइड देते हैं. (घ) उपरोक्त सभी.

(iii) हमारे जीवन की सुरक्षा का राज किस में छिपा है?

(क)वृक्षों को काटने मे (ख)वृक्षों की रक्षा में

(ग)वृक्षों से लाभ उठाने में (घ) क और ख दोनों में

(iv) गद्यांश में स्वस्थ मन को सर्वाधिक मूल्यवान क्यों कहा गया है?

(क) क्योंकि उससे करोड़ों महल ख़रीदे जा सकते हैं

(ख) क्योंकि स्वस्थ मन हमें शक्तिशाली बनाता हैं

(ग) इससे हम धनवान होते हैं

(घ) क्योंकि स्वस्थ मन ही स्वस्थ देश की रचना करने में समर्थ होता हैं

(v) गद्यांश का उचित शीर्षक होगा-

(क)वृक्ष और हम (ख) राष्ट्र निर्माण

(ग)जीवन में वृक्षों का महत्त्व (घ) राष्ट्र और वृक्ष

(vi)स्वस्थ मन की आवश्यकता क्यों है –

(क) स्वस्थ देश के लिए (ख) अस्वस्थ शरीर के लिए (ग) बीमार राष्ट्र के लिए (घ) पशुओं के लिए

(vii)लालच शब्द का समानार्थी है –

(क) क्षोभ (ख) लोभ (ग) क्रोध (घ) शांति

(viii) सृजन शब्द का विलोम है –

(क) निर्माण (ख) रचना (ग) शुरुआत (घ) इनमें से कोई नहीं

(ix) गारंटी शब्द किस भाषा का शब्द है –

(क) तमिल (ख) अंग्रेज़ी (ग) छत्तीसगढ़ी (घ) बंगाली

(x)अनुप्राणित शब्द में मूल शब्द है –

(क) अनु (ख) ईत (ग) प्राण (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - (i) घ (ii) क (iii) ग (iv) घ (v) ग (vi) क (vii) ख (viii) घ (ix) ख (x) ग

प्रश्न 2.निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए – (1x 5=5)

पद्यांश (1)-

एक दिन भी जी मगर तू ताज बन कर जी
अटल विश्वास बनकर जी;
अमर युग-गान बनकर जी!
आज तक तू समय के पद-चिन्ह सा खुद को मिटाकर
कर रहा निर्माण जग-हित एक सुखमय स्वर्ग सुंदर

स्वार्थी दुनिया मगर बदला तुझे यह दे रही है-
भूलता युग-गीत तुझको ही सदा तुझसे निकलकर
'कल' न बन तू जिंदगी का 'आज' बनकर जी
जगत सरताज बनकर जी!
जन्म से उड़ रहा निस्सीम इस नीले गगन पर,
किन्तु फिर भी छाँह मंजिल की पड़ती नहीं नयन पर,
और जीवन लक्ष्य पर पहुँचे बिना जो मिट गया तू-
जग हँसेगा खूब तेरे इस करुण असफल मरण पर,
ओ मनुज! मत विहंग बन आकाश बनकर जी,
अटल विश्वास बनकर जी !

(i) कवि ने मनुष्य को एक ही दिन जीने की प्रेरणा क्यों दी है?

(क)सम्मानित एक दिन अपमानित दस दिनों से अच्छा होता है

(ख) अच्छी परंतु छोटी जिंदगी स्वीकार्य नहीं है

(ग) स्वार्थी परंतु लंबी जिंदगी अच्छी होती है

(घ)एक दिन के लिए ही सही ताज की तरह सुंदर बनकर जीना अच्छा होता है।

(ii) दुनिया को स्वार्थी क्यों कहा गया है?

(क)वह केवल अपने लिए जीती है

(ख) वह मनुष्य के कल्याण मार्ग से केवल अपना स्वार्थ साधती है

(ग) वह दूसरों के बारे में भी सोचती है

(घ)वह दूसरों का बुरा सोचती है

(iii) 'कल' और 'आज' शब्द किसके प्रतीक हैं?

(क)'कल' आने वाला कल और 'आज' वर्तमान का

(ख)'कल' मशीन का और 'आज' वर्तमान के सुख का

(ग)'कल' अतीत का और 'आज' सबको याद आने वाला

(घ)'कल' भुला देने वाला और 'आज' सबको याद आने वाला

(iv) 'विहंग' शब्द का तात्पर्य है -

(क) धरती (ख)गगन (ग)पंछी घ)आकाश

(v) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए -

कथन I – मनुष्य को सम्मान पूर्वक जीवन जीना चाहिए |

कथन II – जीवन लक्ष्य पर पहुँचे बिना नष्ट हो जाना चाहिए |

कथन III – मनुष्य को आज बनकर जीवन जीना चाहिए |

कथन IV – संसार सभी का भला चाहता है |

(क) केवल I सही (ख) केवल II सही

(ग) I और II सही (घ) I और III सही

उत्तर - (i) घ (ii) क (iii) घ (iv) घ (v) घ

पद्यांश (2)-

जो साथ फूलों के चले ,
जो ढाल पाते ही ढले
वह जिंदगी क्या जिंदगी ,

जो सिर्फ पानी – सा बहे
सच हम नहीं सच तुम नहीं ।,
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए ,
हम या कि तुम
जो नत हुआ वह मृत हुआ
ज्यों वृक्ष से झरकर कुसुम
जो भी परिस्थितियां मिलें
काँटे चुभे कलियाँ खिलें
हारे नहीं इंसान है, संदेश जीवन का यही।
सच तुम नहीं सच हम नहीं
सच है महज संघर्ष ही
जब तक बँधी है चेतना
जब तक हृदय दुख से घना
तब तक न मानूंगा कभी इस राह को ही मैं सही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं ।
सच है महज संघर्ष ही ।

(i) फूलों के साथ चलने से क्या तात्पर्य है?
(क).फूलों-सा संक्षिप्त जीवन (ख) सुविधाओं को ही ध्येय मानना
(ग) बाग में चलना (घ) कांटो से डरना

(ii) कवि नत को मृत क्यों मानता है?
(क) अपनी हार स्वीकार करना (ख) कायरता मृत्यु के समान है
(ग) पराजय कमजोर बनाती हैं (घ).विनम्रता गुण है मृत्यु नहीं

(iii) दुनिया का सबसे बड़ा सत्य क्या है?
(क) साहस (ख) स्वार्थ (ग)संघर्ष (घ).समर्पण

(iv) बंधी हुई चेतना को कवि सही क्यों नहीं मानता?
(क) बंधन में सही निर्णय नहीं होता (ख) बंधन डराता है
(ग) बंधन स्वतंत्र नहीं रहने देता (घ) बंधन मन को भी बांध देता है

(v) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए –
कथन – संघर्ष ही जीवन है |
कारण – जो कायर है वह झुक गया |
(क) कथन, कारण की सही व्याख्या करता है | (ख) कथन कारण की व्याख्या करने में असमर्थ है (ग) कथन- कारण में एकरूपता नहीं है (घ) कथन – कारण दोनों गलत है

उत्तर - (i) क (ii) घ (iii) ग (iv) क (v) क

पद्यांश (3)-

मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे
कुछ छोटे-छोटे पौधे
बड़े सुशील,विनम्र
देखकर मुझको यों बोले-

हम भी कितने खुशकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते.
आसमान से पानी बरसे आग बरसे,
आँधी गरजे
हमको कोई फ़िक्र नहीं है
एक बड़े की वरद छत्र-छाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहें हैं.
बड़े सुखी हैं.
मैंने देखा-
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके कुछ छोटे-छोटे पौधे
असंतुष्ट और रुष्ट
देखकर मुझको यों बोले
हम भी कितने बदकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते
वे कैसे ऊपर बढ़ सकते हैं
इसी बड़े की छाया ने ही
हमको बौना बना रखा
हम बड़े दुखी हैं.

(i)पौधे स्वयं को खुशकिस्मत क्यों समझते है?

(क)बरगद का वृक्ष उनकी रक्षा करता है (ख). बड़े की छत्र-छाया में बढ़ रहे है
(ग)उन्हें आंधी पानी की परवाह नहीं हैं (घ). उपर्युक्त सभी

(ii)बरगद के नीचे सुरक्षित रहकर भी पौधे असंतुष्ट और रुष्ट क्यों है?

(क)खतरों का सामना नहीं करते (ख) क और ख दोनों
(ग)बड़े वृक्ष की छाया ने उन्हें बौना बना रखा है (घ)इनमेंसे कोई नहीं

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए –

कथन - बड़ों के अधीन रहकर उन्नति होती है |
कारण – बड़ों की छाया बरगद के समान होती है |

(क) कथन, कारण की सही व्याख्या करता है |
(ख) कथन कारण की व्याख्या करने में असमर्थ है |
(ग) कथन- कारण में एकरूपता नहीं है |
(घ) कथन – कारण दोनों गलत है |

(iv)विकास के लिए क्या जरूरी है?

(क)बड़ों से लड़ना (ख)खतरों का सामना करना
(ग)बड़ों से डर कर रहना (घ)इनमें से कोई नहीं

(v)काव्यांश में वर्णित बरगद तथा छोटे पौधे किसका प्रतीक है?

(क)वनस्पति जगत के। (ख)ईश्वर और उनके भक्तों के
(ग)बरगद सामंतवाद या शासक वर्ग तथा छोटे पौधे समाज के शोषित उपेक्षित लोगों के
(घ)उपरोक्त सभी के

उत्तर - (i) घ (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग

पद्यांश (4)-

अगर तुम्हारे शहर की
धुआं उगलती चिमनियाँ

घोंटती हो दम तुम्हारा,
तब, चले आना, मेरे गाँव,
जहाँ अमराई में चलती है पुरवाई .
अगर तुम्हारे शहर के
कोलाहाल ने
उड़ा दी हो
नींद तुम्हारी
तब
चले आना मेरे गाँव में
जहाँ सुनाती है लोरियाँ
खनकती पत्तियाँ
अगर
थक गए हो तुम
अग्र का बोझ ढोते-ढोते
तब
चले आना मेरे गाँव में
जहाँ
पचपन की उम्र में भी
खिलखिलाता है
बचपन उन्मुक्त

(i)धुएं से बचने के लिए गाँव में क्या है?
(क)दवाई (ख). पुरवाई (ग) महंगाई (घ) शहनाई
(ii)गाँव में लोरियां कौन सुनाता है?
(क)माता-पिता (ख) पेड़ (ग) पत्तियां (घ) हवाएं
(iii)'कोलाहल ने उड़ा दी हो नींद' का क्या आशय हैं?
(क)जल प्रदूषण से नींद न आना (ख) वायु प्रदूषण से नींद न आना (ग)मानसिक तनाव से नींद न आना। (घ) ध्वनि प्रदूषण से नींद न आना
(iv)पचपन की उम्र में भी गाँव के व्यक्ति में क्या झलकता है?
(क)उन्मुक्त बचपन (ख) बुढ़ापा (ग) जवानी (घ)प्रौढावस्था
(v) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए –
कथन – शहर की आबो हवा गाँव से अच्छी होती है |
कारण – शोरगुल , धुआँ उगलती चिमनियां |
(क) कथन, कारण की सही व्याख्या करता है |
(ख) कथन कारण की व्याख्या करने में असमर्थ है |
(ग) कथन- कारण में एकरूपता नहीं है |
(घ) कथन – कारण दोनों गलत है |
उत्तर - (i) ख (ii) घ (iii) घ (iv) क (v) घ

पद्यांश (5)-
उस दिन
वह मैंने थी देखी
कॉलेज के निकट ,कच्ची सड़क के पास
गंदी नाली पर पड़ी
जहाँ से गुज़र नहीं सकता
कोई भी बिना नाक पर डाले कपडा –
गंदे काले चिथड़ों और "फटी -पुरानी गुदड़ी में ,
लिपटी देखकर आती जिसको घिन ,
पौष के तीव्र शीत में करती क्रंदन –

"हाय मार गया, पकड़ो, पकड़ो,
धत्त तेरे की !
क्या लिया तुम्हारा मैंने मूज़ी ?
क्यों मुझ को व्यर्थ सताता ?
भागो -भागो,हाय मार गया वह मुझको "
सताए कूकर सी कटु कर्कश वाणी में चिल्लाती
वह कुबड़ी काली सी पगली नारी I
सोचा मैंने ,
पर मै समझ न पाया –
क्या वह है दैव की मारी ?
या समाज की ,जो है अत्याचारी
दोनो ,दलितों ,असहायों पर ?
या सम्बन्धियों की निज
छीन लेते हैं जो दलित बंधुओं से
सूखी रोटी का टुकड़ा भी ?

(i) कवि द्वारा प्रयुक्त 'बिना नाक पर कपड़ा डाले' से क्या तात्पर्य है -
(क) नाक ढकना (ख) मुंह छिपाकर जाना
(ग) दुर्गन्ध से बचने का प्रयास (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं
(ii) प्रयुक्त शब्द 'मूज़ी' का तात्पर्य है-
(क) अत्याचारी (ख) ज़ालिम
(ग) दुष्ट (घ) उक्त सभी
(iii) कवि ने पगली की आवाज़ की तुलना किससे की है-
(क) पक्षी से (ख) गायिका से
(ग) कूकर से (घ)कोई नहीं
(iv) कवि का स्वर कैसा है-
(क)व्यंगात्मक (ख) ओजपूर्ण
(ग) दुखी करने वाला (घ)इनमे से कोई नहीं
(v) क्रंदन शब्द का विलोम है -
(क) रोना (ख) विलाप करना
(ग) प्रसन्न होना (घ) इनमे से कोई नहीं

उत्तर - (i) ग (ii) घ (iii) ग (iv) ग (v) ग

पद्यांश (6)-
ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है
कभी भाग्य के बल से
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से श्रम-जल से
ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा
करते निरुद्यमी प्राणी
धोते वीर कु-अंक भाल के

बहा भ्रुवों का पानी
भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का

(i). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए –

कथन I – भाग्य से प्रकृति झुकती है |

कथन II – मनुष्य भाग्य का निर्माण करता है |

(क) कथन I की सही व्याख्या कथन II करता है |

(ख) कथन I, कथन II की व्याख्या करने में असमर्थ है |

(ग) कथन-I सही है |

(घ) कथन – I गलत है, कथन II सही है |

(ii) प्रकृति मनुष्य के आगे झुकती है :

(क) भाग्य से (ख) स्वयं से (ग) परिश्रम से (घ)उपर्युक्त तीनों से

(iii). मनुष्य ने सुख पाया है :

(क) भाग्य के बल से (ख) दूसरों के बल से

(ग) भुजबल से (घ) उपर्युक्त तीनों से

(iv) इस काव्यांश से क्या प्रेरणा मिलती है?

(क)शोषण करने की (ख) भाग्य के भरोसे बैठने की (ग)उद्यमी प्राणी बनने की (घ)निरुद्यमी प्राणी बनने की

(v). भाग्य का लेख कैसे लोग पढ़ते हैं ?

(क) उद्यमी (ख)निरुद्यमी (ग)परिश्रमी (घ)उपर्युक्त तीनों

उत्तर - (i) घ (ii) ग (iii) ग (iv) ग (v)

नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन

दिए गए नए व अप्रत्याशित विषयों में से

1. किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन 6अंक× 1प्रश्न
2. लेखन की विधियों पर आधारित लगभग 60 शब्दों में एक वर्णनात्मक प्रश्न 3 अंक

महत्वपूर्ण बिंदु

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन एक नई अवधारणा है |जहां एक तरफ निबंध के चित परिचित विषय होते हैं और उसकी चित परिचित शैली होती है, वहीं एकदम अनूठे विषय पर मौलिक प्रयास कर लिखना विद्यार्थियों की प्रतिभा के साथ साथ उनकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता का भी मूल्यांकन करता है।इस प्रकार के लेखन के लिए विषयों की संख्या अपरिमित हो सकती है ।जैसे आपके सामने की दीवार घड़ी, दीवार के बाहर की ओर खुलता झरोखा, सड़क से गुजरते हुए विज्ञापन का कोई होर्डिंग|

नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन कैसे करें? नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन के लिए कोई फार्मूला नहीं है, क्योंकि ऐसे विषयों पर लिखना पूरी तरह से एक मौलिक कार्य होता है। यह कुछ इस तरह से है कि खुले मैदान में व्यक्ति को दौड़ने, कूदने कुलांचे भरने की खुली छूट होती है।नए और अप्रत्याशित विषय पर दिमाग में विचार भी क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से नहीं आते हैं, फिर भी इन्हें सार्थक और सुसंगत रूप से व्यक्त किया जाए तो प्रभावी लेखन संभव है।

वास्तव में जितने व्यक्ति हैं, उनके विचारों में भी उतनी ही प्रकार की मौलिकता है। ऐसे में विद्यार्थियों को उत्तर लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किन बातों पर वह अधिक बल दे, जिससे वह विषय अधिक स्पष्ट होगा। वह यह देखे कि किस दृष्टिकोण से लिखने पर विचार अधिक स्पष्ट और विस्तृत होंगे।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के समय यह अवश्य ध्यान रखें –

1. अप्रत्याशित विषय- जैसा नाम से ही स्पष्ट है, इसके अंतर्गत विषय असीम हैंये ऐसे विषय हो सकते हैं, जो पहली बार आपके सामने आए होंगे।इसमें विधागत सीमा भी नहीं रखी जाती है।आपको कहानी, कविता, आलेख, डायरी, पत्र, यात्रा, संस्मरण, जीवनी आदि किसी भी विधा के विषयों व शैली से लेखन के लिए कहा जा सकता है।

2.सामान्यतः निबंध और आलेख में 'मैं' शैली के प्रयोग की मनाही होती है, लेकिन नए और अप्रत्याशित तरह के लेखन में इसका उपयोग आप कर सकते हैं।इस प्रकार के लेखन में आपके विचारों की आत्मीयता और निजी शैली की भी छाप होती है।

3.अपने मन में उठने वाले विचारों को सुसंगत ढंग से शब्दबद्ध करना होता है।आपके लेखन में एक सुव्यवस्थित क्रम व प्रवाह अवश्य होना चाहिए।

4.अलग-अलग विषयों पर निरंतर अध्ययन के क्रम में तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए-आपकी कल्पनाशीलता, विचारों की विविधता व भाषा।विचारों की विविधता आपमें जितनी अधिक होगी, नए और भिन्न विषयों पर लेखन-कार्य आपके लिए उतना ही सुगम हो जाएगा।

5.भाषा सीखने के क्रम में अपना शब्द-भंडार अधिक से अधिक बढ़ाने का प्रयास कीजिए। आप अच्छा साहित्य पढ़ें|नए शब्दों से परिचित हों|शब्दों के यथोचित प्रयोग पर ध्यान देने से आपकी अभिव्यक्ति क्षमता का स्वतः ही विकास होता है।लेखन करते समय आप विभिन्न संदर्भों व स्थितियों के अनुकूल उचित शब्दों का प्रयोग कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।

6.विभिन्न विषयों पर लेखन कार्य का सतत अभ्यास करना बहुत आवश्यक है।आप लिखें।पश्चात स्वयं जांचें कि आपके लेखन में क्या सुधार हो सकता है।

6.पुनरावृत्ति दोष से बचें।मौलिक चिंतन प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

7.भाषा सहज, सरल व प्रभावी हो।

एक उदाहरण लेते हैं दीवाल घड़ी पर:

पहला दृष्टिकोण उसे देखते ही किसी धारावाहिक का एक खूबसूरत सा दृश्य याद आता है।परीक्षा भवन में विद्यार्थी उत्तर लिख रहा है। उसके सामने प्रश्नों की एक श्रृंखला है।उत्तर लिखते-लिखते उसमें इतना डूब जाता है कि कलाई घड़ी की ओर भी उसका ध्यान नहीं जा रहा है।वह 3 घंटे की एक यात्रा पर निकला है।वह प्रश्नों के माध्यम से गुजरता हुआ उत्तरों की नई-नई दुनिया में प्रवेश करते जाता है।अचानक घंटी बजने लगती है।दीवार पर घड़ी टंगी है।कुछ सेकंड तक संगीत में शोर गूंजता रहता है।वह सिर उठाकर दीवार पर देखता है।2:00 बज गए हैं।अब उससे उत्तर पुस्तिका ले ली जाएगी, लेकिन इन 3 घंटों में उसने सारे सवालों के जवाब दे दिए हैं।

ऐसी कई यादें दीवाल घड़ी के साथ जुड़ी हैं।जैसे, मेरे घर में जब पहली दीवाल घड़ी खरीदी गई, वही अभी तक की आखिरी भी है, तो उसे टांगने की जुगत में पूरा घर जिस तरह लगा रहा, उसकी याद आते ही बेसाख्ता हँसी छूट जाती है।हम सब उस दिन अंकल पोज़र की मुद्रा में थे। हर कोई भवन शास्त्र से लेकर सौंदर्यशास्त्र तक का विशेषज्ञ होने का दावा कर रहा था। घड़ी यहां टंगनी चाहिए, नहीं वहां टंगनी चाहिए।कील ऐसी ठोंकी जानी चाहिए,नहीं वैसी ठोंकी जानी चाहिए।दीवार पर कम से कम 6 जगह उसे टांगे जाने की कोशिश के निशान छूट चुके थे। अगली दीवाली पर गड्ढों के भरे जाने तक दीवाल घड़ी तारों के बीच चमकते धवल चांद की तरह स्थापित रही।यह चाँद ऐसा है,जो तकरीबन सभी मध्यवर्गीय परिवारों में पाया जाता है।

दूसरा दृष्टिकोण वह मेरे ठीक सामने है।एक साफ-सुथरी दीवार पर कील के सहारे टंगी हुई कील दिखती नहीं। इसका मतलब यह कि कील पर उसके टंगे होने का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है,लेकिन तर्क शास्त्रियों ने तो तर्कसंगत अनुमान को भी प्रमाण की ही श्रेणी में रखा है| इसलिए इस तर्क पर आधारित यह अनुमान बिल्कुल निरापद है कि घड़ी कील के सहारे टंगी है| वह अपनी जगह बिल्कुल स्थिर है।पता नहीं कब से लेकिन चल रही है। उसके कानों में एक अनवरत चक्रीय गति है।चक्र या वृत्त की न कोई शुरुआत होती है न उसका अंत होता है।इस तरह इन कांटों की चक्रीय गति हमें बताती है कि समय अनादि अनंत है। घड़ी को दीवार के आसन पर बिठाकर मानो यही बताते रहने का जिम्मा सौंप दिया गया है कि समय लगातार बीत रहा है, पर खत्म होने के लिए नहीं। यह विरोधाभास सा लगता है ना!किसी झुके हुए मर्तबान से लगातार पानी गिर रहा है,पर न पानी कम होता है, न मर्तबान खाली होता है।गौर करें तो यह विरोधाभास नहीं है।समय अनंत है,पर हम सबके अपने-अपना समय अनंत नहीं।घड़ी के चक्र में हर थोड़ी-थोड़ी दूर पर जो लकीरें हैं, वे समय के कृत्रिम खंड ही सही, वे हमें बताती हैं कि हर इंसान का, हर चीज का और हर काम का अपना समय होता है।वह शुरू भी होता है और खत्म भी।

पहला दृष्टिकोण मुख्यतः स्मृति पर आधारित है।दूसरा नमूना दार्शनिक मिजाज़ वाला है।

तीसरा दृष्टिकोण अवलोकन पर आधारित हो सकता है। इसकी शुरुआत कुछ इस तरह हो सकती है, वह मेरे ठीक सामने है| एक साफ-सुथरे दीवार पर कील के सहारे टंगी हुई बिल्कुल स्थिर है अपनी जगह पर।पता नहीं कब से लगातार चल रही है।हिंदी में टिक टिक टिक टिक और अंग्रेजी में टिक टॉक टिक टॉक।उसे अंग्रेजी या हिंदी नहीं आती है पर दोनों तरह के भाषा भाषी उसकी पदचाप को अपने-अपने तरीके से सुनते हैं।ठीक वैसे ही जैसे कुत्तों को अंग्रेजी हिंदी नहीं आती पर अंग्रेजी समाज के लिए वह बाउ-बाउ करता

है और हिंदी समाज के लिए भौं-भौं।कमरे की चारों दीवारों पर कहीं भी और कुछ नहीं है।न तो कोई पेंटिंग,न कैलेंडर। ऐसे में इस गोलाकार घड़ी का वजूद सिर्फ उपयोगितावादी नहीं लगता।खूबसूरती के लिए भी है।

प्रश्न अभ्यास(2022 23 प्रश्न क्रमांक 7 व 8)

प्रश्न:'कोरोना की विदाई के दौर में'विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए|

उत्तर:- कोरोना वायरस संकमण के लंबे दौर में हमें अत्यंत सूझबूझ, धैर्य और आत्म-नियंत्रण के साथ इस विकट स्थिति से तादात्म्य स्थापित करना पड़ा है। देश में महीनों तक चले लंबे लॉकडाउन और उसके बाद क्रमशः अनलॉक होता हमारा भारत एक अभूतपूर्व स्थिति से गुजरा है।कोरोना संकट ने हमें अपनी क्षमता को परखने और मानसिक रूप से और मजबूत होने का अवसर भी प्रदान किया है।अब कोरोना वायरस की विदाई के दौर में भी अत्यंत सावधानी व सतर्कता बरतने की आवश्यकता है|मास्क, दो गज सुरक्षित दूरी,सेनिटाइजर, बार-बार हाथ धोने और स्वच्छता के नए मानकों को जीवन भर अपना लेने में कोई बुराई नहीं है। यह हम सबके लिए अच्छा है और ऐसा करके हम किसी भी संक्रामक रोग के खिलाफ एक सुरक्षा चक्र के निर्माण में अपना सहयोग दे रहे होते हैं।कोराना की रफ्तार धीमी पड़ने के बाद सार्वजनिक आयोजन और उत्सव इस दौर के बाद भी होंगे, लेकिन तब तक सब कुछ बदल चुका होगा और यह भी एक सकारात्मक बात होगी।

कोरोना के कारण विश्व की अरबों की आबादी अपने घरों में कैद थी।कारखानों में उत्पादन गिरा।सड़कों पर वाहन नहीं चले और इन सबका प्रभाव यह हुआ कि आकाश में दूषित हवा का स्तर गिरा ।इतना ही नहीं, सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों से हमारी धरती के ओजोन रक्षाकवच और इसमें खतरनाक ढंग से गहरे हो चले बड़े-बड़े छिद्र अब धीरे-धीरे भरने लगेंगे।इससे विशेषकर धरती का पारिस्थितिकी तंत्र बेहतर होगा और जैव विविधता की रक्षा होगी।निश्चय ही कोरोनावायरस ने हम सब को पर्यावरण के प्रति अत्यंत सचेत कर दिया है।जनजीवन पहले से अधिक सतर्क, सजग, सावधान और मानवीय हो चला है।

प्रश्न-निम्नलिखित विषयों पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन कीजिए-

झरोखे से बाहर
सावन की पहली झड़ी
इम्तिहान के दिन
महामारी और हम
आधुनिक जीवन-शैली
स्वास्थ्य से बड़ा कुछ भी नहीं है
ऑनलाइन शिक्षा
लॉकडाउन के मेरे अनुभव
कोरोना वैक्सीन: कोरोना की विदाई
कोरोना काल के बाद की दुनिया
भीड़ भरी ट्रेन का अनुभव
जब मेरी ट्रेन छूट गई
मेरा वह जन्मदिन जो मुझे आज भी याद है
स्कूल में मेरा पहला दिन
उस दिन जब मैं बहुत उदास था
मेरे सपनों का स्कूल
मेरे जीवन का लक्ष्य
किताबें जो मुझे बहुत प्रिय हैं
मेरी पसंदीदा कहानी
सिनेमा देखने का मेरा पहला अनुभव
खाना पकाना भी एक कला है
मैं जब बीमार पड़ा
जब मुझे किसी ने डांटा
मैंने जब सायकल चलाना सीखा
बाढ़ का मेरा अनुभव
उस दिन मूसलाधार बारिश हुई
हर समस्या का हल है
गांव और शहर का जीवन
नदियों का महत्त्व
दिया और तूफान
सड़क की होर्डिंग
मेरा प्रिय टाइमपास
कोरोना: कोई रोड पर निकलो ना

प्रश्न 2. रटंत पद्धति को एक बुरी आदत माना जाता है ।नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के द्वारा इस आदत से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर -रटंत का अर्थ है दूसरों के द्वारा तैयार सामग्री को याद करके प्रस्तुत कर देने की आदत।

इस आदत के दुष्परिणाम निम्नलिखित हैं- 1. असली अभ्यास का मौका ना मिलना

2. भावों की मौलिकता समाप्त हो जाना

3. चिंतन शक्ति क्षीण होना

4. सोचने की क्षमता में कमी होना

5. दूसरों के लिखे पर आश्रित होना

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन द्वारा इस आदत से बचा जा सकता है, क्योंकि इससे अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्ति से मानसिक और आत्मिक विकास होता है।

प्रश्न 3. रचनात्मक लेखन को मन पंछी की उड़ान कहा जाता है, तो इस उड़ान पर लगाम भी क्यों आवश्यक है?

उत्तर -एकदम अनूठे विषय पर मौलिक प्रयास कर लिखना विद्यार्थियों की प्रतिभा के साथ साथ उनकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को एक नया क्षितिज प्रदान करता है। ऐसे विषय पर लिखना एक मन पंछी की मनचाही उड़ान के समान है। भाव पल्लवन चाहे जहां तक हो सकता है, ले किन ध्यान यह रखा जाना चाहिए कि विषय का विस्तार इतना ना हो जाए कि यह अनियंत्रित हो जाए। इसलिए रचनात्मक लेखन असीमित नहीं होता।उसमें तारतम्यता और सुसंगति का होना बहुत आवश्यक है।

प्रश्न 4. अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के नए विषय किस प्रकार सहायक सिद्ध होते हैं?

उत्तर-अभिव्यक्ति का अधिकार मनुष्य का एक मौलिक अधिकार है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से कर सकता है। निबंध विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्त करने से लेखक का मानसिक और आत्मिक विकास होता है। इससे लेखक की चिंतन शक्ति का विकास होता है। इससे लेखक को बौद्धिक विकास तथा अनेक विषयों की जानकारी होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के विषय बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

प्रश्न 5. नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर-नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
2. विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।
3. विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए।
4. विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए।
5. विचारों का विस्तार तो होना चाहिए लेकिन यह विषय के मुख्य बिंदुओं से भटकाव वाली स्थिति में न हो।
6. विचारों में मौलिकता होनी चाहिए।

प्रश्न 6. नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में क्या-क्या बाधाएँ आती हैं ?
उत्तर-नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार है-
1. सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।
2.. लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।
3. लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।
4. लेखक की चिंतन शक्ति, कल्पनाशीलता मंद पड़ जाती है।
5. शब्दकोश की कमी हो जाती है।

अप्रत्याशित रचनात्मक लेखन-

1. परीक्षा के दिन
2. दिया और तूफान
3.रेलगाड़ी की पहली यात्रा
4. नौका विहार
5.यदि में जिला कलेक्टर होता तो
6. यदि मैं अध्यापक होता तो
7. कक्षा में मेरी पहली शरारत
8. घोसलों से झांकते चिड़ियों के बच्चे
9. मेरी जिंदगी में कोचिंग का स्थान
10. घड़ी की टिक-टिक आवाज
11. बारिश की पहली बूंद
12.सुकून के कुछ पल
13. आसमान में टिमटिमाते तारे
14. आकाश में उड़ते परिंदे
15. समुद्र की खामोशी
16. मैं और खुला आसमां
17. सैलून वाला
18. मेरे स्कूल का पहला दिन
19. खुद से मेरी उम्मीदें
20. मेरी दुनिया
21. मैं पापा की एक नन्ही परी
22. मेरे अधूरे सपने
23. मेरे जिंदगी के खास पल

1. परीक्षा के दिन

हम सबके विद्यार्थी-जीवन में परीक्षाओं का सामना करना बिल्कुल आम बात है। इसके बावजूद भी परीक्षा के कठिन दिन का सामना करना मेरे लिए बहुत डरावना रहता है। मैं बहुत घबराए रहता हूँ। मैंने जो कुछ भी पढ़ा या याद किया उस हर चीज को बार-बार दोहराना चाहता हूँ। मैं प्रश्न-पत्र के बारे में सोचते रहता हूँ। मेरा विश्वास है कि यदि मैं पहले दिन अच्छा करूँगा तो परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ। इसलिए परीक्षा का कठिन दिन भयानक लगता है। कुछ छात्र परीक्षाओं के कठिन दिन के पहले की रात सो नहीं पाते। बोर्ड-परीक्षा का मेरा परीक्षा का कठिन दिन भी ऐसा ही था।

परीक्षा के दिन मैं अपनी समस्त शक्ति अध्ययन की ओर केन्द्रित कर एकाग्रचित होकर सम्भावित प्रश्नों को कंठस्थ करने के लिए लगा देता हूँ ये दिन मेरे लिए परीक्षा देवो को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान करने के दिन जैसा है, गृहकार्यों से मुक्ति, खेल-तमाशों से छुट्टी और मित्रों- साथियों से दूर रहने के दिन हैं।

परीक्षा परीक्षार्थी के लिए भूत है। भूत जिस पर सवार हो जाता है उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है, दिन की भूख गायब हो जाती है और घर में सगे-सम्बन्धियों का आना बुरा लगता है। दूरदर्शन के मनोरंजक कार्यक्रम, मनपसन्द एपीसोड, चित्रहार आदि समय नष्ट करने के माध्यम लगते हैं।

परीक्षा के इन कठिन दिनों में परीक्षा-ज्वर (बुखार) चढ़ा होता है, जिसका तापमान परीक्षा-भवन में प्रवेश करने तक निरन्तर चढ़ता रहता है और प्रश्न-पत्र हल करके परीक्षा-भवन से बाहर आने पर ही सामान्य होता है। फिर अगले विषय की तैयारी का स्मरण होता है। ज्वरग्रस्त परीक्षार्थी निरन्तर विश्राम न कर पाने की पीड़ा से छटपटाता है। परीक्षाज्वर से ग्रस्त परीक्षार्थी क्रोधी बन जाता है, चिन्ता उसके स्वास्थ्य को चौपट कर देती है।

2. दीया और तूफान

मिट्टी का बना हुआ एक नन्हा सा दिया जब चलता है। तो रात्रि के अंधकार से लड़ता हुआ उसे दूर भगा देता है। अपने आसपास हल्का सा उजाला फैला देता है। जिस अंधकार में हाथ को हाथ नहीं सोचता उसे भी दीया अपना मंद प्रकाश अकेला रास्ता दिखा देता है। हवा का झोंका जब दिए से लोगों को शोभा देता है। तब ऐसा लगता है कि इसके बुझते ही अंधकार फिर जाएगा और फिर हमें उजाला कैसे मिलेगा? दीया चाहे छोटा सा हो या बड़ा पर वह अकेला अंधकार के संस्कार का सामना कर सकता है। तो हम इंसान जीवन की राह में आने वाली कठिनाइयों का भी उसी तरह से मुकाबला क्यों नहीं कर सकते। यदि वह तूफान का सामना करके अपने टिमटिमाती लौ से प्रकाश फैला सकता है। तो हम भी हर कठिनाइयों में कर्मठ बनकर संकटों से निकल सकते हैं।

महाराणा प्रताप ने सब कुछ खोकर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की ठानी थी। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने निर्देश दिए कि सामान्य जीव की कठोरता का सामना किया था और विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत का प्रधानमंत्री पद प्राप्त कर लिया था हमारे राष्ट्रपति कलाम ने अपने जीवन टिमटिमाते दीये के समान आरंभ किया था पर आज वही दीया हमारे देश की मिसाइलें प्रदान करने वाला प्रचंड अग्नि बम है। उन्होंने देश को जो शक्ति प्रदान की है वह सत्युतु है। समुद्र में एक छोटी सी नौका सूची तूफानी लहरों से टकराती हुई अपना रास्ता बना लेती है और अपनी मंजिल पा लेती है। एक छोटा सा प्रवासी पक्षी साइबेरिया से उड़कर हजारों लाखों मिल दूर पहुंच सकता है। तो हम इंसान भी कठिन से कठिन मंदिर प्राप्त कर सकते हैं।

अकेले अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में कौरवों जैसे महारथियों का डटकर सामना किया था। कभी-कभी तूफान अपने प्रचंड वेग से दीए किलो को बुझा देता है पर जब तक दीया जगमगाता है तब तक तो अपना प्रकाश फहलाता है और अपने अस्तित्व को प्रकट करता है। मरना तो सभी को 1 दिन। मैं तो जीवन में आने वाली तमाम कठिनाइयों का डटकर मुकाबला करता हूँ, और मंटा हूँ कि श्रेष्ठ मनुष्य वही होता है जो समाज में तूफानों की परवाह ना करें और अपनी रोशनी से संसार को प्रज्ज्वलित करता रहे।

3. रेलगाड़ी की पहली यात्रा

ज़िन्दगी में रेल यात्रा करना हर किसी को रोमांच से भर देता है । हम हमेशा कामना करते है कि हमारी यात्रा सुखमयी हो । भारत की लगभग नब्बे फीसदी लोग रेल से सफर करते है । मेरी प्रथम रेल यात्रा मेरे लिए यादगार है । मैं इसे कभी नहीं भूल सकती हूँ। वह यात्रा मेरे लिए स्मरणीय अनुभव है । मैं महज़ 10 साल की थी जब मैंने अपनी प्रथम रेल यात्रा की थी । मैं रेलवे स्टेशन जाने के लिए बड़ी उत्सुक थी क्योंकि उसके पहले मैंने सामने से ट्रेन कभी नही देखी थी । मैं अपने चाचा चाची के साथ रेलवे स्टेशन पहुंची थी । बहुत सारे कुली रेलवे प्लेटफार्म पर आवाज़ लगा रहे थे । चाचा ने एक कुली को बुलाकर ट्रैन में सामान रखने के लिए कहा था । ट्रैन रेलवे प्लेटफार्म पर खड़ी थी । मैं गुवाहाटी से हावड़ा जा रही थी । ट्रैन की बोगी में घुसकर चाचा- चाची ने सामान अंदर रखा और मैं खिड़की के पास वाले बर्थ पर जाकर बैठ गयी ।

ट्रैन के खिड़की के बाहर मैंने खूबसूरत दृश्य देखा जैसे पहाड़ , पेड़ ,पौधे ,हर -भरे लहलहाते खेत भी देखे । मेरा मन ख़ुशी से झूम उठा और चाची ने मुझे कहा कि मुझे अपना हाथ ट्रैन के खिड़की से बाहर नहीं निकालना है । पास ही के बर्थ में मेरी उम्र की एक लड़की खेल रही थी । मैं उसके पास चली गयी और हम दोनों की अच्छी दोस्ती हो गयी और हम अपने गुड़ियों के साथ खेलने लगे थे ।फिर चाची ने लंच के लिए आवाज़ लगायी । बीच बीच में ट्रैन की छुक-छुक आवाज़ मेरे मन को भा जाती थी ।

उसके बाद कुछ खिलौने बेचने वाले लोग ट्रैन पर चढ़े थे । मैंने अपने चाचा से ज़िद्द कि मुझे नयी गुड़िया दिला दे । चाचा को मेरे जिद्द के समक्ष विवश होना पड़ा और उन्होंने खिलौने दिलवाये । खिड़की से बाहर का दृश्य बेहद खूबसूरत था । मैं बहुत उत्सुकता से चारो और देख रही थी । क्यों कि यह रेल यात्रा मेरे लिए प्रथम थी और इसकी सारी मीठी यादें मेरे दिल के बेहद करीब है ।मेरे लिए यह सफर रोमांच से भरा हुआ था । खिड़की से बाहर की हरियाली बेहद आकर्षक थी और देखने वालों का मन मोह लेती थी । मेरे बर्थ के पास जो लड़की थी उसका नाम रौशनी था । हम दोनों अंताक्षरी खेल रहे थे और उसके बाद हमने लूडो भी खेला था । शाम होने को आयी थी ट्रैन की खिड़कियों से ठंडी -ठंडी हवा आ रही थी और उसका आनंद हर कोई ले रहा था ।

फिर गरमा गर्म कचोरी और समोसे वाला ट्रैन में आ गया था । हमने मज़े से गरमा गर्म कचोरी खाये और चाचा ने चाय भी मंगवाई थी । फिर चाची ने मुझे कहानियों के किताब पढ़ने के लिए दिए था और मैंने परियों और जादुई वाली कहानियां पढ़ी थी । मेरा मन उत्साह से भर चूका था । चाचा अखबार पढ़ने में ज़्यादा व्यस्त थे। फिर रात होने को आयी और चाचा ने ट्रैन पर ही रात के खाने का आर्डर दे दिया था । हमने रोटी , सब्ज़ी और मिठाई खायी थी । उसके बाद चाची ने बर्थ पर चादर बिछाई और तकिया लगा दिया और मुझे सोने के लिए कहा । मैं रौशनी के साथ मज़े कर रही थी ।

फिर रात बहुत हो गयी थी और चाची का कहना मानकर मैं सोने के लिए चली गयी । सुबह पांच बजे मेरी नींद खुली तो देखा चाचा चाय की चुस्कियां ले रहे थे । सफर लम्बा था लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था की पल भर में समाप्त हो गया।

ट्रैन अपनी रफ़्तार से भाग रही थी । सफर में भूख बड़ी लग जाती है । फिर गरमा गर्म नाश्ता किया और इस बार थोड़ी मैंने कॉफ़ी भी पी। यहीं मेरी रेल की पहली यात्रा समाप्त हो गई।

4. नौका-विहार

नौका विहार करना एक अच्छा शौक, एक स्वस्थ खेल, एक प्रकार का श्रेष्ठ व्यायाम तो है ही साथ ही, मनोरंजन का भी एक अच्छा साधन है । सुबह-शाम या दिन में तो लोग नौकायन या नौका-विहार किया ही करते हैं, पर चांदनी रातों में ऐसा करने का सुयोग कभी कभार ही प्राप्त हो पाता है ।

गत वर्ष शरद पूर्णिमा की चांदनी में नौका विहार का कार्यक्रम बनाकर हम कुछ मित्र (पिकनिक) मनाने के मूड में सुबह सवेरे ही खान-पान एवं मनोरंजन का कुछ सामान लेकर नगर से कोई तीन किलोमीटर दूर बहने वाली नदी तट पर पहुँच गए।

वर्षा बीत जाने के कारण नदी तो यौवन पर थी ही, शरद ऋतु का आगमन हो जाने के कारण प्राकृतिक वातावरण भी बड़ा सुन्दर, सुखद, सजीव और निखार पर था । लगता था कि वर्षा ऋतु के जल ने प्रकृति का कण-कण, पत्ता-पत्ता धो-पोंछ कर चारों ओर सजा सवार दिया है । मन्द-मन्द पवन के झोंके चारों ओर सुगन्धी को बिखेर वायुमण्डल और वातावरण को सभी तरह से निर्मल और पावन बना रहे थे ।

उस सबका आनन्द भोगते हुए आते ही घाट पर जाकर हमने नाविकों से मिलकर रात में नौका विहार के लिए दो नौकायें तय कर लीं और फिर खाने-पीने, खेलने, नाचने गाने, गप्पे और चुटकलेबाजी में पता ही नहीं चल पाया कि सारा दिन कब बीत गया शाम का साया फैलते ही हम लोग चाय के साथ कुछ नाश्ता कर, बाकी खाने-पीने का सामान हाथ में लेकर नदी तट पर पहुँच गए । वहाँ तय की गई दोनों नौकाओं के नाविक पहले से ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। सो हम लोगों के सवार होते ही उन्होंने चप्पू सम्हाल कलकल बहती निर्मल जलधारा पर हंसिनी-सी तैरने वाली नौकायें छोड़ दीं ।

तब तक शरद पूर्णिमा का चांद आकाश पर पूरे निखार पर आकर अपनी उजली किरणों से अमृत वर्षा करने लगा था । हमने सुन रखा था कि शरद पूर्णिमा की रात चाँद की किरणें अमृत बरसाया करती हैं, सो उनकी तरफ देखना एक प्रकार की मस्ती और पागलपन का संचार करने वाला हुआ करता है।

इसे गप्प समझने वाले हम लोग आज सचमुच उस सबका वास्तविक अनुभव कर रहे थे । चप्पू चलने से कलकल करती नदी की शान्त धारा पर हंसिनी-सी नाव धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। किनारे क्रमश: हमसे दूर छिटकते जा रहे थे । दूर हटते किनारों और उन पर उगे वृक्षों के झाड़ों की परछाइयां धारा में बड़ा ही सम्मोहक सा दृश्य चित्र प्रस्तुत करने लगी थीं।

कभी-कभी टिटीहरी या किसी अन्य पक्षी के एकाएक चहक उठने, किसी अनजाने पक्षी के पख फड़फड़ा कर हमारे ऊपर से फुर्र करके निकल जाने पर वातावरण जैसे कुछ सनसनी सी उत्पन्न कर फिर एकाएक रहस्यमय हो जाता। हैरानी और विमुग्ध आंखों से सब देखते सुनते हम लोग लगता कि जैसे अदृश्यर्श्व परीलोक में आ पहुँचे हों ।

चाँद नशीला होकर कुछ और ऊपर उठ आया था । हमारी नौका अब नदी की धारा के मध्य तक पहुँच चुकी थी । नाविक ने लग्गी से थाह नापने का असफल प्रयास करते हुए बताया कि वहां धारा जल अथाह है, अमाप है । हमने उस पारदर्शी जल के भीतर तक देखने का प्रयास किया कि जो नाव के प्रवाह के कारण हिल रहा था ।उसके साथ ही हमें परछाई के रूप में धारा में समाया बैठा चांद और असंख्य तारों का संसार भी हिलता-डुलता नजर आया । ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे धारा का भीतरी भाग उजली रेशम पर जड़े तारों और चाँद का ही बुना या बना हुआ है । तभी कहीं दूर से पपीहे का स्वर सुनाई दिया और इसके साथ ही नाविकों ने विरह की कोई सम्मिलित तान छेड़ दी ।

नाविकों ने अब चप्पू चलाना बन्द कर दिया था । लगातार खुम्मार में वृद्धि पाती उस चांदनी रात में हमारी नौकाएं अब मन की मौजों की तरह स्वेच्छा से बही चली जा रही थीं । पता नहीं कहाँ या किधर ? चारों ओर का वातावरण और भी नशीला हो गया था । हम जो नौकाओं में बजाने-गाने के लिए अपने वाद्य लाए थे, उनकी तरफ देखने-छूने तक की फुर्सत हमें अनुभव नहीं हुई ।

चांदनी रात और उसमें जलधारा पर विहार करती नौका के कारण जिस एक मादक प्राकृतिक गीत-संगीत की सृष्टि हो रही थी कि उसके सामने और कुछ याद रख या कर पाना कतई संभव ही नहीं था । बस, एक-दूसरे की तरफ देखते हुए हम लोग केवल बहते-अनकही कहते रहे। इस तरह रसपान करते हुए नदी से बाहर आकर अपने अपने घर चल दिये।

5. यदि मैं जिला कलेक्टर होता तो

सबसे पहले में बताना चाहूँगा कि 'कलेक्टर' जिले में राज्य सरकार का सर्वोच्च अधिकार संपन्न प्रतिनिधि या प्रथम लोक-सेवक होता है। जो मुख्य जिला विकास अधिकारी के रूप में सारे प्रमुख सरकारी विभागों- पंचायत एवं ग्रामीण विकास, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेद, अल्पसंख्यक कल्याण, कृषि, भू-संरक्षण, शिक्षा, महिला अधिकारता, ऊर्जा, उद्योग, श्रम कल्याण, खनन, खेलकूद, पशुपालन, सहकारिता, परिवहन एवं यातायात, समाज कल्याण, सिंचाई, सार्वजनिक निर्माण विभाग, स्थानीय प्रशासन आदि के सारे कार्यक्रमों और नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन करवाने के लिए अपने जिले के लिए अकेले उत्तरदायी होता है।

मैं सर्वप्रथम जिला में कुछ प्रमुख क्षेत्रों पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित करता । जैसे-

1.शान्ति और कानून व्यवस्था बनाये रखना। कहीं भी किसी भी तरह की आपत्तिजनक या अनुशासन हीनता पूर्ण व्यवहार न होने देता। सबसे पहले शराब की सारी दुकानों पर बैन लगा देता। जो कि हमारी युवा पीढ़ी को गर्त की ओर ले जा रहे। और शराब पीकर समाज की शांति को भंग करते हैं।

2. नागरिकों को चिकित्सा सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करने के लिए जिले के सभी क्षेत्रों में दवाखानों का प्रबन्ध करना तथा दवाखानों में मिलने वाली समस्त सुविधाएं- डॉक्टर की उपस्थिति, दवाओं का उचित वितरण, चिकित्सालयों की साफ सफाई आदि पर शख्ती से पालन करवाता।

3. शिक्षा विभाग की देखभाल- विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति, कक्षा शिक्षण का समय समय पर निरीक्षण, विद्यालय की साफ सफाई, पौष्टिक मध्यान्ह भोजन दिया जा रहा या नही, छात्रों की उपस्थिति आदि का निरीक्षण का कार्य जिला शिक्षा अधिकारी को सौपता तथा उसपर स्वयं निगरानी रखता शिक्षा के मामले में किसी तरह की कोई ढिलाई न होने देता।

4. पानी की भी व्यवस्था पर गौर करूँगा की गांव में पर्याप्त मात्रा में हैंड पम्प है या नहीं, तथा कितने खराब है और कितने इस्तमाल में है। खराब हैंडपम्प को तुरंत रिपेयर करवाता।और शहरी क्षेत्र में पानी की सप्लाई समय अनुसार करवाता और टंकी की साफ सफाई का भी ख्याल रखता।

5. सरकारी इमारतों का निर्माण व देखरेख की जिम्मेदारी लोकनिर्माण विभाग से समय समय पर सूचना एकत्रित करता तथा उनके कार्यान्वयन का निरीक्षण करता।

6. पंचायती राज तथा अन्य संस्थाओं का प्रबन्ध व नियन्त्रण भी करता है ।

7.जिलास्तर पर मैं प्रशासन को नेतृत्व प्रदान करता हैं. क्योंकि कलेक्टर जिला प्रशासन की धुरी हैं. जिला स्तरीय प्रशासन में समन्वय स्थापित करने के दायित्व को पूर्ण करता हैं.

जिलाधीश राज्य, जिला प्रशासन तथा जनता के मध्य कड़ी का कार्य करता हैं.

8. संकटकालीन प्रशासक के रूप में जिलाधीश की भूमिका मसीहा के समान हो जाती हैं. इसलिये प्राकृतिक विपदाओं में घायलों के उपचार, निवास, भोजन आदि की व्यवस्था, विस्थपितों के पुनर्स्थापन व उन्हें मुआवजा राशि देना आदि का भी ख्याल रखूंगा।

इस प्रकार मैं राज्य सरकार की आँख व कान तथा बाहों की भांति अपने कार्य का निर्वहन करता। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए-

पाठ्यक्रम का खंड ब **5-1,2**
प्रादर्श प्रश्नपत्र का प्रश्न क्रमांक **7** व **8** का एक भाग
नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन

दिए गए नए व अप्रत्याशित विषयों में से निम्नलिखित दो तरह के प्रश्न आएँगे-

1.पाठ्यक्रम खंड **5- (1)**

प्रश्नपत्र प्रश्न क्रमांक **7** किसी एक विषय पर लगभग **120** शब्दों में रचनात्मक लेखन **6**अंक × **1**प्रश्न

2. पाठ्यक्रम खंड **5 (2)** का एक भाग ,प्रश्नपत्र प्रश्न क्रमांक **8** का एक भाग

लेखन की विधियों पर आधारित लगभग **60** शब्दों में दो वर्णनात्मक प्रश्न **6** अंक(अर्थात नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन एक प्रश्न **3** अंक)

किसी एक विषय पर लगभग **120** शब्दों में रचनात्मक लेखन **6**अंक × **1**प्रश्न

महत्वपूर्ण बिंदु

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन एक नई अवधारणा है |जहां एक तरफ निबंध के चिर परिचित विषय होते हैं और उसकी परिचित शैली होती है, वहीं एकदम अनूठे विषय पर मौलिक प्रयास कर लिखना विद्यार्थियों की प्रतिभा के साथ साथ उनकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता का भी मूल्यांकन करता है।इस प्रकार के लेखन के लिए विषयों की संख्या अपरिमित हो सकती है ।जैसे आपके सामने की दीवार घड़ी, दीवार के बाहर की ओर खुलता झरोखा, सड़क से गुजरते हुए विज्ञापन का कोई होर्डिंग|

नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन कैसे करें**?**

नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन के लिए कोई फार्मूला नहीं है, क्योंकि ऐसे विषयों पर लिखना पूरी तरह से एक मौलिक कार्य होता है। यह कुछ इस तरह से है कि खुले मैदान में व्यक्ति को दौड़ने, कूदने कुलांचे भरने की खुली छूट होती है।नए और अप्रत्याशित विषय पर दिमाग में विचार भी क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से नहीं आते हैं, फिर भी इन्हें सार्थक और सुसंगत रूप से व्यक्त किया जाए तो प्रभावी लेखन सुनिश्चित है।

वास्तव में जितने व्यक्ति हैं, उनके विचारों में भी उतनी ही प्रकार की मौलिकता है।ऐसे में विद्यार्थियों को उत्तर लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किन बातों पर वह अधिक बल दे, जिससे वह विषय अधिक स्पष्ट होगा। वह यह देखे कि किस दृष्टिकोण से लिखने पर विचार अधिक स्पष्ट और विस्तृत होंगे।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के समय यह अवश्य ध्यान रखें –

1. अप्रत्याशित विषय- जैसा नाम से ही स्पष्ट है, इसके अंतर्गत विषय असीम हैं।ये ऐसे विषय हो सकते हैं, जो पहली बार आपके सामने आए होंगे।इसमें विधागत सीमा भी नहीं रखी जाती है।आपको कहानी, कविता, आलेख, डायरी, पत्र, यात्रा, संस्मरण, जीवनी आदि किसी भी विधा के विषयों व शैली से लेखन के लिए कहा जा सकता है।

2.सामान्यतः निबंध और आलेख में 'मैं' शैली के प्रयोग की मनाही होती है, लेकिन नए और अप्रत्याशित तरह के लेखन में इसका उपयोग आप कर सकते हैं।इस प्रकार के लेखन में आपके विचारों की आत्मीयता और निजी शैली की भी छाप होती है।
3.अपने मन में उठने वाले विचारों को सुसंगत ढंग से शब्दबद्ध करना होता है।आपके लेखन में एक सुव्यवस्थित क्रम व प्रवाह अवश्य होना चाहिए।
4.अलग-अलग विषयों पर निरंतर अध्ययन के क्रम में तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए-आपकी कल्पनाशीलता, विचारों की विविधता व भाषा।विचारों की विविधता आपमें जितनी अधिक होगी, नए और भिन्न विषयों पर लेखन-कार्य आपके लिए उतना ही सुगम हो जाएगा।
5.भाषा सीखने के क्रम में अपना शब्द-भंडार अधिक से अधिक बढ़ाने का प्रयास कीजिए। आप अच्छा साहित्य पढ़ें।नए शब्दों से परिचित हों।शब्दों के यथोचित प्रयोग पर ध्यान देने से आपकी अभिव्यक्ति क्षमता का स्वतः ही विकास होता है।लेखन करते समय आप विभिन्न संदर्भों व स्थितियों के अनुकूल उचित शब्दों का प्रयोग कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।
6.विभिन्न विषयों पर लेखन कार्य का सतत अभ्यास करना बहुत आवश्यक है।आप लिखें।पश्चात स्वयं जांचें कि आपके लेखन में क्या सुधार हो सकता है।
6.पुनरावृत्ति दोष से बचें।मौलिक चिंतन प्रस्तुत करने का प्रयास करें।
7.भाषा सहज, सरल व प्रभावी हो।

एक उदाहरण लेते हैं दीवाल घड़ी पर:

पहला दृष्टिकोण
उसे देखते ही किसी धारावाहिक का एक खूबसूरत सा दृश्य याद आता है।परीक्षा भवन में विद्यार्थी उत्तर लिख रहा है। उसके सामने प्रश्नों की एक श्रृंखला है।उत्तर लिखते-लिखते उसमें इतना डूब जाता है कि कलाई घड़ी की ओर भी उसका ध्यान नहीं जा रहा है।वह **3** घंटे की एक यात्रा पर निकला है।वह प्रश्नों के माध्यम से गुजरता हुआ उत्तरों की नई-नई दुनिया में प्रवेश करते जाता है।अचानक घंटी बजने लगती है।दीवार पर घड़ी टंगी है।कुछ सेकंड तक संगीत में शोर गूंजता रहता है।वह सिर उठाकर दीवार पर देखता है।**2:00** बज गए हैं।अब उससे उत्तर पुस्तिका ले ली जाएगी, लेकिन इन **3** घंटों में उसने सारे सवालों के जवाब दे दिए हैं।
ऐसी कई यादें दीवाल घड़ी के साथ जुड़ी हैं।जैसे, मेरे घर में जब पहली दीवाल घड़ी खरीदी गई, वही अभी तक की आखिरी भी है, तो उसे टांगने की जुगत में पूरा घर जिस तरह लगा रहा, उसकी याद आते ही बेसाख्ता हँसी छूट जाती है।हम सब उस दिन अंकल पोज़र की मुद्रा में थे। हर कोई भवन शास्त्र से लेकर सौंदर्यशास्त्र तक का विशेषज्ञ होने का दावा कर रहा था। घड़ी यहां टंगनी चाहिए, नहीं वहां टंगनी चाहिए।कील ऐसी ठोंकी जानी चाहिए,नहीं वैसी ठोंकी जानी चाहिए।दीवार पर कम से कम **6** जगह उसे टांगे जाने की कोशिश के निशान छूट चुके थे। अगली दीवाली पर गड्ढों के भरे जाने तक दीवाल घड़ी तारों के बीच चमकते धवल चांद की तरह स्थापित रही।यह चाँद ऐसा है,जो तकरीबन सभी मध्यवर्गीय परिवारों में पाया जाता है।
दूसरा दृष्टिकोण
वह मेरे ठीक सामने है।एक साफ-सुथरी दीवार पर कील के सहारे टंगी हुई कील दिखती नहीं। इसका मतलब यह कि कील पर उसके टंगे होने का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है,लेकिन तर्क शास्त्रियों ने तो तर्कसंगत अनुमान को भी प्रमाण की ही श्रेणी में रखा है| इसलिए इस तर्क पर आधारित यह अनुमान बिल्कुल निरापद है कि घड़ी कील के सहारे टंगी है| वह अपनी जगह बिल्कुल स्थिर है।पता नहीं कब से लेकिन चल रही है। उसके कानों में एक अनवरत चक्रीय गति है।चक्र या वृत्त की न कोई शुरुआत होती है न उसका अंत होता है।इस तरह इन कांटों की चक्रीय गति हमें बताती है कि समय अनादि अनंत है। घड़ी को दीवार के आसन पर बिठाकर मानो यही बताते रहने का जिम्मा सौंप दिया गया है कि समय लगातार बीत रहा है, पर खत्म होने के लिए नहीं। यह विरोधाभास सा लगता है ना!किसी झुके हुए मर्तबान से लगातार पानी गिर रहा है,पर न पानी कम होता है, न मर्तबान खाली होता है।गौर करें तो यह विरोधाभास नहीं है।समय अनंत है,पर हम सबके अपने-अपना समय अनंत नहीं।घड़ी के चक्र में हर थोड़ी-थोड़ी दूर पर जो लकीरें हैं, वे समय के कृत्रिम खंड ही सही, वे हमें बताती हैं कि हर इंसान का, हर चीज का और हर काम का अपना समय होता है।वह शुरू भी होता है और खत्म भी।
पहला दृष्टिकोण मुख्यतः स्मृति पर आधारित है।दूसरा नमूना दार्शनिक मिजाज़ वाला है।

तीसरा दृष्टिकोण
यह अवलोकन पर आधारित हो सकता है। इसकी शुरुआत कुछ इस तरह हो सकती है, वह मेरे ठीक सामने है| एक साफ-सुथरे दीवार पर कील के सहारे टंगी हुई बिल्कुल स्थिर है अपनी जगह पर।पता नहीं कब से लगातार चल रही है।हिंदी में टिक टिक टिक टिक और अंग्रेजी में टिक टॉक टिक टॉक।उसे अंग्रेजी या हिंदी नहीं आती है पर दोनों तरह के भाषा भाषी उसकी पदचाप को अपने-अपने तरीके से सुनते हैं।ठीक वैसे ही जैसे कुत्तों को अंग्रेजी हिंदी नहीं आती पर अंग्रेजी समाज के लिए वह बाउ-बाउ करता है और हिंदी समाज के लिए भौं-भौं।कमरे की चारों दीवारों पर कहीं भी और कुछ नहीं है।न तो कोई पेंटिंग,न कैलेंडर। ऐसे में इस गोलाकार घड़ी का वजूद सिर्फ उपयोगितावादी नहीं लगता।खूबसूरती के लिए भी है।
प्रश्न अभ्यास(**2022-23** प्रादर्श प्रश्नपत्र का प्रश्न क्रमांक **7** व **8** का एक भाग)
प्रश्न:'कोरोना की विदाई के दौर में'विषय पर **120** शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए|

उत्तर:- कोरोना वायरस संकमण के लंबे दौर में हमें अत्यंत सूझबूझ, धैर्य और आत्म-नियंत्रण के साथ इस विकट स्थिति से तादात्म्य स्थापित करना पड़ा है। देश में महीनों तक चले लंबे लॉकडाउन और उसके बाद क्रमशः अनलॉक होता हमारा भारत एक अभूतपूर्व स्थिति से गुजरा है।कोरोना संकट ने हमें अपनी क्षमता को परखने और मानसिक रूप से और मजबूत होने का अवसर भी प्रदान किया है।अब कोरोना वायरस की विदाई के दौर में भी अत्यंत सावधानी व सतर्कता बरतने की आवश्यकता है|मास्क, दो गज सुरक्षित दूरी,सेनिटाइजर, बार-बार हाथ धोने और स्वच्छता के नए मानकों को जीवन भर अपना लेने में कोई बुराई नहीं है। यह हम सबके लिए अच्छा है और ऐसा करके हम किसी भी संक्रामक रोग के खिलाफ एक सुरक्षा चक्र के निर्माण में अपना सहयोग दे रहे होते हैं।कोराना की रफ्तार धीमी पड़ने के बाद सार्वजनिक आयोजन और उत्सव इस दौर के बाद भी होंगे, लेकिन तब तक सब कुछ बदल चुका होगा और यह भी एक सकारात्मक बात होगी।

कोरोना के कारण विश्व की अरबों की आबादी अपने घरों में कैद थी।कारखानों में उत्पादन गिरा।सड़कों पर वाहन नहीं चले और इन सबका प्रभाव यह हुआ कि आकाश में दूषित हवा का स्तर गिरा ।इतना ही नहीं, सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों से हमारी धरती के ओजोन रक्षाकवच और इसमें खतरनाक ढंग से गहरे हो चले बड़े-बड़े छिद्र अब धीरे-धीरे भरने लगेंगे।इससे विशेषकर धरती का पारिस्थितिकी तंत्र बेहतर होगा और जैव विविधता की रक्षा होगी।निश्चय ही कोरोनावायरस ने हम सब को पर्यावरण के प्रति अत्यंत सचेत कर दिया है।जनजीवन पहले से अधिक सतर्क, सजग, सावधान और मानवीय हो चला है।

कुछ अन्य उदाहरण:-

1. परीक्षा के दिन

हम सबके विद्यार्थी-जीवन में परीक्षाओं का सामना करना बिल्कुल आम बात है। इसके बावजूद भी परीक्षा के कठिन दिन का सामना करना मेरे लिए बहुत डरावना रहता है। मैं बहुत घबराए रहता हूँ। मैंने जो कुछ भी पढ़ा या याद किया उस हर चीज को बार-बार दोहराना चाहता हूँ। मैं प्रश्न-पत्र के बारे में सोचते रहता हूँ। मेरा विश्वास है कि यदि मैं पहले दिन अच्छा करूँगा तो परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ। इसलिए परीक्षा का कठिन दिन भयानक लगता है। कुछ छात्र परीक्षाओं के कठिन दिन के पहले की रात सो नहीं पाते। बोर्ड-परीक्षा का मेरा परीक्षा का कठिन दिन भी ऐसा ही था।

परीक्षा के दिन मैं अपनी समस्त शक्ति अध्ययन की ओर केन्द्रित कर एकाग्रचित होकर सम्भावित प्रश्नों को कंठस्थ करने के लिए लगा देता हूँ ये दिन मेरे लिए परीक्षा देवो को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान करने के दिन जैसा है, गृहकार्यों से मुक्ति, खेल-तमाशों से छुट्टी और मित्रों- साथियों से दूर रहने के दिन हैं।

परीक्षा परीक्षार्थी के लिए भूत है। भूत जिस पर सवार हो जाता है उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है, दिन की भूख गायब हो जाती है और घर में सगे-सम्बन्धियों का आना बुरा लगता है। टीवी के मनोरंजक कार्यक्रम, मनपसन्द एपीसोड, चित्रहार आदि समय नष्ट करने के माध्यम लगते हैं। परीक्षा के इन कठिन दिनों में परीक्षा-ज्वर (बुखार) चढ़ा होता है, जिसका तापमान परीक्षा-भवन में प्रवेश करने तक निरन्तर चढ़ता रहता है और प्रश्न-पत्र हल करके परीक्षा-भवन से बाहर आने पर ही सामान्य होता है। फिर अगले विषय की तैयारी का स्मरण होता है। ज्वरग्रस्त परीक्षार्थी निरन्तर विश्राम न कर पाने की पीड़ा से छटपटाता है। परीक्षाज्वर से ग्रस्त परीक्षार्थी क्रोधी बन जाता है, चिन्ता उसके स्वास्थ्य को चौपट कर देती है।

2. दीया और तूफान

मिट्टी का बना हुआ एक नन्हा सा दीया जब चलता है। तो रात्रि के अंधकार से लड़ता हुआ उसे दूर भगा देता है। अपने आसपास हल्का सा उजाला फैला देता है। जिस अंधकार में हाथ को हाथ नहीं सूझता, उसे भी दीया अपने मंद प्रकाश अकेला रास्ता दिखा देता है। हवा का झोंका जब दिए से लोगों को शोभा देता है। तब ऐसा लगता है कि इसके बुझते ही अंधकार फिर जाएगा और फिर हमें उजाला कैसे मिलेगा? दीया चाहे छोटा सा हो या बड़ा पर वह अकेला अंधकार के संस्कार का सामना कर सकता है। तो हम इंसान जीवन की राह में आने वाली कठिनाइयों का भी उसी तरह से मुकाबला क्यों नहीं कर सकते। यदि वह तूफान का सामना करके अपने टिमटिमाती लौ से प्रकाश फैला सकता है। तो हम भी हर कठिनाइयों में कर्मठ बनकर संकटों से निकल सकते हैं।

महाराणा प्रताप ने सब कुछ खोकर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की ठानी थी। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने सामान्य जीव की कठोरता का सामना किया था और विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत का प्रधानमंत्री पद प्राप्त कर लिया था| हमारे राष्ट्रपति डॉ.कलाम ने अपना जीवन टिमटिमाते दीये के समान आरंभ किया था, पर आज वही दीया हमारे देश की मिसाइलें प्रदान करने वाला प्रचंड अग्नि बम है। उन्होंने देश को जो शक्ति प्रदान की है वह अतुलनीय है। समुद्र में एक छोटी सी नौका सूची तूफानी लहरों से टकराती हुई अपना रास्ता बना लेती है और अपनी मंजिल पा लेती है। एक छोटा सा प्रवासी पक्षी साइबेरिया से उड़कर हजारों लाखों मील दूर पहुंच सकता है। तो हम इंसान भी कठिन से कठिन मंजिल प्राप्त कर सकते हैं।

अकेले अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में कौरवों जैसे महारथियों का डटकर सामना किया था। कभी-कभी तूफान अपने प्रचंड वेग से दीए की लौ को बुझा देता है पर जब तक दीया जगमगाता है तब तक तो अपना प्रकाश फहलाता है और अपने अस्तित्व को प्रकट करता है। मरना तो सभी को एक दिन है। मैं तो जीवन में आने वाली तमाम कठिनाइयों का डटकर मुकाबला करता हूँ, और मानता हूँ कि श्रेष्ठ मनुष्य वही होता है जो समाज में तूफानों की परवाह ना करें और अपनी रोशनी से संसार को प्रज्वलित करता रहे।

3. रेलगाड़ी की पहली यात्रा

ज़िन्दगी में रेल यात्रा करना हर किसी को रोमांच से भर देता है। हम हमेशा कामना करते है कि हमारी यात्रा सुखमयी हो। भारत के लगभग नब्बे फीसदी लोग रेल से सफर करते है। मेरी प्रथम रेल यात्रा मेरे लिए यादगार है। मैं इसे कभी नहीं भूल सकती हूँ। वह यात्रा मेरे लिए स्मरणीय अनुभव है। मैं महज़ **10** साल की थी जब मैंने अपनी प्रथम रेल यात्रा की थी। मैं रेलवे स्टेशन जाने के लिए बड़ी उत्सुक थी क्योंकि उसके पहले मैंने सामने से ट्रेन कभी नही देखी थी। मैं अपने चाचा चाची के साथ रेलवे स्टेशन पहुंची थी। बहुत सारे कुली रेलवे प्लेटफार्म पर आवाज़ लगा रहे थे। चाचा ने एक कुली को बुलाकर ट्रैन में सामान रखने के लिए कहा था। ट्रैन रेलवे प्लेटफार्म पर खड़ी थी। मैं गुवाहाटी से हावड़ा जा रही थी। ट्रैन की बोगी में घुसकर चाचा- चाची ने सामान अंदर रखा और मैं खिड़की के पास वाले बर्थ पर जाकर बैठ गयी।

ट्रेन की खिड़की के बाहर मैंने खूबसूरत दृश्य देखा जैसे पहाड़ **,** पेड़ **,**पौधे **,**हर -भरे लहलहाते खेत भी देखे। मेरा मन ख़ुशी से झूम उठा और चाची ने मुझे कहा कि मुझे अपना हाथ ट्रेन की खिड़की से बाहर नहीं निकालना है। पास ही के बर्थ में मेरी उम्र की एक लड़की खेल रही थी। मैं उसके पास चली गयी और हम दोनों की अच्छी दोस्ती हो गयी और हम अपने गुड़ियों के साथ खेलने लगे थे।फिर चाची ने लंच के लिए आवाज़ लगायी। बीच बीच में ट्रेन की छुक-छुक आवाज़ मेरे मन को भा जाती थी।

उसके बाद कुछ खिलौने बेचने वाले लोग ट्रेन पर चढ़े थे। मैंने अपने चाचा से ज़िद्द कि मुझे नयी गुड़िया दिला दे। चाचा को मेरे जिद्द के समक्ष विवश होना पड़ा और उन्होंने खिलौने दिलवाए । खिड़की से बाहर का दृश्य बेहद खूबसूरत था। मैं बहुत उत्सुकता से चारो और देख रही थी। क्योंकि यह रेल यात्रा मेरे लिए प्रथम थी और इसकी सारी मीठी यादें मेरे दिल के बेहद करीब है।मेरे लिए यह सफर रोमांच से भरा हुआ था। खिड़की से बाहर की हरियाली बेहद आकर्षक थी और देखने वालों का मन मोह लेती थी। मेरे बर्थ के पास जो लड़की थी उसका नाम रौशनी था। हम दोनों अंताक्षरी खेल रहे थे और उसके बाद हमने लूडो भी खेला था। शाम होने को आयी थी ट्रेन की खिड़कियों से ठंडी -ठंडी हवा आ रही थी और उसका आनंद हर कोई ले रहा था|फिर गरमा गर्म कचोरी और समोसे वाला ट्रेन में आ गया था। हमने मज़े से गरमा गर्म कचोरी खाये और चाचा ने चाय भी मंगवाई थी। फिर चाची ने मुझे कहानियों के किताब पढ़ने के लिए दिए था और मैंने परियों और जादुई वाली कहानियां पढ़ी थी। मेरा मन उत्साह से भर चुका था। चाचा अखबार पढ़ने में ज़्यादा व्यस्त थे। फिर रात होने को आयी और चाचा ने ट्रेन पर ही रात के खाने का आर्डर दे दिया था। हमने रोटी **,** सब्ज़ी और मिठाई खायी थी। उसके बाद चाची ने बर्थ पर चादर बिछाई और तकिया लगा दिया और मुझे सोने के लिए कहा। मैं रौशनी के साथ मज़े कर रही थी।

फिर रात बहुत हो गयी थी और चाची का कहना मानकर मैं सोने के लिए चली गयी। सुबह पांच बजे मेरी नींद खुली तो देखा चाचा चाय की चुस्कियां ले रहे थे। सफर लम्बा था लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पल भर में समाप्त हो गया।ट्रेन अपनी रफ़्तार से भाग रही थी। सफर में भूख बड़ी लग जाती है। फिर गरमा गर्म नाश्ता किया और इस बार थोड़ी मैंने कॉफ़ी भी पी। यहीं मेरी रेल की पहली यात्रा समाप्त हो गई।

4. नौका-विहार

नौका विहार करना एक अच्छा शौक, एक स्वस्थ खेल, एक प्रकार का श्रेष्ठ व्यायाम तो है ही साथ ही, मनोरंजन का भी एक अच्छा साधन है। सुबह-शाम या दिन में तो लोग नौकायन या नौका-विहार किया ही करते हैं, पर चांदनी रातों में ऐसा करने का सुयोग कभी कभार ही प्राप्त हो पाता है।

गत वर्ष शरद पूर्णिमा की चांदनी में नौका विहार का कार्यक्रम बनाकर हम कुछ मित्र (पिकनिक) मनाने के मूड में सुबह सवेरे ही खान-पान एवं मनोरंजन का कुछ सामान लेकर नगर से कोई तीन किलोमीटर दूर बहने वाली नदी तट पर पहुँच गए।

वर्षा बीत जाने के कारण नदी तो यौवन पर थी ही, शरद ऋतु का आगमन हो जाने के कारण प्राकृतिक वातावरण भी बड़ा सुन्दर, सुखद, सजीव और निखार पर था। लगता था कि वर्षा ऋतु के जल ने प्रकृति का कण-कण, पत्ता-पत्ता धो-पोंछ कर चारों ओर सजा सवार दिया है। मन्द-मन्द पवन के झोंके चारों ओर सुगन्धी को बिखेर वायुमण्डल और वातावरण को सभी तरह से निर्मल और पावन बना रहे थे।

उस सबका आनन्द भोगते हुए आते ही घाट पर जाकर हमने नाविकों से मिलकर रात में नौका विहार के लिए दो नौकायें तय कर लीं और फिर खाने-पीने, खेलने, नाचने गाने, गप्पे और चुटकलेबाजी में पता ही नहीं चल पाया कि सारा दिन कब बीत गया शाम का साया फैलते ही हम लोग चाय के साथ कुछ नाश्ता कर, बाकी खाने-पीने का सामान हाथ में लेकर नदी तट पर पहुँच गए। वहाँ तय की गई दोनों नौकाओं के नाविक पहले से ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। सो हम लोगों के सवार होते ही उन्होंने चप्पू सम्हाल कलकल बहती निर्मल जलधारा पर हंसिनी-सी तैरने वाली नौकायें छोड़ दीं।

तब तक शरद पूर्णिमा का चांद आकाश पर पूरे निखार पर आकर अपनी उजली किरणों से अमृत वर्षा करने लगा था। हमने सुन रखा था कि शरद पूर्णिमा की रात चाँद की किरणें अमृत बरसाया करती हैं, सो उनकी तरफ देखना एक प्रकार की मस्ती और पागलपन का संचार करने वाला हुआ करता है।

इसे गप्प समझने वाले हम लोग आज सचमुच उस सबका वास्तविक अनुभव कर रहे थे। चप्पू चलने से कलकल करती नदी की शान्त धारा पर हंसिनी-सी नाव धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। किनारे क्रमश: हमसे दूर छिटकते जा रहे थे। दूर हटते किनारों और उन पर उगे वृक्षों के झाड़ों की परछाइयां धारा में बड़ा ही सम्मोहक सा दृश्य चित्र प्रस्तुत करने लगी थीं।

कभी-कभी टिटीहरी या किसी अन्य पक्षी के एकाएक चहक उठने, किसी अनजाने पक्षी के पख फड़फड़ा कर हमारे ऊपर से फुर्र करके निकल जाने पर वातावरण जैसे कुछ सनसनी सी उत्पन्न कर फिर एकाएक रहस्यमय हो जाता। हैरानी और विमुग्ध आंखों से सब देखते सुनते हम लोग लगता कि जैसे अदृश्यपूर्व परीलोक में आ पहुँचे हों।

चाँद मोहक होकर कुछ और ऊपर उठ आया था। हमारी नौका अब नदी की धारा के मध्य तक पहुँच चुकी थी| नाविक ने लग्गी से थाह नापने का असफल प्रयास करते हुए बताया कि वहां धारा जल अथाह है, अमाप है। हमने उस पारदर्शी जल के भीतर तक देखने का प्रयास किया कि जो नाव के प्रवाह के कारण हिल रहा था।उसके साथ ही हमें परछाई के रूप में धारा में समाया बैठा चांद और असंख्य तारों का संसार भी हिलता-डुलता नजर आया। ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे धारा का भीतरी भाग उजली रेशम पर जड़े तारों और चाँद का ही बुना या बना हुआ है। तभी कहीं दूर से पपीहे का स्वर सुनाई दिया और इसके साथ ही नाविकों ने विरह की कोई सम्मिलित तान छेड़ दी।

नाविकों ने अब चप्पू चलाना बन्द कर दिया था। लगातार रोमांच में वृद्धि पाती उस चांदनी रात में हमारी नौकाएं अब मन की मौजों की तरह स्वेच्छा से बही चली जा रही थीं। पता नहीं कहाँ या किधर ? चारों ओर का वातावरण और भी सम्मोहक हो गया था। हम जो नौकाओं में बजाने-गाने के लिए अपने वाद्य लाए थे, उनकी तरफ देखने-छूने तक की फुर्सत हमें अनुभव नहीं हुई।

चांदनी रात और उसमें जलधारा पर विहार करती नौका के कारण जिस एक मादक प्राकृतिक गीत-संगीत की सृष्टि हो रही थी कि उसके सामने और कुछ याद रख या कर पाना कतई संभव ही नहीं था। बस, एक-दूसरे की तरफ देखते हुए हम लोग केवल बहते-अनकही कहते रहे। इस तरह रसपान करते हुए नदी से बाहर आकर अपने अपने घर चल दिए।

5. यदि मैं जिला कलेक्टर होता तो

सबसे पहले में बताना चाहूँगा कि 'कलेक्टर' जिले में राज्य सरकार का सर्वोच्च अधिकार संपन्न प्रतिनिधि या प्रथम लोक-सेवक होता है। जो मुख्य जिला विकास अधिकारी के रूप में सारे प्रमुख सरकारी विभागों- पंचायत एवं ग्रामीण विकास, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेद, अल्पसंख्यक कल्याण, कृषि, भू-संरक्षण, शिक्षा, महिला अधिकारता, ऊर्जा, उद्योग, श्रम कल्याण, खनन, खेलकूद, पशुपालन, सहकारिता, परिवहन एवं यातायात, समाज कल्याण, सिंचाई, सार्वजनिक निर्माण विभाग, स्थानीय प्रशासन आदि के सारे कार्यक्रमों और नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन करवाने के लिए अपने जिले के लिए अकेले उत्तरदायी होता है।

मैं सर्वप्रथम जिला में कुछ प्रमुख क्षेत्रों पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित करता। जैसे-

1.शान्ति और कानून व्यवस्था बनाये रखना। कहीं भी किसी भी तरह की आपत्तिजनक या अनुशासन हीनता पूर्ण व्यवहार न होने देता। सबसे पहले शराब की सारी दुकानों पर प्रतिबंध लगा देता,जो हमारी युवा पीढ़ी को गर्त की ओर ले जा रहे हैं। और शराब पीकर समाज की शांति को भंग करते हैं।

2. नागरिकों को चिकित्सा सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करने के लिए जिले के सभी क्षेत्रों में दवाखानों का प्रबन्ध करना तथा दवाखानों में मिलने वाली समस्त सुविधाएं- डॉक्टर की उपस्थिति, दवाओं का उचित वितरण, चिकित्सालयों की साफ सफाई आदि पर सख्ती से पालन करवाता।

3. शिक्षा विभाग की देखभाल- विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति, कक्षा शिक्षण का समय- समय पर निरीक्षण, विद्यालय की साफ सफाई, पौष्टिक मध्यान्ह भोजन दिया जा रहा या नही, छात्रों की उपस्थिति आदि का निरीक्षण का कार्य जिला शिक्षा अधिकारी को सौपता तथा उस पर स्वयं निगरानी रखता| शिक्षा के मामले में किसी तरह की कोई ढिलाई न होने देता।

4. पानी की भी व्यवस्था पर गौर करूँगा कि गांव में पर्याप्त मात्रा में हैंड पम्प है या नहीं, तथा कितने खराब हैं और कितने इस्तेमाल में हैं। खराब हैंडपम्प को तुरंत रिपेयर करवाता।और शहरी क्षेत्र में पानी की सप्लाई समय अनुसार करवाता और टंकी की साफ सफाई का भी ख्याल रखता।

5. सरकारी इमारतों का निर्माण व देखरेख की जिम्मेदारी लोकनिर्माण विभाग से समय-समय पर सूचना एकत्रित करता तथा उनके कार्यान्वयन का निरीक्षण करता।

6. पंचायती राज तथा अन्य संस्थाओं का प्रबन्ध व नियन्त्रण भी करता।

7.जिलास्तर पर मैं प्रशासन को नेतृत्व प्रदान करता, क्योंकि कलेक्टर जिला प्रशासन की धुरी हैं|जिलाधीश राज्य, जिला प्रशासन तथा जनता के मध्य कड़ी का कार्य करता है|

8. संकटकालीन प्रशासक के रूप में जिलाधीश की भूमिका मसीहा के समान हो जाती हैं. इसलिए प्राकृतिक विपदाओं में घायलों के उपचार, निवास, भोजन आदि की व्यवस्था, विस्थापितों के पुनर्स्थापन व उन्हें मुआवजा राशि देना आदि का भी ख्याल रखूंगा।

इस प्रकार मैं राज्य सरकार की आँख व कान तथा बाहों की भांति अपने कार्य का निर्वहन करता।

प्रश्न-निम्नलिखित विषयों पर **120** शब्दों में रचनात्मक लेखन कीजिए-

झरोखे से बाहर
सावन की पहली झड़ी
इम्तिहान के दिन
महामारी और हम

आधुनिक जीवन-शैली
स्वास्थ्य से बड़ा कुछ भी नहीं है
ऑनलाइन शिक्षा
लॉकडाउन के मेरे अनुभव
कोरोना वैक्सीन: कोरोना की विदाई
कोरोना काल के बाद की दुनिया
भीड़ भरी ट्रेन का अनुभव
जब मेरी ट्रेन छूट गई
मेरा वह जन्मदिन जो मुझे आज भी याद है
स्कूल में मेरा पहला दिन
उस दिन जब मैं बहुत उदास था
मेरे सपनों का स्कूल
मेरे जीवन का लक्ष्य
किताबें जो मुझे बहुत प्रिय हैं
मेरी पसंदीदा कहानी
सिनेमा देखने का मेरा पहला अनुभव
खाना पकाना भी एक कला है
मैं जब बीमार पड़ा
जब मुझे किसी ने डांटा
मैंने जब सायकल चलाना सीखा
बाढ़ का मेरा अनुभव
उस दिन मूसलाधार बारिश हुई
हर समस्या का हल है
गांव और शहर का जीवन
नदियों का महत्त्व
दिया और तूफान
सड़क की होर्डिंग
मेरा प्रिय टाइमपास
कोरोना: कोई रोड पर निकलो ना

पाठ्यक्रम खंड ब- **5 -2** प्रादर्श प्रश्नपत्र प्रश्न क्रमांक **8** का एक भाग
लेखन की विधियों पर आधारित लगभग **60** शब्दों में दो वर्णनात्मक प्रश्न **6** अंक

प्रश्न **1 .** रटंत पद्धति को एक बुरी आदत माना जाता है ।नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के द्वारा इस आदत से कैसे बचा जा सकता है?
उत्तर –रटंत का अर्थ है दूसरों के द्वारा तैयार सामग्री को याद करके प्रस्तुत कर देने की आदत।
इस आदत के दुष्परिणाम निम्नलिखित हैं-
1. असली अभ्यास का मौका ना मिलना
2. भावों की मौलिकता समाप्त हो जाना
3. चिंतन शक्ति क्षीण होना
4. सोचने की क्षमता में कमी होना
5. दूसरों के लिखे पर आश्रित होना
अप्रत्याशित विषयों पर लेखन द्वारा इस आदत से बचा जा सकता है, क्योंकि इससे अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्ति से मानसिक और आत्मिक विकास होता है।
प्रश्न **2 .** रचनात्मक लेखन को मन पंछी की उड़ान कहा जाता है, तो इस उड़ान पर लगाम भी क्यों आवश्यक है?
उत्तर -एकदम अनूठे विषय पर मौलिक प्रयास कर लिखना विद्यार्थियों की प्रतिभा के साथ साथ उनकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को एक नया क्षितिज प्रदान करता है। ऐसे विषय पर लिखना एक मन पंछी की मनचाही उड़ान के समान है। भाव पल्लवन चाहे जहां तक हो सकता है,

लेकिन ध्यान यह रखा जाना चाहिए कि विषय का विस्तार इतना ना हो जाए कि यह अनियंत्रित हो जाए। इसलिए रचनात्मक लेखन असीमित नहीं होता।उसमें तारतम्यता और सुसंगति का होना बहुत आवश्यक है।

प्रश्न **3 .** अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के नए विषय किस प्रकार सहायक सिद्ध होते हैं**?**

उत्तर-अभिव्यक्ति का अधिकार मनुष्य का एक मौलिक अधिकार है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से कर सकता है। निबंध विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्त करने से लेखक का मानसिक और आत्मिक विकास होता है। इससे लेखक की चिंतन शक्ति का विकास होता है। इससे लेखक को बौद्धिक विकास तथा अनेक विषयों की जानकारी होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के विषय बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

प्रश्न **4 .** नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए**?**

उत्तर-नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

2. विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

3. विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए।

4. विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए।

5. विचारों का विस्तार तो होना चाहिए लेकिन यह विषय के मुख्य बिंदुओं से भटकाव वाली स्थिति में न हो।

6. विचारों में मौलिकता होनी चाहिए।

प्रश्न **5 .** नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में क्या-क्या बाधाएँ आती हैं **?**

उत्तर-नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार है-

1. सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।

2.. लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।

3. लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।

4. लेखक की चिंतन शक्ति**,** कल्पनाशीलता मंद पड़ जाती है।

5. शब्दकोश की कमी हो जाती है।

पाठ्यक्रम खंड अ **-3** प्रादर्श प्रश्नपत्र का प्रश्न **3**

अध्याय **-3.**विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

महत्वपूर्ण बिंदु

मुद्रित माध्यमों के लिए समाचर लेखन की बुनियादी बातें –

(i) भाषागत शुद्धता का ध्यान रखा जाना चाहिए।

(ii) प्रचलित भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

(iii) समय**,** शब्द व स्थान की सीमा का ध्यान रखा जाना चाहिए।

(iv)लेखन में तारतम्यता एवं सहज प्रवाह होना चाहिए।

रेडियो (आकाशवाणी) समाचार की संरचना

*रेडियो समाचार की संरचना उल्टापिरामिड शैली पर आधारित होती है।

रेडियो समाचार-लेखन के लिए बुनियादी बातें -

*समाचार वाचन के लिए तैयार की गई कापी साफ़-सुथरी और टाइप्ड कॉपी हो।

*प्रसारण के लिए कॉपी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। कॉपी के दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोडा़ जाना चाहिए।

*अंकों को शब्दों में लिखा जाना चाहिए।

*संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए।

टेलीविजन (दूरदर्शन)

दूरदर्शन जनसंचार का सबसे लोकप्रिय व सशक्त माध्यम है। इसके लिए समाचार लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि शब्द और परदे पर दिखने वाले दृश्य में समानता हो **I**

टी०वी० खबरों के विभिन्न चरण-दूरदर्शन मे कोई भी सूचना निम्नलखित चरणों में दर्शकों तक पहुँचती है-

i-फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज –किसी बड़ी खबर को कम से कम शब्दों में दर्शकों तक तत्काल पहुंचाने को ब्रेकिंग न्यूज कहते हैं **I**

ii-ड्राई एंकर-एंकर दृश्य के बिना खबर के बारे में दर्शकों को सीधे –सीधे बताता है**I**

iii-फोन-इन -एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचाता है।

iv-एंकर-विजुअल-घटना स्थल के दृश्यों के आधार पर लिखी खबर को पढ़कर एंकर दर्शकों तक पहुंचाता है।

v-एंकर-बाइट-एंकर द्वारा घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर प्रामाणिक खबर प्रस्तुत करना **I**

vi-लाइव-किसी खबर का घटनास्थल से रिपोर्टर और कैमरामैन के जरिये सीधा प्रसारण।

vii-एंकर-पैकेज-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है।

रेडियो और टेलीविजन की भाषा –शैली

* बोलचाल की भाषा*प्रचलित शब्दों का प्रयोग * भ्रामक शब्दों से बचें

इंटरनेट

इंटरनेट विश्वव्यापी अंतर्जाल है,यह जनसंचार का सबसे नवीन व लोकप्रिय माध्यम है। इसमें जनसंचार के सभी माध्यमों के गुण समाहित हैं।यह जहाँ सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए श्रेष्ठ माध्यम है, वहीं अश्लीलता, दुष्प्रचार व गंदगी फ़ैलाने का भी जरिया है।

इंटरनेट पत्रकारिता- इंटरनेट पर समाचारों का प्रकाशन या आदान-प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है।

*भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का प्रारम्भ -पहला चरण **1993** से तथा दूसरा चरण **2003** से शुरू।

*समाचार-पत्र इंटरनेट पर- टाइम्स आफ़ इंडिया,हिंदुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रैस, हिंदू, ट्रिब्यून आदि।

*हिंदी वेब जगत में साहित्यिक पत्रिकाएँ -'अनुभूति', अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि **I**

पाठ्यक्रम का खंड ब **5-3** प्रादर्श प्रश्नपत्र का प्रश्न क्र.**9**

पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित प्रश्न अध्याय **3,4,5**

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग **80** शब्दों में)

प्रश्न**1 -** रेडियो समाचार-लेखन के लिए किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए**?**

उत्तर-रेडियो समाचार-लेखन के लिए ध्यान रखने वाली बातें :

रेडियो एक श्रव्य माध्यम है|अतः उस अनदेखे दर्शक तक स्पष्ट रूप से सरल छोटे-छोटे वाक्यों में समाचार लिखा व प्रस्तुत किया जाना चाहिए|समाचार में प्रवाह होना चाहिए|बोझिल भाषा व मुहावरों से बचा जाना चाहिए|समाचार उल्टा पिरामिड शैली में हो|इंट्रो में महत्वपूर्ण विवरण हो|बॉडी में विस्तृत ब्यौरा व समापन में अन्य विवरण हो|समय का फ्रेम आज का होता है,इसलिए आज सुबह.....,कल हुई बैठक.....आदि शब्दों का प्रयोग होता है|समाचार वाचन के लिए तैयार की गई कापी साफ-सुथरी और टाइप्ड कॉपी हो।

कॉपी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए।

पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।

अंकों को लिखने में सावधानी रखनी चाहिए।

संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए।

प्रश्न**2** टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण :

दूरदर्शन मे कोई भी सूचना निम्न चरणों या सोपानों को पार कर दर्शकों तक पहुँचती है –

1. फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज- इसमें समाचार को कम-से-कम शब्दों में दर्शकों तक तत्काल पहुँचाया जाता है।

2. ड्राई एंकर- इसमें एंकर द्वारा शब्दों में खबर के विषय में बताया जाता है, कोई दृश्य नहीं दिखाए जाते।

3. फोन इन - इसमें एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात कर दर्शकों तक सूचनाएँ पहुँचाता है।

4. एंकर-विजुअल - इसमें समाचार के साथ-साथ संबंधित दृश्यों को दिखाया जाता है।

5. एंकर-बाइट- इसमें एंकर का प्रत्यक्षदर्शी या संबंधित व्यक्ति के कथन या बातचीत द्वारा प्रामाणिक खबर प्रस्तुत करना शामिल होता है।

6. लाइव - इसमें घटनास्थल से खबर का सीधा प्रसारण किया जाता है।

7. एंकर-पैकेज - इसमें एंकर द्वारा प्रस्तुत सूचनाएँ; संबंधित घटना के दृश्य, बाइट,ग्राफ़िक्स आदि व्यवस्थित ढंग से दिखाई जाती है।

प्रश्न **3-** जनसंचार माध्यम के रूप में इंटरनेट की विशेषताएं लिखिए। इंटरनेट पत्रकारिता क्या है**?**

उत्तर- इंटरनेट विश्वव्यापी अंतर्जाल है, यह जनसंचार का सबसे नवीन व लोकप्रिय माध्यम है। इसमें जनसंचार के सभी माध्यमों के गुण समाहित हैं। यह सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए श्रेष्ठ माध्यम है।इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है। इंटरनेट पर समाचारों का प्रकाशन या आदान-प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है। इंटरनेट पत्रकारिता दो रूपों में होती है।

प्रथम- समाचार संप्रेषण के लिए नेट का प्रयोग करना। दूसरा- रिपोर्टर अपने समाचार को ई-मेल द्वारा अन्यत्र भेजने व समाचार को संकलित करने तथा उसकी सत्यता, विश्वसनीयता सिद्ध करने के लिए करता है। रीडिफ डॉट कॉम, इंडिया इंफ़ोलाइन व सीफी भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटे है। टाइम्स आफ इंडिया , हिंदुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रैस , हिंदू, ट्रिब्यून आदि समाचार-पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। प्रभा साक्षी नाम का अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ नेट पर उपलब्ध है।

प्रश्न **4-** इंटरनेट पत्रकारिता के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
उत्तर- इंटरनेट पत्रकारिता का इतिहास:
विश्व-स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का विकास निम्नलिखित चरणों में हुआ-
(क) प्रथम चरण-**1982** से **1992**
(ख) द्वितीय चरण-**1993** से **2001**
(ग) तृतीय चरण- **2002** से अब तक
भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का पहला चरण **1993** से तथा दूसरा चरण **2003** से शुरू माना जाता है। भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटें रीडिफ डॉट कॉम, इंडिया इफोलाइन व सीफी हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जाता है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय तहलका डॉट कॉम को जाता है।

प्रश्न**5 -** हिंदी में नेट पत्रकारिता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर- हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। यह हिन्दी का संपूर्ण पोर्टल है। प्रभा साक्षी नाम का अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ नेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिन्दी की सर्व श्रेष्ठ साइट बीबीसी की है, जो इंटरनेट के मानदंडों के अनुसार चल रही है। हिन्दी वेब जगत में अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिन्दी नेस्ट, सराय आदि साहित्यिक पत्रिकाएँ भी अच्छा काम कर रही हैं। अभी हिन्दी वेब जगत की सबसे बड़ी समस्या मानक की बोर्ड तथा फोंट की है। डायनमिक फोंट के अभाव के कारण हिन्दी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं।आज सभी समाचार पत्रों के नेट संस्करण भी उपलब्ध हैं|

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

पाठ्यक्रम खंड अ -**2** प्रादर्श प्रश्नपत्र प्रश्न-**3**
1- निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
(I)अखबार में समाचार पढ़ने और रूककर उस पर सोचने में संतुष्टि मिलती है|
(I I) टीवी पर घटनाओं की तस्वीरें देखकर जीवंतता का एहसास होता है।
(I I I) इंटरनेट में एक बटन दबाने पर सूचनाओं का अथाह सागर उपलब्ध है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन- सा/ कौन – से सही है/सही हैं
क- केवल **I** ख- केवल **III** ग- **I,II** और **III** घ- **I** और **II**
2- निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
(I) आधुनिक संचार माध्यमों में अख़बार एक मुद्रित माध्यम है|
(I I) आधुनिक युग में दृश्य-श्रव्य माध्यम प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं।
(I I I) आधुनिक संचार माध्यमों में रेडियो के आविष्कार के एक दशक के भीतर विश्व का पहला अखबार छप गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन- सा/ कौन – से सही है/सही हैं
(क) केवल **I** (ख) केवल **III** (ग) केवल **I** और **III** (घ) **I** और **II**
3- फ्रीलान्सर पत्रकार हेतु सही शब्द के चयन के लिए निम्नलिखित शब्दों पर विचार करिए-
I.अंशकालिकपत्रकार
II. स्वतंत्र पत्रकार
III. पूर्णकालिक पत्रकार
IV. समाचारपत्र विशेष से न जुड़कर अलग-अलग समाचार पत्रों के लिए कार्य करने वाले पत्रकार
उपर्युक्तशब्दोंमेंसेकौन-सा/कौन -सेसहीहै/सहीहैं-
(क) केवल **I** (ख) केवल **III** (ग) केवल **I,II,III** (घ) केवल **II** और **IV**
4-रेडियो कैसा माध्यम है**?**
क-श्रव्य ख-दृश्य ग-मुद्रित घ-दृश्य-श्रव्य
5-निम्नलिखित में से कौन सी रेडियो समाचार की विशेषता है**?**

क-इसमें ध्वनि की तुलना में दृश्य का अधिक महत्व होता है
ख-इसमें शब्द और आवाज ही सबकुछ है
ग-यह अंतःक्रियात्मक होता है
घ-इसे हम कभी भी अपनी रुचि के अनुसार सुन सकते हैं
6-किसी भी माध्यम के लिए समाचार लेखन की प्रचलित शैली कौन सी है**?**
क-कथा शैली ख-उल्टा पिरामिड शैली
ग-सीधा पिरामिड शैली घ-समापन शैली
7-किसी बड़ी एवं महत्वपूर्ण खबर को**,** कम से कम शब्दों में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाने को क्या कहते हैं**?**
क-विशेष समाचार ख-ड्राई एंकर ग-एंकर बाइट घ-फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़
8- एंकर विजुअल क्या है**?**
क-रिपोर्टर और एंकर एक साथ दिखाई देते हैं ख-घटना के सिर्फ दृश्य दिखाए जाते हैं
ग- सिर्फ आवाज सुनाई देती है घ-घटना के दृश्य और उस पर आधारित खबर एक साथ चलते हैं
9 -घटना स्थल से खबर का सीधा प्रसारण क्या कहलाता है**?**
क-ब्रेकिंग ख-लाइव ग-फोनइन ग-एंकर बाइट
10 -एंकर पैकेज क्या है**?**
क-खबर को एंकर द्वारा संपूर्णता से प्रस्तुत करना ख-एंकर द्वारा खबर को पढ़ना
ग- रिपोर्टर द्वारा रिपोर्ट देना घ- घटना के दृश्य दिखाना
11-एंकर बाइट क्या है **?**
क-घटना के प्रत्यक्षदर्शियों का कथन ख-वॉयस ओवर
ग-नेट साउंड घ-रिपोर्टर और एंकर का कथन
12 -वॉयस ओवर क्या है **?**
क-रिपोर्टर की आवाज ख-तेज आवाज
ग- एंकर की आवाज घ- गतिशील दृश्यों के पीछे से आ रही आवाज
13-घटना के दृश्यों को शूट करते समय जो आवाजें खुद ब खुद चली आती हैं**,** वे क्या कहलाती हैं**?**
क- कथन या बाइट ख-नेट साउंड ग- इंटरनेट साउंड घ- वॉयस ओवर
14-रेडियो और टेलीविज़न के लिए समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए **?**
क-बोलचाल की सरल**,**संप्रेषणीय**,**प्रभावी भाषा ख-वाक्य छोटे**,**सरल और स्पष्ट हों
ग-उपर्युक्त क**,**ख दोनों घ-इनमें से कोई नहीं
15 -एक ही स्थान पर**,**शीघ्रता से सूचना और ज्ञान का अथाह भंडार कहाँ मिल सकता है**?**
क-टेलीविज़न ख-इंटरनेट (अंतर्जाल) ग-रेडियो घ-मुद्रित माध्यम
16-एच टी एम एल क्या है**?**
क-वेबसीरीज़ ख-वेबसाइट ग-वेबभाषा घ-वेबफिल्म
17-भारत इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत का श्रेय किसे जाता है**?**
क-रीडिफ़ डॉटकॉम ख-तहलका डॉटकॉम ग-सीफ़ी घ-इंडिया इंफो लाइन
18-हिंदी नेट पत्रकारिता की शुरुआत का श्रेय किसे जाता है**?**
क-दैनिक जागरण ख-भास्कर ग-सहारा इंडिया घ-वेब दुनिया
19-अनुभूति**,**अभिव्यक्ति**,**हिंदी नेस्ट**,**सराय क्या हैं**?**
क-ब्लॉग ख-वेबसीरीज़ ग-साहित्यिक वेब पत्रिकाएँ घ-वेब समाचार पत्र
20 -हिंदी का कौन सा समाचार पत्र प्रिंट न होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है**?**
क-प्रभासाक्षी ख-बीबीसी ग-नेट सहारा घ-इनमें से कोई नहीं
21- हिंदी नेट पत्रकारिता के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ साइट कौन सी है**?**
क-हिंदुस्तान ख- बीबीसी ग-प्रभात खबर घ-राजस्थान पत्रिका
22 - किसी खबर का घटना स्थल से सीधा प्रसारण कहलाता है -
क- ड्राई एंकर ख- लाइव ग- एंकर विजुअल घ- एंकर बाइट
23 - इंटरनेट पत्रकारिता को और किन-किन नामों से जाना जाता है**?**
क- ऑनलाइन पत्रकारिता ख- साइबर पत्रकारिता ग- वेब पत्रकारिता घ- उपर्युक्त सभी
24 - निम्न में से टेलीविजन खबरों का चरण नहीं है -

क- ड्राई एंकर ख- लाइव ग- एंकर विजुअल घ- आज तक

25 - बिना दृश्य के रिपोर्टर से मिली जानकारी के अनुसार एंकर द्वारा सूचनाएँ पहुंचाना क्या कहलाता है **?**

क- ड्राई एंकर ख- लाइव ग- एंकर विजुअल घ- एंकर बाइट

26- रेडियो और टेलीविजन की भाषा शैली की अनिवार्य विशेषताएँ हैं-

क- भाषा अत्यंत सरल व सहज होनी चाहिए

ख-मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए

ग-वाक्य छोटे और संस्कृतनिष्ठ होने चाहिए

घ- आलंकारिक शब्दों के बजाय आमबोलचाल की भाषा होनी चाहिए

क- सिर्फ क ख- सिर्फ क और ख

ग- सिर्फ क ,ख और ग घ- सिर्फ क और घ

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

उत्तर

1) ग **2)** घ **3)**घ **4)** क **5)** ख **6)** ख **7)** घ **8)** घ **9)** ख **10)** क **11)** क **12)** घ **13)** ख **14)** ग **15)** ख **16)** ग **17)** क **18)** घ **19)** ग **20)** क **21)** ख **22)** ख **23)** घ **24)** घ **25)** क **26)**घ

अध्याय **-4** पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

महत्वपूर्ण बिंदु

पत्रकारीय लेखन - समाचार माध्यमों मे काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है। पत्रकार को लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए वह सामान्य जनता के लिए लिख रहा है, इसलिए उसकी भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे व सहज हों। कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों ,अप्रचलित शब्दावली,क्लिष्टता या दोहराव का प्रयोग नहीं करना चाहिए **I**

पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत -सम्पादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट,फ़ीचर, स्तम्भ तथा कार्टून आदि आते हैं

पत्रकार के प्रकार

i-पूर्णकालिक -किसी समाचार संगठन में कार्यरत नियमित वेतनभोगी कर्मचारी।

ii-अंशकालिक(स्ट्रिंगर)- किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार।

iii-फ़्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार- भुगतान के आधार पर किसी भी अखबार के लिए लिखने वाला पत्रकार।

***** समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह युद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

समाचार के छह ककार समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छह प्रश्नों- क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे; का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार के छह ककार कहा जाता है। प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं ।

फ़ीचर –फ़ीचर एक प्रकार का सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है ।फ़ीचर का उद्देश्य

मनोरंजन के साथ मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना होता है।

विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं **?**

सामान्य समाचारों से अलग वे विशेष समाचार जो गहरी छान-बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किए जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं।

विशेष रिपोर्ट के विभिन्न प्रकार

(1)खोजी रिपोर्ट : इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन कर सार्वजनिक किया जाता है।

(2)इन्डेप्थ रिपोर्ट: सार्वजानिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान-बीन कर उसके महत्त्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है।

(3) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है। रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किस्तों में प्रकाशित की जाती है।

(4)विवरणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

पाठ्यक्रम का खंड ब **5-3** प्रादर्श प्रश्नपत्र का प्रश्न क्र.**9**

प्रश्न1 - प्रश्न- पत्रकारीय लेखन क्या है**?** पत्रकारीय लेखन का उद्देश्य क्या है**?**

उत्तर- पत्रकारीय लेखन–

समाचार माध्यमों मे काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारिता या पत्रकारीय लेखन के अन्तर्गत सम्पादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट, फीचर , स्तम्भ तथा कार्टून आदि आते हैं।

पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य है- सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन आदि करना। इसके कई प्रकार हैं यथा- खोज परक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एडवोकेसी पत्रकारिता आदि। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है। पत्रकार को लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए वह सामान्य जनता के लिए लिख रहा है, इसलिए उसकी भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे व सहज हों। कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों,अप्रचलित शब्दावली और क्लिष्ट वाक्यों तथा दोहराव का प्रयोग नहीं होना चहिए।

प्रश्न-2 संपादन किसे कहते हैं**?** संपादकीय किसे कहते हैं**?**दोनों में क्या अंतर है**?**

उत्तर- प्रकाशन के लिए प्राप्त समाचार सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके पठनीय तथा प्रकाशन योग्य बनाना संपादन कहलाता है। संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं । संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता । इसे अग्रलेख भी कहते हैं|संपादन समाचार आलेख आदि की संशोधन पश्चात प्रस्तुति की प्रक्रिया है|संपादकीय एक समसामयिक आलेख है|

प्रश्न 3 समाचार किसे कहते हैं**?**यह किस शैली में लिखे जाते हैं**?**इसके छह ककार कौन-कौन से हैं**?**

उत्तर-

समाचार* किसी भी ऐसी ताजा घटना,विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा है|*समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं **?**

समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह युद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

समाचार के छह ककार

समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छह प्रश्नों- क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे; का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार के छह ककार कहा जाता है। प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं

प्रश्न4-टिप्पणी कीजिए- **1** विचारपरक लेखन**2 .** संपादकीय**3.** स्तंभ लेखन**4.** संपादक के नाम पत्र **5.** साक्षात्कार/इंटरव्यू

उत्तर- टिप्पणी **1** विचारपरक लेखन किसे कहते हैं **?**

जिस लेखन में विचार एवं चिंतन की प्रधानता होती है, उसे विचारपरक लेखन कहा जाता है।समाचार-पत्रों में समाचार एवं फ़ीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठपत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तंभ छपते हैं। ये सभी विचारपरक लेखन के अंतर्गत आते हैं।

2 . संपादकीय से क्या अभिप्राय है **?**

संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं । संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता ।

3. स्तंभ लेखन से क्या तात्पर्य है **?**

किसी महत्त्वपूर्ण लेखक द्वारा एक विशेष शीर्षक के अंतर्गत नियमित रूप से आलेख लेखन को स्तंभ लेखन कहा जाता है ।

4. संपादक के नाम पत्र से आप क्या समझते हैं **?**

समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए जाते हैं|यह प्रत्येक समाचारपत्र का नियमित स्तंभ होता है। इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवं राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है ।

5. साक्षात्कार/इंटरव्यू से क्या अभिप्राय है **?**

किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचारपत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

पाठ्यक्रम खंड अ -**2** प्रादर्श प्रश्नपत्र प्रश्न-**3**

1- कॉलम क का कॉलम ख से उचित मिलान कीजिए-

कॉलम क	कॉलम ख
(i) समाचार लेखन की शैली	**(i)** प्रारंभ,मध्य,अंत
(ii) कथात्मक लेखन	**(ii)**उल्टा पिरामिड शैली
(iii) समाचार लेखन के प्रश्न	**(iii)** सीधा पिरामिड शैली
(iv) फीचर का ढ़ांचा	**(iv)** क्या,किसके,कहाँ,कब,क्यों,कैसे

क- **(i)-(ii),(ii)-(iii),(iii)- (iv),(iv)-(i)**

ख- **(i)-(iii),(ii)-(iv),(iii)-(ii),(iv)-(i)**

ग- **(i)-(i),(ii)-(iv),(iii)-(ii),(iv)-(iii)**

घ- **(i)-(iv),(ii)-(iii),(iii)-(ii),(iv)-(i)**

2- निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए।उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन **(A)**फोन इन समाचारों को भेजने का एक प्रमुख माध्यम है|

कारण**(R)** फोन इन समाचार भेजने का एक आसान माध्यम है।

(क) कथन **A** सही है लेकिन कारण **R** उसकी गलत व्याख्या करता है।

(ख)कथन **A** गलत है लेकिन कारण **R** सही है।

(ग) कथन **A** तथा कारण **R** दोनों गलत हैं।

(घ) कथन **A** तथा कारण **R** दोनों सही हैं तथा कारण,कथन की सही व्याख्या करता है।

3- कॉलम क का कॉलम ख से उचित मिलान कीजिए-

कॉलम क	कॉलम ख
(i) ड्राईएंकर	**(i)** दृश्य सूचना घटनाएं ग्राफिक्स आदि से बनी संपूर्ण रिपोर्ट
(ii) एंकरबाइट	**(ii)**बिना दृश्य के केवल सूचनाएं
(iii) एंकरविजुअल	**(iii)** प्रत्यक्षदर्शियों के कथन
(iv) एंकरपैकेज	**(iv)** घटनास्थल से सूचनाओं के साथ दृश्यों का भी मिल जाना

क- **(i)-(iii),(ii)-(iv),(iii)-(ii),(iv)-(i)**

ख- **(i)-(ii),(ii)-(iii),(iii)- (iv),(iv)-(i)**

ग- **(i)-(i),(ii)-(iv),(iii)-(ii),(iv)-(iii)**

घ- **(i)-(iv),(ii)-(iii),(iii)-(ii),(iv)-(i)**

4 - पत्रकारिता में 'डेडलाइन' क्या है**?**

क- किसी व्यक्ति के मरने की जानकारी।

ख- किसी समाचार माध्यम में समाचार को प्रकाशन हेतु प्राप्त करने की आखिरी समय-सीमा।

ग- संपादक द्वारा अपने समाचार एजेंसी के कर्मचारियों को निर्धारित समय पर उपस्थित होने के लिए तय किया गया समय।

घ- पत्रकार को मारने की धमकी देना।

5 - समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली के छः ककारों में सबसे पहले क्या आता है**?**

क- क्या ख-क्यों ग- कब घ- कहाँ

6 -किसी भी ताजा घटना,विचार या समस्या की ऐसी रिपोर्ट, जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो,क्या कहलाएगी**?**

क-समस्या ख-विचार ग-समाचार घ-घटना

7 - 'पत्रकारिता' क्या है**?**

क- एक दूसरे को पत्राचार करना।

ख- सूचनाओं को संकलित और संपादित करके आम पाठकों तक पहुँचाने का कार्य।

ग- सूचनाओं का संकलन

घ- मित्र को पत्र लिखना

8- समाचारों के संपादन में किन प्रमुख सिद्धान्तों का पालन जरूरी नहीं है **?**

क- निष्पक्षता ख- संतुलन व स्रोत की जानकारी

ग- संवाददाता का जीवन परिचय घ- तथ्यपरकता

9-अख़बारों और पत्रिकाओं में कितने शब्दों के फीचर छपते हैं**?**

क- **250-500** शब्द ख- **300-800** शब्द

ग- **300-1000** शब्द घ- **250-2000** शब्द

10 -छपने के लिए आई सामग्री की अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाने की प्रक्रिया क्या कहलाती है**?**

क-संकलन ख-सुधार ग-सम्पादन घ-प्रकाशन

11 -निम्नलिखित में से सम्पादन का सिद्धान्त कौन सा है**?**

क-तथ्यों की शुद्धता ख-वस्तुपरकता और निष्पक्षता

ग-संतुलन और स्रोत घ-उपर्युक्त सभी

12 -लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ किसे कहा जाता है**?**

क-सरकार को ख-न्यायालय को ग-पत्रकारिता को घ-समाज को

13 -किसी पत्रकार के कार्य के लिए सच्चाई ,संतुलन,निष्पक्षता एवं स्पष्टता क्या हैं **?**

क-साधन ख-सिद्धांतों की महत्वपूर्ण बैसाखियाँ ग-कार्यशैली घ-कार्यकुशलता

14 -पी.टी.आई और यू.एन.आई क्या है**?**

क-पत्रकार ख-संवाददाता ग-समाचार एजेंसी घ-औद्योगिक संस्थान

15-विभिन्न घटनाओं पर अखबार की राय क्या कहलाती है**?**

क-संपादकीय ख-संपादक ग-समाचार घ-संपादन

16-संपादकीय कौन लिखता है**?**

क-संपादक मंडल ख-पत्रकार ग-विशेष संपादक घ-संवाददाता

17-संपादकीय में किसकी राय होती है**?**

क-अखबार की ख-संपादक की ग-पत्रकार की घ-किसी की नहीं

18-समाचार पत्र की आवाज़ है-

क-संपादकीय ख-संपादक के नाम पत्र ग-फीचर घ-स्तंभ लेखन

19- सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों,सूचनाओं तथा आंकड़ों की गहरी छानबीन करने वाली विशेष रिपोर्ट को कहते हैं-

क- विवेचनात्मकरिपोर्ट ख- खोजीरिपोर्ट

ग-इनडेप्थ रिपोर्ट घ-विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

20-कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक जो अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं,ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर उन्हें समाचार पत्र के लिए क्या कार्य सौपा जाता है

क-नियमित स्तम्भ लेखन ख- नियमित फीचर लेखन

ग-समाचार लेखन घ- रिपोर्ट लेखन

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप एवं लेखन प्रक्रिया

उत्तर

1) क **2)** क **3)** ख **4)** ख **5)** क **6)** ग **7)** ख **8)** ग **9)** घ **10)** ग **11)** घ **12)** ग **13)** ख **14)** ग **15)** क **16)** ग **17)** क **18)** क **19)** ग **20)** क

अध्याय **5** विशेष लेखन स्वरुप एवं प्रकार

महत्त्वपूर्ण बिंदु

- किसी खास विषय विशेष लेखन का अर्थ है-किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अधिकांश समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी०वी० और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है। जैसे समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों में बिजनेस यानी कारोबार और व्यापार का अलग डेस्क होता है, इसी तरह खेल की खबरों और फ़ीचर के लिए खेल डेस्क अलग होता है। इन डेस्कों पर काम करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।

बीट क्या है**?**

खबरें भी कई तरह की होती हैं-राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है।

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। इसके अलावा एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें।

विशेष लेखन का क्षेत्र

विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ-लेखन भी आता है।

विशेष लेखन की भाषा और शैली

हर क्षेत्र-विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है।जैसे कारोबार पर विशेष लेखन।

विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। लेकिन अगर हम अपने बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहे हैं तो उसकी शैली उलटा पिरामिड शैली ही होगी। लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है।

इसी तरह अगर आप लेख या टिप्पणी लिख रहे हों तो इसकी शुरुआत भी फ़ीचर की तरह हो सकती है। जैसे हम किसी केस स्टडी से उसकी शुरुआत कर सकते हैं, उसे किसी खबर से जोड़कर यानी न्यूजपेग के जरिये भी शुरू किया जा सकता है।

विशेष लेखन के क्षेत्र

विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं, जैसे:-कारोबार और व्यापार

खेल

विज्ञान-प्रौद्योगिकी

कृषि

विदेश

रक्षा

पर्यावरण

शिक्षा

स्वास्थ्य

फ़िल्म-मनोरंजन

अपराध

सामाजिक मुद्दे

कानून, आदि।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

पाठ्यक्रम का खंड ब **5-3** प्रादर्श प्रश्नपत्र का प्रश्न क्र.**9**

प्रश्न **1 -** फीचर और समाचार में क्या अंतर है**?**

उत्तर- फीचर और समाचार में अंतर: फ़ीचर –फ़ीचर एक प्रकार का सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है ।फ़ीचर का उद्देश्य मनोरंजन के साथ मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना होता है। समाचार* किसी भी ऐसी ताजा घटना,विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा है|

समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फीचर में लेखक को अपनी राय , दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है । समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती । फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फीचर , समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं । पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: **250** से **2000** शब्दों तक के फीचर छपते हैं ।

प्रश्न**2 -** विशेष रिपोर्ट किसे कहते हैं**?** विशेष रिपोर्ट के प्रकार लिखिए।

उत्तर- सामान्य समाचारों से अलग वे विशेष समाचार जो गहरी छान-बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किये जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं ।विशेष रिपोर्ट के प्रकार-

1.खोजी रिपोर्ट : इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन कर सार्वजनिक किया जाता है।

2. इन्डेप्थ रिपोर्ट: सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान-बीन कर उसके महत्त्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है ।

3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है। रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किश्तों में प्रकाशित की जाती है।

4. विवरणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न **3 -** विचारपरक लेखन के अंतर्गत क्या क्या सम्मिलित हैं**?** संपादकीय किसे कहते हैं**?** संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम क्यों नहीं लिखा जाता**?**

उत्तर-समाचार-पत्रों में समाचार एवं फीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तम्भ छपते हैं। ये सभी विचारपरक लेखन के अन्तर्गत आते हैं।संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं। इसे अग्रलेख व समाचार पत्र की आत्मा भी कहा जाता है।संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

प्रश्न**-4** प्रश्न- बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अन्तर है**?**

उत्तर- विभिन्न विषयों से जुड़े समाचारों के लिए संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी व दिलचस्पी का होना पर्याप्त है, साथ ही उसे आम तौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। किन्तु विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर संबंधित विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों का बारीकी से विश्लेषण कर प्रस्तुतीकरण किया जाता है। बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहा जाता है।

अन्य प्रश्न-

प्रश्न- स्तम्भ लेखन किसे कहते हैं**?**

उत्तर- एक प्रकार का विचारात्मक लेखन है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचरपत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तम्भ- लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं। इस प्रकार किसी समाचार-पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट व नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली व वैचारिक रुझान के कारण समाज में ख्याति प्राप्त हो, स्तम्भ लेखन कहा जाता है।

प्रश्न- संपादक के नाम पत्र के बारे में बताइए।

उत्तर- समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। यह प्रत्येक समाचारपत्र का नियमित स्तम्भ होता है। इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवम राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

प्रश्न- साक्षात्कार/इंटरव्यू किसे कहते हैं**?**

उत्तर- किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है।

प्रश्न- विशेष लेखन किसे कहते हैं**?**

उत्तर- किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन है। जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फिल्म,कृषि, कानून विज्ञान और अन्य किसी भी मत्त्वपूर्ण विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं।

प्रश्न- डेस्क किसे कहते हैं**?**

उत्तर- समाचारपत्र, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं। और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा, व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है।

प्रश्न- बीट किसे कहते हैं**?**

उत्तर- विभिन्न विषयों से जुड़े समाचारों के लिए संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

प्रश्न- विशेष लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए**?**

उत्तर- विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।

प्रश्न- विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र कौन कौन से हैं**?**

उत्तर- विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र होते हैं, यथा- अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, कानून व सामाजिक मुद्दे आदि।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

पाठ्यक्रम खंड अ -**2** प्रादर्श प्रश्नपत्र प्रश्न-**3**

1- निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए।उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (**A**)विशेष लेखन हेतु विषय-विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

कारण(**R**) पत्रकारिता में सामान्य लेखन करने वाले विषय विशेष पर लिख ही नहीं सकते हैं।

(क)कथन **A** तथा कारण **R** दोनों सही हैं तथा कारण,कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख)कथन **A** गलत है लेकिन कारण **R** सही है।

(ग) कथन **A** तथा कारण **R** दोनों गलत हैं।

(घ) कथन **A** सही है लेकिन कारण **R** उसकी गलत व्याख्या करता है।

2- निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) विशेष लेखन की निश्चित शैली होती है|

(I I) विशेष लेखन की निश्चित शैली नहीं होती है।

(I I I) विशेष लेखन की शैली बीट से जुड़ा समाचार लिखने पर उलटा पिरामिड व समाचार-फीचर लिखने पर सीधा पिरामिड हो सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन- सा/ कौन – से सही है/सही हैं

(क) केवल **I**

(ख) केवल **III**

(ग) केवल **II** और **III**

(घ) **I** और **II**

3 -किसी केस स्टडी वाले आलेख या फीचर को सामयिक समाचार से जोड़कर प्रस्तुत करना कहलाता है-

क-स्कूप

ख-लाइव

ग-न्यूज पेग

घ-ब्रेकिंग न्यूज

4 -डेस्क है-

क-संवाददाताओं के बीच काम का वितरण

ख-विशेष लेखन के विषयों के अनुसार निर्धारित अलग-अलग डेस्क

ग-सिटी रिपोर्टरों के बैठने की जगह

घ-इनमें कोई नहीं

5 -बीट है-

क-संवाददाताओं के बीच रूचि व ज्ञान के अनुसार विभिन्न विषयों के निर्धारित काम का वितरण

ख-विशेष लेखन के विषयों के अनुसार निर्धारित अलग-अलग डेस्क

ग-सिटी रिपोर्टरों के बैठने की जगह

घ-इनमें कोई नहीं

6 -ऑप एड पृष्ठ है-

(क) विज्ञापन वाले पृष्ठ

(ख) संपादकीय वाले पृष्ठ

(ग) संपादकीय पृष्ठ के सामने वाला पृष्ठ,जिसमें विचारपरक आलेख,टिप्पणियां आती हैं|

(घ) इनमें कोई नहीं

7-विशेष लेखन का क्षेत्र नहीं है-

क-समाचार ख-खेल ग-शिक्षा घ-मनोरंजन

8-विशेष लेखन के क्षेत्र हैं-

क-सात ख-अनेक ग-दो घ-तीन

9 -खेल और संसदीय पत्रकारिता, किस पत्रकारिता से संबन्धित है**?**

क-विशेषीकृत पत्रकारिता ख-खोजपरक पत्रकारिता ग-पेज थ्री पत्रकारिता घ-एडवोकेसी पत्रकारिता

10-विशेष लेखन के लिए सबसे जरूरी बात है-

क-चील-उडान और शब्द-विवेक ख-गिद्ध दृष्टि और पक्का इरादा
ग-शब्दावली और उपलब्धियाँ घ-प्रभावशीलता और बुद्धिमत्ता
11-मोहन पत्रकार है, उसकी रुचि खेल संबंधी समाचारों में है। संपादक द्वारा उसे खेल संबंधी समाचार लाने का कार्य प्रदत्त किया जाता है,इस विभाजन को कहते हैं -
क- बीट ख-डेस्क ग-विशेष लेखन घ-इनमेंसेकोईनहीं

12-विचारात्मक लेखन नहीं हैं–
(क) संपादकीय (ख) स्तम्भ लेखन
(ग) विशेष लेखन (घ) समाचार लेखन
13 -पत्रकारिता के विकास में कौन सा कार्य मूल भाव का काम करता है **?**
(क) जिज्ञासा (ख) समस्या
(ग) विचार (घ) संचार
14 - राम एक पत्रकार है|वह बजट आधारित लेख लिखना चाहता है,वह कौन सा पत्रकार है **?**
(क) कृषि क्षेत्र पत्रकार (ख) कानून क्षेत्र पत्रकार
(ग) आर्थिक पत्रकार (ग)सिनेमा पत्रकार
15-विशेष लेखन हेतु न्यूनतम अनिवार्य अपेक्षा है-
(क) एक क्षेत्र में विशेषज्ञ लेखन (ख) अनेक क्षेत्र में विशेषज्ञ लेखन
(ग) आर्थिक लेखन (ग)परंपरागत लेखन
विशेष लेखन स्वरूप एवं प्रकार
उत्तर
1) घ **2)** ग **3)** ग **4)** ख **5)** क **6)** ग **7)** क **8)** ख **9)** क **10)** ख **11)** क **12)** घ **13)** क **14)** ग **15)** क

कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण
पाठ्यक्रम खंड **5** ब-**2** आदर्श प्रश्न पत्र प्रश्न क्रमांक **8** का एक भाग :
लगभग **60** शब्दों में एक वर्णनात्मक प्रश्न **3** अंक
महत्वपूर्ण बिंदु
कहानी का नाट्य रूपांतरण करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है:-
1.कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है।वहीं नाटक; लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक,श्रोता व अन्य लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है।
2. कहानी कही या पढ़ी जाती है और नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।
समानता
1. कहानी और नाटक दोनों में कहानी होती है। पात्र होते हैं। परिवेश होता है। कहानी का क्रमिक विकास होता है।संवाद होते हैं।द्वंद्व होता है।चरम उत्कर्ष होता है।
कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के समय ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातें: -
1. कहानी की विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करना।
2. कथावस्तु से दृश्यों को चुनकर निकालना। एक स्थान व समय में घट रही घटना का एक दृश्य बनता है।
3. प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार विकास होना चाहिए,जो उसके विकास से संबंधित हो।
दृश्य अनावश्यक न हो।
4.नाटक का प्रत्येक दृश्य एक दूसरे से जुड़ा हो और प्रत्येक दृश्य में प्रारंभ, मध्य और अंत हो।
5. विवरणात्मक टिप्पणियों को विभिन्न माध्यमों से नाटक में शामिल किया जाता है।
जैसे परिवेश का विवरण मंच सज्जा के माध्यम से या पार्श्व संगीत के माध्यम से।
पात्रों का विवरण संवाद के माध्यम से।
6. संवाद छोटे प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हों,जो कहानी के विकास में सहायक हो।
7. दृश्य और संवादों के माध्यम से चरित्र चित्रण को परिमार्जित किया जा सकता है। ध्वनि और प्रकाश भी इसमें सहायक होते हैं।
8. कहानी के पात्रों के मनोभाव को प्रकट करने के लिए नाटक में स्वगत कथन का प्रयोग।
प्रश्न अभ्यास
प्रश्न **1.** कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए।
अथवा

कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं?
उत्तर-कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें जहाँ कुछ समानताएँ हैं, वहाँ कुछ असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार है-
कहानी
1. कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है।
2. कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।
3. कहानी कही अथवा पढ़ी जाती है।
4. कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बांटा जाता है।
5. कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश की भूमिका नहीं होती है।
नाटक
1. नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है।
2. नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।
3. नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।
4. नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।
5. नाटक में मंच सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।
प्रश्न **2.** कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है **?**
उत्तर-कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है-
1.कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।
2.कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।
3.कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
4.ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।
6. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।
7. संवादों के माध्यम से कथा के विकास में सहायता होती है।
प्रश्न **3.** नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं **?**
उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है-
1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों की अथवा मानसिक द्वंद्वों की नाटकीय प्रस्तुति में आती है।
2. कथानक व पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।
3. संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।
4. संगीत,ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।
प्रश्न **4.** कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए **?**
उत्तर-कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए-
1. कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
2. कथावस्तु से दृश्यों को चुनकर निकालना। एक स्थान व समय में घट रही घटना का एक दृश्य बनता है।
3. प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार विकास होना चाहिए,जो उसके विकास से संबंधित हो।दृश्य अनावश्यक न हो।
4.नाटक का प्रत्येक दृश्य एक दूसरे से जुड़ा हो और प्रत्येक दृश्य में प्रारंभ,मध्य और अंत हो।
5. विवरणात्मक टिप्पणियों को विभिन्न माध्यमों से नाटक में शामिल किया जाता है।
जैसे परिवेश का विवरण मंच सज्जा के माध्यम से या पार्श्व संगीत के माध्यम से।
पात्रों का विवरण संवाद के माध्यम से।
6. संवाद छोटे प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हों,जो कहानी के विकास में सहायक हो।
प्रश्न **5.** कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार परिवर्तित किये जा सकते हैं **?**
उत्तर-कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में निम्नलिखित प्रकार से परिवर्तित किये जा सकते हैं-
1. नाट्य रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता का नाटक के पात्रों से मेल होना चाहिए।
2. पात्रों की भावभंगिमाओं तथा उनके व्यवहार का भी उचित ध्यान रखना चाहिए।
3. पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।
4. पात्र के अनुरूप अभिनय होना चाहिए।

5.पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए। संवादों के माध्यम से उनका चरित्र व्यक्त होना चाहिए।

प्रश्न **6.** कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं **?**

उत्तर-कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्नलिखित प्रकार से करते हैं-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।

2. प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।

3. एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।

4. दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में प्रस्तुत किया जाता है।

5. दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

खंड **5 – 2** कैसे बनता है रेडियो नाटक

आदर्श प्रश्नपत्र प्रश्न क्रमांक **8**

लगभग **60** शब्दों में एक वर्णनात्मक प्रश्न **3** अंक

विशेष विचारणीय बिंदु

1. रेडियो नाटक में वही कहानी सफल होती है जो पूरी तरह एक्शन पर आधारित न हो। अतः रेडियो नाटक की प्रस्तुति के लिए कहानी के चयन में इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए।

2. आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि **15** से **30** मिनट तक होती है**,** क्योंकि मनुष्य की एकाग्रता की अवधि **15** से **30** मिनट की होती है।

3. अगर कहानी लंबी है तो उसे धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसकी हर कड़ी **15** या **30** मिनट की होगी।

4. पात्रों की संख्या सीमित होती है क्योंकि लोग सिर्फ आवाज के सहारे ही चरित्र को याद रखते हैं। **15** मिनट की अवधि वाले रेडियो नाटक में अधिकतम पात्र **5** से **6** हो सकते हैं ।**30** से **40** मिनट की अवधि वाले में **8** से **12** पात्र। वहीं एक घंटे या उससे अधिक के रेडियो नाटक में **15** से **20** पात्र।

5. नाटक में दृश्य गायब होता है और दृश्य का निर्माण भी ध्वनि प्रभावों व संगीत के माध्यम से करना होता है।

6. रेडियो नाटक में अंक या दृश्य की जगह कट लिखने की परिपाटी है।

7. रेडियो नाटक के पात्रों के आपसी संबंध**,** चारित्रिक विशेषताएं आदि जानकारी संवाद से ही होती है।

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न **1.**रेडियो नाटक और सिनेमा/रंगमंचीय नाटक में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:रेडियो नाटक और सिनेमा/रंगमंचीय नाटक में निम्नलिखित अन्तर हैं-

रेडियो नाटक

1. रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है।

2.रेडियो नाटक में साज-सज्जा का कोई महत्त्व नहीं होता क्योंकि वहाँ इसका प्रयोग नहीं होता।

3. रेडियो नाटक में भाव भंगिमा का महत्त्व नहीं होता।

4. कहानी का विकास संवादों के माध्यम से ही होता है।

5.रेडियो नाटक में दृश्य एवं अंक नहीं होते।

सिनेमा/रंगमंचीय नाटक

1.सिनेमा/रंगमंचीय नाटक दृश्य माध्यम है।

2. सिनेमा/रंगमंचीय नाटक में साज-सज्जा का अत्यधिक महत्त्व होता है।

3.सिनेमा/रंगमंच में भाव भंगिमा का बहुत महत्त्व होता है।

4. इनमें कहानी का विकास पात्रों की भावनाओं और गतिविधियों तथा संवादों द्वारा किया जाता है।

5. रंगमंचीय नाटक में दृश्य व अंक होते हैं।

प्रश्न **2.**रेडियो नाटक के कथानक में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है**?** स्पष्ट करें।

उत्तर:रेडियो नाटक का कथानक संवादों और ध्वनि प्रभावों पर ही निर्भर रहता है। इसलिए कथानक का चुनाव करते समय अग्रलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

(1) रेडियो नाटक का कथानक केवल एक घटना पर आधारित नहीं होना चाहिए। रेडियो नाटक के कथानक में अत्यधिक संवाद होने चाहिए तथा एक-से-अधिक घटनाएँ भी होनी चाहिए।

(2) सामान्य तौर पर रेडियो नाटक की अवधि **15** से **30** मिनट तक होनी चाहिए। इससे अधिक की अवधि के नाटक को श्रोता सुनना पसंद नहीं करेगा। कारण यह है कि श्रोता की एकाग्रता **15** से **30** मिनट तक ही बनी रहती है। यदि रेडियो नाटक की अवधि लंबी होगी**,** तो श्रोता की एकाग्रता भंग हो जाएगी और उसका ध्यान भी भटक जाएगा।

(3) रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या बहुत कम होनी चाहिए।यदि रेडियो नाटक में बहुत अधिक पात्र होंगे, तो श्रोताओं को पात्रों को याद रखना कठिन होगा, क्योंकि श्रोता केवल आवाज़ के माध्यम से रेडियो के पात्रों को याद रखता है।

प्रश्न **3.**रेडियो नाटक के प्रमुख तत्व की विवेचन कीजिए।

उत्तर:रेडियो नाटक का आधार और सबसे प्रमुख तत्व ध्वनि है और ध्वनि ही भावाभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन है। एक ही शब्द का हम अलग-अलग उच्चारण करके प्रेम, घृणा, क्रोध आदि विभिन्न भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं।

प्रश्न **4.**दृश्य-श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाएँ हैं**?** इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है**?**

उत्तर:दृश्य-श्रव्य माध्यम में हम नाटक को अपनी आँखों से देख भी सकते हैं और पात्रों द्वारा बोले गए विभिन्न संवादों को सुन भी सकते हैं।श्रव्य माध्यम की कुछ सीमाएँ हैं।इसमें हम कुछ भी देख नहीं सकते, केवल सुन सकते हैं। रेडियो नाटक में निर्देशक नाटक को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि ध्वनियों के माध्यम से ही सब-कुछ समझना पड़ता है।

आत्म परिचय (हरिवंशराय बच्चन)

सारांश-

कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता। क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है।

कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्रविधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है- उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग, विरुद्धों का विरोधाभासमूलक सामंजस्य साधते-साधते ही वह बेखुदी, वह मस्ती, वह दीवानगी व्यक्तित्व में उत्तर आई है कि दुनिया का तलबगार नहीं हूँ। बाजार से गुजरा हूँ, खरीदार नहीं हूँ-जैसा कुछ कहने का ठस्सा पैदा हुआ है। यह ठस्सा ही छायावादोत्तर गीतिकाव्य का प्राण है।

पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न -

1.मैं जग –जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
में कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ

सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव-सागर तरने की नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं , हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ !

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं हैं, हाथ, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना !

1. कवि किसका भार लिए फिरता है?

क. घर बार का ख . कार्यालय का
ग. जगजीवन का घ. आसपास का

उत्तर- ग. जगजीवन का

2. कवि किस सुरा का पान करता है?

क. स्नेह　　ख. उमंग

ग. उत्साह　　घ. द्वेष

उत्तर- क. स्नेह

3. आत्म परिचय का कवि कैसा संसार लिए फिरता है?

क. यथार्थ　　ख. आदर्श

ग. स्वप्निल　　घ. सुखी

उत्तर- ग.. स्वप्निल

4. कवि किस अवस्था का उन्माद लिए फिरता है?

क. वृद्ध　　ख. प्रौढ़

ग. युवा　　घ. किशोर

उत्तर- ग. युवा

5. कवि स्वयं को दुनिया का एक नया क्या माना ?

क. दीवाना　　ख. प्रेमी

ग. परवाना　　घ. रक्षक

उत्तर- क.. दीवाना

6. कवि कैसा संदेश लिए फिरता है?

क. सांत्वना का　　ख. बलिदान का

ग. मस्ती का　　घ. समर्पण

उत्तर- ग. मस्ती का

7. कवि अपने हृदय में कैसे उपहार संजोए हुए हैं?

क. प्रेम के　　ख. द्वेष के

ग. भावों के　　घ. अभावों के

उत्तर- ग.भावों के

8. "भव सागर" से कवि का क्या आशय है-

क. भयंकर सागर　　ख. भयानक सागर

ग. संसार रूपी सागर　　घ. काल रूपी सागर

उत्तर- ग. संसार रूपी सागर

9. " मैं स्नेह सूरा का पान किया करता हूँ" पंक्ति में अलंकार है-

क. रूपक　　ख. उपमा

ग. उत्प्रेक्षा　　घ. अतिशयोक्ति

उत्तर- क. रूपक

10.आत्मपरिचय पाठ के रचनाकार हैं-

क. हरिवंशराय बच्चन　　ख. रामधारी दिनकर

ग. कुँवर नारायण　　घ. निराला

उत्तर- क. हरिवंशराय बच्चन

पद्य-2.

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता,
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,

हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पडा, तुम कहते, छंद बनाना,
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना ”

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ
जिसकी सुनकर जग झूम, झुके; लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ|

1. कवि के फूट पड़ने को समाज ने क्या कहा?

क. अभिनय करना ख. बहाने बनाना
ग. आँसू बहाना घ. छंद बनाना

उत्तर- घ. छंद बनाना

2. कवि अपने रोदन में क्या लिए फिरता है?

क. राग ख. राम
ग. रास घ. राज

उत्तर- क. राग

3.. आत्मपरिचय कविता में कवि ने किसका ध्यान नही रखने की बात की है?

क. संसार की समर्थता की ख. संसार के स्वरूप की
ग. संसार के बंधनों की घ. संसार के भाव प्रधानता की

उत्तर- ग. संसार के बंधनों की

4. राजाओं के महल को भी कवि किस पर न्योछावर कर देना चाहता है?

क. लालच पर ख. प्रिया की स्मृतियों पर
ग. सांसारिक मोहमाया पर घ. क्रोध पर

उत्तर- ख. प्रिया की स्मृतियों पर

5.. "आत्म परिचय" कवि के अनुसार संसार के किन लोगों को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ?

क. संसार के हित में कार्य करने वालों की ख.संसार के लिए उच्च साहित्य रखने वालों की
ग. संसार की झूठी प्रसंशा करने वालों का घ. संसार का झूठा गुणगान करने वालों का

उत्तर- घ. संसार का झूठा गुणगान करने वालों का

6.. हरिवंशराय बच्चन किस वाद के प्रवर्तक माने जाते हैं?

क. समाजवाद ख. हालावाद
ग. पूंजीवाद घ. प्रयोगवाद

उत्तर- ख. हालावाद

7. "मैं और, और जग कहाँ का नाता" पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

क. उपमा ख. उत्प्रेक्षा
ग. यमक घ. रूपक

उत्तर- ग. यमक

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. कवि स्वयं को कवि नहीं कहलवाना चाहता है क्योंकि-

क. उसकी कविता में सत्यता का अभाव है। ख. उसकी कविता काल्पनिक है।
ग. उसकी कविता में प्रतिमानों का अभाव है। घ.उसकी कविता में निजी भावों की सत्यता विद्यमान है।

उत्तर- घ. उसकी कविता में निजी भावों की सत्यता विद्यमान है।

2.. कवि संसार से स्वयं को अलग क्यों मानता है?

क. संसार स्वार्थ सिद्धि और लालच में लीन है। ख. कवि स्वार्थ सिद्धि और लालच में लीन है।

ग. नादानी के कारण घ. उसकी प्रियतमा ने उसे संसार से अलग कर दिया है।

उत्तर- क. संसार स्वार्थ सिद्धि और लालच में लीन है।

3.. कवि के अनुसार नादान कौन है?

क. सांसारिकता में लिप्त व्यक्ति ख. संसार को बदलने के इच्छुक व्यक्ति

ग. कवि स्वयं घ. परंपरा विरोधी व्यक्ति

उत्तर- क. सांसारिकता में लिप्त व्यक्ति

4. कथन-संसार भावनाओं का सागर है |

कारण-भावना और कल्पना के सहारे ही समाज का सृजन होता है |

(क) कथन सही है और कारण व्याख्या करता है।

(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन और कारण दोनों असत्य है।

(घ) कथन और कारण दोनों पर सत्य है।

उत्तर- (क) कथन सही है और कारण व्याख्या करता है।

5. कथन-कवि को अपने रुन्दन में भी प्रेम का संगीत सुनाई देता है|

कारण-क्योंकि कवि प्रेम के सागर में नहीं डूबना चाहता है |

(क) कथन सही है और कारण गलत ।

(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन और कारण दोनों असत्य है।

(घ) कथन और कारण दोनों पर सत्य है।

उत्तर-(क) कथन सही है और कारण गलत ।

लघुउत्तरीय प्रश्न-

1.आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के किन पक्षों को उभारा है?

उत्तर –'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के निम्नलिखित पक्षों को उभारा है-

कवि अपने जीवन में मिली आशाओं-निराशाओं से संतुष्ट है।

वह (कवि) अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है।

कवि संसार को मिथ्या समझते हुए हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुख को समान समझता है।

कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह वाणी के माध्यम से अपना आक्रोश प्रकट करता है।

2. कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?

उत्तर –कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता। वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। वह बार-बार वह अपनी कल्पना का संसार बनाता है तथा प्रेम में बाधक बनने पर उन्हें मिटा देता है। वह प्रेम को सम्मान देने वाले संसार की रचना करना चाहता है।

3. आत्मपरिचय' कविता को द्रष्टि में रखते हुए कवि के कथ्य को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए ।

उत्तर –'आत्मपरिचय' कविता में कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता, क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के जरिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता

है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

4. 'आत्म परिचय' में कवि ने किस शैली का प्रयोग किया है?

उत्तर:'आत्मपरिचय' शीर्षक कविता में कवि ने वैयक्तिक अर्थात् मैं शैली का प्रयोग किया है। उसने इस शैली का प्रयोग भावों के अनुकूल एवं सार्थक ढंग से किया है। इस शैली का प्रयोग करके कवि ने अपने बारे में पाठकों को सबकुछ बताने की कोशिश की है।

5. कवि सुख और दुख – दोनों स्थितियों में मग्न कैसे रह पाता है?

उत्तर: कवि कहता है कि मैं दुख में ज्यादा दुखी नहीं हुआ और सुख में ज्यादा खुश नहीं हुआ। मैंने हमेशा दोनों स्थितियों में सामंजस्य बनाए रखा। दुख और सुख दोनों को एक जैसा माना क्योंकि ये दोनों स्थितियों तो मानव जीवन में आती है। इसलिए कवि सुख और दुख दोनों स्थितियों में मग्न रहता है।

6.आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है?

उत्तर: इस कविता में, कवि ने अपने जीवन की अनेक विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है। कवि सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह संसार की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार अपने चहेतों का गुणगान करता है। उसे यह संसार अपूर्ण लगता है। वह अपने सपनों का संसार लिए फिरता है। वह यौवन का उन्माद व अवसाद साथ लिए रहता है। वह शीतल वाणी में आग लिए फिरता है।

7. साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य हैं? आपके विचार से उन्हें किसने झकृत किया होगा?

उत्तर- साँसों के तार' से कवि का तात्पर्य है-उसके जीवन में भरा प्रेम रूपी तार, जिनके कारण उसका जीवन चल रहा है। मेरे विचार से उन्हें कवि की प्रेयसी ने झंकृत किया होगा।

एक गीत(हरिवंशराय बच्चन)

सारांश-

निशा-निमंत्रण से उद्धृत इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचल तेजी भर सकता है-अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने के अभिशिप्त हो जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

सार-कवि कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए व्यक्ति जब अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती, वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है। अत: रात जीवन में निराशा नहीं, अपितु आशा का संचार भी करती है।

पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न-

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे–

यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

मुझसे मिलने को कौन विकल**?**
मैं होऊँ किसके हित चंचल**?–**
यह प्रश्न शिथिल करता पद को**,** भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

1.घर जाते वक्त कवि के पग शिथिल क्यों हो जाते हैं?

क. घर पर उसका कोई इंतेज़ार नही कर रहा है। ख. घर जाकर वह क्या करेगा।
ग.. उसे अपने घर जाने की जल्दी नहीं है। घ. उसे अपना घर अच्छा नही लगता है।

उत्तर-क. घर पर उसका कोई इंतेज़ार नही कर रहा है।

2. एक गीत में कवि ने समय को कैसा माना है?

क. स्थिर ख. परिवर्तनशील
ग. तीव्र घ. उग्र

उत्तर- ख. परिवर्तनशील

3. "दिन जल्दी जल्दी ढलता है" कविता में कवि हताश और दुखी क्यों है?

क. पत्नी से तलाक होने के कारण ख. प्रियतमा के निष्ठुरता के कारण
ग.संतान सुख से वंचित होने के कारण घ. परिवार से बिछुड़ने के कारण

उत्तर- घ.परिवार से बिछुड़ने के कारण

4. पक्षी के पैरों में चंचलता के क्या कारण है।

क. भूख ख. भय
ग. वात्सल्य घ. प्रतिस्पर्धा

उत्तर- ग.वात्सल्य

5. कवि के हृदय में कैसे भाव भरे हैं?

क. प्रसन्नता ख. उत्साह
ग. विह्वलता घ. घृणा

उत्तर- ग.विह्वलता

6. शीघ्र अपने बच्चों के पास पहुंचने की इच्छा चिड़िया के किस प्रक्रिया से प्रकट होती हैं?

क. चहचहाने से ख. तेज़ उड़ने से
ग. पीड़ा में तड़पने से घ. जल्दी जल्दी दाना चुगने

उत्तर- ख.तेज़ उड़ने से

7. 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है" कविता में दिन का पंथी किसे माना गया है?

क. चिड़िया को ख. कवि को
ग. सूर्य को घ. प्रत्याशा को

उत्तर- ग. सूर्य को

8. "मैं होऊं किसके हित चंचल?" दिन जल्दी जल्दी ढलता है गीत का यह प्रश्न पैरों को कैसा कर देता है?

क. चंचल ख. शिथिल
ग. विह्वल घ. उपर्युक्त सभी

उत्तर- ख. शिथिल

9. पथ में होने वाली रात की आशंका से कौन भयभीत रहता है?

क. प्रेमी ख. तपस्वी

ग. थका पंथी घ. कारीगर

उत्तर- ग. थका पंथी

10. नीड़ का अर्थ है-

क. जल ख. कमल

ग. तालाब घ. घोंसला

उत्तर- घ.घोंसला

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. एक गीत बच्चन जी के किस काव्य संग्रह से ली गई है?

क. मधुशाला ख. मधुबाला

ग. निशा निमंत्रण घ. नीड का निर्माण फिर

उत्तर- ग. निशा निमंत्रण

2. लक्ष्य को पाने की एकाग्रता के कारण कवि को कैसा प्रतीत होता है?

क. दिन ढल नही रह है। ख. दिन के बाद रात कब आएगी।

ग. दिन जल्दी जल्दी ढलता है। घ. उपरोक्त सभी।

उत्तर- ग. दिन जल्दी जल्दी ढलता है।

3. बच्चे नीड़ से किस लिए झांक रहे होंगे?

क. भूखा होने के कारण ख. प्रकृति का आनंद लेने के कारण

ग. माता - पिता की प्रतीक्षा के कारण घ. बाहर घूमने के कारण

उत्तर- ग.माता - पिता की प्रतीक्षा के कारण

4. चिड़िया अपने बच्चों के लिए चिंतित है। यह कैसे स्पष्ट होता है?

क. चिड़िया की उड़ान की गति से ख. बहुत दूर तक उड़ने से

ग. चिड़िया द्वारा बच्चों को अकेला छोड़ने से घ. चिड़िया के मंद गति से उड़ने से

उत्तर- क.चिड़िया की उड़ान की गति

5. "एक गीत" कविता में कवि किससे प्रभावित होता है?

क. अपनी प्रिया से ख. चिड़िया के पैरों की चंचल गति से

ग. चिड़िया के बच्चों से घ. प्रकृति की अनुपम महिमा से

उत्तर- ग. चिड़िया के बच्चों से

6. कवि के पैरों की गति को कौन सा भाव शिथिल कर देता है?

क. चिड़िया की तीव्र उड़ान ख. बच्चों की व्याकुलता

ग. समय का तीव्र गति से व्यतीत होना है। घ. कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना ।

उत्तर- घ. कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना ।

7. "दिन जल्दी जल्दी ढलता है" पंक्ति के माध्यम से किसके महत्व को दर्शाया गया है?

क. कवि के ख. समय के

ग. चिड़िया के घ. बच्चों के

उत्तर- ख. समय

8." एक गीत" के रचनाकार है-

क. दिनकर जी ख. निराला जी

ग. पंत जी घ. बच्चन जी

उत्तर- घ. बच्चन जी

9. "दिन जल्दी जल्दी ढलता है' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

क. उपमा　　ख. रूपक

ग. पुनरुक्ति　　घ. उत्प्रेक्षा

उत्तर- ग. पुनरुक्ति

10. बच्चन जी की जन्म स्थली है-

क. मुम्बई　　ख. प्रयागराज

ग. नासिक　　घ. हैदराबाद

उत्तर- ख. प्रयागराज

11. कथन - बच्चे झांक रहे हैं।

कारण - उनके मन में चंचलता है।

(क) कथन सही है और कारण व्याख्या करता है।

(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता।

(ग) कथन और कारण दोनों असत्य है।

(घ) कथन और कारण दोनों पर सत्य है।

उत्तर-(क) कथन सही है और कारण व्याख्या करता है।

12.कथन - पथिक जल्दी-जल्दी चलता है।

कारण - मंजिल का दूर होना मन में निराशा लाता है।

(क) कथन और कारण दोनों सत्य है।

(ख) कथन और कारण दोनों असत्य है।

(ग) कथन सत्य है किंतु कारण की सही व्याख्या नहीं करता।

(घ) कथन असत्य है किंतु कारण सत्य है।

उत्तर-(क) कथन और कारण दोनों सत्य है।

13. कथन – स्नेह की तरंग जीवन में उत्साह उमंग और हिलोर पैदा करती है।

कारण - जीवन में अपनों का स्नेह ना हो, तो जीवन शिथिल हो जाता है।

(क) कथन कारण की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन कारण की सही व्याख्या करने में असमर्थ है।

(ग) कथन और कारण में एकरूपता नहीं है।

(घ) कथन और कारण में विरोधाभास की प्रवृति है।

उत्तर- (क) कथन कारण की सही व्याख्या करता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न-

1.दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं- की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता हैं?

उत्तर -'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अत: समय के साथ स्वयं को समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

2. दिन जल्दी – जल्दी ढलता है। कविता का उद्देश्य बताइए।

उत्तर –यह गीत प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन की कृति निशा-निमंत्रण से उद्धृत है। इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश को व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचलता यानी तेजी भर सकता है। इससे हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने से बच जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है

3.दिन जल्दी-जल्दी ढलता है, कविता में कवि कौन से रस को आधार बनाता हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस कविता में मुख्यतः कवि ने दो रसों का प्रयोग किया है- वात्सल्य रस और श्रृंगार रस। इन रसों का प्रयोग करके कवि ने कविता के सौंदर्य में वृद्धि की है। पक्षियों के वात्सल्य और कवि के प्रेम का चित्रण इन्हीं रसों के माध्यम से हुआ है। कहने का आशय है कि कवि की रस योजना भावानुकूल बन पड़ी है।

4.मैं होऊँ किसके हित चंचल?' का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'मैं होऊँ किसके हित चंचल' का आशय यह है कि कवि अपनी पत्नी से दूर होकर एकाकी जीवन बिता रहा है। उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है, इसलिए वह किसके लिए बेचैन होकर घर जाने की चंचलता दिखाए।

5. यदि संजिल दूर हो तो लोगों की वहाँ पहुँचने की मानसिकता कैसी होती हैं?

उत्तर –मंजिल दूर होने पर लोगों में उदासीनता का भाव आ जाता है। कभी-कभी उनके मन में निराशा भी आ जाती है। मंजिल की दूरी के कारण कुछ लोग घबराकर प्रयास करना छोड़ देते हैं। कुछ व्यर्थ के तर्क-वितर्क में उलझकर रह जाते हैं। मनुष्य आशा व निराशा के बीच झूलता रहता है।

पतंग (शमशेर बहादुर सिंह)

कविता का सारांश

श्री आलोक धन्वा द्वारा रचित 'पतंग' कविता उनके काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' में संकलित है। इस कविता में कवि ने बाल-सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर एवं मनोहारी चित्रण किया है। कवि ने बाल क्रियाकलापों तथा प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक सुंदर बिंबों का समायोजन किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है, जिसमें वे खो जाना चाहते हैं। आकाश में उड़ती हुई पतंग ऊँचाइयों की वे हदें हैं, जिन्हें बाल-मन छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

कविता एक ऐसी नई दुनिया की सैर कराती है, जहाँ शरद ऋतु का चमकीला सौंदर्य है; तितलियों की रंगीन दुनिया है; दिशाओं के नगाड़े – बजते हैं, छत्तों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर इसी भय पर विजय का ध्वज लहराते बच्चे हैं। ये बच्चे गिर-गिरकरसंभलते हैं तथा पृथ्वी का हर कोना इनके पास आ जाता है। वे हर बार नई पतंग को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए भादो के बाद शरद की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कवि के अनुसार सबसे तेज़ बौछारों के समय का अंधेरा व्यतीत हो गया है और खरगोश की आँख के समान लालिमा – से युक्त सौंदर्यमयी प्रकाशयुक्त सवेरा हो गया है। शरद अनेक झाड़ियों को पार करते हुए तथा नई चमकदार साइकिल तेज गति से चलाते हुए जोर से घंटी बजाते हुएआ गया है। वह अपने सौंदर्य से युक्त चमकीले इशारों से पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूह को बुलाता है।

वह आकाश को इतना सुंदर तथा मुलायम बना देता है कि पतंग ऊपर उठ सके। पतंग जिसे दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन वस्तु माना जाता है, वह इस असीम आकाश में उड़ सके। इस हसीन दुनिया का सबसे पतला कागज़ और बाँस की पतली कमानी आकाश में उड़ सके और इनके उड़ने : के साथ ही चारों ओर का वातावरण बच्चों की सीटियों, किलकारियों और तितलियों की मधुर ध्वनि से गूंज उठतेहैं।

कोमल बच्चे अपने जन्म से ही कपास के समान कोमलता लेकर आते हैं। ये पृथ्वी भी उनके बेचैन पाँवों के साथ घूमने लगती है। जब ये बच्चे मकानों की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं तो छतों को नरम बना देते हैं। जब ये बच्चे झूला-झूलते हुए आते हैं तो दिशाओं के नगाड़े बजने लगते हैं। प्राय: बच्चे छतों पर तेज गति से बेसुध होकर दौड़ते हैं तो उस समय उनके रोमांचित शरीर का संगीत ही उन्हें गिरने से बचाता है। उस समय मात्र धागे के सहारे उडते पतंगों की ऊँचाइयाँ उन्हें सहारा देकर थाम लेती हैं।

जिस तरह पतंग असीमऊपर और ऊपर उड़ती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ-साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नई-नई इच्छाएँ और उमंगें जागती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक

पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें।आकाश में पतंगों की ऊँचाइयों के साथ-साथ ये कोमल बच्चे भी अपने रंध्रों के सहारे उड़ रहे हैं। कवि का मानना है कि अगर बच्चे छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बच जाते हैं तो उसके बाद वे पहले से ज्यादा निडर होकर स्वर्णिम सूर्य के सामने आते हैं। तब उनके इस साहस, धैर्य और निडरता को देखकर यह पृथ्वी भी उनके पैरों के पास अधिक तेजी से घूमती है।

(लघुत्तरीय प्रश्न बैंक)

1. 'सबसे तेज बौछारें गयीं भादों गया'के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।
2. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास-कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकते हैं ?
3. पतंगों के साथ वे भी उड़ रहे हैं'बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है ?
4. आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर आपके मन में कैसे खयाल आते हैं ?
5. रोमांचित शरीर का संगीत'का जीवन की लय से क्या संबंध है ?
6. महज एक धागे के सहारे,पतंगों की धड़कती ऊँचाइयां उन्हें(बच्चों) कैसे थाम लेती हैं ? चर्चा करें।
7. पतंग के माध्यम से कवि ने किस प्रकार के मनोविज्ञान का चित्रण किया है ?
8. पृथ्वी का प्रत्येक कोना बच्चों के पास स्वतः कैसे आ जाता है ?
9. आपके जीवन में शरद ऋतु क्या मायने रखती है?
10. कवि ने बच्चों के लिए 'कपास' शब्द का प्रयोग किया है, क्यों ?

(उत्तर)

1.प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होता रहता है। जब तेज़ बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की गरमी भी चली गई। इसके बाद आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। इस महीने में प्रकृति में अनेक परिवर्तन आते हैं

2. सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश की आँखों जैसी दिखती है।

3. शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। गरमी समाप्त हो जाती है।

4. प्रकृति खिली-खिली दिखाई देती है।

5.आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।

6.फूलों पर तितलियाँ मँडराती दिखाई देती हैं।

7.सभी लोग खुले मौसम में आनंदित हो रहे हैं।

2. कपास से बच्चों को गहरा संबंध है। दोनों में काफ़ी समानताएँ हैं। कपास जैसे सफ़ेद होती है, वैसे ही बच्चे भी सफ़ेद अर्थात् गोरे होते हैं। कपास की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं। कपास के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ। होती हैं। वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

3. जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नई-नई इच्छाएँ और उमंगें आती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें।

4. आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर मन खुशी से भर जाता है। मन करता है कि जीवन में भी इतने ही रंग होने चाहिए ताकि जीवन को सहजता से जिया जा सके। सारी इच्छाएँ पूरी हों। जिस प्रकार पतंग अधिक से अधिक ऊँची उड़ती है, वैसे ही बच्चे भी जीवन में ऊँचा मुकाम हासिल करना चाहतेहैं।

5. यदि शरीर रोमांचित है अर्थात् उसमें खुशियाँ भरी हैं तो आनंद रूपी संगीत बजता रहता है। यही आनंद जीवन को नई दिशा देता है। जीवन रूपी लय अपने आप ही सफलता प्राप्त कर लेती है।

6. बच्चे जब छतों के किनारों से गिरने वाले होते हैं तो पतंग की डोर उन्हें गिरने से बचा लेती है। बच्चों को डोर से भी उतना प्यार होता है जितना की पतंग से। वे पतंग को उड़ते हुए देखते हैं। साथ ही यह भी देखते हैं कि चक्के में डोर कितनी है। इन पतंगों की ऊँचाइयों से बच्चे संभल जाते ह।

7. पतंग' कविता के माध्यम से कवि ने बाल मनोविज्ञान का चित्रण किया है। इस कविता में कवि ने बाल सुलभ इच्छाओं और उमंगों का मनोरम चित्रण किया है। बाल क्रियाओं का इतना सूक्ष्म चित्रण करके कवि ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

8. बच्चे पतंग उड़ाते हुए चाहते हैं कि उनकी पतंग सबसे ऊँची जाए अर्थात् वे पतंग के माध्यम से सारे ब्रह्मांड में घूम लेना चाहते हैं। वे कल्पना की रंगीन दुनिया में खो जाते हैं। इसलिए उनके लिए पृथ्वी का प्रत्येक कोना अपने आप चला आता है अर्थात् पतंग उड़ाने के लिए बच्चों को जमीन की कमी पड़ जाती ह।

9. जीवन में प्रत्येक ऋतु का अपना महत्त्व है। समय के अनुसार सभी ऋतुएँ आती हैं और जाती हैं। इनमें से शरद ऋतु का अपना अलग ही महत्त्व है। इस ऋतु में प्रकृति नई-नई लगने लगती है। हर कोई इस प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद लेना चाहता है।

10. कपास मुलायम और सफ़ेद होती है। बच्चे भी कपास की तरह कोमल व गोरे होते हैं। दूसरे कपास परिस्थितिनुसार परिवर्तित होती रहती है। बच्चे भी माहौल के अनुसार अपना व्यवहार बदलते हैं।

पठितपद्यांश-1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सबसे तेज़ बौछारें गयीं
भादों गया सवेरा हुआ
ख़रगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिलतेज़चलातेहुए
घंटीबजातेहुएज़ोर-ज़ोरसे
चमकी ले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को

1.कथन और कारण पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए।

कथन- शरद आया पुलों को पार करते हुए

कारण- सबसे तेज़ बौछारें गई भादों गया

(क) कथन कारण का अनुसरण नहीं करता है।
(ख) कारण कथन से सम्बंध नहीं रखता है।
(ग) कथन कारण की सही व्याख्या करती है।
(घ) इनमें से कोई नहीं

2.उपर्युक्त पद्यांश के लेखक का नाम क्या है ?

(क).शमशेर बहादुर सिंह

(ख) .उमाशंकर जोशी

(ग).जयसंकर प्रसाद

(घ) .रघुवीर सहाय

3.भादों के जाने के बाद क्या हुआ ?

(क)सवेरा हुआ (ख)अंधेरा हुआ
(ग)साँझ हुआ (घ) दोपहर हुआ

4.शरद ऋतु किसको बुला रहा था ?

(क)बच्चों को (ख)काले बादलों को
(ग) हरियाली को (घ) इनमें से कोई नहीं

5.शरद ऋतु ने क्या चलाते हुए पुल को पार किया ?
(क) कार चलाते हुए (ख)चमकीली साईकिल चलाते हुए
(ग) बैलगाड़ी (घ) इनमें सभी

6.सवेरा कैसा है ?
(क) ख़रगोश की आँखों जैसा लाल (ख)खुशनुमा सवेरा
(ग)अंधेरा भरा (घ)चिड़चिड़ा

उत्तर- 1-ग, 2-क, 3-क, 4-क, 5-ख, 6-क

2. पद्यांश-2. निम्नलिखितप द्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर

1 बच्चे जन्म से अपने साथ क्या लाते हैं?
क)कठोरता ख)कपास
ग)बीमारी घ)लचीलापन

2 कविता में आये शब्द और विशेषण का सही मिलान बताइए।
क)पैर-मृदंग ख)पृथ्वी-घूमती हुई
ग)दिशाएं-मृदंग घ) वेग-लचीले

क)'क'औरख'सही है
ख)'ख'और'ग'सही है
ग)'क', 'ख'और'ग'दोनों सहीहैं।
घ)इनमें सभी सही हैं।

3 बच्चे जब पतंग उड़ाते हुए दौड़ते हैं तो कैसी आवाज़ चारो ओर गूंजती है ?
क)ढोल की तरह ख)मृदंग की तरह
ग)बाँसुरी की तरह घ)तबले की तरह

4 बच्चे पेंग भरते हुए किसकी तरह आते हैं?
क)पेड़ की तरह लहराते हुए ख)डाल की तरह लचीले वेग से
ग)ट्रेन की तरह घ)इनमें से सभी

5 छतों को नरम कौन बनाता है?
क)शरद ऋतु ख)मौसम
ग)बच्चों के मुलायम पैर घ)कपास

उत्तर- 1-ख, 2-3, 3-ख, 4-ख, 5-ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक)

1.बच्चे पतंगों के साथ-साथ किस के सहारे उड़ रहे हैं?

क.फूलों ख.तंतुओं ग.धागे घ. कल्पना

2. 'पतंग' कविता में 'कपास' किसकाप्रतीक है?

क.प्रकाश ख.कोमलता ग.सफेदी घ. शांति

3. उड़ाने वाले बच्चे दिशाओं को किसके समान बजाते हैं?

क.ढोलक के समान ख.वीणा के समान ग.बाँसुरी के समान घ. मृदंग के समान

4.पृथ्वी किनके बेचैन पैरों के पास घूमती हुई आती है?

क. तितलियों के ख. खरगोश के ग.बच्चों के घ. वीरों के

5. कौन-सी ऋतु आकाश को मुलायम बना देती है?

क.ग्रीष्म ख.वसंत ग.शरद घ. वर्षा

6. पतंग उड़ाते हुए बच्चे किसके सहारे स्वयं भी उड़ते-से है?

क.साहस के ख.फेफड़ों के ग.शक्ति के घ. रंध्रों के

7. पतंग कविता में लाल सवेरा को कैसा कहा गया है?

क.खरगोशकीआँखोंजैसा ख.उजाला ग.कपासजैसा घ. चमकीला

8. दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ किसे कहा गया है?

क.पतंगको ख.अणुको ग.किरणको घ. कली को

9. दौडते भागते बच्चे दिशाओं को किसकी तरह बजाते हैं?

क.ढोलक ख.सितार ग.मृदंग घ बाजा

10. 'पतंग' कविता के कवि हैं-

क.आलोकरस्तोगी ख.आलोकमिश्रा ग.आलोकधन्वा घ. आलोक श्रीवास्तव

11. कवि ने तेज़ बौछारों के जाने के साथ ही किस महीने के भी चले जाने की बात कही है?

क.सावन ख.आषाढ़ ग.अश्विन घ. भादो

12. किस की आँखों जैसा लाल सवेरा हुआ?

क.बिल्ली ख.खरगोश ग.बंदर घ. गाय

13. पुलों को पार करते हुए कौन-सी ऋतु आई?

क.शरद ख.वसंत ग.पावस(वर्षा) घ. ग्रीष्म

14. कवि के अनुसार दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन उड़ने वाली चीज़ है-

क.तितली ख.साईकिल ग.पतंग घ. मोटर

15. शरद क्या चलाते हुए आता है?

क.घोड़ा ख.साइकिल ग.आँधी घ. मोटर

16. शरद क्या बजा रहा है?

क.घंटी ख.थाली ग.बाजा घ.ढोलक

17. शरद बच्चों के झुंड को कैसे इशारों से बुलाता है?

क.तिरछे ख.सीधे ग.तीखे घ. चमकीले

18. 'कपास' किस का प्रतीक है?

क.प्रकाश का ख.अंधकार का ग.कोमलता का घ. शांति का

19. पतंग के साथ बच्चे कैसे दौड़ते हैं?

क.खड़े रहते हैं ख.संभल कर ग. रुक-रुककर घ. बेसुध होकर

20. 'मृदंग' क्या है?

क.बांसुरी ख.लंबी ढोलक ग.सितार घ. शहनाई

21. उन बच्चों का वेग किस की तरह लचीला है?

क.रबड़ ख.फूल ग.डाल घ. घास

22. 'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं' से आशय है-

क.उड़ानभरना ख.स्वप्नदेखना ग.आकाशछूलेनेकाअहसासहोना घ. पतंग उड़ने पर प्रसन्न होना

23. शरद की साइकिल कैसी है?

क.लाल ख.नीली ग.काली घ. चमकीली

24. आकाश को मुलायम बनाने' से आशय है-

क.कोमलहोना ख.बादलछाजाना ग.स्वच्छ,सहज घ. वर्षा होना

25. बच्चों के रोमांचित शरीर का संगीत क्या करता है?

क.गिरनेसेबचाताहै ख.नचाताहै ग.सबकोबुलाताहै घ. गूंजने लगता है

26. पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें क्या करती हैं?

क.पुकारती हैं ख.आनंद देती हैं ग.गिराती हैं घ.थाम लेती हैं

27. 'पतंग' कविता में 'चमकीले विशेषण' किस के लिए है?

क.पतंगोंकेलिए ख.शरदकेलिए ग.कठोरदिशाओंकेलिए घ. इशारों के लिए

28. छतों के खतरनाक किनारों से किस का भय है?

क.टकरानेका ख.टूटनेका ग.गिरनेका घ.संभलने का

(उत्तरमाला वस्तुनिष्ठ)

1-घ, 2-ख, 3-घ, 4-ग, 5-ग, 6-घ, 7-क, 8-क, 9-ग, 10-ग, 11-घ, 12-ख, 13-क, 14-ग, 15-ख, 16-क, 17-घ, 18-ग, 19-घ, 20-ख, 21-ग, 22-ग, 23-घ, 24-ग, 25-क, 26-घ, 27-घ, 28-ग।

कविता के बहाने (कुंवर नारायण)

कविता का सार

कविता के बहाने कवि ने कहना चाहा है कि कविता का अस्तित्व शाश्वत है .वह सीमाओं और बन्धनों को तोड़ जन्म लेती और बिना किसी बाधा के बहती रहती है .कवि की कल्पना की उड़ान चिड़िया की तरह ससीम नहीं है .वह सारे बन्धनों को तोड़कर कहीं भी चली जाती है .कहते भी हैं" जहाँ न जाए रवि वहां जाए कवि ."

कविता का खिलना फूल की तरह नहीं है वह खिलती है अमर होने के लिये .फूल की परिणति उसके मुरझा जाने में तय है .कविता रच जाने के बाद काल और देशातीत हो जाती है .उसकी खुशबू सर्वव्यापी और सार्वकालिक है वह अनादि और अनंत काल तक जीवित रहने वाली होती है . कविता बच्चे के खेल की तरह है जो किसी भेदभाव के बिना कहीं भी खेलता है .कविता भी सभी की और सबके लिए होती है .बच्चे की ऊँची कल्पनाओं की तरह कविता की कल्पना भी उड़ान भरती है .

कविता के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 उड़ने और खिलने का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है ?

उत्तर . चिड़िया उड़ती है और फूल खिलता है उसी प्रकार कवि की कल्पना ऊँची उड़ान भरती और फूल की तरह खिल उठती है .इस प्रकार उड़ना और खिलना दोनों ही कविता के अंग है .इसके बावजूद चिड़िया के उड़ने की सीमा है और फूल का खिलना उसे परिणति की तरफ ले जाता है वह शाम होते ही मुरझा जाता है .उसकी खुशबू भी के निश्चित दायरे में ही फैलती है जबकि कविता सर्वव्यापी होती है अमर होती है .जैसे तुलसीदास का रामचरित मानस .

प्रश्न 2. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं ?

उत्तर . जिस प्रकार बच्चे बिना किसी भेदभाव कहीं भी खेलने लगते हैं .किसी के साथ भी खेलने लगते हैं .किसी भी प्रकार के बंधन या सीमा बच्चे नहीं जानते .उनकी उड़ान असीमित है .उसी तरह कविता जो खुद शब्दों का खेल रचती है वह बिना किसी भेदभाव के रची और पढी जाती है .कवि कहीं भी पहुंचकर कुछ भी खोज लेता है उसकी कल्पना किसी सीमा में नहीं बंधती रच जाने के बाद उसकी रचना सार्वकालिक और सर्वव्यापी हो जाती है .

प्रश्न 3. कविता के सन्दर्भ में बिना मुरझाये महकने के क्या मायने हैं ?

उत्तर .फूल खिलकर मुरझा जाते हैं उनकी महक समाप्त हो जाती है .इसके विपरीत कविता कभी नहीं मरती वह सृजित होने के बाद पढी और सराही जाती है अनंत काल तक .

पठित पद्यांश

पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्प से छांटकर लिखिए .

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने

बाहर भातर
इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ?

1.कविता और चिड़िया में परस्पर क्या सम्बन्ध है ?

क)कविता के पंख होते हैं . ख)कविता और चिड़िया दोनों ही संसार की उत्कृष्ट रचनाएं हैं .

ग)चिड़िया की तरह कवि कल्पना के पंख लगाकर उड़ता है . घ)कोई नहीं .

2.कविता की तुलना चिड़िया से क्यों नहीं की जा सकती ?

क)चिड़िया की उड़ान की एक सीमा है ,कविता की नहीं .

ख)चिड़िया दूर आकाश में जाकर वापस आ जाती है ,कवि की कल्पना ऊँचाइयों पर उडती जाती है .

ग)क और ख दोनों घ)दोनों ही नहीं .

3.कविता किसके पंख लगाकर उड़ती है ?

क)शब्दों के (ख) भावों के

ग) कल्पना के (घ) विचारों के .

4.कविता के बहाने कविता कवि के किस संग्रह से ली गई है ?

(क) इन दिनों (ख) कोई दूसरा नहीं .

(ग) तीसरा सप्तक .(घ) चक्रव्यूह .

5.कवि और कविता का नाम बताइये –

क)शमशेर बहादुर –उषा ख) हरिवंश राय बच्चन –आत्मपरिचय

ग) आलोक धन्वा –पतंग घ) कुंअर नारायण –कविता के बहाने .

उत्तर -1. ग 2 .ग 3.ग ,4.क ,5. घ .

पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्प से छांटकर दीजिये .

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने !
बाहर भीतर
इस घर उस घर
बिना मुरझाये महकने के माने
फूल क्या जाने ?

1. फूल और कविता के बीच क्या समानता है ?

क)दोनों खिलते है . ख)दोनों की सीमा है .

ग) दोनों में भावों की समानता है . घ) सभी .

2. कविता और फूल में असामनतायें क्या हैं ?

क)फूल का जीवन छोटा है ,कविता अजर अमर होती है . ख)फूल की खुशबू सीमित होती है .कविता का अर्थ सौन्दर्य कालातीत .

ग) दोनों . घ) कोई नहीं .

3. बाहर भीतर इस घर उस घर से कवि का क्या आशय है ?

(क) सारे घरों में (ख)अंदर बाहर सब तरफ (ग) बिना किसी रोक टोक के (घ) सर्वत्र .

4 .कविता के अर्थ में महकने का क्या आशय है ?

(क) अर्थ की खुशबू (ख)भाव की समझ (ग) विचारों की परख (घ) सभी .

5.कविता मुरझाती नहीं है का आशय है -

(क) कविता का अर्थ समाप्त नहीं होता . (ख) कविता सदा सर्वदा अपना अर्थ खोलती रहती है .

(ग) नित नए अर्थ में लोगों द्वारा पढी जाती है . (घ) सभी .

उत्तर – 1. क 2 .ग 3. घ 4.घ ,5.घ

बात सीधी थी (कुंअर नारायण)

कविता का सार

बात सीधी थी कविता में कथ्य के माध्यम से द्वंद्व को उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है .

काव कहना चाहत ह ाक साधा सरल बात का ाबना पच फसाए साध सरल शब्दा म कहन का प्रयास करना चााहए भाषा क फर म बात उलझ जाता ह उसकी स्पष्टता समाप्त हो जाती .कविता जटिल हो जाती है और अभिव्यक्ति उलझकर जन साधारण से दूर हो जाती है .अतः भाषा सहज और सरल होनी चाहिए .बिना मतलब वाक् जाल में वाणी को उलझना उसके अर्थ को समाप्त कर देना है .

कविता के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.भाषा को सहूलियत से बरतने का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर .भाषा को सहूलियत से बरतने का अर्थ है कि कवि को अपनी भावाभिव्यक्ति हेतु सरल ,सहज एवं व्यवहारिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि कविता का भाव आसानी से समझ में आ सके .भाषा में व्यर्थ के बिम्बों और कठिन शब्दों का प्रयोग बात को ख़त्म कर देता है .

प्रश्न 2 .कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे बन जाती है ?

उत्तर .कवि का मानना है कि जब अपनी बात को सहज ढंग से न कहकर भाषा के जाल में उलझाकर कहते हैं तो बात पेचीदा बन जाती है उसका अर्थ भाषा के जाल में फंस जाता है .पाठक या श्रोता उसके भाव को समझ नहीं पाता और बात का असर ख़त्म होने लगता है .

प्रश्न 3. कवि के साथ बात कैसे खेल रही थी ?उसने कवि पर क्या व्यंग्य किया ?

उत्तर . बात कवि के साथ एक नटखट एवं शरारती बच्चे की तरह खेल रही थी .उसने कवि पर व्यंग्य किया कि आपको भाषा का सहज और सरल प्रयोग नहीं आता .

पठित पद्यांश

पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों से छांटिए –

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
ज़रा टेढ़ी फंस गई .
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आये –
लेकिन इससे भाषा के साथ साथ
बात और पेचीदा होती चली गई !

1. बात को पाने के लिए कवि ने क्या किया ?
   (क) भाषा को सरल किया . (ख) बिम्बों का प्रयोग किया .
   (ग) भाषा को चामत्कारिक बनाने का प्रयास किया . (घ) शब्दों में हेर फेर किया .

2. सीधी बात कहाँ फंसी ?
   (क) भाषा के चक्कर में (ख) बिम्बों के जाल में
   (ग) उपमाओं के जाल में (घ) सभी में .

3. कवि ने भाषा में हेर फेर क्यों किया ?
   (क) बात को समझाने के लिए . (ख) बात को घुमाने के लिए
   (ग) बात के असर को बढ़ाने के लये (घ) बात को भाषा के जाल से निकलने के लिए .

4. बात सीधी सी कविता कवि के किस संग्रह से ली गई है ?
   (क) कोई दूसरा नहीं (ख) इन दिनों (ग) चक्रव्यूह (घ) तीसरा सप्तक

5. बात का आशय किससे है ?
   (क) भाव से (ख) विचार से (ग)कथ्य से (घ) सभी से .

उत्तर -1. घ ,2.क ,3.घ ,4.क ,5.घ

पठित पद्यांश

पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये .

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब में मुझे

साफ़ सुनाइ द रहा था
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह !
आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से बात की चूड़ी मर गई .

प्रश्न 1.कवि का नाम बताइए –

(क) शमशेर बहादुर (ख) कुंअर नारायण (ग) हरिवंश रे बच्चन (घ) आलोक धन्वा .

2. तमाशबीनों शब्द का प्रयोग किनके लिए किया गया है ?

(क) तमाशा देखने वालों के लिए . (ख) कवि समाज के लिए .
(ग) साहित्यकों के लिए . (घ) पाठकों एवं श्रोताओं के लिए .

3. कवि ने बात को स्पष्ट करने की बजाय क्या गलती कर डाली ?

(क) बात को छोड़ दिया . (ख) बात को घुमा दिया .
(ग) बात की पेंच को कस दिया . (घ) सभी .

4 . कवि ने बात को और भी अस्पष्ट क्यों बना दिया ?

(क) क्योंकि वह बात को भाषा के जाल से निकाल न सका (ख) क्योंकि बात उससे छूट गई थी .
(ग) इसमें उसे अपनी वाह वाही सुनाई दे रही थी . (घ) कोई नहीं .

5.बात की चूड़ी मरने का अर्थ है –

(क) बात का बेअसर हो जाना . (ख) बात का भाषा के बाहर आ जाना .
(ग) बात पर भाषा का असर होना . (घ) भाषा का असर खत्म हो जाना .

उत्तर -1.ख 2. घ ,3.ग ,4. ग 5.क .

<u>कैमरे में बंद अपाहिज़ (रघुवीर सहाय)</u>

कविता का सारांश

कैमरे में बंद अपाहिज कविता रघुवीर सहाय के काव्य-संग्रह 'लोग भूल गए हैं से संकलित की गई है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेलते व्यक्ति से टेलीविजन कैमरे के सामने किस तरह के सवाल पूछे जाएंगे और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उससे कैसी भंगिमा की अपेक्षा की जाएगी इसका लगभग सपाट तरीके से बयान करते हुए एक तरह से पीड़ा के साथ दृश्य संचार माध्यम के संबंध को रेखांकित किया है।

साथ ही कवि ने व्यंजना के माध्यम से ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा किया है जो अपनी दुःख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती झेलते हुए लोगों के प्रति संवेदनशीलता व्यक्त की है। कवि ने इस कविता में बताया है कि अपने कार्यक्रम को सफल बनाने तथा किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने के लिए दूरदर्शनवाले किसी दल और शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति को अपने कैमरे के सामने प्रस्तुत करते हैं। उससे अनेक तरह से सवाल पर सवाल पूछते हैं। उसे कैमरे के आगे बार-बार लाया जाता है। बार-बार उससे अपाहिज होने के बारे में सवाल पूछे जाते हैं कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है तथा उस कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए दूरसंचार वाले स्वयं प्रतिक्रिया व्यक्त करके बताते स हैं। अनेक ऐसे संवेदनशील सवालों को पूछ-पूछकर वे उस व्यक्ति को रुला देते हैं। दूरदर्शन के बड़े परदे पर उस व्यक्ति की आँसूभरी " आँखों को दिखाया जाता है। इस प्रकार दूरदर्शन वाले बार-बार एक ऐसे अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

<u>(लघुत्तरीय प्रश्न बैंक)</u>

1. कैमरे में बंद अपाहिज़' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है- विचार कीजिए।
2. आपकी राय में अपंग व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए ?
3. कैमरे में बंद अपाहिज़' कविता संवेदनहीनता की कविता है स्पष्ट कीजिए।
4. सामाजिक उद्देश्य से युक्त ऐसे कार्यक्रम को देखकर आपको कैसा लगेगा?
5. हम समर्थ शक्तिवान' और 'हम एक दुर्बल को लाएंगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है ?
6. परदे पर वक्त की क़ीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?
7. मीडियाकर्मी किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने टीवी चैनल पर एक दिव्यांग व्यक्ति को लाते हैं ?

उत्तर-

1. कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में एक असहाय अपाहिज से साक्षात्कार किया गया है और उसके प्रति संवेदनशीलता, करूणा को प्रस्तुत करना इस कविता का मुख्य उद्देश्य रहा है। परन्तु दूरदर्शन कार्यक्रम द्वारा इसके प्रति संवेदनहीनता का चित्र प्रस्तुत हुआ, अपने स्वार्थ व कारोबार की वृद्धि के लिए कमजोर अपाहिज की भावनाओं से खिलवाड़ कर उसकी वेदना, पीड़ा, दुःख दर्द को बेचना मात्र इसका लक्ष्य बन कर रह गया है। इस प्रकार यह कविता करूणा व संवेदनशीलता के मुखौटे में छिपी क्रूरता व स्वार्थ को प्रकट करती है।

2. मेरी राय में अपंग व्यक्ति के साथ हमारा व्यवहार सहयोगात्मक, सकारात्मक औरसहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। उनका मनोबल बढ़ाते हुए प्रोत्साहित करना चाहिए।
3. कैमरे में बंद अपाहिज़ कविता संवेदनहीनता की कविता है क्योंकि मीडियावाले अपने आर्थिक लाभ के लिए एक विकलांग व्यक्ति को अपने टीवी चैनल पर लाते हैं और उसके दर्द को कुरेदते हुए उसके दर्द का बाजारीकरण करते हैं। वो चाहते हैं कि जब विकलांग व्यक्ति और दर्शक एक साथ आँसू बहाएं तभी मीडियाकर्मियों का लक्ष्य पूर्ण होगा।
4. ऐसे कार्यक्रम को देखकर मेरा मन खिन्न हो जाएगा। मुझे हैरानी होगी ऐसे कार्यक्रम बनाने वालों पर। मैं प्रयास करूँगा कि इस कार्यक्रम की प्रस्तुति बंद करवा सकूँ। इस प्रकार के कार्यक्रम दर्शकों को आनंद दे या न दे लेकिन एक अपंग व्यक्ति को मानसिक रूप में अवश्य अपंग बना सकते हैं। अतः मैं इसका विरोध करूँगा।
5. यह व्यंग्य कवि ने उस मीडिया पर किया है, जो इस प्रकार के कार्यक्रमों का निर्माण करते हैं। समर्थ शक्तिवान कहकर वे उनकी उन शक्ति को प्रदर्शित करते हैं, जिसके माध्यम से वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं। हम एक दुर्बल को लाएँगे का तात्पर्य है कि हम ऐसे व्यक्ति को लाएँगे, जो शारीरिक रूप से नहीं बल्कि मानसिक रूप में भी कमज़ोर होगा। हम उसे अपने हाथ की कठपुतली बना लेंगे। उससे जो चाहे करवाना होगा करवाएँगे। वह अपनी कमज़ोरी के कारण इतना विवश होगा कि हमारे संकेत मात्र से नाचेगा। अतः कार्यक्रम के संचालक के संकेत मात्र से वह कुछ भी कर लेता है।
6. कवि जानता है कि टी.वी. में जो भी कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। उनका उद्देश्य समाज की भलाई करना नहीं है। उनका उद्देश्य अपने चैनल को प्रसिद्ध करना तथा धन कमाना है। अतः वहाँ पर एक-एक पल की कीमत पहले से तय होती है। अपंग व्यक्ति पर आधारित कार्यक्रम अपंग व्यक्ति का साक्षात्कार नहीं है अपितु उसकी अपंगता को देश के आगे रखकर प्रसिद्धि व धन कमाना है। उन्हें अपंग व्यक्ति के सुख-दुख से कोई लेना-देना नहीं है। अपने हितों को वे शीर्ष पर रखते हैं। उनकी करुणा तथा सहानुभूति सब नाटक होती है। अतः इस पंक्ति को कहकर कवि ऐसे कार्यक्रमों के प्रति अपनी नाराज़गी और क्रोध को व्यक्त करता है।
7. मीडियाकर्मी अपने कार्यक्रम को सफल, आकर्षक और बिकाऊ बनाने के लिए एक विकलांग व्यक्ति को अपने टीवी चैनल पर लाता है।

पद्यांश-1 –निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए-

हम दूर दर्शनपरबोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँग एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज है?
आपका अपाहिज पन तो दु:ख देता होगा देताहै ?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा)
हाँतोबताइएआपकादु:खक्याहै?
जल्दी बताइए
वह दु:ख बताइए बता नहीं पाएगा

1. हम दूरदर्शन पर बोलेंगे' में 'हम' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
   क)प्रशासनिक अधिकारी के लिए
   ख)मीडिया के लिए
   ग)सामाजिक संस्था के लिए
   घ)चिकित्सक के लिए
2. समर्थ और शक्तिशाली लोग किसको दूरदर्शन पर लातेहैं ?
   क)स्वयं से अधिक बलशाली को
   ख)दुर्बल को
   ग)दर्शकों को
   घ)कैमरामैन को
3. प्रश्नकर्ता कैमरामैन को क्या निर्देश देता है ?
   क)ठीक से पकड़ने का
   ख)बंद करने का
   ग)बड़ा-बड़ा दिखाने का
   घ)फ़ोकस खुद पर डलवाने का
4. प्रश्नकर्ता अपाहिज़ से कैसे प्रश्न पूछता है ?
   क)गंभीर
   ख)बेतुके
   ग)निरर्थक

घ)ख और ग दोना

5. प्रश्नकर्ता अपाहिज़ से पूछता है कि–
   क)क्या आप अपाहिज़ हैं
   ख)क्या आपका अपाहिज़पन दुःख देता है ?
   ग)आप क्यों अपाहिज़ हैं
   घ)उपर्युक्तसभी

उत्तर- 1-ख, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-घ

पद्यांश-2– निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए

(हम खुद इशारे से बताएंगे कि क्या ऐसा ?)
सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा)
सोचिए बताइए थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकरउसको रुला देंगे
इंतजार करते है आप भी उसके रो पढ़ने का
करते हैं?
यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा।

1. काव्यांश में किसकी कार्यशैली पर व्यंग्य किया गया है ?
   क) कैमरामैन की
   ख)कार्यक्रम संचालक की
   ग)अपाहिज़ की
   घ)दर्शकों की
2. अपाहिज़ व्यक्ति को बार-बार उसका दुःख बताने के लिए मजबूर करने का उद्देश्य क्या था ?
   क)कार्यक्रम को सफल बनाना
   ख)सस्ती लोकप्रियता हासिल करना
   ग)व्यावसायिक लाभ कमाना
   घ)उपर्युक्त सभी
3. संचालक अपाहिज़ को अपना दुःख व्यक्त करने का तरीका कैसे बताता है ?
   1. संकेत द्वारा
   2. लिख कर
   3. बोल कर
   4. चित्र दिखाकर
4. संचालक अपाहिज़ को रुलाने के लिए क्या करता है ?
   क)स्वयं रोने लगता है।
   ख)उसे परेशान करता है।
   ग)बार-बार प्रश्न पूछता है।
   घ)रोने का इशारा करता है।
5. उपर्युक्त काव्यांश किस पाठ से लिया गया है ?
   क)कमरे में बंद अपाहिज़
   ख)संवेदनशील मीडिया
   ग)दुःखी अपाहिज़
   घ)कैमरे में बंद अपाहिज़

उत्तर- 1-ख, 2-घ, 3-क, 4-ग, 5-घ

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक)

1. अब मुस्कुरायेंगे हम' इस पंक्ति में 'हम' कौन हैं?

क.दूरदर्शनवाले

ख.अपाहिज

ग.दर्शक

घ. कवि

2. 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी किस की कविता है?

क.दयाकी

ख.परोपकारकी

ग.वात्सल्यकी

घ. क्रूरता की

3. कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कैमरा एक साथ क्या दिखाना चाहता है?

क.सामान्यव्यक्तिकीदुर्दशाऔरखुशी

ख.समाचारऔरखेल

ग.दर्शकऔरअपाहिजरोतेहुए

घ. नए और पुराने कार्यक्रम

4. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में समर्थ शक्तिवान' किसे कहा जाता है?

क.कैमरामैनको

ख.अपाहिजको

ग.दर्शकोंको

घ. दूरदर्शन वालों को

5. दूरदर्शन वाले बंद कमरे में किसे लाए थे?

क.अमीरको

ख.सबलको

ग.अपंगको

घ.बीमार को

6. अपाहिज के होठों पर क्या दिखाई देता है?

क.उलझन

खकसमसाहट

ग.पीड़ा

घ.मुस्कान

7. कैमरे वाला किन्हें साथ-साथ रूलाना चाहता है?

क.नायक-नायिका

ख.भाई-बहन

ग.अपाहिज-दर्शक

घ. सखा-सखी

8. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के कवि हैं-

क.रघुवीरसहाय

ख.रघुवीरसिंह

ग.रघुवीप्रसाद

घ. रघुवीर प्रकाश

9. हम किस पर बोलेंगे-

क.मंचपर

ख.दूरदर्शपर

ग.रेडियोपर

घ. घर पर

10. हम क्या हैं?

क.अशक्त

ख.दुर्बल

ग.समर्थ

घ. निर्जीव

11. हम किसे लाएँगे?

क.शक्तिवानको

ख.शासनाध्यक्षको

ग.सेनापतिको

घ. दुर्बल को

12. दुर्बल को हम कहाँ ले जाएँगे?

क.मंचपर

ख.बंदकमरेमें

ग.घरपर

घ. मेले में

13. हम….. दूरदर्शन पर बोलेंगे?में रिक्त स्थान की पूर्ति करें।

क.हमअशक्तऔरअज्ञानी

ख.हमबेकारऔरबेकरार

ग.हमसमर्थऔरशक्तिवान

घ. हम अपंग और लाचार

14. अपाहिज से दूरदर्शन कार्यक्रम-संचालक किस प्रकार के प्रश्न पूछता है?

क.अर्थपूर्ण

ख.तर्कसंगत

ग.भावपूर्ण

घ. अर्थहीन

15. अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा?

क.अपनासुख

ख.अपनादुःख

ग.अपनासामर्थ्य

घ. अपनी शक्ति

16. कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए हम अपाहिज सेक्याचाहते हैं?

क.रुलाना

ख.हँसाना

ग.नचादेना

घ. गाना गवाना

17. कैमरेवाले परदे पर अपाहिज की क्या दिखाएँगे?

क.हँसी

ख.रोनेसेफूलीआँख

ग.अपंगता

घ.नृत्य का दृश्य

18. कैमरा एक साथ क्या दिखाना चाहता है?

क.समाचारऔरखेल

ख.रोशनीऔरअंधेरा

ग.दर्शकऔरअपाहिजरोतहुए

घ.प्रस्तुतकर्ता और दर्शक रोते हुए

19. परदे पर किस की कीमत है?

क.दर्शककी

ख.अपाहिजकी

ग.प्रस्तुतकर्ताकी

घ. वक्त की

20. कार्यक्रम समाप्त करते हुए प्रस्तुतकर्ता क्या करेगा?

कमुस्कुराकरधन्यवाद

ख.खेदपूर्णधन्यवाद

ग.रोतेहुएधन्यवाद

घ. कुछ भी नहीं

21. प्रस्तुतकर्ता दर्शकों को क्या रखने के लिए अनुरोध करता है?

क.शांति

ख.धैर्य

ग.हिम्मत

घ. दया

22. प्रस्तुतकर्ता 'बस करो, नहीं हुआ, रहने दो' क्यों कहता है?

क.अपाहिजऔरदर्शनहींरोए

ख.प्रस्तुतकर्ताऔरदर्शकनहींरोए

ग.अपाहिजऔरप्रस्तुतकर्तानहींरोए

घ. कैमरा खराब हो गया

23. परदे पर किस की कीमत बताई गई?

क.अपाहिजकी

ख.कैमरामैनकी

ग.वक्तकी

घ. अभिनेता की

24. कैमरेवाले एक और कोशिश क्यों करना चाहते हैं?

क.तस्वीरसाफदिखानेकेलिए

ख.कार्यक्रमकोआकर्षकबनानेकेलिए

ग.अपाहिजकीअपंगताकोउभारनेकेलिए

घ.चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

25. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता किस पर व्यंग्य है?

क.अपाहिजोंपर

ख.दर्शकपर

ग.व्यवस्थापर

घ.दूरदर्शन वालों पर

उत्तरमाला- 1-क, 2-घ, 3-ग, 4-घ, 5-ग, 6-ख, 7-ग, 8-क, 9-ख, 10-ग, 11-घ, 12-ख, 13-ग, 14-घ, 15-ख, 16-क, 17-ख, 18-ग, 19-घ, 20-क, 21-ख, 22-क, 23-ग, 24-ग, 25-घ।

उषा (कवि –शमशेर बहादुर सिंह)

कविता का सार

कविता में कवि ने सूर्योदय पूर्व की बेला में आकाश में होने वाले रंग और गति के प्रतिपल परिवर्तित रूप का मोहक और जादुई रूप प्रस्तुत किया है . उसके लिए कवि ने ग्रामीण जीवन से अनेक उपमानों को जुटाकर सूर्योदय के जीवंत परिवेश को गाँव की सुबह से जोड़ दिया है .

सूर्योदय के ठीक पहले की उषा बेला में आसमान नीले शंख की भांति बहुत नीला नजर आता है .अगले ही पल लगता है जैसे आकाश राख से लीपा हुआ एक चौका है जिसमें वातावरण की नमी अभी बाकी है .सूर्य की रश्मियां जैसे ही क्षितिज पर बिखरने लगती है तो प्रतीत होता है मानों काली सिल पर लाल केसर पीसकर धो दी गई हो या फिर काली स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया चाक मल दी हो .नील गगन में सूर्य की प्रथम रश्मियों का झिलमिल सौन्दर्य गौरवर्णी रूपसी की देह की भांति आभा पैदा कर रहा है .क्षितिज पर झिलमिल करती रश्मियाँ अचानक नभ के छोर में आती हैं और प्रकृति के पल पल परिवर्तित रूप का सम्मोहक जादू टूट जाता है. सूर्योदय हो जाता है .

कावता क प्रश्नात्तर

प्रश्न 1 भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका क्यों कहा गया है ?

उत्तर – भोर का नभ गीली राख के सामान गहरा स्लेटी होता है .उस समय वातावरण में नमी और पवित्रता होती है . इन तीन विशेषताओं रंग ,नमी और पवित्रता के कारण भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका कहा गया है .

प्रश्न 2 .नील जल में हिलती झिलमिलाती देह के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर .कवि नील जल के माध्यम से नीले आकाश का चित्रण करना चाहता है और इस जल में सूर्य की रश्मियों का क्षितिज पर बिखरता रूप किसी रूपसी की गोरी देह के झिलमिल सौन्दर्य का बोध करा रही हैं .

प्राण 3 .उषा कविता में सूर्योदय के किस रूप का चित्रण किया गया है ?

उत्तर . इस कविता में सूर्योदय पूर्व की बेला उषा बेला का मोहक और गतिमय चित्र प्रतुत किया गया है .

प्रश्न 4. भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में क्या समानता है ?

उत्तर . जिस तरह प्रातः कालीन राख से लीपा चौका गहरा स्लेटी होता है उसमें नमी होती है वह ग्रामीण जीवन में पवित्रता प्रतीक होता है उसी तरह से उषा काल में आसमान का रंग गहरा स्लेटी होता है और उसमें वातावरण की नमी होती है .वह पवित्र होता है उसमें किसी भी तरह का सांसारिक प्रदूषण भी नहीं होता है .

प्रश्न 5 . स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने .पंक्ति का अर्थ बताइये .

उत्तर . आसमान में जब सूरज की प्रारंभिक किरणें नभ की ओर उन्मुख होती हैं तो प्रतीत होता है मानों प्रकृति के विशाल फलक रूपी स्लेट में किसी ने लाल खड़िया चाक मल दी हो .

प्रश्न 6 .उषा का जादू किसे कहा गया है ?

उत्तर . विविध रूप रंग बदलती उषा बेला व्यक्ति पर जादुई प्रभाव डालते हुए उसे मंत्रमुग्ध करती है ; किसी जादू की तरह .

प्रश्न 7 . उषा का जादू कब टूटता है ?

उत्तर . आसमान पर सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों के आसमान पर बिखरते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है और सूर्योदय हो जाता है .

प्रश्न 8 .कवि ने किस शैली में कविता रची है ?

उत्तर .चित्रात्मक (बिम्बात्मक शैली) .कविता में कवि ने सर्वथा नवीन और ग्रामीण उपमानों से युक्त गत्यात्मक बिम्बों का प्रयोग किया है .

पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्प से छांटिए .

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने .
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो |
और ...
जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है .

1 .नीले नभ में उदित होता सूर्य कैसी आभा पैदा करता है .

क) शंख की .
ख) सिन्दूर की .
ग) राख से लीपे गए चौके की .
घ) गौरवर्णी सुन्दरी की झिलमिलाती काया की .

2 . कवि ने कविता के लिए जो उपमान जुटाए हैं उन्हें आप कहाँ देख सकते हैं .

क) शहरों में
ख) गावों में
ग) महानगरों में
घ) पहाड़ों में .

3 .अलंकार की दृष्टि से इस कविता में किस अलंकार की छटा दर्शनीय है .

क) उपमा
ख) रूपक

ग) अनुप्रास

घ) अतिशयोक्ति .

4 .कविता का प्रतिपाद्य क्या है ?

क) उषा के सौदर्य का चित्रण

ख) आसमान में उदित होते सौन्दर्य का चित्रण

ग) सूर्योदय का चित्रण

घ)सभी

5.कविता में गत्यात्मक बिम्ब है

क) राख से लीपा हुआ चौका .

ख) शंख

ग) काली सिल

घ) गौर झिलमिल देह .

उत्तर – 1. घ , 2. ख ,3.क ,4.घ , 5 . घ

बादलराग -(कविता) **- सूर्यकांत त्रिपाठी**

'निराला'

कविता का सार

'बादल राग' कविता "अनामिका" काव्य से ली गई है। यह काव्य छह खंडों में प्रकाशित है। यहाँ उसका छठा खंड लिया गया है। निराला जी को वर्षा ऋतु अत्यधिक आकर्षित करती है क्योंकि बादल की भीतर सृजन और ध्वंस करने की ताकत एक साथ समाहित है। बादल किसान के लिए उल्लास और निर्माण का अग्रदूत है तो मजदूर के लिए क्रांति और बदलाव का।

"बादल राग"-कविता निराला जी की प्रसिद्ध कविता है। वे बादलों को क्रांतिदूत मानते हैं। बादल शोषित वर्ग के हितैषी हैं, जिन्हें देखकर पूँजीपति वर्ग भयभीत होता है। बादलों की क्रांति का लाभ निम्न वर्ग के लोगों को मिलता है, इसलिए किसान और उसके खेतों में छोटे-बड़े पौधे बादलों को हाथ हिला-हिला कर बुलाते हैं। वास्तव में समाज में क्रांति की आवश्यकता है जिससे आर्थिक विषमता मिट सके। कविता में कवि ने बादलों को "क्रांति का प्रतीक" माना है।

कवि बादलों को देखकर कल्पना करता है कि बादल हवा रूपी समुद्र में तैरते हुए क्षणिक सुखों पर दुख की छाया के समान है, जो संसार के जलते हुए हृदय पर छाया करके उसे शांति प्रदान करने के लिए आए हैं। बाढ़ की विनाश-लीला रूपी युद्धभूमि में वे नौका के समान लगते हैं। बादल की गर्जना को सुनकर धरती के भीतर सोए हुए अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर बादलों की ओर देखने लगते हैं। उनमें धरती से बाहर आने की आशा जागती है। बादलों की भयंकर गर्जना से संसार हृदय थाम लेता है। आकाश में तैरते हुए बादल ऐसे लगते हैं, मानो वज्रपात से सैकड़ों वीर धराशायी हो गए हैं और उनके शरीर क्षत-विक्षत हैं।

कवि कहता है कि छोटे पौधे हिल-डुलकर हाथ हिलाते हुए बादलों को बुलाते प्रतीत होते हैं। कवि बादलों को क्रांति-दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नव निर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा शोषित वर्ग को ही फायदा होता है। बादल आतंक के भवन जैसे हैं जो बुराई रूपी कीचड़ के सफाई के लिए प्रलयकारी होते हैं। आम व्यक्ति हर स्थिति में प्रसन्न व सुखी रहते हैं जबकि पूँजीपति वर्ग अत्यधिक संपत्ति इकट्ठा करके भी असंतुष्ट रहते हैं और अपनी प्रियाओं से लिपटने के बावजूद क्रांति की आशंका से काँपते हैं। कवि कहता है कि कमजोर शरीर वाले कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग के निरंतर शोषण उनका शरीर केवल हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया है, उनका अत्यधिक शोषण किया है। वह तो अब सिर्फ जिंदा है। बादल ही क्रांति करके इस शोषण को समाप्त कर सकता है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न :-

1.तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओ से,
घन,भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल।

1. बादल राग किस प्रकार की कविता है?
(क) प्रयोगवादी (ख) प्रगतिवादी
(ग) छायावादी (घ) स्वच्छंदवादी
2. कवि ने बादल का किस रूप में आवाहन किया है?
(क) सामाजिक क्रांति के दूत के रूप में (ख) आंदोलनकारी के रूप में
(ग) प्रेयसी के रूप में (घ) सेवक के रूप में
3. कवि ने सुख को कैसे बताया है?
(क) स्थिर व शांत (ख) गंभीर व अशांत
(ग) अस्थिर व चंचल (घ) दुखों की छाया
4. प्रस्तुत कविता में कवि ने रण-तरी को किस से भरी होने की बात कही है?
(क) आकांक्षाओं से (ख) धन-दौलत से
(ग) हीरे जवाहरात से (घ) लालच से
5. बादलों की गर्जना सुनकर कौन सजग हो उठता है?
(क) सीमा पर सोए हुए सैनिक (ख) सोए हुए छोटे बच्चे
(ग) धरती के वक्षस्थल में छिपे सुप्त अंकुर (घ) पूँजीपति वर्ग
6. ऐ विप्लव के बादल- में प्रयुक्त अलंकार कौन-सा है?
(क) अनुप्रास अलंकार (ख) रूपक अलंकार
(ग) उपमा अलंकार (घ) श्लेष अलंकार
7. प्रलय कि माया के रूप में किसे चित्रित किया गया है?
(क) बादल को (ख) आशाओं को
(ग) शोषित को (घ) स्वयं को
8. संसार का हृदय कैसा हो गया है?
(क) सुख के कारण विशाल (ख) दुख के कारण दग्ध
(ग) ईर्ष्या के कारण संकुचित (घ) द्वेष के कारण आह्लादित
9. कथन - 'विप्लव रव से छोटों की ही शोभा बढ़ती है' |
कारण - सामाजिक क्रांति का लाभ निम्न वर्ग को ही मिलता है |
(क) कथन और कारण दोनों असत्य हैं
(ख) कथन और कारण दोनों सत्य हैं
(ग) कथन सत्य है पर कारण असत्य है
(घ) कथन असत्य है पर कारण सत्य है
10. कवि तथा कविता का नाम बताइए –
(क) कविता के बहाने- कुंवर नारायण (ख) पतंग – अलोक धन्वा
(ग) बादल राग – सूर्यकांत त्रिपाठी (घ) बात सीधी पर - कुंवर नारायण

उत्तर:- (1) ख (2) क (3) ग (4) क (5) ग (6) ख (7) क (8) ख (9) ख (10) ग

2.फिर फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलाधार ,
हृदय थाम लेता संसार
सुन-सुन घोर वज्र हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर ,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर
गगन-स्पर्शी स्पर्धा धीर।
हंसते हैं छोटे पौधे लघुभार-
शस्य अपार ,
हिल हिल

खिल खिल ,
हाथ हिलाते ,
तुझे बुलाते ,
विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

1. संपूर्ण संसार किस से भयभीत हो उठता है?
(क) युद्ध के नगाड़े को सुनकर (ख) क्रांति रूपी बादलों की वज्ररूपी हुंकार को सुनकर
(ग) मूसलाधार वर्षा को देखकर (ग) भूकंप आने की आशंका से
2. छोटे पौधे लघुभार काव्यांश में किसका प्रतीक है?
(क) धनी वर्ग का (ख) हरे-भरे खेतों का
(ग) निम्न और शोषित वर्ग का (घ) बादलों के आने का
3. क्रांति रूपी बादलों की कठोर गर्जना से कौन-सा वर्ग भयभीत हो जाता है?
(क) पूंजीपति वर्ग (ख) धनी व संपन्न वर्ग
(ग) उच्च वर्ग (घ) उपरोक्त सभी
4. अशनी-पात का क्या अर्थ है?
(क) बादलों का चमकना (ख) बादलों का गर्जना
(ग) बादलों का बरसना (घ) बादलों से बिजली गिरना
5. बादल किस प्रकार धरती पर बरस रहे हैं?
(क) बार-बार गर्जना करके (ख) मूसलाधार रूप में
(ग) क और ख दोनों (घ) क्षत-विक्षत रूप में
6. कथन - बादलों की गर्जना से संसार के लोग भयभीत हो जाते है।
कारण – बादल "क्रांति का प्रतीक" है।
(क) कथन सही है और कारण की व्याख्या करता हैं।
(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता हैं।
(ग) कारण सही है पर कथन असत्य है।
(घ) कथन गलत है पर कारण सही है।
7. बादलों का शरीर किससे आहत हो रहा है?
(क) बिजली रूपी तलवारों से (ख) वायुयानों के आवागमन से
(ग) उच्च वर्ग की महत्वाकांक्षाओं से (घ) निम्न वर्ग के संताप से
8. बादलों की गर्जना को किसके समान बताया गया है?
(क) वज्र के समान (ख) दुख के समान
(ग) योद्धा के समान (घ) प्रलय के समान
9. काव्यांश में बादल की किस विशेषता की ओर संकेत किया गया है?
(क) बादल आकाश को छूने वाले हैं (ख) आकाश से प्रतियोगिता करने वाले हैं
(ग) धीरे-वीर अपराजित योद्धा है (घ) उपरोक्त सभी
10. 'विप्लव रव से ही छोटे ही हैं शोभा पाते' - पंक्ति का क्या अभिप्राय है?
(क) सामाजिक क्रांति का निम्न वर्ग को ही लाभ मिलता है
(ख) बादलों से हुई वर्षा से छोटे पौधों को अधिक जल मिलता है
(ग) निम्न वर्ग क्रांति के प्रभाव से वंचित रहता है
(घ) सामाजिक क्रांति सभी वर्गों के लिए हितकर होती है
उत्तर (1) ख (2) ग (3) घ (4) ख (5) ग (6) क (7) क (8) क (9) घ (10) क

3.अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षूद्र प्रफुल्ल जलद से
सदा झलकता नीर ,

रोग-शोक में भी हंसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।

1. काव्यांश में छोटे पौधे की किन्हें कहा गया है?
(क) छोटे बच्चों को (ख) मध्यम वर्ग को
(ग) निम्न वर्ग को (घ) उच्च वर्ग को
2. जल विप्लव प्लावन हमेशा किस पर होता है?
(क) आकाश पर (ख) वायु पर
(ग) धरती पर (घ) कीचड़ पर
3. कवि के अनुसार आतंक भवन कौन है?
(क) शोषित वर्ग के निवास स्थान (ख) शोषक वर्ग के निवास स्थान
(ग) मध्य वर्ग के निवास स्थान (घ) उपरोक्त सभी
4. काव्यांश में पंख किसका प्रतीक है?
(क) गंदगी का (ख) उच्च वर्ग का
(ग) पवित्रता का (घ) शोषक वर्ग का
5. कथन – क्रांति का प्रभाव सदा पूँजीपति वर्ग पर होता है।
कारण – क्रांति से सदा वह पल्लवित होता है।
(क) कथन सही है और कारण की व्याख्या करता हैं
(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता हैं
(ग) कारण सही है पर कथन असत्य है
(घ) कथन और कारण दोनों असत्य है

उत्तर (1) ग (2) घ (3) ख (4) क (5) घ

4.रूद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी,वज्र गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन मुख ढाप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्र ही है आधार,
यह जीवन के पारावार !

1. बादलों की गर्जना का धनी वर्ग पर क्या प्रभाव दिखाई देता है?
(क) धनी वर्ग उत्साहित होता है (ख) धनी वर्ग भयभीत होता है
(ग) धनी वर्ग आंदोलित होता है (घ) धनी वर्ग सामान्य बना रहता है
2. कवि ने कृषक वर्ग की क्या स्थिति बताई है?
(क) उनका शरीर जर्जर हो गया है (ख) उनके शरीर में हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया है
(ग) वह व्याकुलता से बादल की प्रतीक्षा कर रहे हैं (घ) उपरोक्त सभी
3. कृषक वर्ग की स्थिति के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया गया है?
(क) शोषक वर्ग को (ख) मध्यवर्ग को
(ग) स्वयं कृषक को (घ) प्रकृति प्रकोप को
4. मुख ढाँपना किस प्रवृत्ति का घोतक है?
(क) भयभीत मानसिकता का (ख) शुद्ध मानसिकता का
(ग) स्वच्छ मानसिकता का (घ) रूढ़िवादी मानसिकता का

5. बादलों को अधीरता से कौन पुकार रहा है ?

(क) धनी वर्ग (ख) किसान वर्ग

(ग) सागर (घ) प्रकृति

6. पूंजीपति वर्ग के लोग क्यों काँप रहे हैं?

(क) भूकंप के डर से (ख) बिजली की गर्जना से

(ग) क्रांति के डर से (घ) चोर डाकू के डर से

उत्तर (1) ख (2) घ (3) क (4) क (5) ख (6) ग

कविता पर आधारित लघुउत्तरिय प्रश्न

1. "बादल राग" कविता में कवि ने किसान की किस दशा का चित्रण किया है?

उत्तर:- 'बादल राग' कविता में कवि ने किसान की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है, जो पूंजीपति वर्ग के शोषण का शिकार बना रहता है। पूँजीपति वर्ग ने उसका शारीरिक, मानसिक व आर्थिक शोषण किया है। उसके पास ना तो खाने को भरपेट रोटी है और ना शरीर को ढँकने के लिए वस्त्र । पूंजीपति वर्ग ने इन किसानों का समस्त जीवन-रूपी सार चूस लिया है। अब वह केवल हड्डियों का ढांचा मात्र ही रह गया है। वह अपने जीवन से हताश और निराश हो चुका है।

2. 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' - पंक्ति में किस की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर:- इस पंक्ति में कवि ने क्रांति के विरोधी पूँजीपति-सामंती वर्ग की ओर संकेत किया है। कवि मानता है कि जिस प्रकार क्रांति का प्रतिनिधि बादल अपने से उन्नत पहाड़ की चोटियों को वज्रपात से आघात कर क्षत-विक्षत कर देता है।

उसी प्रकार समाज के निम्न वर्ग की क्रांतिकारी चेतना पूँजीवाद-सामंती शक्तियों को अपने प्रहार से ध्वस्त कर सकती है। जिससे उनकी प्रभुसत्ता समाप्त हो जाती है और वह उन्नति के शिखर से गिर जाते हैं।

3. 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' - पंक्ति में 'दुख की छाया' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर:- कवि ने 'दुख की छाया' मानव जीवन में आने वाले दुखों, कष्टों व प्रतिकूल परिस्थितियों को कहा है। कवि का मानना है कि संसार में सुख कभी स्थाई नहीं होता। सुख-दुख मानव जीवन के दो पक्ष हैं जो जीवन में आते-जाते रहते हैं।

किंतु यहाँ 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' उन सुविधा संपन्न लोगों से है जो सुख से अधिक अपने भविष्य के प्रति सजग रहता है। यह वर्ग किसी भी सामाजिक परिवर्तन अथवा क्रांति से भयभीत रहता है । इस भय के कारण ही उस पर दुख की छाया आच्छादित होती रहती तथा उसका अस्थिर सुख ही उसके दुख का कारण बन जाता है ।

4.' क्षत-विक्षत हत अचल शरीर' के माध्यम से "निराला जी" ने किनकी ओर संकेत किया है और क्यों?

उत्तर:- इस पंक्ति में कवि ने क्रांति के विरोधी पूँजीपति-सामंती वर्ग की ओर संकेत किया है। कवि मानता है कि जिस प्रकार क्रांति का प्रतिनिधि बादल अपने से उन्नत पहाड़ की चोटियों को वज्रपात से आघात कर क्षत-विक्षत कर देता है। उसी प्रकार समाज के निम्न वर्ग की क्रांतिकारी चेतना पूँजीवाद-सामंती शक्तियों को अपने प्रहार से ध्वस्त कर सकती है। जिससे उनकी प्रभुसत्ता समाप्त हो जाती है और वह उन्नति के शिखर से गिर जाते हैं।

5. "बादल राग" कविता के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए?

उत्तर:- बादल राग कविता मैं कवि बादलों को क्रांति और विप्लव का प्रतीक मानकर उसका आवाहन करता है। यह कविता जनक्रांति की उद्घोषणा करती है जिस प्रकार बादलों के आने से नए पौधे हर्षित हो जाते हैं उसी प्रकार बादल - कृषक वर्ग और शोषित वर्ग के लिए उल्लास और नवजीवन के अग्रदूत हैं। क्रांति का बिगुल बजने से शोषित वर्ग को विकास के नए अवसर मिलते हैं। अतः बादल शीर्षक कविता के अनुरूप प्रतीत होता है।

कविता पर आधारित वर्णनात्मक प्रश्न

1. 'विप्लव-रव से छोटी ही हैं शोभा पाते'- पंक्ति में 'विप्लव-रव' से क्या तात्पर्य है? 'छोटे ही हैं शोभा पाते' ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में 'विप्लव रव' से कवि का तात्पर्य क्रांति रूपी गर्जना से है। जब क्रांति होती है तब पूँजीपति वर्ग को अपनी सत्ता छीनने का भय सताने लगता है,उन्हें अपना साम्राज्य बिखरता-टूटता नजर आता है।

"छोटी ही है शोभा पाते" कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि इस क्रांति का सर्वाधिक लाभ शोषित वर्ग को ही मिलता है। उनके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं होता, जो प्राप्त हो जाए वही उनके लिए बहुमूल्य है। यह विद्रोह का स्वर उनमें नवजीवन का संचार कर देता है।

2. 'बादल राग' की पंक्तियों में "अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन में" निहित व्यंग को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर:- समाज का प्रभुत्वशाली पूँजीपति वर्ग- किसानों और श्रमिकों का शोषण कर उनके खून और पसीने की कमाई से अपनी तिज़ोरीयों को भरते हैं और ऊँचे-ऊँचे महलों में सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं।

लेकिन महलों में निवास करने वाला यह पूँजीपति वर्ग हमेशा क्रांति से भयभीत रहता है क्योंकि वे जानते हैं कि उन्होंने गरीबों, किसानों और श्रमिकों का शोषण किया है। उन्हें पता है कि जब भी क्रांति आएगी तो उन्हें लूट लिया जाएगा, उनके ऊँचे शानदार भवनों को नष्ट कर दिया जाएगा, उन्हें मार दिया जाएगा। जिस प्रकार बाढ़ का विनाशकारी प्रभाव कीचड़ पर होता है, उसी प्रकार बादल रुपी क्रांति का सबसे अधिक प्रभाव इस पूँजीपति वर्ग पर पड़ेगा। यही कारण है कि पूंजीपति वर्ग अपने अट्टालिकाओं में सभी सुख-सुविधा के साधन होते हुए भी आतंक से भयभीत रहते हैं । उनका यही डर उनके महल को आतंक भवन बना देता है।

3. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता

रेखांकित करती है?

उत्तर:- 'बादल राग' कविता निराला जी द्वारा रचित एक प्रतीकात्मक कविता है। इसमें कवि ने बादलों का क्रांति के रूप में आवाहन किया है। बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले निम्न परिवर्तन होते हैं-

(i) बादलों के आगमन से पृथ्वी के गर्भ में सोए हुए अंकुर अंकुरित होने के लिए बेचैन दिखाई देते हैं। वह अपने मन में नवजीवन का संचार कर आशाओं से बादलों की ओर देखते हैं।

(ii) इन क्रांतिकारी बादलों की घनघोर-गर्जना से संपूर्ण हृदय भयभीत हो उठता है। उन्नति के शिखर पर पहुंचे सैकड़ों वीर पृथ्वी पर सो जाते हैं। विशालकाय उच्च वर्ग के लोग घायल होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

(iii) लेकिन शोषित वर्ग अर्थात निम्न वर्ग के प्रतीक छोटे-छोटे भार वाले छोटे-छोटे पौधे हँसते मुस्कुराते हैं। वे अपार हरियाली से भरकर, हिल-हिल कर तथा खिलखिलाते हुए हाथ-हिलाते हुए बादलों को बुलाते हैं।

(iv) कवि ने इसके लिए बादलों का गर्जना-चमकना, मूसलाधार वर्षा, छोटे-छोटे पौधों का हाथ हिलाना, कमल के फूल पर जल की बूँदो का टपकना और कीचड़ का साफ होना दर्शाया है।

<u>कवितावली, लक्ष्मण मूर्छा और राम का विलाप(तुलसीदास)</u>

कविता का सारांश

(i) **कवितावली** (उत्तर-कांड से) प्रसंग में कवि ने अपने समय का यथार्थ चित्रण किया है। कवि का कथन है कि समाज में किसान, बनिए, भिखारी, भाट, नौकर-चाकर, चोर आदि सभी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। समाज का उच्च और निम्न वर्ग धर्म-अधर्म का प्रत्येक कार्य करता है। यहाँ तक कि लोग अपने पेट की खातिर अपने बेटा-बेटी को बेच रहे हैं।

पेट की आग संसार की सबसे बड़ी पीड़ा है। समाज में किसान के पास करने को खेती नहीं, भिखारी को भीख नहीं मिलती। व्यापारी के पास व्यापार नहीं तथा नौकरों के पास करने के लिए कोई कार्य नहीं। समाज में चारों ओर बेकारी, भूख, गरीबी और अधर्म का बोलबाला है। अब तो ऐसी अवस्था में दीन-दुखियों की रक्षा करनेवाले श्री राम ही कृपा कर सकते हैं। अंत में कवि समाज में फैली जाति-पाति और छुआ-छूत का भी – खंडन करते हैं।

प्रश्न

(1) पेटभरनेकेलिएलोगक्या-क्याअनैतिककायकरतेहैं?

(2) कविनेसमाज के किन-किन लोगों का वर्णन किया है ? उनकी क्या परेशानी है ?

(3) कवि के अनुसार, पेट की आग कौन बुझा सकता है ? यह आग कैसे है ?

(4) उन कर्मों का उल्लेख कीजिए, जिन्हें लोग पेट की आग बुझाने के लिए करते हैं ?

(5) *कवि ने समाज के किन-किन वर्रों के बारे में बताया है?*

(6) *लोग चिंतित क्यों हैं तथा वे क्या सोच रहे हैं?*

(7) *वेदों वा पुराणों में क्या कहा गया है ?*

(8) *तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की हैं तथा क्यों ?*

(9) कवि समाज से क्या चाहता है?

(10) *कवि आपन जीवन-निर्वाह किस प्रकार करना चाहता है ?*

उत्तर-

(1) पेट भरने के लिए लोग धर्म-अधर्म व ऊंचे-नीचे सभी प्रकार के कार्य करते है ? विवशता के कारण वे अपनी संतानों को भी बेच देते हैं ?

(2) कवि ने मज़दूर, किसान-कुल, व्यापारी, भिखारी, भाट, नौकर, चोर, दूत, जादूगर आदि वर्गों का वर्णन किया है। वे भूख व गरीबी से परेशान हैं।

(3) कवि के अनुसार, पेट की आग को रामरूपी घनश्याम ही बुझा सकते हैं। यह आग समुद्र की आग से भी भयंकर है।

(4) कुछ लोग पेट की आग बुझाने के लिए पढ़ते हैं तो कुछ अनेक तरह की कलाएँ सीखते हैं। कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई घने जंगल में शिकार के पीछे भागता है। इस तरह वे अनेक छोटे-बड़े काम करते हैं।

(5) कवि ने किसान, भिखारी, व्यापारी, नौकरी करने वाले आदि वर्गों के बारे में बताया है कि ये सब बेरोजगारी से परेशान हैं।

(6) लोग बेरोजगारी से चिंतित हैं। वे सोच रहे हैं कि हम कहाँ जाएँ क्या करें?

(7) वेदों और पुराणों में कहा गया है कि जब-जब संकट आता है तब-तब प्रभु राम सभी पर कृपा करते हैं तथा सबका कष्ट दूर करते हैं।

(8) तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है। दरिद्रतारूपी रावण ने पूरी दुनिया को दबोच लिया है तथा इसके कारण पाप बढ़ रहे हैं।

(9) कवि समाज से कहता है कि समाज के लोग उसके बारे में जो कुछ कहना चाहें, कह सकते हैं। कवि पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह किसी से कोई संबंध नहीं रखता।

(10) कवि भिक्षावृत्ति से अपना जीवनयापन करना चाहता है। वह मस्जिद में निश्चित होकर सोता है। उसे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। वह अपने सभी कार्यों के लिए अपने आराध्य श्रीराम पर आश्रित है।

पद्यांश– 1 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

किसबी ,किसान-कुल,बनिक,भिखारी,भाट,

चाकर,चपलानट,चोर,चार,चेटकी।

पेट को पढ़त ,गुनगुढ़त,चढ़तगिरी,अटतगहन-गन अहन अखेटकी।

ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरमकरि,

पेट ही की पचित, बोचतबेटा-बेटकी।।

'तुलसी'बुझाईएकरामघनस्यामहीतें,

आग बड़वागितें बड़ी हैं आग पेटकी।।

1.पेट की आग से क्या तात्पर्य है ?

1. पेट में आग लगना
2. पेट में जलन
3. पेट की भूख
4. इनमें से कोई नहीं।

2. तुलसीदास अपने युग के द्रष्टा थे स्पष्ट करें ।

1. उनको अपने समय और समाज की अच्छी समझ थी ।
2. उनको अपने समय की आर्थिक स्थिति की अच्छी समझ थी ।
3. क और ख दिनों ।
4. इनमें से कोई नहीं

3. कथन और कारण को पढ़कर सही उत्तर का चुनाव कीजिए।

कथन- कलियुग में लोग अपने बेटा और बेटी को बेचते हैं।

कारण- पेट की भूँख शांत करने के लिए।

1. कथन सही है , कारण गलत है ।
2. कथन और कारण दोनों सही हैं ।
3. कारण सही है , कथन गलत है ।
4. इनमें से कोई नहीं

4. स्तंभ 1 और स्तंभ 2 का सही मिलान कर उत्तर दीजिए ।

स्तंभ-1	स्तंभ-2
1-बनिक	1-भीख
2-भिखारी	2-व्यापार

3-धर्म 3-नीचा
4-ऊँचा 4-अधर्म

1. 1-1, 2-2, 3-3, 4-4
2. 1-4, 2-3, 3-2, 4-1
3. 1-2, 2-1, 3-4, 4-3
4. 1-1, 4-4, 2-3, 4-3

5. पेट की आग बुझाने के लिए कवि ने एकमात्र माध्यम क्या बताया है ?

1. कृष्ण जी की कृपा।
2. शंकर जी की कृपा।
3. मां दुर्गा की कृपा।
4. राम जी की कृपा रूपी बारिश।

पद्यांश– 2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खेते न किसान को,भिखारी को न भीख,बलि,
बनिक को बनिज,न चाकर को चाकरी
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों ' कहाँ जाई, का करी ?'
बेदहूँ पुरान कही,लोकहूँ-बिलोकिअत,
साँकरे सबैं पै ,राम!रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी,दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहाकरी॥

1. प्रस्तुत काव्यांश किस भाषा में लिखा गया है ?

1. ब्रज
2. अवधी
3. भोजपुरी
4. मैथिली

2. जीविकाविहीन लोग एक-दूसरे से क्या कह रहे हैं ?

1. कहाँ जाए और क्या करें।
2. खुदकुशी करने की।
3. पलायन करने की।
4. इनमें से कोई नहीं।

3. तुलसीदास ने रावण की तुलना किससे की है ?

1. राम से
2. हनुमान से
3. दरिद्रता से
4. विभीषण से

4. उपर्युक्त पद्यांश के लेखन का नाम क्या है ?

1. कबीर
2. मीरा
3. मीराबाई
4. तुलसीदास

5. मुसीबत के समय के बारे में वेद- पुराण और लोगों के मुंह से क्या सुना गया है ?

1. मुसीबत में राम सभी पर कृपा करते हैं।

2. राम किसी पर भी कृपा नहीं करते हैं ।
3. क और ख दोनों ।
4. इनमें से सभी ।

(ii) **'लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप'** प्रसंग लोक-नायक तुलसीदास के श्रेष्ठ महाकाव्य 'रामचरितमानस' के लंकाकांड से लिया गया । है। प्रस्तुत प्रसंग में कवि ने लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने के पश्चात उनकी मूर्छा-अवस्था तथा राम के विलाप का कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ कवि ने शोक में डूबे राम के प्रलाप तथा हनुमान जी का संजीवनी बूटी लेकर आने की घटना का सजीव अंकन किया है।

कवि ने करुण रस में वीर रस का अनूठा मिश्रण किया है। लक्ष्मण-मूर्छा के पश्चात हनुमान जी जब संजीवनी बूटी लेकर लौट रहे थे तो भरत ने उन्हें राक्षस समझकर तीर मारा था, जिससे वे मूर्च्छित हो गए थे। भरत जी ने उन्हें स्वस्थ कर अपने बाण पर बैठाकर राम जी के पास जाने के लिए कहा था। हनुमान जी भरत जी का गुणगान करते हुए प्रस्थान कर गए थे। उधर श्री रामचंद्र जी लक्ष्मण को हृदय से लगा विलाप कर रहे हैं।

वे एकटक हनुमान जी के आने की प्रतीक्षा में हैं। श्री रामचंद्र अपने अनुज लक्ष्मण को नसीहतें दे रहे हैं कि आप मेरे लिए माता-पिता को छोड़ यहाँ जंगल में चले आए। जिस प्रेम के कारण तुमने सब कुछ त्याग दिया आज वही प्रेम मुझे दिखाओ। श्री राम जी लक्ष्मण को संबोधन कर कह रहे हैं कि हे भाई! जिस प्रकार पंख के बिना पक्षी अत्यंत दीन होता है और मणि के बिना साँप दीन हो जाता है उसी प्रकार आपके बिना भी मेरा जीवन भी अत्यंत दीन एवं असहाय हो जाएगा। राम सोच रहे हैं कि वह अयोध्या में क्या मुँह लेकर जाएंगे। अयोध्यावासी तो यही समझेंगे कि नारी के लिए राम ने एक भाई को गवाँ दिया। समस्त संसार में अपयश फैल जाएगा

माता सुमित्रा ने लक्ष्मण को मेरे हाथ में यह सोचकर सौंपा था कि मैं सब प्रकार से उसकी रक्षा करूँगा। श्री राम जी के सोचते-सोचते उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। वे ! फूट-कूटकर रोने लगे। हनुमान के संजीवनी बूटी ले आने पर श्री राम अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने हनुमान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। वैद्य ने तुरंत लक्ष्मण का उपचार किया जिससे लक्ष्मण को होश आ गया। राम ने अपने अनुज को हृदय से लगाया। इस दृश्य को देख राम-सेना के सभी सैनिक बहुत प्रसन्न हुए।

हनुमान जी ने पुनः वैद्य को उनके निवास स्थान पर पहुंचा दिया। रावण इस वृत्तांत को सुनकर अत्यधिक उदास हो उठा और व्याकुल होकर कुंभकरण के महल में गया। कुंभकरण को जब रावण ने जगाया तो वह यमराज के समान शरीर धारण कर उठ खड़ा हुआ। रावण ने उसके समक्ष अपनी संपूर्ण कथा का बखान किया। साथ ही हनुमान जी के रण-कौशल और बहादुरी का परिचय भी दिया कि उसने अनेक असुरों का संहार कर दिया है।

पद्यांश-1 **निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहि जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जीवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई ।नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

1. जागहु ताता – कौन किसे कह रहा है ?
1. राम लक्ष्मण को कह रहे हैं ।
2. सीतालक्ष्मण को कह रही है ।
3. सुग्रीव हनुमान को कह रहे हैं ।
4. इनमें से सभी
2. इस पद्यांश में तुलसी ने किसके बारे में कहा है कि संसार में दुबारा नहीं मिलता है ?
1. माता
2. पिता
3. सगा भाई
4. बहन
3. कथन और कारण को पढ़कर सही उत्तर का चुनाव करें ।

   कथन-राम विलाप कर रहे हैं ।

   कारण- लक्ष्मण मूर्छित हो गए हैं ।
1. कथन सही है पर कारण कथन की व्याख्या नहीं करता है ।
2. कारण सही है पर कथन उसकी व्याख्या नहीं करता है ।
3. कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण , कथन की व्याख्या भी करता है ।
4. इनमें से कोई नहीं ।
4. अयोध्या जाने के प्रश्न पर श्री राम को कौन सी बात परेशान कर रही थी ?
1. कौन सा मुँह लेकर अयोध्या जाऊंगा

2. लोग ताना मरेंगे कि अपनी पत्नी के लिए भाई को कुर्बान कर दिया।
3. क और ख दोनों।
4. इनमें से कोई नहीं।

5. लक्ष्मण के मूर्छित होने पर प्रभु श्री राम किस प्रकार विलाप कर रहेथें ?

1. एक राजा की भाँति
2. ईश्वर की भांति
3. साधारण मनुष्य की भांति
4. इनमें से कोई नहीं।

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक)

1.'जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान' यह पंक्ति किस ने कही?
क. राम
ख. लक्ष्मण
ग. कुंभकर्ण
घ. रावण

2. लक्ष्मण कहाँ मूर्छित हुए थे?
क. घर में
ख. बाज़ार में
ग. युद्ध में
घ. उपवन में

3. लक्ष्मण ने राम जी के लिए किस चीज़ का त्याग किया?
क. सब दुखों का
ख. सब सुखों का
ग. सारे धन का
घ. सभी तरह के भोजन का

4. लक्ष्मण की दशा देखकर साधारण मानव की तरह कौन विलाप करने लगा?
क. हनुमान
ख. सीता
ग. सुग्रीव
घ. राम

5. संसार में पुनः क्या नहीं मिलता?
क. वनवास
ख. घर
ग. सहोदर भाई
घ. संपदा

6. पक्षी किसके बिना दीन है?
क. चोंच
ख. पैर
ग. पूंछ
घ. पंख

7. हाथी की कल्पना किसके बिना नहीं की जा सकती?
क. कान
ख. सूंड
ग. पूँछ
घ. पैर

8. श्री राम के मतानुसार किसकी हानि विशेष नहीं है?
क. भाई
ख. बहन
ग. मित्र
घ. पत्नी

9. प्रभु का प्रलाप सुनकर कौन व्याकुल हो गया?
क. वानरों का समूह
ख. फूलों का समूह

ग. पाक्षया का समूह
घ. गायों का समूह
10. प्रभु के प्रलाप के समय वहाँ अचानक कौन आ गए?
क. सुग्रीव
ख. सीता
ग. हनुमान
घ. भरत
11. हनुमान के आगमन से करुण रस में किस रस का समावेश हो गया?
क. शांत रस
ख. वीर रस
ग. श्रृंगार रस
घ. वात्सल्य रस
12. लक्ष्मण के जीवित होने की खबर सुनकर रावण किसके पास गया?
क. हनुमान
ख. मेघनाथ
ग. अहिरावण
घ. कुंभकरण
13. कुंभकरण जागता हुआ कैसा प्रतीत हो रहा था?
क. साधारण मानव
ख. देव मानव
ग. यमराज
घ. शैतान
14.श्रीराम का प्रलाप सुनकर वानर-समूह कैसा हो गया?
क. प्रसन्न
ख. हतोत्साहित
ग. उत्साहित
घ. विकल
15. 'अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत'- यहाँ 'आयसु' का अर्थ है-
क. आ गया
ख. आज्ञा
ग. अवज्ञा
घ. संकेत

उत्तरमाला- 1-ग, 2-ग, 3-ख, 4-घ, 5-ग, 6-घ, 7-ख, 8-घ, 9-क, 10-ग, 11-ख, 12-घ, 13-ग, 14-घ, 15-ख।

लघुत्तरीय प्रश्न-

(1) हनुमान ने भरत जी को क्या आश्वासन दिया ?
(2) हनुमान ने भरत सो क्या कहा ?
(3) हनुमान भरत की किस बात से प्रभावित हुए ?
(4) हनुमान ने संकट में धैर्य नहीं खोया। वे वीर एवं धैर्यवान थे-स्पष्ट कीजिए।
(5) लक्ष्मण ने राम के लिए क्या-क्या कष्ट सहे?
(6) 'सी अनुराग' कहकर राम कैसे अनुराग की दुलभता की ओर संकेत कर रहे हैं? सोदाहरण लिखिए।
(7) काव्यांश के आधार पर राम के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।
(8) राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में किनकी हीन माना है?
(9) राम को लक्ष्मण के बिना अपना जीवन कैसा लगता है?
(10) ' जैहउँ अवध कवनमुहुँ लाई ' – कथन के पीछे निहित भावना पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-

(1) हनुमान जी ने भरत जी को यह आश्वासन दिया कि "हे नाथ! मैं आपका प्रताप हृदय में रखकर तुरंत संजीवनी बूटी लेकर लंका पहुँच जाऊँगा। आप निश्चित रहिए।"
(2) हनुमान ने भरत से कहा कि "हे नाथ! मैं आपके प्रताप को मन में धारण करके तुरंत जाऊँगा।"
(3) हनुमान भरत की रामभक्ति, शीतल स्वभाव व बाहुबल से प्रभावित हुए।
(4) मेघनाथ का बाण लगने से लक्ष्मण घायल व मूर्चिछत हो गए थे। इससे श्रीराम सहित पूरी वानर सेना शोकाकुल होकर विलाप कर रही थी। ऐसे में हनुमान ने विलाप करने की जगह धैर्य बनाए रखा और संजीवनी लेने गए। इससे स्पष्ट होता है कि हनुमान वीर एवं धैर्यवान थे।
(5) लक्ष्मण ने राम के लिए अपने माता-पिता को ही नहीं, अयोध्या का सुख-वैभव त्याग दिया। वे वन में राम के साथ रहकर नाना प्रकार की मुसीबतें सहते रहे।

(6) 'सो अनुराग' कहकर राम ने अपने और लक्ष्मण के बीच स्नेह की तरफ संकेत किया है। ऐसा प्रेम दुर्लभ होता है कि भाई के लिए दूसरा भाई अपने सब सुख त्याग देता है। राम भी लक्ष्मण की मूच्छी मात्र से व्याकुल हो जाते हैं।

(7) इस काव्यांश में राम का आम आदमी वाला रूप दिखाई देता है। वे लक्ष्मण के प्रति स्नेह व प्रेमभाव को व्यक्त करते हैं तथा संसार के हर सुख से ज्यादा सगे भाई को महत्व देते हैं।

(8) राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में पुत्र, धन, स्त्री, घर और परिवार सबको हीन माना है। उनके अनुसार, ये सभी चीजें आती-जाती रहती हैं, परंतु सगा भाई बार-बार नहीं मिलता।

(9) राम को लक्ष्मण के बिना अपना जीवन उतना ही हीन लगता है जितना पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप तथा सँड़ के बिना हाथी का जीवन हीन होता है।

(10) इस कथन से श्रीराम का कर्तव्यबोध झलकता है। वे अपनी जिम्मेदारी पर लक्ष्मण को अपने साथ लाए थे, परंतु वे अपना कर्तव्य पूरा न कर सके। अत: वे अयोध्या में अपनी जवाबदेही से डरे हुए थे।

छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख(उमाशंकर जोशी)

कविता का सारांश

(क) छोटा मेरा खेत

इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः: कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज से पुष्पित- पल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

प्रश्न-

1. कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है और क्यों ?

2. कविता की रचना-प्रक्रिया समझाइए।

3. खेत अगर कागज हैं तो बीज क्षय का विचार, फिर पल्लव-पुष्प क्या हैं?

4. विचार को 'क्षण का बीज' क्यों का गया है ? उसका रूप-परिवर्तन किन रसायनों से होता है?

5.'रस अलौकिक, अमृत धाराएँ फूटती'। इस की अलौकिक धाराएँ कब, कहाँ और क्यों फूटती हैं?

6.'लुटते रहने से भी' क्या काम नहीं होता और क्यों?

7.'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है और क्यों?

8. कवि इन पंक्तियों में खेत से किसकी तुलना कर रहा है?

उत्तर-

1. कवि ने कवि-कर्म की तुलना खेत से की है। खेत में बीज खाद आदि के प्रयोग से विकसित होकर पौधा बन जाता है। इस तरह कवि भी भावनात्मक क्षण को कल्पना से विकसित करके रचना-कर्म करता है।

2. कविता की रचना-प्रक्रिया फसल उगाने की तरह होती है। सबसे पहले कवि के मन में भावनात्मक आवेग उमड़ता है। फिर वह भाव क्षण-विशेष में रूप ग्रहण कर लेता है। वह भाव कल्पना के सहारे विकसित होकर रचना बन जाता है तथा अनंत काल तक पाठकों को रस देता है।

3. खेत अगर कागज है तो बीज क्षण का विचार, फिर पल्लव-पुष्प कविता हैं। यह भावरूपी कविता पत्तों व पुष्पों से लदकर झुक जाती है।

4. मूल विचार को 'क्षण का बीज' कहा गया है क्योंकि भावनात्मक आवेग के कारण अनेक विचार मन में चलते रहते हैं। उनमें कोई भाव समय के अनुकूल विचार बन जाता है तथा कल्पना के सहारे वह विकसित होता है। कल्पना व चिंतन के रसायनों से उसका रूप-परिवर्तन होता है।

5. अलौकिक अमृत तुल्य रस-धाराएँ फलों के पकने पर फलों से फूट पड़ती हैं। ऐसा तब होता है जब उन पके फलों को काटा जाता है।

6. साहित्य का आनंद अनंत काल से लुटते रहने पर भी कम नहीं होता, क्योंकि सभी पाठक अपने-अपने ढंग से रस का आनंद उठाते हैं।

7. 'रस का अक्षय पात्र' साहित्य को कहा गया है, क्योंकि साहित्य का आनंद कभी समाप्त नहीं होता। पाठक जब भी उसे पढ़ता है, आनंद की अनुभूति अवश्य करता है।

8. कवि ने इन पंक्तियों में खेत की तुलना कागज के उस चौकोर पन्ने से की है, जिस पर उसने कविता लिखी है। इसका कारण यह है कि इसी कागजरूपी खेत पर कवि ने अपने भावों-विचारों के बीज बोए थे जो फसल की भाँति उगकर आनंद प्रदान करेंगे।

पद्यांश-1 पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

छोटा मेरा खेत चौकोना कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया क्षण का बीज वहाँ बोया गया ।
कल्पना के रसायनों को पी बीजगलगयानिःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे, पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
झूमने लगे फल, रस अलौकिक, अमृत धाराएँ फुटतीं
रोपाई क्षण की, कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्सदा
का छोटा मेरा खेत चौकोना

'छोटा मेरा खेत' किसकी रचना है
क. रमाशंकर जोशी
ख. भीमसेन जोशी
ग. उमाशंकर जोशी
घ. भीष्म जोशी

यहाँ कवि किस खेत की बात करता है?
क. मनरूपी खेत
ख. कागज़ रूपी खेत
ग. प्यार रूपी खेत
घ. हरियाली रूपी खेत

कवि ने अपने खेत में कौन-सा बीज बोया?
क.प्रेम रूपी बीज
ख. विचार रूपी बीज
ग. शब्द रूपी बीज ।
घ. धान रूपी बीज।

अभिव्यक्ति रूपी बीज किस पर बोया था?
क. कागज़ के पृष्ठ पर
ख. खेत में
ग. छत पर
घ. आँगन में

विचारों का बीज बोकर कौन-सा रसायन डालता है?
क. यूरिया का
ख. शब्दों का
ग. कल्पना का
घ. भावों का

की रसधारा कब तक चलती है?
क. प्रातःकाल
ख.सायंकाल
ग. अनंतकाल
घ. समकाल

3. स्तंभ 'क'औरस्तंभ'ख'का मिलान करते हुए सही उत्तर का चुनाव कीजिए।

स्तंभ'क'स्तंभ'ख'

1-छोटा चौकोना खेत	1-खेत
2-किसानी	2-कागज़ का पन्ना
3- बगुलों के पंख चुराते हैं	3-बीज
4-खेत	4-आंखें

A. (1-1),(2-2),(3-3),(4-4)
B. (1-2),(2-1),(3-4),(4-3)
C. (1-4),(2-3),(3-2),(4-1)
D. (2-3),(1-4),(2-3),(4;3)

4. स्तंभ 'क'और स्तंभ'ख'का मिलान करते हुए सही उत्तर का चुनाव कीजिए।

स्तंभ'क' **स्तंभ'ख'**

1-रसायन 1-सफेद

2-रसधारा 2-शब्दरूपी बीज

3- कागज़ 3-अनंतकाल

4-बगुलों के पंख 4-कल्पना

A. (1-1),(2-2),(3-3),(4-4)

B. (1-2),(2-1),(3-4),(4-3)

C. (1-4),(2-3),(3-2),(4-1)

D. (2-3),(1-4),(2-3),(4;3)

5. स्तंभ 'क'और स्तंभ'ख'का मिलान करते हुए सही उत्तर का चुनाव कीजिए।

स्तंभ'क' **स्तंभ'ख'**

1-कवि 1-भावनात्मक आँधी

2-किसान 2-अलौकिक रसधारा

3-अंधड़ 3-रचनाकार

4-कविता 4-खेती

A. (1-3),(2-4),(3-1),(4-2)

B. (1-2),(2-1),(3-4),(4-3)

C. (1-4),(2-3),(3-2),(4-1)

D. (2-3),(1-4),(2-3),(4;3)

6. 'छोटा मेरा खेत' कविता में किसकी कटाई की बात कही है?

क. क्षण की

ख. अंकुर की

ग. अनंतता की

घ.फ़सल की

उत्तर- 1-ग, 2-ख, 3-ग, 4-क, 5-ग, 6-ग, 7-ख, 8-ग, 9-क, 10-ग।

(ख) बगुलों के पंख

यह कविता सुंदर दृश्य बिंबयुक्त कविता है जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के ब्यौरों के चित्रात्मक वर्णन केसाथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन।

कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। इस नयनाभिराम दृश्य में कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

प्रश्न-

1. कवि किस दृश्य पर मुग्ध हैं और क्यों?

2. 'उसे कोई तनिक रोक रक्खी-इस पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता हैं?

3. कवि के मन-प्राणों को किसने अपनी आकर्षक माया में बाँध लिया हैं और कैसे?

4. कवि उस सौंदर्य को थोड़ी देर के लिए अपने से दूर क्यों रोके रखना चाहता हैं? उसे क्या भय हैं?

उत्तर-

1. कवि उस समय के दृश्य पर मुग्ध है जब आकाश में छाए काले बादलों के बीच सफेद बगुले पंक्ति बनाकर उड़ रहे हैं। कवि इसलिए मुग्ध है क्योंकि श्वेत बगुलों की कतारें बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया की तरह प्रतीत हो रहे हैं।

2. इस पंक्ति में कवि दोहरी बात कहता है। एक तरफ वह उस सुंदर दृश्य को रोके रखना चाहता है ताकि उसे और देख सके और दूसरी तरफ वह उस दृश्य से स्वयं को बचाना चाहता है।

3. कवि के मन-प्राणों को आकाश में काले-काले बादलों की छाया में उड़ते सफेद बगुलों की पंक्ति ने बाँध लिया है। पंक्तिबद्ध उड़ते श्वेत बगुलों के पंखों में उसकी आँखें अटककर रह गई हैं और वह चाहकर भी आँखें नहीं हटा पा रहा है।

4. कवि उस सौंदर्य को थोड़ी देर के लिए अपने से दूर रोके रखना चाहता है क्योंकि वह उस दृश्य पर मुग्ध हो चुका है। उसे इस रमणीय दृश्य के लुप्त होने का भय है।

पद्याश– पद्याश का पढ़कर पूछ गए प्रश्ना क उत्तर दाजए।

नभ में पाँती-बाँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखे।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखे
नभ में पाँती-बँधी बगुलों के पाँखें।

1. कथन और कारण पर विचार करते हुए सही विकल्पचु निए।

कथन- चुराए लिए जाती वे मेरी आंखें।

कारण- नभ में पांती-बांधे बगुलों के पंख।

1. कथन कारण का अनुसरण नहीं करता है।
2. कथन कारण से सम्बंध नहीं रखता है।
3. कथन कारण की सही व्याख्या करतीहै।
4. इसमें से कोई नहीं

2. कविता और कवि के नाम का सही मेल पहचानिए।

क. छोटा मेरा खेत और रघुवीर सहाय
ख. बगुलों के पंख और उमाशंकर जोशी
ग.उषा और शमशेर बहादुर सिंह
घ. बगुलों के पंख और महावीर प्रसाद

3. आकाश में पंक्ति बांधे कौन जा रहे हैं ?

1. कबूतर
2. कौवे
3. बगुले
4. गौरैया

4. लेखक बगुलों को देखकर क्या करने को कहता है ?

1. बगुलों को रोकने के लिए
2. बगुलों को करीब से देखना चाहता था
3. क और ख दोनों
4. इनमें से कोई नहीं

5. पंक्ति-बाँधे बगुलों के पंख, कवि की क्या चुराए लिए जाती हैं ?

1. हृदय
2. आंखें
3. कीमती सामान
4. छत पर डाला कपड़ा

उत्तर- 1-ग, 2-ख, 3-ग, 4-ग, 5-ख ।

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक)

बगुलों के पंख' कविता में किस वक्त सतेज श्वेत काया तैरने की बात कही है?
क. प्रातः
ख. दोपहर
ग. साँझ
घ. रात

बगुलों के पंखों का रंग कैसा है?
क. नीले
ख. सफेद
ग. काले
घ. मटमैला

आकाश किससे भरा हुआ है?

क. सफद बादला स
ख. संतरी बादलों से
ग. काले बादलों से
घ. स्लेटी बादलों से

बगुलों के पंख काले बादलों के ऊपर तैरते किसके समान प्रतीत होते हैं?
क. प्रात:काल की सुंदर काया
ख. सायंकाल की पीली काया
ग. रात्रि की काली काया
घ. साँझ की श्वेत काया

कवि ने किसकी सुंदरता का मनोहारी चित्रण किया है?
क. पंक्तिबद्ध बगुलों की
ख. पंक्तिबद्ध हंसों की
ग. पंक्तिबद्ध बत्तखों की
घ.पंक्तिबद्ध कबूतरों की

बगुलों के पंख' कविता में 'साँझ की सतेज श्वेत काया' क्या कर रही है?
तैर रही है
ख. उड़ रही है
ग. भाग रही है
घ. नहा रही है

उत्तर- 1-ग, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-क।

पाठ - रूबाइयाँ

-फ़िराक गोरखपुरी

कविता का सार - फ़िराक की रूबाइयाँ उनकी रचना 'गुले-नगमा' से अवतरित है। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रूबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है।

इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है। वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है वह उसे साफ़ पानी से नहालाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है। बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है ।

दिवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगने लगते हैं।चीनी-मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं। वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है,जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है।आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है।

रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी-घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से है।

कविता पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झूलती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

1. कथन – बच्चे माँ के लिए सबसे प्यारे होते हैं
कारण – बच्चा चाँद का टुकड़ा है
(क) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता हैं
(ख) कथन सही है और कारण की व्याख्या करता हैं
(ग) कारण सही है पर कथन असत्य है
(घ) कथन और कारण दोनों गलत है

2. प्रस्तुत काव्यांश में किसका वर्णन किया गया है?

(क) माँ के वात्सल्य भाव का (ख) मनोहर वातावरण का

(ग) चाँद की सुंदरता का (घ) स्त्री के रूप का

3. बच्चे की खिलखिलाहट भरी हँसी से क्या गूँज उठता है?

(क) आँगन (ख) घर

(ग) संपूर्ण वातावरण (घ) गगन

4. माँ हवा में बार-बार किसी उछालती है?

(क) गेंद को (ख) पतंग को

(ग) बच्चे को (घ) चाँद को

5. माँ अपने प्यारे बेटे को कहाँ लिए खड़ी है?

(क) घर के मंदिर में (ख) घर की छत पर

(ग) घर के आँगन में (घ) घर के द्वार पर

उत्तर:- (1) ख (2) क (3) ग (4) ग (5) ख

2. नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े

1. माँ बच्चे को कहाँ लेकर कपड़े पहन आती है?

(क) हाथों में लेकर (ख) घुटनों में लेकर

(ग) कमर में लेकर (घ) बिस्तर में लेकर

2. माँ बच्चे को कैसे जल से नहाती है?

(क) गर्म जल (ख) गंगाजल

(ग) निर्मल जल (घ) यमुना जल

3. प्रस्तुत कविता में प्रयुक्त शब्द 'गेसुओं में' का क्या अर्थ है?

(क) पैरों में (ख) घुटनों में

(ग) बालों में (घ) बादलों में

4. छलके-छलके में प्रयुक्त अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) यमक अलंकार

(ग) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार + (घ) श्लेष अलंकार

5. कविता में किस रस का प्रयोग किया गया है?

(क) वीर रस का (ख) करुण रस का

(ग) श्रृंगार रस का (घ) वात्सल्य रस का

उत्तर:- (1) ख (2) ग (3) ग (4) ग (5) घ

3. दिवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै एक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे से जलाती है दिए।

1. कथन - दिवाली के उत्सव पर पूजा, दिए, घर की सजावट, आदि मानव की हृदय को रोमांचित कर देता है |

कारण – त्योहारों के अवसर पर किये जाने वाले विशेष कार्य मानव को उसकी संस्कृति- सभ्यता से जोड़ कर प्रफुल्लित करते है|

(क) कथन सही है और कारण की व्याख्या करता हैं

(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता हैं

(ग) कारण सही है पर कथन असत्य है

(घ) कथन और कारण दोनों गलत है

2. माँ बच्चे के घरौंदे में दिए किसलिए जलाती है?

(क) परंपरा हेतु (ख) मनोरंजन हेतु

(ग) आत्मीयता हेतु (घ) प्रकाश हेतु

3. मुखड़े की विशेषता क्या है?

(क) मुखड़ा रूपवान है (ख) मुखड़ा कुरूप है

(ग) मुखड़ा गोरा है (घ) मुखड़ा काला है

4. घर में किससे बने सुंदर खिलौने रखे हैं?

(क)चीनी चायपत्ती (ख) चीनी-मिट्टी

(ग) रेत-मिट्टी (घ) सीमेंट-रेत

5. दिवाली के अवसर पर रूपवती के मुख पर क्या होती है?

(क) एक नरम चमक (ख) एक गर्म चमक

(ग) एक ठंडी चमक (घ) एक सरल चमक

उत्तर:- (1) क (2) ख (3) क (4) ख (5) ख

4. आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हुई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

1. माँ अपने पुत्र को क्या देती है?

(क) खिलौना (ख) चाँद

(ग) दर्पण (घ) सितारा

2. 'रुबाइयाँ' में किस छंद का प्रयोग है?

(क) दोहा (ख) सवैया

(ग) रुबाई (घ) चौपाई

3. बालक किस पर ललचाया है?

(क) सूरज पर (ख) चाँद पर

(ग) तारे पर (घ) खिलौने पर

4. 'आंगन में ठुनक रहा है'- ठुनकने का क्या अर्थ है?

(क) चिल्लाना (ख) नाचना

(ग) गाना (घ) मचलना

उत्तर:- (1) ग (2) ग (3) ख (4) घ

5. रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छाई है घटा गगन की हल्की-हल्की
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के ही हैं बाँधती चमकती राखी

1. किसके लच्छे चमक रहे हैं?

(क) राखी के (ख) परांदी के

(ग) दुपट्टे के (घ) आँचल के

2. राखी के लच्छे किस तरह चमक रहे हैं?

(क) सूरज की तरह (ख) चाँद

(ग) दर्पण की तरह (घ) बिजली की तरह

3. बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे - मैं प्रयुक्त अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) रूपक अलंकार

(ग) उपमा अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

4. रूबाइयों की भाषा कौन सी है?

(क) उर्दू और देशज मिश्रित (ख) हिंदी और उर्दू मिश्रित

(ग) हिंदी और देशज मिश्रित (घ) इनमें से कोई भी नहीं

5. रुबाइयाँ कविता किस काव्य संग्रह से संग्रहित हैं?

(क) शहीद (ख) बज्मे जिंदगी

(ग) गुले नगमा (घ) विश्वशांति

6. कथन – बहन रस की पुतली है

कारण – भाई-बहन का रिश्ता झीनी घटा से बिजली के सम्बन्ध वाला होता है

(क) कथन सही है और कारण की व्याख्या करता हैं

(ख) कथन सही है पर कारण की व्याख्या नहीं करता हैं

(ग) कारण सही है पर कथन असत्य है

(घ) कथन और कारण दोनों गलत है

उत्तर:- (1) क (2) घ (3) ग (4) ख (5) ग (6) क

कविता पर आधारित लघुउत्तरिय प्रश्न

1. कवि ने 'चाँद का टुकड़ा' किसे कहा है और क्यों? माँ के लिए कविता में किस शब्द का प्रयोग हुआ है और क्यों?

उत्तर:- कवि ने चाँद का टुकड़ा माँ की गोद में खेल रहे बच्चे को कहा है क्योंकि वह चाँद के समान ही सुंदर है। माँ के लिए कविता में 'गोद-भरी' शब्द का प्रयोग किया गया है क्योंकि माँ की गोद में बच्चा होने के कारण उसकी गोद भरी हुई है।

2. कविता में बच्चे की हँसी का क्या कारण है? उसके गूँजने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- बच्चे की हँसी का कारण है माँ - माँ द्वारा बच्चे को हवा में लोका दिया जाना या उसे खुश करने के लिए हवा में उछालना। उसके गूँजने का तात्पर्य है कि इससे बच्चा खुश होकर हँसता है और उसकी हँसी से पूरा वातावरण गूँज उठता है।

3. बच्चा कब अपनी माँ को प्यार से देखता है?

उत्तर:-माँ बच्चे को नहला धुला कर, उसके बालों को कंघी करके, जब उसे अपने घुटनों में लेकर कपड़ा पहनाती है तब बच्चा अपनी माँ को प्यार से देखता है।

4. दिवाली के अवसर पर माँ बच्चे के लिए क्या लाती है और उसके चेहरे पर कैसा भाव आता है?

उत्तर:-दिवाली के अवसर पर माँ बच्चे के लिए चीनी के बने खिलौने लाती है। इस अवसर पर जब माँ बच्चे के छोटे से घर में दिया जलाती है तो उसके सुंदर मुख पर भी चमक आ जाती है।

5. कविता में कौन ठुनक रहा है और जिद् करता है? कवि ने किस मनोविज्ञान का चित्रण किया है?

उत्तर:-बच्चा का मन चाँद पर ललचाया है इसलिए वह ठुनकता है जिद करता है। कवि ने बाल मनोविज्ञान का सहज चित्रण किया है। बच्चे किसी भी वस्तु को पाने के लिए जिद कर बैठते हैं तथा उनका मन मचलने लगता है।

6. 'रस की पुतली' कौन है? उसे यह संज्ञा क्यों दी गई है?

उत्तर:-रस की पुतली राखी बाँधने वाली बहन है। उसे यह संज्ञा इसलिए दी गई है क्योंकि उसके मन में अपने भाई के प्रति अत्यधिक स्नेह हैं।

7. राखी के दिन मौसम कैसा है?

उत्तर:-राखी के दिन आकाश में हल्के हल्के काले बादल छाए हैं तथा बिजली भी चमक रही है।

कविता पर आधारित वर्णनात्मक प्रश्न

1. 'फ़िराक की रुबाइयों' में उभरे घरेलू जीवन की बिंबो का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'फ़िराक की रूबाइयों' में घरेलू जीवन का चित्रण हुआ है। इन्होंने इसके लिए कई बिंब उकेरे है। एक बिंब में माँ छोटे बच्चे को अपने हाथ से झूला झूला रही है । बच्चे की तुलना चांद से की गई है । दूसरे बिंब में माँ बच्चे को नहलाकर कपड़े पहनाती है तथा बच्चा उसे प्यार से देखता है । तीसरे बिंब में बच्चे द्वारा चाँद को लेने के लिए जिद करना तथा माँ द्वारा दर्पण में चाँद की छवि दिखाते हुए कहना कि देख बेटा दर्पण में चाँद उतर आया है।

2. फिराक की रुबाई में भाषा के विलक्षण प्रयोग किए गए हैं- स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-कवि की भाषा उर्दू है, परंतु उन्होंने हिंदी व लोकभाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में हिंदी, उर्दू व लोकभाषा के अनूठे गठबंधन के विलक्षण प्रयोग हैं जिसे गाँधी जी हिंदुस्तानी के रूप में पल्लवित करना चाहते थे। ये विलक्षण प्रयोग है - लोका देना, घुटनियों में लेकर कपड़े पिन्हाना, गेसुओं में कंघी करना, रूपवती मुखड़ा, नर्म दमक जिदयाया बालक,रस की पुतली। माँ हाथ में आईना देकर बच्चे को बहला रही है
देख आईने में चाँद उतर आया है ।
चाँद की परछाई भी चाँद ही है ।

3. रुबाइयां के आधार पर घर-आँगन में दिवाली और राखी के दृश्य बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर:- कवि दिवाली के त्यौहार के बारे में बताता है वह कहता है कि इस अवसर पर घर में रंग-रोगन की जाती है तथा उसे सजाया जाता है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। बच्चे के छोटे से घर में दिए जलाने से माँ के मुखड़े की चमक में नई आभा आ जाती है।

रक्षाबंधन का त्यौहार सावन के महीने में आता है। इस त्यौहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई हुई होती हैं। राखी के लच्छे भी आकाश में चमकने वाली बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं। क्योंकि घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से है।

"भक्तिन"(महादेवी वर्मा) पाठ का सारांश

भक्तिन महादेवी वर्मा जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो 'स्मृति की रेखाओं में संकलित है। इसमें महादेवी जी ने अपनी सेविका। भक्तिन के अतीत एवं वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का चित्रण किया है। लेखिका के घर में काम करने से पहले भक्तिन। ने कैसे एक संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मशील जीवनयापन किया। वह कैसे पितृसत्तात्मक मान्यताओं और उसके छल-छद्मपूर्ण समाज में अपने और अपनी बेटियों की हक की लड़ाई लड़ती रही तथा हार कर कैसे जिंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुंची। इन सबका इस पाठ में अत्यंत संवेदनशील चित्रण हुआ है।

लेखिका ने इस पाठ में आत्मीयता से परिपूर्ण भक्तिन के द्वारा स्त्री-अस्मिता की संघर्षपूर्ण आवाज उठाने का भी प्रयास किया है। भक्तिन का शरीर दुबला-पतला है। उसका कद छोटा है। बह ऐतिहासिक सी गाँव के प्रसिद्ध अहीर सूरमा की इकलौती बेटी है। उसकी माता का नाम धन्या गोपालिका है। उसका वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी है। भक्तिन नाम तो बाद में लेखिका ने अपने घर में नौकरानी रखने के बाद रखा था। भक्तिन एक दृढ़ संकल्प, ईमानदार, जिज्ञासु और बहुत समझदार महिला है। वह विमाता की ममता की। छाया में पली-बढ़ी। पाँच वर्ष की छोटी-सी आयु में उसके पिता ने इसका विवाह हँडिया ग्राम के एक संपन्न गोपालक के छोटे बेटे के। साथ कर दिया। नौ वर्ष की आयु में सौतेली माँ ने इसका गौना कर ससुराल भेज दिया। भक्तिन अपने पिता से बहुत प्रेम करती थी लेकिन उसकी विमाता उससे ईर्ष्या किया करती थी। उसके पिता की मृत्यु का समाचार उसकी विमाता ने बहुत दिनों के बाद भेजा फिर उसकी सास ने भी रोने-पीटने को अपशकुन समझ कुछ नहीं बताया। अपने मायके जाने पर उसे अपने पिता की दुखद मृत्यु का समाचार मिला।

गद्य पर आधारित प्रश्न -

1.तीतरबाज युवक कहता था, वह निमंत्रण पाकर भीतर गया और युवती उसके मुख पर अपनी पाँचों उँगलियों के उभार में इस निमंत्रण के अक्षर पढ़ने का अनुरोध करती थी। अंत में दूध-का-दूध पानी-का-पानी करने के लिए पंचायत बैठी और सबने सिर हिला-हिलाकर इस समस्या का मूल कारण कलियुग को स्वीकार किया। अपीलहीन फैसला हुआ कि चाहे उन दोनों में एक सच्चा हो चाहे दोनों झूठे; जब वे एक कोठरी से निकले, तब उनका पति-पत्नी के रूप में रहना ही कलियुग के दोष का परिमार्जन कर सकता है। अपमानित बालिका ने होंठ काटकर लहू निकाल लिया और माँ ने आग्नेय नेत्रों से गले पड़े दामाद को देखा। संबंध कुछ सुखकर नहीं हुआ, क्योंकि दामाद अब निश्चित होकर तीतर लड़ाता था और बेटी विवश क्रोध से जलती रहती थी। इतने यत्न से सँभाले हुए गाय-ढोर, खेती-बारी जब पारिवारिक द्वेष में ऐसे झुलस गए कि लगान अदा करना भी भारी हो गया, सुख से रहने की कौन कहे। अंत में एक बार लगान न पहुँचने पर जमींदार ने भक्तिन को बुलाकर दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा। यह अपमान तो उसकी कर्मठता में सबसे बड़ा कलंक बन गया, अत: दूसरे ही दिन भक्तिन कमाई के विचार से शहर आ पहुँची।

1.युवती व तीतरबाज युवक ने अपने-अपने पक्ष में क्या तर्क दिए?

क. वह निमंत्रण पाकर भीतर गया था। ख. लड़की युवक के गाल पर पाँच उंगलियों का छाप नहीं देती

ग. दोनों असत्य है। घ. दोनों सत्य है।

उत्तर- क. वह निमंत्रण पाकर भीतर गया था।

2..पंचायत ने समस्या का मूल कारण क्या माना?

क. कलियुग का परिमार्जन ख. सतयुग का आगमन

ग. वर्तमान की स्थिति घ. भविष्य की लालसा

उत्तर- क. कलियुग का परिमार्जन

3. नए दामाद का स्वागत कैसे हुआ?

क. लोगो के अपशब्दों से। ख. सास द्वारा माला पहनाकर

ग. आग्नेय नेत्रों से घ. स्नेह भारी नज़रों से

उत्तर- ग. आग्नेय नेत्रों से

4.भक्तिन को शहर क्यों आना पड़ा?

क. उसका घर- बार सब बिक गया था ख. ज़मीदार ने उसके खेत को अपने कब्जे में ले लिया।

ग. जानवर पारिवारिक द्वेष में झुलस गए। घ. उपर्युक्त सभी।

उत्तर- घ. उपर्युक्त सभी।

5. भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायतों की क्या तस्वीर उभरती है?

क. पंचायतें गूंगी, लाचार और अयोग्य हैं ख. वे सही न्याय नहीं कर पातीं

ग. वे दूध का दूध और पानी का पानी करती हैं घ. वे अपने स्वार्थों को पूरा करती हैं

उत्तर- क. पंचायतें गूंगी, लाचार और अयोग्य हैं।

2.इस दंड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं, पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगोझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने छाँट-छाँट कर, ऊपर से असंतोष की मुद्रा के साथ और भीतर से पुलकित होते हुए जो कुछ लिया, वह सबसे अच्छा भी रहा, साथ ही परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से उसका सोना बन जाना भी स्वाभाविक हो गया।

1.'खोटे सिक्कों की टकसाल' का क्या अर्थ है?

क. काम करने में निकम्मी पत्नी ख. बेकार पत्नी

ग. जिस टकसाल से टूटे सिक्के मिलते हों घ. कन्याओं को जन्म देने वाली पत्नी

उत्तर- घ. कन्याओं को जन्म देने वाली पत्नी

2. भक्तिन की कितनी जेठानियाँ थी?

क. दो ख. तीन

ग. चार घ. पांच

उत्तर- दो

3. ससुराल में भक्तिन के साथ सद्व्यवहार कौन किया?

क. जिठानियोन ने ख. पति ने

ग. सास ने घ. ससुर ने

4. "पति के प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगोझा करके सबको अगूंठा दिखा दिया" प्रस्तुत पंक्ति में मुहावरा है-

क. पति के प्रेम में बल ख. अलगोझा करना

ग. अँगूठा दिखाना घ. इनमें से कोई नही

उत्तर- ग. अँगूठा दिखाना

5. सास और जेठानियाँ भक्तिन के साथ कैसा व्यवहार करती थी?

क. क्रूरता पूर्ण ख. स्नेहपूर्ण

ग. दयापूर्ण घ. प्रेमपूर्ण

उत्तर- क. क्रूरता पूर्ण

बहुविकल्पीय प्रश्न –

1. महादेवी ने लछमिन को भक्तिन कहना क्यों आरंभ कर दिया?

क. उसके व्यवहार को देखकर ख. उसके वैराग्यपूर्ण जीवन को देखकर

ग. उसके गले में कंठी माला देखकर घ. उसकी शांत मुद्रा को देखकर

उत्तर-ग. उसके गले में कंठी माला देखकर

2. भक्तिन किसके लिए लड़ाई लड़ती रही?

क. अपने अस्तित्व के लिए ख. अपने पति के जीवन के लिए

ग. महादेवी के लिए घ. अपनी बेटियों के हक के लिए

उत्तर-घ. अपनी बेटियों के हक के लिए

3. भक्तिन किसके समान अपनी मालकिन के साथ लगी रहती थी?

क. छाया के समान ख. धूप के समान

ग. वायु के समान घ. पालतु पशु के समान

उत्तर- क. छाया के समान

4. भक्तिन के ससुराल वालों ने उसके पति की मृत्यु पर उसे पुनर्विवाह के लिए क्यों कहा?

क. ताकि भक्तिन सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर सके ख. ताकि वे भक्तिन की घर-संपत्ति को हथिया सकें

ग. ताकि वे भक्तिन से छुटकारा पा सकें घ. ताकि वे भक्तिन को पुनः समाज में सम्मान दे सकें

उत्तर-ख. ताकि वे भक्तिन की घर-संपत्ति को हथिया सकें

5.भक्तिन किस प्रकार का भोजन बनाती थी?

क. तीखा और मसालेदार ख.. तीखा और मीठा

ग. सीधा-सरल भोजन घ. स्वादिष्ट और गरिष्ठ

उत्तर-ग. सीधा-सरल भोजन

6.कथन - भक्तिन धार्मिक प्रवित्ति की महिला थी।

कारण - क्योंकि उसपर महादेवीवर्मा की संगत का असर था।

क. कथन सही कारण गलत ख. कारण सही कथन गलत

ग. कथन और कारण दोनों सही घ. कथन और कारण दोनों गलत

उत्तर- क. कथन सही कारण गलत

7. मिलान का सही विकल्प चुने।

क. फूल की	1. चित्तीदार रोटी
ख. एक अंगुल मोटी	2. थाली
ग. आत्म तुष्टि से	3. लबालब
घ. प्रसन्नता	4. प्लावित

I. क-2, ख-1, ग-4, घ-3

II. क-4,ख-3,ग-2,घ-1

III. क-1,ख-2,ग-3,घ-4

IV. क- 3,ख- 4,ग-2,घ-1

उत्तर- I. क-2, ख-1, ग-4, घ-3

8. कथन I- जैसे वह हठ करके मेरे आगे चलती रहती है।

कथन II- वैसे गावँ की धूल भरी पगडंडी मेरे पीछे रहना नही भूलती।

क. केवल कथन I सही ख. केवल कथन II सही

ग. दोनों कथन सही घ. दोनों कथन गलत

उत्तर- ग. दोनों कथन सही

9. "वह लकड़ी रखने के मचान पर अपनी नयी धोती बिछाकर मेरे कपड़े रख देगी, दीवाल में कीलें गाड़कर और उन पर तख्ते रखकर मेरी किताबें सजा देगी, धान के पुआल का गोंदरा बनवाकर और उस पर अपना कंबल बिछाकर वह मेरे सोने का प्रबंध करेगी" प्रस्तुत कथन किसका है?

क. महादेवी वर्मा। ख. भक्तिन

ग. भक्तिन की बेटी घ. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर- क. महादेवी वर्मा।

10.भक्तिन पाठ कौन सी विधा में लिखा गया है?

क. निबंध ख. कहानी

ग. संस्मरणात्मक रेखाचित्र घ. जीवनी

उत्तर- ग. संस्मरणात्मक रेखाचित्र

11.. भक्तिन में कौन सा भाव प्रबल था?

क. वीरता का भाव ख. स्वाभिमान भाव का

ग. घृणा का भाव घ. ईर्ष्या का भाव

उत्तर- ख. स्वाभिमान भाव का

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. भक्तिन की बेटी के मामले में जिम तरह का फ़ैसलापंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज़ बात नहीं है।अखबयों या टी०वी० समाचारों में आने वार्ता किसी ऐसी ही घटना की भक्तिन के उस प्रसंग के साथ रखकर उस परचर्चा करें?

उत्तर –भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का केसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज बात नहीं है। अब भी पंचायतों का तानाशाही रवैया बरकरार है। अखबारों या सी०ची० पर अकसर समाचार सुनने को मिलते हैं कि प्रेम विवाह को पंचायतें अवैध करार देती हैं तथा पति–पत्नी को भाई–बहिन की तरह रहने के लिए विवश करती हैं। वे उन्हें सजा भी देती हैं। कई बार तो उनकी हत्या भी कर दी जाती है। यह मध्ययुगीन बर्बरता आज भी विदूयमान है।

2.नीचे दिए गए विशिष्ट भाषा-प्रयोगों के उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए और इनकी अर्थ-छवि स्पष्ट कीजिए –

क.पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले।

ख.खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी।

ग.अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूति।

उत्तर - इसका अर्थ है कि भक्तिन (लछमिन) ने एक कन्या को जन्म देने के बाद दो कन्याएँ और पैदा कीं। अब वह तीन कन्याओं की माँ बन चुकी थी। कन्या के संस्करण से आशय है कि उसी कन्या जैसी दो और कन्याएँ पैदा हुईं।

खोटा सिक्का कमियों से भरपूर होता है। उसमें बहुत कमियाँ होती हैं। पत्नी भी यदि खोटे सिक्कों की टकसाल हो तो वह कमियों की खान हैं अर्थात् उसमें बहुत से अवगुण हैं।

अस्पष्ट पुनरावृत्तियों से आशय है कि कि वही बातें बार-बार हो रही हैं जो पहले (अतीत) में होती रही हैं। स्पष्ट सहानुभूति से आशय है कि लोगों का दूसरों (अन्य लोगों) के प्रति झूठ-मूठ की सहानुभूति जताना अर्थात् संवेदनाहीन सहानुभूति प्रदर्शित करना। केवल औपचारिकता निभाने के लिए मेल-जोल रखना

3.पाठ के आधार पर भक्तिन की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: भक्तिन की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

(क) जुझारू – भक्तिन जुझारू महिला थी। उसने कठिन परिस्थितियों का डटकर सामना किया। शादी के बाद ससुराल में मेहनत से खेतीबाड़ी की। पति की मृत्यु के बाद बेटियों की शादी की। समाज के भेदभावपूर्ण व्यवहार का कड़ा विरोध किया।

(ख) भाग्य से पीड़ित – भक्तिन मेहनती थी, परंतु भाग्य उसके सदैव विपरीत रहा। बचपन में माँ की मृत्यु हो गई थी। विमाता का देश उसे हमेशा झालता रहा। ससुराल में तीन पुत्रियों का जन्म देने के कारण उपेक्षा मिली। पति की अकाल मृत्यु हुई। फिर दामाद की मृत्यु व परिवार के षड्यंत्र ने उसे तोड़कर रख दिया।

(ग) सेवाभाव – भक्तिन महादेवी की सेविका थी। वह छाया के समान हर समय महादेवी के साथ रहती थी। महादेवी के कार्य को खुशी से करती थी।

4.महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: भक्तिन व लेखिका के बीच नौकरानी या स्वामिनी का संबंध नहीं था। वे आत्मीय जन की तरह थे। स्वामी अपनी इच्छा होने पर भी उसे हटा नहीं सकती थी(स्वामी अपनी इच्छा होने पर भी उसे हटा नहीं सकती। सेवक भी स्वामी के चले जाने के आश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलो वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते है जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख-दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के लिए लेखिका के जीवन को घेरे है।

5. भक्तिन का अतीत परिवार और समाज की किन समस्याओं से जूझते हुए बीता है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर: भक्तन का जावन सदव परशाना भरा रहा। बचपन म मा का मृत्यु हा गइ था। ावमाता न उसस भदभाव ाकया। ाववाह क बाद उसका तान लड़ाकया हुइ जिसके कारण सास व जेठानियों ने उसके व लड़कियों के साथ भेदभाव किया। 36 वर्ष की आयु में पति की मृत्यु हो गई। ससुराल वालों ने संपत्ति हड़पने के तमाम प्रयास किए, परंतु उसने बेटियों की शादी की। एक घरजमाई बनाया, परंतु दुर्भाग्य से वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसके बाद ससुराल वालों ने मिलकर उसकी विधवा पुत्री का बलात्कार कराने की कोशिश की। पंचायत ने बलात्कारी के साथ ही लड़की का विवाह जबरन कर दिया। इसके बाद भक्तिन की संपत्ति का विनाश हो गया

बाज़ार दर्शन पाठ का सारांश

(जैनेन्द्र कुमार)

'बाजार दर्शन' श्री जैनेंद्र कुमार द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण निबंध है जिसमें गहन वैचारिकता और साहित्य सुलभ लालित्य का मणिकांचन संयोग देखा जा सकता है। यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की मूल अंतर वस्तु को समझाने में बेजोड़ है। जैनेंद्र जी ने इस निबंध के माध्यम से अपने परिचित एवं मित्रों से जुड़े अनुभवों को चित्रित किया है कि बाजार की जादुई ताकत कैसे हमें अपना गुलाम बना लेती है। उन्होंने यह भी बताया है कि अगर हम आवश्यकतानुसार बाजार का सदुपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं लेकिन अगर हम जरूरत से दूर बाजार की चमक-दमक में फंस गए तो वह असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर हमें सदा के लिए बेकार बना सकता। है। इन्हीं भावों को लेखक ने अनेक प्रकार से बताने का प्रयास किया है।

लेखक बताता है कि एक बार उसका एक मित्र अपनी प्रिय पत्नी के साथ बाजार में एक मामूली-सी वस्तु खरीदने हेतु गए थे लेकिन जब – वे लौटकर आए तो उनके हाथ में बहुत-से सामान के बंडल थे। इस समाज में असंयमी एवं संयमी दोनों तरह के लोग होते हैं। कुछ ऐसे जो बेकार खर्च करते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी संयमी होते हैं, जो फ़िजूल सामान को फ़िजूल समझते हैं। ऐसे लोग अपव्यय न करते हुए केवल आवश्यकतानुरूप खर्च करते हैं। ये लोग ही पैसे को जोड़कर गर्वीले बने रहते हैं। लेखक कहता है कि वह मित्र आवश्यकता से । ज्यादा सामान ले आए और उनके पास रेल टिकट के लिए भी पैसे नहीं बचे। लेखक उसे समझाता है कि वह सामान पर्चेजिंग पावर के ।

पठित गद्यांश आधारित प्रश्न

1.मैंने मन में कहा, ठीक। बाजार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो । सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाजार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं है और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है, ओह! कोई अपने को न जाने तो बाजार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल। असंतोष, तृष्णा और ईष्या से घायल करके मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।

1. लेखक के अनुसार ऊँचे बाजारों का आमंत्रण कैसा होता है?

क. आग्रह से परिपूर्ण ख. शोर से परिपूर्ण

ग. मूक घ. विज्ञापनों से परिपूर्ण

उत्तर – ग. मूक

2. बाज़ार में जादू को कौन सी इन्द्रिय पकड़ती है ?

क. आँख ख. नाक

ग. कान घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- क. आँख

3. "पर्चेजिंग पावर" का सम्बन्ध है ?

क. धन के संचय से ख. धन को दान देने से

ग. धन के व्यय से घ. पैसे के लालच से

उत्तर- ग. धन के व्यय से

4. बाज़ार की सार्थकता किसमें है?

क. लालच में ख. अपव्यय में

ग. बाजारूपन में घ. आवश्यकता की पूर्ति में

उत्तर- घ. आवश्यकता की पूर्ति में

5. कौन लोग बाज़ार का बाजारूपन बढ़ाते हैं?

क. गरीब लोग ख. दुकानदार को

ग. असली ग्राहक घ. पर्चेजिंग पावर वाले लोग

उत्तर- घ. पर्चेजिंग पावर वाले लोग

2.बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की

अनकानक चाज़ा का िनमन्त्रण उस तक पहुच जाएगा। कहा उस वक्त जब भरा हा तब ता िफर वह मन िकसका मानन वाला ह। मालूम हाता ह यह भा ल. वह भा लें। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है।

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है। वह यह कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लूका लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

1. बाज़ार के जादू का प्रभाव कब पड़ता है?

क . जब ग्राहक का मन खाली होता है ख. जब ग्राहक का मन भरा हुआ होता है

ख. जब ग्राहक के साथ उसकी पत्नी होती है ग. जब ग्राहक गरीब होता है

उत्तर- क. जब ग्राहक का मन खाली होता है

2. 'बाज़ारूपन' से क्या अभिप्राय है?

क. बाजार से सामान खरीदना ख. बाज़ार से अनावश्यक वस्तुएँ खरीदना

ग. बाजार से आवश्यक वस्तुएँ खरीदना घ. बाज़ार को सजाकर आकर्षक बनाना

उत्तर- ख. बाज़ार से अनावश्यक वस्तुएँ खरीदना

3..बाज़ार दर्शन' का प्रतिपाद्य है।

क.. बाज़ार के उपयोग का विवेचन ख.. बाजार से लाभ

ग . बाज़ार न जाने की सलाह घ. बाज़ार जाने की सलाह

उत्तर- क. बाज़ार के उपयोग का विवेचन

4. हमें किस स्थिति में बाजार जाना चाहिए?

क. जब मन खाली हो ख. जब मन खाली न हो

ग. जब मन बंद हो घ . जब मन में नकार हो

उत्तर- ख. जब मन खाली न हो

5.बाज़ार दर्शन में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है?

क. साहित्यिक ब्रज भाषा का ख. तत्सम प्रधान हिंदी भाषा का

ख . सामान्य हिंदी भाषा का घ. बाजारू भाषा का

उत्तर-ग. सामान्य हिंदी भाषा का

बहुविकल्पीय 20 **प्रश्न:-**

1.बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को लेखक ने क्या नाम दिया है ?

क. नीतिशास्त्र ख. अनीतिशास्त्र

ग. समाज शास्त्र घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- ख. अनीतिशास्त्र

2. जैनेद्र कुमार की मित्र ने बाज़ार को क्या संज्ञा दी?

क. जी का जंजाल ख. शैतान का जंजाल

ग. आफत का जंजाल घ. आँखों का भ्रम

उत्तर- ख. शैतान का जंजाल

3.. भगत जी प्रतिदिन कितना पैसा कमाते हैं ?

क. चार आना ख. आठ आना

ग. छ: आना घ. सोलह आना

उत्तर- ग. छ: आना

4.. बाज़ार दर्शन किस विधा में लिखा गया है?

क. कहानी ख. नाटक

ग. उपन्यास घ. निबंध

उत्तर- घ. निबंध

5. लेखक ने काल्पनिक वस्तु की जगत किसे कहा है?

क. उदारता को ख. ममता को

ग. समता को घ. लघुता को

उत्तर- क. उदारता को

6.बाज़ार को शैतान का जाल किसने कहा ?

क. मित्र ने ख. पत्नी ने

ग. लेखक ने घ इनमे से कोई नहीं

उत्तर- क. मित्र ने

7.भारत सरकार ने जैनेन्द्र कुमार को कौन सी उपाधि प्रदान की ?

क. पद्मश्री ख. पद्मभूषण

ग. वीरचक्र घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- ख. पद्मभूषण

8.सामन ज़रूरत के हिसाब से नहीं _____ के हिसाब से आता है ?

क. इच्छा ख. पर्चेजिंग पावर

ग. इज्ज़त घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- ख. पर्चेजिंग पावर

9. मनुष्य को सब ओर की चाह कब घेरती है ?

क. जब उसे ज़रूरत का ज्ञान होता है ख. जब उसे ज़रूरत का ज्ञान नहीं होता

ग. जब पैसा नहीं होता घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- 2. जब उसे ज़रूरत का ज्ञान नहीं होता

10.भगत जी चूर्ण किसमे रखकर बेचने निकलते थे ?

क. पेटी में ख. डिब्बे में

ग. गाड़ी में घ.इनमे से कोई नहीं

उत्तर- क. पेटी में

11. (i) अभिकथन - पैसे का पावर शारीरिक शक्ति से सम्बन्ध है

(ii) कारण- क्योंकि बाजारवाद मनुष्य के असंतोष, तृष्णा, और ईर्ष्या को शांत करता है

क. पहला सही, दूसरा गलत ख. दूसरा सही, पहला गलत

ग. पहला और दूसरा दोनों सही घ. दोनों गलत

उत्तर – घ. दोनों गलत (पैसा शारीरिक शक्ति का नहीं सामर्थ्य का प्रतीक है। बाजारवाद मनुष्य के असंतोष, तृष्णा, और ईर्ष्या को शांत नहीं करता है बल्कि जगा (बढ़ा) देता है)

12. (i)अभिकथन- बाज़ारवाद छल, कपट से निरर्थक वस्तुओं का खरीद फरोख्त व दिखावा करता है।

(ii)कारण- क्योंकि बाजारुपन का आशय- दिखावे के लिए बाज़ार का उपयोग करना है

क. पहला और दूसरा दोनों सही ख. पहला सही, दूसरा गलत

ग. दूसरा सही, पहला गलत घ. दोनों गलत

उत्तर- क. पहला और दूसरा दोनों सही (बाजारुपन का आशय- दिखावे के लिए बाज़ार का उपयोग करता है इसलिए बाज़ारवाद छल, कपट से निरर्थक वस्तुओं का खरीद फरोख्त व दिखावा करता हुआ प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है।)

13. (i) अभिकथन – ऊँचे बाज़ार मूक भाषा में लोगो पर जादू चलाता है।

(ii) कारण- क्योंकि यह जादू आँखों की राह काम करता है।

क. दूसरा सही, पहला गलत ख. दोनों गलत

ग. पहला और दूसरा दोनों सही घ. पहला सही, दूसरा गलत

उत्तर- ग. पहला और दूसरा दोनों सही (ऊँचे बाज़ार मूक भाषा में लोगो पर जादू चलाता है, क्योंकि यह जादू आँखों की राह काम करता है।)

14.(i) अभिकथन - बाज़ार आकर्षणों से मुक्त और आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले वस्तु से युक्त है।

(ii) कारण- उपभोक्तावाद संस्कृति लोभ और दिखावे की प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त कर ली है।

क. दूसरा सही, पहला गलत ख. दोनों गलत

ग. पहला और दूसरा दोनों सही घ. पहला सही, दूसरा गलत

उत्तर- ख. दोनों गलत (बाज़ार आकर्षणों से युक्त और आवश्यकताओं की पूर्ती करने वाले वस्तु से परिपूर्ण (युक्त) है। उपभोक्तावाद संस्कृति लोभ और दिखावे की प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त नहीं की है।

15. (i) अभिकथन- बाज़ार सामाजिक समता का सन्देश देता है।

(ii) कारण-क्योंकि उसमे सभी जाति, धर्म, लिंग एवं क्षेत्र के लोग आते हैं।

क. दोनों गलत ख. पहला और दूसरा दोनों सही

ग. पहला सही, दूसरा गलत घ. दूसरा सही, पहला गलत

उत्तर- ख. पहला और दूसरा दोनों सही (बाज़ार सामाजिक समता का सन्देश देता है। उसमे सभी जाति, धर्म, लिंग एवं क्षेत्र के लोग आते हैं।

16. (i) अभिकथन- उपभोक्ता बाज़ार की चकाचौंध या सजी-धजी वस्तुओं के आकर्षक रूप को देखकर वश में हो जाता है।

(ii) कारण- क्यूंकि बाज़ार में एक जादू है।

क. पहला सही, दूसरा गलत ख. दूसरा सही, पहला गलत

ग. दोनों गलत घ. पहला और दूसरा दोनों सही

उत्तर- घ. पहला और दूसरा दोनों सही (उपभोक्ता बाज़ार की चकाचौंध या सजी-धजी वस्तुओं के आकर्षक रूप को देखकर वश में हो जाता है क्यूंकि बाज़ार में एक जादू है।)

17. (i) अभिकथन- बाज़ार के पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीति शास्त्र के नाम से भी अभिहित किया जाता है।

(ii) कारण- क्योंकि पावर और कपट लालच को जन्म देती है, और लालच अनीति का पोषक करती हैं ।

क. पहला और दूसरा दोनों सही ख. पहला सही, दूसरा गलत

ग. दूसरा सही, पहला गलत घ. दोनों गलत

उत्तर- क. पहला और दूसरा दोनों सही(बाज़ार के पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीति शास्त्र के नाम से भी अभिहित किया जाता है।क्योंकि पावर और कपट लालच को जन्म देती है, और लालच अनीति का पोषक करती हैं ।

18. (i) अभिकथन- अनावश्यक सामान, मकान, कार आदि खरीदना परचेजिंग पावर को साबित करता है।

(ii) कारण- परचेजिंग पावर का आशय- मितव्यय करना है।

क. दोनों गलत ख. पहला और दूसरा दोनों सही

ग. पहला सही, दूसरा गलत घ. दूसरा सही, पहला गलत

उत्तर- ग. पहला सही, दूसरा गलत (अनावश्यक सामान, मकान, कार आदि खरीदना परचेजिंग पावर को साबित करता है। परचेजिंग पावर का आशय- व्यर्थ के पैसे खर्च करना होता है, जबकि मितव्यय का अर्थ है- कम खर्च करना है।)

19.(i)अभिकथन – बाज़ार जाओ तो खाली मन न हो, तभी बाज़ार के जादू के जकड़ से बच सकते हैं। जैसे-

(ii) कारण – लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो तो लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है।

क. पहला सही, दूसरा गलत ख. दूसरा सही, पहला गलत

ग. दोनों गलत घ. पहला और दूसरा दोनों सही

उत्तर- घ. पहला और दूसरा दोनों सही (बाज़ार जाओ तो खाली मन न हो, तभी बाज़ार के जादू के जकड़ से बच सकते हैं। जैसे- लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो तो लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है।)

20. (i) अभिकथन- उपभोक्ता के हित को मद्देनज़र रखते हुए सामान बनाने वाली कम्पनी दिखावे की प्रवृत्ति से अछूती रहती है, जिस वजह से बाज़ार में इतनी भीड़ रहती हैं।

(ii) कारण- दिखावे की चकाचौंध में बाजारवाद की गाड़ी आगे बढ़ रही है।

क. पहला सही, दूसरा गलत ख. दूसरा सही, पहला गलत

ग. दोनों गलत घ. पहला और दूसरा दोनों सही

उत्तर- ख. दूसरा सही, पहला गलत (उपभोक्ता के हित को मद्देनज़र न रखते हुए सामान बनाने वाली कम्पनी दिखावे की प्रवृत्ति से लिप्त है, जिस वजह से बाज़ार में इतनी भीड़ रहती है। दिखावे की चकाचौंध में बाजारवाद की गाड़ी आगे बढ़ रही है।)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.बाज़ार दर्शन' पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है? आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते/मानती हैं?

उत्तर: इस पाठ में प्रमुख रूप से दो प्रकार के ग्राहकों का चित्रण निबंधकार ने किया है। एक तो वे ग्राहक, जो ज़रूरत के अनुसार चीजें खरीदते हैं। दूसरे वे ग्राहक जो केवल धन प्रदर्शन करने के लिए चीजें खरीदते हैं। ऐसे लोग बाज़ारवादी संस्कृति को ज्यादा बढ़ाते हैं। मैं स्वयं को पहले प्रकार का ग्राहक मानता/मानती हैं क्योंकि इसी में बाजार की सार्थकता है।

2. लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति अपेक्षित वस्तु हर कीमत पर खरीदना चाहता है। वह कोई भी कीमत देकर उस वस्तु को प्राप्त कर लेना चाहता है। इसलिए वह कई बार शोषण का शिकार हो जाता है। बेचने वाला तुरंत उस वस्तु की कीमत मूल कीमत से ज्यादा बता देता है। इसीलिए लेखक ने ठीक कहा है कि आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है।

3. पाठ में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जहाँ लेखक अपनी बात कहता है कुछ वाक्य ऐसे हैं जहाँ वह पाठक-वर्ग को संबोधित करता है। सीधे तौर पर पाठक को संबोधित करने वाले पाँच वाक्यों को छाँटिए और सोचिए कि ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में मददगार होते हैं?

उत्तर: 1. बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है।

2. जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा।

3. यहाँ एक अंतर चिह्न लेना ज़रूरी है।

4. कहीं आप भूल नहीं कर बैठिएगा।

5. पैसे की व्यंग्य शक्ति सुनिए। वह दारूण है। अवश्य ऐसे संबोधनों के कारण पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। वह अपनी जिज्ञासा को शांत करना चाहता है। इसीलिए ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में सहायक सिद्ध होते हैं।

4.बाज़ारदर्शन पाठ 'उपभोक्तावादी संस्कृति' को कैसे बढ़ावा देता है?

उत्तर: उपभोक्तावादी संस्कृति वास्तव में उपभोक्ताओं का समूह है। उपभोक्ता बाज़ार से सामान खरीदते हैं। यह वर्ग ही बाजार पैदा करता है। लोग अपने उपभोग की सारी वस्तुएँ बाज़ार से खरीदकर उनका उपभोग करते हैं। बाज़ार का सारा कारोबार इन्हीं पर निर्भर होता है। यही उपभोक्ता के सहारे की उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा मिल रहा और वह फल फूल रही है।

5. भगत जी बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कैसे कर रहे हैं?

उत्तर: लेखक ने इस निबंध में भगत जी का उदाहरण दिया है जो बाज़ार से काला नमक व जीरा लाकर वापस लौटते हैं। इन पर बाज़ार का आकर्षण काम नहीं करता क्योंकि इन्हें अपनी ज़रूरत का ज्ञान है। इससे पता चलता है कि मन पर नियंत्रण वाले व्यक्ति पर बाजार का कोई प्रभाव नहीं होता। ऐसे व्यक्ति बाजार को सही सार्थकता प्रदान करते हैं। दूसरे, उनका यह रुख समाज में शांति पैदा करता है क्योंकि यह पैसे की पावर नहीं दिखाता। यह प्रतिस्पर्धा नहीं उत्पन्न करता।

6. बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर 'पैसे की व्यंग्य शक्ति' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लेखक बताता है कि पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। यदि कोई समर्थ व्यक्ति दूसरे के सामने किसी महंगी वस्तु को खरीदे तो दूसरा व्यक्ति स्वयं को हीन महसूस करता है। पैदल या दोपहिया वाहन चालक के पास से धूल उड़ाती कार चली जाए तो वह परेशान हो उठता है। वह स्वयं को कोसता रहता है। वह भी कार खरीदने के पीछे लग जाता है। इसी कारण बाज़ार में माँग बढ़ती है।

7. बाज़ार जाते समय आपको किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर: बाज़ार जाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए
हमें ज़रूरत के सामान की सूची बनानी चाहिए।
हमें बाजार के आकर्षण से बचना चाहिए।
हमारा मन निश्चित खरीददारी के लिए होना चाहिए।
बाज़ार में क्रयक्षमता का प्रदर्शन ने करके जरूरत का सामान लेना चाहिए।
बाजार में असंतोष व हीन भावना से दूर रहना चाहिए।

8.बाज़ार दर्शन' निबंध उपभोक्तावाद एवं बाज़ारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है।'-उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:
यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है। लेखक बताता है कि बाजार का आकर्षण मानव मन को भटका देता है। वह उसे ऐशोआराम की वस्तुएँ खरीदने की तरह आकर्षित करता है। लेखक ने भगत जी के माध्यम से नियंत्रित खरीददारी का महत्त्व भी प्रतिपादित किया है। बाजार मनुष्य की ज़रूरतें पूरी करें। इसी में उसकी सार्थकता है, अन्यथा यह समाज में ईर्ष्या, तृष्णा, असंतोष, लूटखसोट को बढ़ावा देता है।

"काले मेघा पानी दे" (धर्मवीर भारती)

सारांश- प्रतिपादय-'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किया गया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामथ्र्य। इनकी सार्थकता के विषय में शिक्षित वर्ग असमंजस में है। लेखक ने इसी दुविधा को लेकर पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका है। ऐसे में खेती व अन्य कार्यों के लिए पानी न हो तो जीवन चुनौतियों का घर बन जाता है। यदि विज्ञान इन चुनौतियों का निराकरण नहीं कर पाता तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज किसी-न-किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

सारांश -लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लैंगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती हैं। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं –

काले मेघा पानी दे, गुड़धानी दे
गगरी फूटी बैल पियासा , काले मेघा पानी दे।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न -

1. उन लोगों के दो नाम थे-इंदर सेना या मेढक-मंडली। बिलकुल एक-दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्नस्वरूप शरीर, उनकी उछल-कूद, उनके शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ काँदो से चिढ़ते थे, वे उन्हें कहते थे मेढ़ क-मंडली। उनकी अगवानी गालियों से होती थी। वे होते थे दस-बारह बरस से सोलह-अठारह बरस के लड़के, साँवला नंगा बदन सिर्फ एक जाँधिया या कभी-कभी सिर्फ़ लैंगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था, "बोल गंगा मैया की जय।" जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे, बारजे से झाँकने लगती थीं और यह विचित्र नंग-धडंग टोली उछलती-कूदती समवेत पुकार लगाती थी

पाना का आशा पर जस सारा जावन आकर टिक गया हा। बस एक बात मर समझ म नहा आता था कि जब चारा आर पाना का इतना कमा ह ता लाग घर में इतनी कठिनाई से इकट्ठा करके रखा हुआ पानी बाल्टी भर-भरकर इन पर क्यों फेंकते हैं। कैसी निर्मम बरबादी है पानी की। देश की कितनी क्षति होती है इस तरह के अंधविश्वासों से। कौन कहता है इन्हें इंद्र की सेना**?** अगर इंद्र महाराज से ये पानी दिलवा सकते हैं तो खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते**?** क्यों मुहल्ले भर का पानी नष्ट करवाते घूमते हैं**?** नहीं यह सब पाखंड है। अंधविश्वास है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए और गुलाम बन गए।

1.काले मेघा पानी दे पाठ साहित्य की किस विधा की रचना है ?

क. एकांकी ख. उपन्यास

ग. निबंध घ. संस्मरण

उत्तर- घ. संस्मरण

2.अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों की टोली से चिढ़ने वाले लोग उन्हें क्या कहते थे ?

क. मेंढक मण्डली ख. शरारती मण्डली

ग. शेर मण्डली घ. कुत्ता मण्डली

उत्तर- क. मेंढक मंडली

3. किशोर अपने आप को इन्द्रसेना क्यों कहते हैं ?

क. वर्षा के लिए इंद्र को प्रसन्न करने के लिए ख. पवन देव को प्रसन्न करने के लिए

ग. अग्नि देव को प्रसन्न करने के लिए घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- क.वर्षा के लिए इंद्र को प्रसन्न करने के लिए

4.काले मेघा पानी दे के लेखक को कुमार सुधार सभा का कौन सा पद दिया गया ?

क. महामंत्री ख. उप मंत्री

ग. मंत्री घ. अध्यक्ष

उत्तर- ख. उपमंत्री

5.लेखक ने पानी की निर्मम बर्बादी किसे कहा है?

क. बर्तन धोना ख. स्नान

ग. फसल में देना घ. इंदर सेना पर डालना

उत्तर- घ.इंदर सेना पर डालना

2. लेकिन इस बार मैंने साफ़ इन्कार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भरकर पानी इस गंदी मेढक-मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भरकर पानी ले गईं- उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू-मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोलीं, 'देख भइया, रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं, "तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अध्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

1..किन लोगों ने त्याग और दान की महिमा का गुणगान किया है ?

क. ऋषि मुनियों ने ख. पंडितों ने

ग. राजाओं ने घ. कृषकों ने

उत्तर- क. ऋषि मुनियों ने

2..जीजी लेखक के हाथों पूजा अनुष्ठान क्यों कराती थी ?

क. लेखक के कल्याण के लिए ख. अपने कल्याण के लिए

ग. सब के कल्याण के लिए घ. उपरोक्त सभी

उत्तर- क. लेखक के कल्याण के लिए

3.जो चीज़ मनुष्य पाना चाहता है , उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे - यह कथन किसका है ?

क. लेखक का ख. माँ का

ग. जीजी का घ. पिता का

उत्तर- ग..जीजी का

4.पाठ में लेखक किसका प्रतीक है?

क. लोक विश्वास का ख. राजनैतिक विचारधारा का

ग. धार्मिक नीतियां घ. वैज्ञानिक सोच

उत्तर- घ. वैज्ञानिक सोच

5. काले मेघा पानी दे पाठ में किसके द्वंद्व का चित्रण है?

क. लोक विश्वास और विज्ञान　　ख. नीति और अनीति

ग. अच्छाई और बुराई　　घ. धर्म और राजनीति

उत्तर- क. लोक विश्वास और विज्ञान

6. कथन- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

कारण- नेकी कर दरिया में डाल

क. कारण कथन की सही व्याख्या है|　　ख.कारण और कथन में एकरूपता नहीं है|

ग.कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है|　　घ.कथन और कारण दोनों गलत है|

उत्तर- क. कारण कथन की सही व्याख्या है|

7.कथन- मेढक मंडली पर पानी फेंकना अंधविश्वास का प्रतीक है|

कारण- वर्षा का होना न होना जलचक्र पर निर्भर है|

क. कथन, कारण दोनों गलत है|　　ख. कथन, कारण दोनों सही है|

ग. केवल कथन सही है|　　घ. केवल कारण सही है|

उत्तर- ख. कथन, कारण दोनों सही है|

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1..गुड़धानी से क्या अभिप्राय है ?

क. बेसन का लड्डू　　ख. तिल का लड्डू

ग. गुड़ और चने से बना लड्डू　　घ. बूंदी का लड्डू

उत्तर- ग..गुड़ और चने से बना लड्डू

2. काले मेघा पानी दे संस्मरण लेखक के जीवन की किस अवस्था से सम्बंधित है ?

क. किशोरावस्था　　ख. प्रौढ़ावस्था

ग. बुढ़ापा　　घ. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- क.किशोरावस्था

3. हर छठ पर लेखक छोटी रंगीन कुल्हियों में क्या भरता था ?

क. पंजीरी　　ख. मिठाई

ग. भूजा　　घ. लिट्टी

उत्तर-ग. भूजा

4. भारतवासी अंग्रेजों से किस मान्यता के कारण पिछड़ गए ?

क. ध्यान　　ख. अंधविश्वास

ग. भक्ति　　घ. दर्शन

उत्तर- ख. अंधविश्वास

5. इंदर सेना द्वारा पानी किन-किन महीनों में मांगा जा रहा था?

क. जेठ-आषाढ़　　ख. अगहन-पूस

ग. सावन-भादों　　घ. माघ-फागुन

उत्तर- क.जेठ-आषाढ़

6. दान के लिए क्या आवश्यक है?

क. धन　　ख. अनाज

ग. वस्त्र　　घ. त्याग

उत्तर- घ. त्याग

7. वर्षा के बादलों के स्वामी कौन है?

क. अग्नि　　ख. पवन

ग. जल　　घ. इंद्र

उत्तर- घ. इंद्र

8. इन्दरसेना किसकी जय बोलती थी?

क. गणेश जी　　ख. गंगा मैया

ग. यमुना जी　　घ. सरस्वती जी

उत्तर- ख. गंगा मैया

9. "काले मेघा पानी दे" पाठ के रचयिता है-

क. धर्मवीर भारती　　ख. जयशंकर

ग. रामधारी सिंह दिनकर　　घ.मुंशी प्रेमचंद

उत्तर- क. धर्मवीर भारती

10. जहाँ जुताई होनी थी , वहां खेतों की मिट्टी सूखकर क्या हो जाती है ?

क. रेत　　ख. पानी

ग. पत्थर　　घ.राख

उत्तर- ग.पत्थर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.इन्दरसेना के कार्यों को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर- गंगामैया की जय बोलना।
कीचड़ में लथपथ होकर प्यासे घरों और सूखे खेतों के लिए मेघो को पुकारना।
घर-घर जाकर पानी मांगना आदि।

2. लेखक का जीजी से वैचारिक भिन्नता की क्या वजह थी?

उत्तर- समाज मे प्रचलित रीति रिवाज़,
अंधविश्वास,
तीज त्योहार और पूजा अनुष्ठान के कारण आदि।

3." मांगे हर क्षेत्र में बढ़ रही हैं, परंतु त्याग का नामो निशान नही है" लेखक का इस पंक्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- लोगो का कर्तव्यों की अपेक्षा अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होना,
देश और समाज के प्रति निर्धारित ज़िम्मेदारी का ख्याल न होना

4. काले मेघा पानी दे ,संस्मरण के लेखक ने लोक – प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकरण उनके निराकरण पर बल दिया है। – इस कथन की विवेचना कीजिए ?

उत्तर –लेखक ने इस संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहा है। पाठ में इंदर सेना के कार्य को वह पाखंड मानता है। आम व्यक्ति इंदर सेना के कार्य को अपने-अपने तकों से सही मानता है, परंतु लेखक इन्हें गलत बताता है। इंदर सेना पर पानी फेंकना पानी की क्षति है जबकि गरमी के मौसम में पानी की भारी कमी होती है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण देश का बौद्धिक विकास अवरुद्ध होता है। हालाँकि एक बार इन्हीं अंधविश्वास की वजह से देश को एक बार गुलामी का दंश भी झेलना पड़ा।

5.काले मेघा पानी दे' पाठ की 'इंदर सेना' युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती हैं-तर्क सहित उतार दीजिए।

उत्तर –इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। इंदर सेना सामूहिक प्रयास से इंद्र देवता को प्रसन्न करके वर्षा कराने के लिए कोशिश करती है। यदि युवा वर्ग के लोग समाज की बुराइयों, कमियों के खिलाफ़ सामूहिक प्रयास करें तो देश का स्वरूप अलग ही होगा। वे शोषण को समाप्त कर सकते हैं। दहेज का विरोध करना, आरक्षण का विरोध करना, नशाखोरी के खिलाफ़ आवाज उठाना-आदि कार्य सामूहिक प्रयासों से ही हो सकते हैं।

6.जीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर –लेखक ने जीजी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं

(क) स्नेहशील-जीजी लेखक को अपने बच्चों से भी अधिक प्यार करती थीं। वे सारे अनुष्ठान, कर्मकांड लेखक से करवाती थीं ताकि उसे पुण्य मिलें।

(ख) आस्थावती-जीजी आस्थावती नारी थीं। वे परंपराओं, विधियों, अनुष्ठानों में विश्वास रखती थीं तथा श्रद्धा से उन्हें पूरा करती थीं।

(ग) तर्कशीला-जीजी अपनी बात के समर्थन में तर्क देती थीं। उनके तकों के सामने आम व्यक्ति पस्त हो जाता था। इंदर सेना पर पानी फेंकने के पक्ष में जो तर्क वे देती हैं, उनका कोई सानी नहीं। लेखक भी उनके समक्ष स्वयं को कमजोर मानता है।

7. काले मेघा पानी दे' सस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता हैं-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में वर्षा न होना, सूखा पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा न होने जैसी समस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें सत्य से परिचित कराता है। इस सत्य पर लोक-प्रचलित विश्वास और सहज प्रेम की जीत हुई है क्योंकि लोग इस समस्या का हल अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने में जुट जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। लोगों में प्रचलित विश्वास इतना पुष्ट है कि वे विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते।

'पहलवान की ढोलक' (फणीश्वर नाथ रेणु)

सारांश- सर्दी का मौसम था। गाँव में मलेरिया व हैज़े का प्रकोप था पहलवान की ढोलक संध्या से प्रातःकाल तक एक ही गति से बजती रहती थी। यह आवाज मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी।
गाँव में लुट्टन पहलवान प्रसिद्ध था। नौ वर्ष की आयु में वह अनाथ हो गया था। उसकी शादी हो चुकी थी। उसकी विधवा सास ने उसे पाला। गाँव के लोग उसकी सास को तंग किया करते थे। लुट्टन इनसे बदला लेना चाहता था। कसरत के कारण वह किशोरावस्था में ही पहलवान बन गया।

एक बार लुट्टन श्यामनगर मेला में 'दंगल' देखने गया। 'शेर के बच्चे' का असली नाम था-चाँद सिंह। वह पहलवान बादल सिंह का शिष्य था। तीन दिन में उसने पंजाबी व पठान पहलवानों को हरा दिया था। वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था।

श्यामनगर के दंगल व शिकार-प्रिय वृद्ध राजा साहब उसे दरबार में रखने की सोच रहे थे कि लुट्टन ने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी। दर्शक उसे पागल समझते थे। चाँद सिंह बाज की तरह लुट्टन पर टूट पड़ा। परंतु वह सफ़ाई से आक्रमण को सँभालकर उठ खड़ा हुआ। राजा ने लुट्टन को समझाया और कुश्ती से हटने को कहा, किंतु लुट्टन ने लड़ने की इजाजत माँगी। मैनेजर से लेकर सिपाहियों तक ने उसे समझाया] परंतु लुट्टन ने कहा कि इजाजत न मिली तो पत्थर पर माथा पटककर मर जाएगा।

भीड़ में अधीरता थी। पंजाबी पहलवान लुट्टन पर गालियों की बौछार कर रहे थे। दर्शक उसे लड़ने की अनुमति देना चाहते थे। विवश होकर राजा साहब ने इजाजत दे दी। बाजे बजने लगे। लुट्टन का ढोल भी बजने लगा था। चाँद ने उसे कसकर दबा लिया था। वह उसे चित्त करने की कोशिश में था। लुट्टन के समर्थन में सिर्फ़ ढोल की आवाज थी। जबकि चाँद के पक्ष में राजमत व बहुमत था। लुट्टन की आँखें बाहर निकल रही थीं। तभी ढोल की पतली आवाज सुनाई दी

'धाक धिना,तिरकटतिना धाक धिना] तिरकट-तिना। 'इसका अर्थ था-दाँव काटो। बाहर हो जाओ। लुट्टन ने दाँव काटी तथा लपक कर चाँद की गर्दन पकड़ ली। ढोल ने आवाज दी- चटाक् चट्-धा। अर्थात उठाकर पटक दे। लुट्टन ने दाँव व जोर लगाकर चाँद को जमीन पर दे मारा। ढोलक ने 'धिना धिना धिक-धिना। 'कहा और लुट्टन ने चाँद सिंह को चारों खाने चित्त कर दिया। ढोलक ने 'वाह बहादुर!' की ध्वनि की तथा जनता ने माँ दुर्गा की महावीर जी की। राजा की जय-जयकार की।

लुट्टन ने सबसे पहले ढोलों को प्रणाम किया और फिर दौड़कर राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब ने उसे दरबार में रख लिया। पंजाबी पहलवानों की जमायत चाँद सिंह की आँखें पोंछ रही थी। राजा साहब ने लुट्टन को पुरस्कृत न करके अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया। राजपंडित व मैनेजर ने लुट्टन का विरोध किया कि वह क्षत्रिय नहीं है। राजा साहब ने उनकी एक न सुनी। कुछ ही दिन में लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने सभी नामी पहलवानों को हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवान को भी हरा दिया। उसके बाद वह दरबार का दर्शनीय जीव बन गया।

लुट्टन सिंह मेलों में घुटने तक लंबा चोंगा पहने अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह झूमता चलता। हलवाई के आग्रह पर दो सेर रसगुल्ला खाता तथा मुँह में आठ-दस पान एक साथ ठूंस लेता। वह बच्चों जैसे शौक रखता था। दंगल में उससे कोई लड़ने की हिम्मत नहीं करता। कोई करता तो उसे राजा साहब इजाजत नहीं देते थे। इस तरह पंद्रह वर्ष बीत गए। उसके दो पुत्र हुए। उसकी सास पहले ही मर चुकी थी और पत्नी भी दो पहलवान पैदा करके स्वर्ग सिधार गई। दोनों लड़के पहलवान थे। दोनों का भरण-पोषण दरबार से हो रहा था। पहलवान हर रोज़ सुबह उनसे कसरत करवाता। दिन में उन्हें सांसारिक ज्ञान भी देता। वह बताता कि उसका गुरु ढोल है और कोई नहीं।

अचानक राजा साहब स्वर्ग सिधार गए। नए राजकुमार ने विलायत से आकर राजकाज अपने हाथ में ले लिया। उसने पहलवानों की छुट्टी कर दी। लुट्टन ढोलक कंधे से लटकाकर अपने पुत्रों के साथ गाँव लौट आया। गाँव वालों ने उसकी झोपड़ी बना दी तथा वह गाँव के नौजवानों व चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। खाने पीने का खर्च गाँव वालों की तरफ से बँधा हुआ था। गरीबी के कारण धीरे-धीरे किसानों व मजदूरों के बच्चे स्कूल में आने बंद हो गए। अब वह अपने लड़कों को ही ढोल बजाकर कुश्ती सिखाता। लड़के दिनभर मजदूरी करके कमाकर लाते थे।

गाँव पर अचानक संकट आ गया। सूखे के कारण अन्न की कमी हो गई तथा फिर मलेरिया व हैजा फैल गया। घर के घर खाली हो गए प्रतिदिन दो-तीन लाशें उठने लगीं। लोग एक-दूसरे को ढाँढस देते तथा शाम होते ही घरों में घुस जाते। लोग चुप रहने लगे। ऐसे समय में केवल पहलवान की ढोलक ही बजती थी जो गाँव के अर्धमृत औषधि-उपचार -पथ्य-विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति भरती थी। एक दिन पहलवान के दोनों बेटे भी चल बसे। पहलवान सारी रात

ढोल पीटता रहा। दोनों पेट के बल पड़े हुए थे। उसने लंबी सांस लेकर कहा- दोनों बहादुर गिर पड़े। उस दिन उसने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जांघिया पहनी और सारे शरीर पर मिट्टी मलकर थोड़ी कसरत की फिर दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया। इस घटना के बाद गाँव वालों की हिम्मत टूट गई।

रात में फिर पहलवान की ढोलक बजने लगी तो लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। चार-पाँच दिनों के बाद एक रात ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। सुबह उसके शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश 'चित' पड़ी है। शिष्यों ने बताया कि उसके गुरु ने कहा था कि उसके शरीर को चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह कभी 'चित' नहीं हुआ और चिता सुलगाने के समय ढोल ज़रूर बजा देना।

पहलवान की ढोलक

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्रश्न 1.

जाड़े का दिन। अमावस्या की रात-ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयार्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बॉस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य अँधेरा और निस्तब्धता

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

1 अमावस्या की रात के लिए ठंडी और काली विशेषण का प्रयोग किया गया है-

क) रात की विशेषता बताने के लिए

ख) बीमारी की आपदा की भयावहता को बढ़ाने के लिए

ग) जाड़े के दिनों की ठंडक बढ़ाने के लिए घ) अमावस्या की रात्रि के चित्रण के लिए

उत्तर - (ख) बीमारी की आपदा की भयावहता को बढ़ाने के लिए

2 'पुरानी और उजड़ी बा ॅस- फूस की झोपड़ियों' से गांव की किस स्थिति का पता चलता हैं -

क) प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता का

ख) जर्जर आर्थिक स्थिति का

ग) ग्राम वासियों की अकर्मण्यता का

घ)गांव के सच्चे एवं वास्तविक स्वरूप का

उत्तर (ख)जर्जर आर्थिक स्थिति का

3 अंधेरी रात चुपचाप आंसू बहा रही थी इस वाक्य में क्या है-

क) प्रकृति का मानवीकरण

ख) प्रकृति की सुंदरता

ग) गांव का चित्रण

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) प्रकृति का मानवीकरण

4 अंधकार और सन्नाटा इनमें से कहा छाया था-

क) वातावरण में

ख) घास फूस की झोपड़ी में

ग) ग्राम वासियो के दिला म

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) घास फूस की झोपड़ी में

5 आकाश में क्या चमक रहा था-

क) तारें

ख) चंद्रमा

ग) बिजली

घ) इनमें से कोई नही

उत्तर (क) तारें

2 रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार पर चुनौती देती रहती थी पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो किंतु गांव के अद्धमृत, औषधि- उपचार -पथ्य -विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भर्ती थी। बूढ़े - बच्चे- जवानों की शक्ति हीन आंखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी।अवश्य ही ढोलक की आवाज में ना तो बुखार हटाने का कोई गुण था और ना ही महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों की आंख मूदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी ,मृत्यु से भी डरते नहीं थे

1 ढोलक की आवाज महामारी से त्रस्त गांव पर क्या असर डालती थी ?

क) उन्हें खुशी प्रदान करती थी

ख) उनका कष्ट दूर कर देती थी

ग) उनके निराश जीवन में नई आशा का संचार कर देती थी

घ) उनके लिए दवा का काम करती थी

उत्तर (ग)उनके निराश जीवन में नई आशा का संचार कर देती थी

2 दंगल के दृश्य की उपस्थिति ग्राम वासियों के लिए क्या करती थी ?

क) नया उत्साह भरने का काम

ख) ।मृत्यु के भय से मुक्ति

ग) मरने की पीड़ा से छुटकारा

घ) तीनों सही

उत्तर (क) नया उत्साह भरने का काम

3 ढोलक की आवाज में कौन सा गुण नहीं था?

क) रोगियों का बुखार दूर करने का

ख) महामारी का सर्वनाश रोकने की शक्ति का

ग) निराश मन में आशा जगाने का

घ) क और ख दोनों

उत्तर (घ) क और ख दोनों

4 महामारी के कारण ग्राम वासियों की आंखों पर क्या असर हुआ ?

क) व शात हा चुका था

ख) वह शक्ति हीन हो चुकी थी

ग) उनमें आशा ज्योति बुझ चुकी थी

घ) वह किसी चमत्कार की राह देख रही थी

उत्तर (ख) वह शक्ति हिना हो चुकी थी

5 लोटन किस ख्याल से ढोल बजाता रहा होगा ?

क) लोगों को बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देने का ख्याल से

ख) लोगों को अपनी पहलवानी के दिनों की याद दिलाने के ख्याल से

ग) पहलवान चांद सिंह को हराने की यादें ताजा करने के ख्याल से

घ) नए राजकुमार की नई व्यवस्था को चुनौती देने के ख्याल से

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. **'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि मृत गांव में किसकी आवाज से संजीवनी शक्ति का प्रवाह हो जाता था**

(क) पहलवान की ढोलक की आवाज से

(ख) पहलवान की आवाज से

(ग) रात्रि कालीन पशु-पक्षियों की आवाज से

(घ)दंगल की आवाज से

उत्तर:- (क) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर मृत गांव में पहलवान की ढोलक की आवाज से संजीवनी शक्ति का प्रवाह हो जाता था।

2. **लुट्टन सिंह पहलवान की पहलवानी की सीमा कहां तक थी**

(क) जिले की सीमा तक

(ख) राज्य की सीमा तक

(ग) पहलवान के घर तक

(घ) पूरे देश की सीमा तक

उत्तर:- (क) लुट्टन सिंह पहलवान की पहलवानी की सीमा जिले की सीमा तक ही थी।

3. **लुट्टन सिंह ने चांद सिंह अर्थात शेर के बच्चे को कुश्ती के लिए चुनौती क्यों दी**

क)क्योंकि वह बचपन से अनाथ था

ख) बचपन से सास मां के पास रहता था अतः वह उनके लिए कुछ करना चाहता था

ग) गांव वाले उसे किसी-न-किसी बात पर परेशान करते थे

घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:- (घ) लुट्टन सिंह ने चांद सिंह अर्थात शेर के बच्चे को कुश्ती के लिए चुनौती दी, क्योंकि लुट्टन सिंह बचपन से अनाथ था। वह अपनी सास मां के साथ रहता था इसलिए वह उनके लिए कुछ करना चाहता था तथा गांव वाले उसे किसी-न-किसी बात पर परेशान करते थे इसलिए उपरोक्त सभी।

4 पहलवान की ढोलक पाठ में लुट्टन सिंह मेले में चांद सिंह से लड़ने की जिद क्यों कर रहा था

क) अपनी पहलवानी दिखाने के लिए

ख) जवानी की मस्ती के कारण

ग)चांद सिंह को हराने के लिए

घ) अहंकार के कारण

उत्तर:-(ख) 'पहलवान की ढोलक' पाठ में लुट्टन सिंह मेले में चांद सिंह से लड़ने की जिद जवानी की मस्ती के कारण कर रहा था।

4. **'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि 'शेर का बच्चा' किसका नाम था**

क) चांद सिंह का

ख) बादल सिंह का

ग) पहलवान का

घ) बहादुर सिंह का

उत्तर:-(क) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर शेर का बच्चा चांद सिंह को कहा गया है।

5. चांद सिंह के गुरु का क्या नाम था

क) हवा सिंह

ख)बादल सिंह

ग) श्याम सिंह

घ) अभिजीत सिंह

उत्तर:- (ख) चांद सिंह के गुरु का नाम बादल सिंह था।

6. 'पहलवान की ढोलक' पाठ में चांद सिंह को शेर का बच्चा क्यों कहा गया है

क)पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के सभी पट्ठो को दंगल में पछाड़ने के कारण

ख) सुंदर जवान, अंग प्रत्यंग के कारण

ग) अपने गुरु से लड़ने के कारण

घ) पहलवान से हारने के कारण

उत्तर:- (क) 'पहलवान की ढोलक' पाठ में चांद सिंह को शेर का बच्चा पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के सभी पट्ठो को दंगल में पछाड़ने के कारण कहा गया है।

7. 'शेर के बच्चे' के टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए चांद सिंह बीच-बीच में क्या कार्य करता था है

क) दंगल लड़ता

ख)शेर की तरह दहाड़ता था

ग) क और ख दोनों

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:- (ख) 'शेर के बच्चे' के टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए चांद सिंह बीच-बीच में शेर की तरह दहाड़ता था।

9 श्यामनगर के राजा चांद सिंह को दरबार में रखने की बात क्यों कर रहे थे

क) दंगल में उसकी बहादुरी के कारण

ख) उसके नाम के कारण

ग) उससे मित्रता के संबंध के कारण

घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:- (क) श्यामनगर के राजा चांद सिंह को दंगल में उसकी बहादुरी के कारण दरबार में रखने की बात कर रहे थे।

10 राजा साहब द्वारा लुट्टन सिंह को दस रुपए का नोट देकर मेला देखकर घर जाने को कहने के पीछे क्या कारण था

क कुश्ती लड़ने के लिए तैयार करना

ख) कुश्ती लड़ने से मना करना

ग) कुश्ती की प्रतियोगिता हार जाना

घ) कुश्ती की प्रतियोगिता जीत जाना

उत्तर:- (ख) राजा साहब द्वारा लुट्टन सिंह को दस रुपए का नोट देकर मेला देखकर घर जाने को कहने के पीछे कुश्ती लड़ने से मना करना था।

11.राजा साहब ने लुट्टन सिंह को चाँद सिंह से लड़ने की आज्ञा किन परिस्थितियों में दी थी

क)विवश होकर

ख) खुशी से

ग)बलपूर्वक

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:- (क) राजा साहब ने विवश होकर लुट्टन सिंह को चाँद सिंह से लड़ने की आज्ञा दी] क्योंकि वह बार-बार चांद सिंह से लड़ने की जिद कर रहा था।

12.दंगल के अंत में राजा साहब ने लुट्टन पहलवान को गले क्यों लगाया

क) मिट्टी की लाज रखने के कारण

ख) विनम्रता के कारण

ग) दंगल हारने के कारण

घ) राजा साहब की बात न मानने के कारण

उत्तर:- (क) दंगल के अंत में राजा साहब ने लुट्टन पहलवान को गले मिट्टी की लाज रखने के कारण लगाया था।

13.पहलवान लुट्टन सिंह दंगल जीतने के बाद राजदरबार का दर्शनीय 'जीव रहा' पंक्ति से आशय है

क) राजदरबार में सब उसका सम्मान करने लगे

ख) राजदरबार में सब उसको पहलवानी के लिए प्रेरणा स्रोत मानने लगे

ग)दरबार में लोग उससे पहलवानी सीखने लगे

घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:- (घ) 'पहलवान सिंह दंगल जीतने के बाद राजदरबार का दर्शनीय जीव रहा' पंक्ति से आशय है कि राजदरबार में सब उसका सम्मान करने लगे, सब उसको पहलवानी के लिए प्रेरणा स्रोत मानने लगे तथा दरबार में लोग उससे पहलवानी सीखने लगे।

14 लुट्टन सिंह दंगल में क्यों नहीं लड़ पाता था

क) कमजोर पहलवानी के कारण

ख) हारने के डर के कारण

ग) राजा साहब द्वारा आज्ञा न देने के कारण

घ) प्रतिद्वंदी न मिलने के कारण

उत्तर:- (ग) लुट्टन सिंह दंगल में राजा साहब द्वारा आज्ञा न देने के कारण नहीं लड़ पाता था।

15.'पहलवान की ढोलक' पाठ के अनुसार लुट्टन पहलवान ने राजदरबार में कितने वर्ष व्यतीत किए

क) चौदह वर्ष

ख) तेरह वर्ष

ग) सोलह वर्ष

घ) पंद्रह वर्ष

उत्तर:- (घ) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के अनुसार लुट्टन पहलवान ने राजदरबार में पंद्रह वर्ष व्यतीत किए।

16.पहलवान के पुत्रों को कसरत व सांसारिक ज्ञान की शिक्षा कौन देता था

क) स्वयं पहलवान (ख)चाँद सिंह

ग)राजदरबारी (घ) बादल सिंह

उत्तर:- (क) पहलवान के पुत्रों को कसरत तथा सांसारिक ज्ञान की शिक्षा स्वयं पहलवान ही देता था।

17.लुट्टन पहलवान का गुरु कौन था

क) राजा (ख) पहलवान का पुत्र

ग)पहलवान काढोल(घ)पहलवान स्वयं

उत्तर:- (ग) लुट्टन पहलवान का गुरु पहलवान का ढोल था।

18.'उन्हीं परिवर्तनों की चपेटाघात में पड़ा पहलवान भी' पंक्ति के अनुसार पहलवान किन परिवर्तनों की चपेट में पड़ा

क) वृद्ध राजा स्वर्ग सिधार गए

ख)नए राजकुमार ने विलायत से आते ही राज्य को अपने हाथ में ले लिया

ग) दंगल का स्थान घोड़े की रेस ने ले लिया

घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:- (घ) 'उन्हीं परिवर्तनों की चपेटाघात में पड़ा पहलवान भी' पंक्ति के अनुसार पहलवान के जीवन में अनेक परिवर्तन हुए] जैसे-वृद्ध राजा स्वर्ग सिधार गए] राजा के उत्तराधिकारी ने विलायत से आते ही राज्य को अपने हाथ में ले लिया तथा दंगल का स्थान घोड़े की रेस ने ले लिया। इन सभी परिवर्तनों के कारण राजकुमार ने राजा साहब के समय की शिथिलता को दूर करते हुए पहलवान व उसके दोनों पुत्रों को दरबार से निकाल दिया। उपरोक्त सभी

19.'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि गाँव के लोग किस बीमारी से पीड़ित हो गए थे

क) मलेरिया (ख) हैजा

ग)क और ख दोनो (घ) प्लेग

उत्तर:- (ग) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर गाँव के लोग मलेरिया तथा हैजे की बीमारी से पीड़ित हो गए थे।

20.पहलवान के दोनों पुत्रों ने अपनी मृत्यु के दिन अपने पिता से किस ताल को बजाने की बात की थी

क)उठा पटक दो वाला ताल

ख) मत डरना मत डरना वाला ताल

ग) आजा भिड़ वाला ताल

घ)दाँव काटो वाला ताल

उत्तर:- (क) पहलवान के दोनों पुत्रों ने अपनी मृत्यु के दिन अपने पिता से उठा पटक दो वाला ताल बजाने की बात की थी।

21.मरने के पूर्व लुट्टन सिंह शिष्यों से क्या कहा करते थे

क)मेरे मरने पर मुझे चित नहीं पेट के बल सुलाना

ख) मेरे लिए आँसू मत बहाना

ग)मेरे लिए सारे क्रिया क्रम करना

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर:- (क) मरने के पूर्व लुट्टन सिंह शिष्यों से कहा करते थे कि मेरे मरने पर चिता पर मुझे चित नहीं पेट के बल सुलाना।

वर्णनात्मक प्रश्न

1. रात्रि की मौन चुप्पी का भेदन करने में कौन सक्षम था तथा कौन सक्षम नहीं था\ विवरण दीजिए।

उत्तर अमावस्या की काली रात] जहाँ प्रकाश के नाम पर केवल तारों की रोशनी ही थी, में सियारों का रोना व उल्लू की डरावनी आवाज़ें ही रात्रि में छाई हुई मौन चुप्पी का भेदन कर सकती थीं। बच्चों के 'माँ-माँ' करके रोने तथा 'हरे राम, हे भगवान' की आवाज़े तो जैसे मुँह से निकल कर मुँह में ही समाप्त हो जाती थीं अर्थात् इनसे रात्रि के शांत वातावरण में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी तथा रात्रि की भीषणताओं उसकी मौन और चुप्पी को एक ही आवाज ललकारती वो थी पहलवान की ढोलक की आवाज।

2. लुट्टन सिंह का गाँव किन बीमारियों के भय से थर-थर काँप रहा था\ वर्णन कीजिए।

उत्तर लुट्टन सिंह का गाँव सर्दी में फैले हुए हैजे और मलेरिया की बीमारियों से ग्रस्त होकर शिशु की तरह थर&थर काँप रहा था। किसी भी गाँववासी की आह और सिसकियों के अतिरिक्त अन्य कोई आवाज सुनने में नहीं आ रही थी। पूरे गाँव में मौत का सन्नाटा फैला हुआ था। केवल बच्चे कभी-कभार निर्बल स्वर से 'माँ-माँ' चीखकर रोने लगते थे। लोग अपनी पुरानी और उजड़ी बॉस-फूस की झोपड़ियों में बलपूर्वक अपनी आहों और सिसकियों को रोके हुए भगवान के नाम का स्मरण कर रहे थे।

3. बीमारियों के भय से चीत्कार करता हुआ गाँव और अधिक भयावह रूप किन परिस्थितियों में ग्रहण कर लेता था

उत्तर गाँव में फैली हुई बीमारियों के कारण प्रत्येक घर में मौत नाच रही थी। गाँव सुना हो चला था। घर के घर खाली पड गए थे। रोज दो तीन लाशें उठती थीं। ऐसे में दिनभर की राख की ठंडी मिट्टी पर बैठे हुए कुत्ते शाम होते ही किसी आशंका के चलते एकत्रित होकर रोने लगते थे। तब यह स्थिति अत्यंत भयावह रूप लेकर डराने लगती थी] जो चीत्कार से भी अधिक भयंकर मालूम होती थी।

4. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था

उत्तर गाँव में फैली बीमारी ने अब महामारी का रूप ले लिया था। इसने इस तरह गाँव में हाहाकार मचा दिया था कि सभी के चेहरे पर दुःख और शोक के अतिरिक्त अन्य कोई भी चिह्न कभी-कभार ही दिखाई दे रहा था। सूर्य निकलने के साथ ही लोग कांपते कराहते घरों से निकलकर अपने आत्मीयजनों तथा मित्रों को समय का बलवान होना समझाकर ढाँढ+स बंधाते थे और कहते थे कि समय परिवर्तित होता रहता है, बुरा समय भी जल्दी समाप्त हो जाएगा। लोग सूर्य के अस्त होने के साथ ही अपनी-अपनी झोपड़ियों में चले जाते और उनकी चूँ तक की आवाज़ भी नहीं आती। उनकी बोलने की शक्ति भी बिलकुल समाप्त हो जाती।केवल बीमार गाँववासियों के रोने कराहने और बच्चों की 'माँ-माँ' करने की आवाज़े ही आती थी।

5. आशय स्पष्ट करें

"आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता, तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर महामारी के प्रकोप से रात्रि भयानक व डरावनी दिखाई देती थी। गाँव में निराशा का अंधकार था। गाँववासी जीवन की आशा छोड़ चुके थे। प्रकाश अर्थात् आशा की किरण न तो दिखाई देती थी और न कोई सहायता करने वाला था। लेखक ने इसके माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति के मानवीकरण का सहारा लिया हैझ जैसे यदि कोई व्यक्ति इस भयंकर बीमारी से लड़ने की कोशिश भी करता परंतु असफल हो जाता था] तो सभी उसकी असफलता को देखकर हँसते थे। यहाँ मनुष्यों के स्थान पर तारों का प्रयोग तार्किक ढंग से किया गया है।

6. रात्रि के समय गाँव के वातावरण का वर्णन कीजिए, जिसका विवरण 'पहलवान की ढोलक' कहानी में दिया गया है।

उत्तर अमावस्या की काली ठंडी रात में हैजे और मलेरिया से ग्रस्त गाँव एक भय से डरे हुए शिशु की भाँति थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बॉस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार व सन्नाटे का साम्राज्य फैला था। पृथ्वी पर कही प्रकाश का नाम न था। रात को सियारों का रोना और उल्लुओं की डरावनी आवाज़े ही सन्नाटे को चीरती थीं, अन्यथा बीमारों के रोने और कराहने की आवाज़ें तो उनके मुंह में ही दबकर रह जाती और सुनाई ही नहीं देतीं। संध्या काल में किसी आने वाली आशंका की सूचना देने के लिए राख पर बैठे कुत्ते रोने लगते थे।

7. लुट्टन पहलवान के परिवार की स्थिति परिस्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर लुट्टन पहलवान नौ वर्ष की आयु में ही अनाथ हो गया था। उसकी परिस्थिति और अधिक बुरी होती यदि उसका विवाह अल्पायु में ही न हो गया होता] क्योंकि विवाह हो जाने के कारण ही माता पिता की मृत्यु के पश्चात् उसका पालन पोषण उसकी सास ने किया था। वह बचपन से ही कसरत करने लगा था। अपनी सास के यहाँ वह गाय को चराता था। गायों का ताज़ा दूध पीकर उसका शरीर सुंदर व सुडौल हो गया] जो गाँववासी पहले उसकी विधवा सास को परेशान करते थेवे सभी अब उससे डरने लगे थे।

8. पहलवान की ढोलक की उठती-गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है\ उत्तर दीजिए।

उत्तर पहलवान की ढोलक ग्रामीणों को एक आंतरिक शक्ति देती है। पहलवान के दोनों पुत्र अन्य ग्रामीणों की भाँति गाँव में फैले संक्रामक रोग की चपेट में आकर भगवान को प्यारे हो चुके थे, परंतु फिर भी वह ढोलक बजाता रहता है। उसका मनोबल नहीं टूटता, क्योंकि वह अपनी ढोलक के माध्यम से समूचे गाँव वालों को जीने की शक्ति देता है। इस प्रकार पहलवान संक्रामक रोग से जूझते ग्रामीणों के लिए एक आदर्श बन गया। ग्रामीणों को उससे यह संदेश मिला कि हँसते-हँसते भी मृत्यु को गले लगाया जा सकता है।

9. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है? अथवा लुट्टन पहलवान ने ढोल को अपना गुरु क्यों कहा?

उत्तर लुट्टन पहलवान ने बचपन से ही कसरत करनी शुरू कर दी थी। उसने किसी भी गुरु से पहलवानी या कसरत की शिक्षा नहीं ली थी। अतः उसने किसी को भी अपना गुरु नहीं माना और न ही किसी से कुश्ती के दांव-पेंच सीखे थे। वह अपनी शक्ति और दाँव-पेंच की परीक्षा ढोलक की आवाज़ के आधार पर करता था। ढोल की आवाज़ उसके शरीर में उमंग व स्फूर्ति भर देती थी। वह अखाड़े में उतरने से पहले ढोल को प्रणाम करता था, क्योंकि उसने गुरु का स्थान ढोल को दे दिया था।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

01. कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वनि से युक्त शब्द और ढोल की आवाज़ आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर लुट्टन पहलवान कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ के स्वरों से प्रेरणा ग्रहण करता था।

जैसे— धाक-धिना, तिरकट तिना

चटाक-चट्-धा

धिना धिना, धिक-धिना

इसका अर्थ हुआ दाँव काटो, बाहर हो जा

उठा पटक दे

चित करो

इस प्रकार के शब्द व्यक्ति में उत्साह भर देते हैं तथा उसमें अप्रत्याशित रूप से कार्य करने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है।

02. लुट्टन के पक्ष में न तो राजमत था और न ही बहुमत, फिर भी उसे कुश्ती में विजय प्राप्त हुई। क्यों?

उत्तर लुट्टन के पक्ष में न तो राजमत था और न ही बहुमत, फिर भी वह विजयी इसलिए हुआ, क्योंकि एक ओर तो उसने अपना ध्यान अपनी सास के लिए कुछ करने की ओर केंद्रित किया तथा दूसरी ओर उसने सिर्फ और सिर्फ ढोल की ताल पर अपना ध्यान केंद्रित किया, क्योंकि ढोल की ताल से उसे कुश्ती के दाँव-पेंच आसानी से समझ आते थे और वह ढोल की ताल पर ही अपने दाँव लगाता था। ढोल की ताल से ही उसे ऊर्जा और मार्गदर्शन प्राप्त होता था। अतः इसी कारण वह विजयी हुआ।

03. दंगल में विजयी होने के पश्चात् लुट्टन सिंह की जीवन शैली में क्या परिवर्तन आ गया था?

उत्तर दंगल में विजयी होने के पश्चात् लुट्टन सिंह राज पहलवान हो गया तथा राज दरबार का दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह घुटने तक लंबा चोला पहने, मतवाले हाथी की तरह झूमता हुआ घूमता। दुकानदार उससे शरारत करते रहते थे। उसकी बुद्धि बच्चों जैसी थी। वह कभी सीटी बजाता, आँखों पर रंगीन चश्मा लगाता और खिलौने से खेलता हुआ वह राज दरबार में आता। राजा साहब उसका बहुत ध्यान रखते थे और अब किसी को भी उससे लड़ने की आज्ञा नहीं देते थे। इसके अतिरिक्त पौष्टिक भोजन और व्यायाम तथा राजा साहब की स्नेह दृष्टि ने उसकी प्रसिद्धि को और भी बढ़ा दिया था।

04. लुट्टन सिंह को राज पहलवान की उपाधि कैसे मिली?

उत्तर लुट्टन सिंह सुडौल शरीर वाला एक देहाती पहलवान था। उसने एक बार श्यामनगर के राजा की आज्ञा लेकर पंजाब के पहलवान चाँद सिंह को ढोलक की ताल का अनुसरण करते हुए चित कर दिया। चाँद सिंह ने अपने उम्र के सभी पट्टों को कुश्ती में पछाड़कर (हराकर) 'शेर' की उपाधि प्राप्ति की थी। अतः राजा साहब ने खुश होकर उसे अपने दरबार में रख लिया और राज पहलवान की उपाधि दे दी। उस दिन से राजा साहब के देहांत तक वह राज पहलवान बना रहा।

05. लोगों के मुँह से अनायास ही निकल पड़ता "वाह! बाप से भी बढ़कर निकलेंगे ये दोनों बेटे।" पाठ में यह पंक्ति किसके संदर्भ में और किसलिए कही गई है?

उत्तर पहलवान लुट्टन सिंह अब राज पहलवान था। पूरे नगर में उसकी बराबरी का कोई पहलवान नहीं था। उसके दो पुत्रों को, जो उसके कद और काठी के ही थे, देखकर सभी वाह-वाह किया करते थे और कहते थे कि ये दोनों भावी राज पहलवान होंगे। यह पंक्ति लोगों के मुँह से अनायास ही निकल पड़ती थी, क्योंकि सभी जानते थे कि जब इन दोनों के पिता को कोई अभी तक पराजित नहीं कर पाया है, तो ये दोनों भी किसी से पराजित नहीं हो पाएँगे।

06. लुट्टन सिंह पहलवान के दोनों पुत्रों की भावी पहलवान के रूप में घोषणा होने में लुट्टन सिंह का क्या योगदान था ?

उत्तर लुट्टन सिंह पहलवान के दो पुत्र थे, जिनको वह प्रातः काल ही उठाकर ढोलक की ताल पर उनकी शक्ति को बढ़ाने के लिए कसरत करवाता और दाँव-पेचों की जानकारी देता। उन्हें वह सांसारिक ज्ञान के साथ-साथ यह भी समझाता कि उनका कोई गुरु नहीं है। वे केवल ढोलक को ही अपना गुरु समझें तथा दंगल में उतरने से पहले ढोलक को अवश्य प्रणाम करें। इसके अलावा कब, कैसे और क्या व्यवहार करके मालिक को खुश रखा जाता है, वह इन सबकी भी शिक्षा देता था।

07. लुट्टन सिंह पहलवान की दी गई शिक्षा-दीक्षा पर पानी क्यों फिर गया?

उत्तर लुट्टन सिंह पहलवान की दी गई शिक्षा-दीक्षा पर पानी राजकुमार के राज्य संभालने से फिर गया, क्योंकि राजकुमार विलायत से पढ़ाई करके आए थे और उन्हें घोड़ों की दौड़ का शौक था न की कुश्ती का, इसलिए जब उन्हें लुट्टन सिंह और उसके दोनों बेटों के राजसी खर्च के विषय में जानकारी हुई तो उसने बिना सुनबाई के ही तीनों पहलवानों को राज दरबार से निकाल दिया। इस प्रकार लुट्टन सिंह द्वारा अपने बेटों को दी गई शिक्षा-दीक्षा पर पानी फिर गया।

08. लुट्टन सिंह पहलवान को जब राज दरबार से हटा दिया गया तो उसका जीवन किस प्रकार प्रभावित हुआ?

उत्तर श्यामनगर के राजा श्यामानंद की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र ने विलायत से आकर राजपाट संभाला। उनके पुत्र को पहलवानी में कोई भी दिलचस्पी नहीं थी। अतः नए राजा ने पंद्रह वर्ष की लंबी अवधि से राज दरबार में कार्य कर रहे लुट्टन सिंह को उसे दोनों पुत्रों के साथ राज दरबार से निकाल दिया। राज दरबार से निकाले जाने के पश्चात् लुट्टन सिंह अपने पुत्रों के साथ गाँव आकर कुछ समय तो गाँववालों की सहायता से तथा अंत में मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करने लगा।

09. गाँव वालों ने अपने राज-पहलवान की किस प्रकार सहायता की? क्या गाँव वाले अपने इस प्रयास में सफल हुए?

उत्तर राजा श्यामानंद की मृत्यु के पश्चात् जब उनके पुत्र ने लुट्टन पहलवान को राज दरबार से निकाल दिया, तो गाँव वालों ने उन तीनों के लिए एक झोपड़ी बना दी तथा उनके खाने-पीने का प्रबंध गाँववालों ने उठा लिया, किंतु धीरे-धीरे गाँव में हैजा और मलेरिया की भीषण महामारी फैलने के कारण गाँव वाले पहलवान की सहायता करने में असमर्थ हो गए तथा पहलवान व उसके दोनों पुत्र स्वयं मजदूरी करके जीवन निर्वाह करने लगे। हैजे और मलेरिया के भीषण महामारी से गाँव की परिस्थिति खराब होने के कारण धीरे-धीरे वे भी मज़दूरी आदि में लग गए। जो दिनभर की मज़दूरी से वे कमाकर लाते, उससे ही तीनों मिलकर खाते। इस प्रकार गाँव वाले इस प्रयास में सफल नहीं हुए।

10. लुट्टन पहलवान का कुश्ती का स्कूल जल्दी ही खाली क्यों हो गया?

उत्तर लुट्टन पहलवान ने कुश्ती सिखाने के लिए गाँव के नौजवान बच्चों हेतु एक स्कूल खोल दिया। पहलवान भी गांव के नौजवान बच्चों को अपने पुत्रों के साथ कुश्ती के दाँव-पेंच सिखाने लगा, परंतु बेचारे गरीब किसानों के बच्चे महामारी और गरीबी के कारण लगातार कुस्ती नहीं सीख पाए। गाँव में मजदूर व किसान के बच्चे भला क्या खाकर कुश्ती करते। इस तरह, कुश्ती सीखने के लिए उसके पास केवल उसके अपने दोनों पुत्र ही रह गए। वे भी दिनभर मजदूरी करते और जो कुछ मिलता, उसी से अपना रहने-खाने का प्रबंध आदि करते। इस प्रकार पहलवान का स्कूल अंत में खाली हो गया और वहाँ कोई भी शिष्य नहीं रह गया।

11. अचानक गाँव पर अनावृष्टि, अन्न की कमी, मलेरिया और हैजे ने ऐसा कौन-सा प्रभाव छोड़ा कि पूरा गाँव सूखकर लकड़ी बन गया?

उत्तर गाँव तो वैसे ही कम खुशहाल था, जो राज-पहलवानों को पूरा भोजन तक नहीं दे पाया। तदुपरांत महामारी ने उन कमज़ोर गाँववासियों को निचोड़ना शुरू कर दिया। गाँव से रोज दो-तीन लाशें उठने लगीं। दिन में तो हाहाकार के पश्चात् भी वे एक-दूसरे को हिम्मत देते थे, परंतु रात को पूर्णतः मौत जैसी शांति हो जाती थी। केवल लुट्टन सिंह की ढोलक की आवाज़ ही सुनाई देती थी। सुबह कुछ लाश कफ़न के साथ और कुछ लाश बिना कफ़न के ही नदी में बहा दी जाती थीं। इसलिए सभी के चेहरों की प्रभा ही समाप्त हो गई थी और लगभग पूरा गाव ही सूना हो गया था।

12. "निर्धन, साधनहीन और महामारीग्रस्त गाँव में पहलवान की ढोलक, मरने वालों को हौसला-हिम्मत देती थी।" - इस कथन के आलोक में गाँव की बेबसी का चित्रण कीजिए।

अथवा

गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान के ढोल बजाते रहने का मर्म स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मौत के सन्नाटे को चीरने एवं उसके भय को समाप्त करने के लिए ही लुट्टन सिंह रात में ढोल बजाया करता था। इससे गाँव वालों में एक नई उमंग पैदा होती थी। गाँव वालों में जीने की इसी इच्छा को उत्पन्न करने एवं बनाए रखने के लिए वह अपने बेटों की मृत्यु के उपरांत भी ढोल बजाता रहा। यह गाँव वालों के प्रति उसकी परोपकार की भावना थी। साथ-ही-साथ ढोल बजाकर ही वह अपने बेटों की मृत्यु के सदमे को झेलने की शक्ति भी प्राप्त कर रहा था।

वास्तव में, ढोल की आवाज़ सुनते ही लुट्टन पहलवान में एक नए उत्साह एवं नई शक्ति का संचार हो जाता था। वह इसी शक्ति के बल पर दंगल जीत जाता था। उसका ढोल में एक गुरु के जैसा ही विश्वास था। ढोल के साथ उसकी श्रद्धा जुड़ी थी। वह यह भी मानता था कि ढोल की आवाज़ गाँव वालों में भी उत्साह का संचार कर देगी, जिससे वे महामारी का डटकर सामना कर सकेंगे।

13. कहानी में पंक्ति "कफ़न की क्या ज़रूरत है" से क्या अभिप्राय है?

उत्तर आर्थिक रूप से श्यामनगर के गाँववासी उतने समर्थ नहीं थे कि किसी की आर्थिक सहायता कर सकें। जब महामारी से लगातार घरों में एक-दो लाशें निकलने लगीं, तो वे मानसिक और आर्थिक रूप से इतने टूट गए कि कफ़न तक के लिए भी सोचना पड़ रहा था। अतः लाशें बिना कफ़न के ही बहा देने की सलाह दी जा रही थी और कहते रहते थे कि कफ़न की क्या ज़रूरत है।

14. 'पहलवान की ढोलक' कहानी के संदेश को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'पहलवान की ढोलक' पाठ का एक संदेश यह भी है कि लोक-कलाओं को संरक्षण दिया जाना चाहिए। अपने विचार लिखिए।

अथवा

'पहलवान की ढोलक' के आधार पर लिखिए कि प्राचीन लोक-कलाएँ किस प्रकार धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं? उनके पुनर्जीवन के लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर प्राचीन लोककलाएँ अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं, क्योंकि औद्योगीकरण के कारण बढ़ते शहरीकरण में इन लोक-कलाओं की प्रासंगिकता समाप्त हो रही है। जो प्रासंगिक नहीं रह जाता, उसे समाप्त होना ही पड़ता है। आधुनिक समय में लोगों के मूल्य एवं जीवन-शैली अत्यधिक परिवर्तित हो गए हैं। अब कुश्ती जैसी कलाओं का अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। आज के नए दौर में क्रिकेट, फुटबॉल, तैराकी, हॉकी, जिमनास्टिक जैसे अन्य खेल अधिक लोकप्रिय हो गए हैं।

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि लुट्टन पहलवान या कुश्ती जब तक राज्याश्रित था, तब तक फला-फूला, लेकिन राज दरबार से निकल जाने के बाद उसकी स्थिति मरणासन्न हो गई। कुश्ती जैसी कलाओं के पुनर्जीवन के लिए सरकार के निवेश से ही शहरी एवं ग्रामीण नवयुवकों को विद्यालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अच्छे प्रशिक्षक के अंतर्गत उचित प्रशिक्षण एवं सम्मान आदि मिलना आवश्यक है। अतः ढोल बजाने के इस उत्साहपूर्ण तरीके के आधार पर यह कहना उचित ही है कि इस पाठ में लोक-कलाओं को संरक्षण दिए जाने का संदेश दिया गया है।

15. पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रकृति के मानवीकरण के दो उदाहरण निम्न हैं

(i) अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी इसमें आँसू बहाना मानवीय क्रिया है, जिसका अँधेरी रात पर आरोपण किया गया है।

(ii) निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में दबाने की चेष्टा कर रही थी इसमें सिसकना एवं आहे भरना मानवीय क्रियाएँ हैं, जिनका निःस्तब्धता पर लेखक ने आरोपण किया है। इस प्रकार लेखक ने अनेक स्थलों पर ऐसी योजना करके रचना को स्मरणीय बना दिया है।

'शिरीष के फूल' (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

सारांश- लेखक शिरीष के पेड़ों के समूह के बीच बैठकर लेख लिख रहा है। जेठ की गरमी से धरती जल रही है। ऐसे समय में शिरीष ऊपर से नीचे तक फूलों से लदा है। कम ही फूल गरमी में खिलते हैं। अमलतास केवल पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है। कबीरदास को इस तरह दस दिन फूल खिलना पसंद नहीं है। शिरीष में फूल लंबे समय तक रहते हैं। वे वसंत में खिलते हैं तथा भादों माह तक फूलते रहते हैं। भीषण गरमी और लू में यही शिरीष अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का मंत्र पढ़ाता रहता है। शिरीष के वृक्ष बड़े व छायादार होते हैं। पुराने रईस मंगल-जनक वृक्षों में शिरीष को भी लगाया करते थे। वात्स्यायन कहते हैं कि बगीचे के घने छायादार वृक्षों में ही झूला लगाना चाहिए। पुराने कवि बकुल के पेड़ में झूला डालने के लिए कहते हैं, परंतु लेखक शिरीष को भी उपयुक्त मानता है। शिरीष की डालें कुछ कमज़ोर होती हैं, परंतु उस पर झूलनेवालियों का वजन भी कम ही होता है। शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कोमल माना जाता है। कालिदास ने लिखा है कि शिरीष के फूल केवल भौरों के पैरों का दबाव सहन कर सकते हैं, पक्षियों के पैरों का नहीं। इसके आधार पर भी इसके फूलों को कोमल माना जाने लगा, पर इसके फलों की मजबूती नहीं देखते। वे तभी स्थान छोड़ते हैं, जब उन्हें धकिया दिया जाता है। लेखक को उन नेताओं की याद आती है जो समय को नहीं पहचानते तथा धक्का देने पर ही पद को छोड़ते हैं।

लेखक सोचता है कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती। वृद्धावस्था व मृत्यु-ये जगत के सत्य हैं। शिरीष के फूलों को भी समझना चाहिए कि झड़ना निश्चित है, परंतु सुनता कोई नहीं। मृत्यु का देवता निरंतर कोड़े चला रहा है। उसमें कमजोर

समाप्त हो जाते हैं। प्राणधारा व काल के बीच संघर्ष चल रहा है। हिलने-डुलने वाले कुछ समय के लिए बच सकते हैं। झड़ते ही मृत्यु निश्चित है।

लेखक को शिरीष अवधूत की तरह लगता है। यह हर स्थिति में ठीक रहता है। भयंकर गरमी में भी यह अपने लिए जीवन-रस ढूँढ लेता है। एक वनस्पतिशास्त्री ने बताया कि यह वायुमंडल से अपना रस खींचता है तभी तो भयंकर लू में ऐसे सुकुमार केसर उगा सका। अवधूतों के मुँह से भी संसार की सबसे सरस रचनाएँ

निकली हैं। कबीर व कालिदास उसी श्रेणी के हैं। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जिससे लेखा-जोखा मिलता है, वह कवि नहीं है। कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिका देवी ने ब्रह्मा, वाल्मीकि व व्यास को ही कवि माना। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसका फक्कड़ होना बहुत जरूरी है।

कालिदास अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ, विदग्ध प्रेमी थे। उनका एक-एक श्लोक मुग्ध करने वाला है। शकुंतला का वर्णन कालिदास ने किया। राजा दुष्यंत ने भी शंकुतला का चित्र बनाया, परंतु उन्हें हर बार उसमें कमी महसूस होती थी। काफी देर बाद उन्हें समझ आया कि शकुंतला के कानों में शिरीष का फूल लगाना भूल गए हैं।

कालिदास सौंदर्य के बाहरी आवरण को भेदकर उसके भीतर पहुँचने में समर्थ थे। वे सुख-दुख दोनों में भाव-रस खींच लिया करते थे। ऐसी प्रकृति सुमित्रानंदन पंत व रवींद्रनाथ में भी थी। शिरीष पक्के अवधूत की तरह लेखक के मन में भावों की तरंगें उठा देता है। वह आग उगलती धूप में भी सरस बना रहता है। आज देश में मारकाट, आगजनी, लूटपाट आदि का बवंडर है। ऐसे में क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। गांधी जी भी रह सके थे। ऐसा तभी संभव हुआ है जब वे वायुमंडल से रस खींचकर कोमल व कठोर बने। लेखक जब शिरीष की ओर देखता है तो हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!

इस गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दें

1 जहां बैठ के यह लेख लिख रहा हूं उसके आगे - पीछे ,दाएं - बाएं शिरीष के अनेक पर पेड़ हैं । जेठ की जलती धूप में, जबकि धरित्री निर्धूम में अग्निकुंड बनी हुई थी , शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था । कम फूल इस प्रकार की गर्मी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं ।कर्णीकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं कर रहा हूं वह भी आसपास बहुत हैं लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती वह 15-20 दिन के लिए फूलता हैं बसंत ऋतु के पलाश की भांति । कबीरदास को इस तरह 15 दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था यह भी क्या कि 10 दिन फूले और फिर खंखड के खंखड दिन दस फूला फूलिके, खं खंखड भया पलाश ! ऐसे दुमदारो से तो लँडूरे भले । फूल है शिरीष। बसंत के आगमन के साथ यह उठता हैं, आषाढ़ तक निश्चित रूप से मस्त बना रहता हैं । मन रम गया तो वे भरे भादो में भी निर्घात फूलता रहता हैं

1. 'धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी' का भाव इनमें से क्या है?

(क) धरती पर अग्निकुंड बनाया गया था। (ख) धरती अग्निकुंड के समान जल रही थी।

(ग) गरमी अपनी चरम सीमा पर थी। (घ) धरती पर धुएँ का नाम तक न था।

उत्तर (ग) गरमी अपनी चरम सीमा पर थी।

2. लेखक को शिरीष के पेड़ विशेष क्यों लग रहे हैं?

(क) उसकी छाया में बैठने के कारण

(ख) संख्या में बहुत अधिक होने के कारण

(ग) आसपास अन्य पेड़ न होने के कारण

(घ) गरमी में फूल खिलाने की विशेष योग्यता के कारण

उत्तर (घ) गरमी में फूल खिलाने की विशेष योग्यता के कारण

3. लेखक शिरीष के साथ अमलताश की तुलना क्यों नहीं कर रहा है?

(क) अमलताश पर फूल न खिलने के कारण

(ख) अमलताश के फूल अल्प अवधि तक फूलने के कारण

(ग) अमलताश के फूल सुंदर न होने के कारण

(घ) अमलताश के पेड़ बहुत छोटे होने के कारण

उत्तर (ख) अमलताश के फूल अल्प अवधि तक फूलने के कारण

4. कबीरदास को पलास के पुष्प पसंद नहीं थे क्योंकि-

(क) वे बहुत लाल होते हैं। (ख) आकार में छोटे होते हैं।

(ग) वसंत ऋतु में ही खिलते हैं। (घ)ये मात्र पंद्रह-बीस दिनों के लिए ही खिलते हैं।

उत्तर (घ)ये मात्र पंद्रह-बीस दिनों के लिए ही खिलते हैं।

5. शिरीष के फूलों को कब से कब तक खिला हुआ देखा जा सकता है?

(क) वसंत के आगमन से वसंत के प्रस्थान तक।

(ख) वसंत ऋतु के आगमन से जेठ माह तक ।

(ग) वसंत ऋतु के आगमन से सावन तक।

(घ) वसंत ऋतु के आगमन से आषाढ़ महीने तक ।

उत्तर (घ) वसंत ऋतु के आगमन से आषाढ़ महीने तक ।

शिरीष के फूल की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल हैं ! यह भूल हैं! इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते जब तक मैं फल-पत्ते मिलकर धकियाकर उसे बाहर नहीं कर देते तब तक वह डटे रहते हैं । वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ते रहते हैं । मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार ज़माने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मार कर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं ।

6. लेखक इनमें से किसे कवियों को भूल मानता है?

(क) शिरीष के फूलों को कोमल समझना।

(ख) हर फूल को शिरीष के समान समझना।

(ग) शिरीष के हर अंग को शिरीष के फूल के समान समझना।

(घ) शिरीष के हर अंग को उसके फल के समान समझना।

उत्तर (ग) शिरीष के हर अंग को शिरीष के फूल के समान समझना।

7. शिरीष के फूल और फल की प्रकृति संसार में किस रूप में देखने को मिलती है?

(क) युवापीढ़ी द्वारा पुराने विचारों को अपनाना।

(ख) युवा पीढ़ी द्वारा प्राचीन रूढ़ियों का बहिष्कार करना।

(ग) युवा पीढ़ी द्वारा अपने बुजुर्गों का सम्मान करना।

(घ) युवा पीढ़ी द्वारा पुराने विचारों और नए विचारों में तालमेल बिठाकर अपनाना।

उत्तर (ख) युवा पीढ़ी द्वारा प्राचीन रूढ़ियों का बहिष्कार करना।

8. शिरीष के फल देखकर इनके किस स्वभाव का पता चलता है?

(क) कठोर होने का (ख) दीर्घजीवी होने का

(ग) ढीठ और जिद्दी होने का (घ) स्वभाव से सरल होने का

उत्तर (ग) ढीठ और जिद्दी होने का

9. वसंत के सौंदर्य में इनमें से कौन सौंदर्यहीन बना रहता है

(क)पुष्पपत्र से ममरित वनस्थली (ख) शिरीष का पेड़

(ग) शिरीष के फूल (घ) शिरीष के फल

उत्तर (घ) शिरीष के फल

10. लेखक को शिरीष के फल और पुराने नेताओं में क्या समानता नजर आती है?

(क) ये दोनों ही जिद्दी होते हैं।

(ख) दोनों ही समय पर अपनी जगह नहीं छोड़ते हैं।

(ग) ये दोनों ही नवीनता को स्वीकारते हैं।

(घ) अपनी जगह छोड़ने के लिए दोनों को धक्का देना पड़ता है।

उत्तर (ग) ये दोनों ही नवीनता को स्वीकारते हैं।

मैं सोचता हूं कि पुराने की यह अधिकार लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती । जरा और मृत्यु यह दोनों ही जगत की अतिपरिचित और अति प्रमाणिक सत्य हैं तुलसीदास ने अफसोस के साथ उनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी - 'धरा को प्रमान यही तुलसी, जो फरा सो झरा ,जो बरा सो बुतना' ! मैं शिरीष के फूलों को देख कर कहता हूं कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा की झड़ना निश्चित है! सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपा सप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनके प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी हैं , वे टिक जाते हैं । दुरंत प्राणधारा सर्वव्यापक कालग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है मूर्ख समझते हैं जहां बने हैं, वही देर तक बने रहें तो काल देवता की आंख बचा जाएंगे ।भोले हैं वे । हिलते -डुलते रहो , स्थान बदलते रहो, आगे की और मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो ।जमे कि मरे !

11. इस पाठ में किसके अधिकार लिप्सा की ओर संकेत किया गया है?

(क) अपनी जगह पर जमे रहने के अधिकार का लालच

(ख) किसी अन्य के लिए अधिकार त्यागने की इच्छा

(ग) बलपूर्वक अधिकार छीन लेने का लालच

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) अपनी जगह पर जमे रहने के अधिकार का लालच

12. लेखक ने वृद्धावस्था और मृत्यु के बारे में इनमें से क्या कहा है?

(क) दोनों ही जीवन में क्रम से आते रहते हैं।

(ख) इनमें एक सत्य है दूसरा असत्य ।

(ग) दोनों ही संसार के अतिपरिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं।

(घ) दोनों का ही संसार में स्वागत होता है।

उत्तर (ग) दोनों ही संसार के अतिपरिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं।

13. 'जो फरा सौ झरा' में जीवन के किस सत्य का उद्घाटन हुआ है?

(क) गिरने के लिए ही फूल, फल बनते हैं।

(ख) जो फलते हैं वे गिरते भी हैं।

(ग) फलना और गिरना देखने के लिए लोग धरती पर आते हैं।

(घ) जो इस दुनिया में आया है वह एक दिन अवश्य नष्ट होता है।

उत्तर (घ) जो इस दुनिया में आया है वह एक दिन अवश्य नष्ट होता है।

14. 'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं। - का आशय इनमें से क्या है?

(क) महाकाल लोगों को चेतावनी दे रहे हैं।

(ख) महाकाल लोगों को तरह-तरह के कष्ट दे रहे हैं।

(ग) महाकाल लोगों को समय के साथ अपनी जगह छोड़ने के लिए कह रहे हैं।

(घ) महाकाल देवता अपने कोड़ों की मार से लोगों के प्राण ले रहे हैं।

उत्तर (घ) महाकाल देवता अपने कोड़ों की मार से लोगों के प्राण ले रहे हैं।

15. मूर्ख लोग काल देवता को धोखा देने के लिए क्या प्रयास करते हैं?

(क) काल देवता की अनदेखी करना।

(ख) काल देवता को दुर्बल समझना।

(ग) अपनी जगह पर टिके रहना।

(घ) स्वयं को काल देवता से अधिक शक्तिशाली मानना ।

उत्तर (घ) स्वयं को काल देवता से अधिक शक्तिशाली मानना ।

बहु वैकल्पिक प्रश्न

1. लेखक द्वारा कालिदास की श्रेष्ठता स्वीकार करने का कारण इनमें से क्या है?

(क) उनके शब्दों एवं अर्थ में सामंजस्य (ख) स्थिर प्रज्ञता और अनाशक्ति भाव

(ग) विदग्ध प्रेमी का हृदय रखना (घ) 'क', 'ख' और 'ग'

उत्तर (घ) 'क', 'ख' और 'ग'

2. अन्य कवि कालिदास के समान नहीं हो सकते। इस संबंध में कौन-सी धारणा असत्य है?

(क) अन्य कवि लय, तुक छंद से संतुष्ट हो जाते हैं।

(ख) वे विषय के मर्म तक नहीं पहुँचते हैं।

(ग) वे कालिदास की तरह बाह्य सुख-दुख से प्रभावित नहीं होते।

(घ) वे समर्पण भाव से कविताएँ नहीं लिखते हैं।

उत्तर (ग) वे कालिदास की तरह बाह्य सुख-दुख से प्रभावित नहीं होते।

3. 'शकुंतला कालिदास के हृदय से निकली थी' का भाव है

(क) कालिदास ने शकुंतला के सौंदर्य में डूबकर उसका वर्णन किया था।

(ख) कालिदास ने शकुंतला को अपने काव्य की नायिका बनाया।

(ग) कालिदास ने शकुंतला को अन्य कवियों की दृष्टि से देखा था।

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) कालिदास ने शकुंतला के सौंदर्य में डूबकर उसका वर्णन किया था।

4. शकुंतला के सौंदर्य में सहायक तत्व कौन-सा है?

(क) ईश्वरीय कृपा से प्राप्त (ख) दुष्यंत का असीम प्रेम

(ग) कवि कालिदास के काव्य की नायिका (घ) कवि कालिदास की सौंदर्य विमुग्ध दृष्टि

उत्तर (ग) कवि कालिदास के काव्य की नायिका

5.दुष्यंत ने शकुंतला का जो चित्र बनाया था, उसमें उन्हें खुद ही क्या कमी नजर आ रही थी?

(क) कानों में लटके हुए शिरीष के पुष्प (ख) उज्ज्वल एवं पवित्र मृणाल का हार

(ग) बालों में फूलों की बेड़ी (घ) 'क' और 'ख' दोनों

उत्तर (घ) 'क' और 'ख' दोनों

6. शिरीष का वृक्ष लेखक के मन में जो भावना जगाता है उनमें असत्य कौन-सी है

(क) संघर्षशीलता (ख) जुझारुपम

(ग) कठोरता (घ) सरसता

उत्तर (ग) कठोरता

7. शिरीष के पेड़ को अवधूत कहा गया है। लेखक किस आधार पर ऐसा कहता है?

(क) योगियों की तरह कठिन परिस्थितियों में मस्त रहना।

(ख) गरमी तथा उमस में फूल धारण किए रहना।

(ग) विपरीत परिस्थितियों में भी सरस बने रहना।

(घ) 'क', 'ख' और 'ग' तीनों

उत्तर (घ) 'क', 'ख' और 'ग' तीनों

8. देश के ऊपर से कौन-सा बवंडर गुजरने का संकेत नहीं किया गया है?

(क) जगह-जगह हुए अग्निकांड

(ख) हिंसा और रक्तपात

(ग) खोई हुई स्वतंत्रता की प्राप्ति

(घ) चोरी, डकैती तथा लूटपाट

उत्तर (ग) खोई हुई स्वतंत्रता की प्राप्ति

9. **'अपने देश का एक बूढ़ा' महात्मा गांधी को किस गुण के कारण शिरीष के समान बताया गया है?**

(क) त्याग एवं परोपकार (ख) कठिन परिस्थितियों में भी गजब की सहन-शक्ति

(ग) सरदी, गरमी को समान रूप से सहना (घ) देश के लिए सर्वस्व त्याग कर देना

उत्तर (ख) कठिन परिस्थितियों में भी गजब की सहन-शक्ति

10. **जेठ माह की कठिन धूप में भी हरा-भरा रहने वाला शिरीष हमें क्या प्रेरणा देता है?** (क) सदैव प्रसन्न रहने की
(ख) हर परिस्थिति से समझौता कर लेने की

(ग) जीवन में कभी हार न मानने की (घ) सरसता के साथ कठोरता बनाए रखने को

उत्तर (ग) जीवन में कभी हार न मानने की

बोधगम्य प्रश्न

1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

अथवा

शिरोष की तुलना किससे और क्यों की गई है?

उत्तर लेखक ने शिरोष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख-दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता-फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन-रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता-फूलता रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, तब भी शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है, वह काल व समय को जीतकर लहलहाता रहता है।

2. "हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है।" प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है। मनुष्य को हृदय की कोमलता बचाने के लिए बाहरी तौर पर कठोर बनना पड़ता है तभी वह विपरीत दशाओं का सामना कर पाता है। शिरोष भी भीषण गरमी की लू को सहन करने के लिए बाहर से कठोर स्वभाव अपनाता है तभी वह भयंकर गरमी, लू आदि को सहन कर पाता है। संत कबीरदास, कालिदास ने भी समाज को उच्चकोटि का साहित्य दिया, परंतु बाहरी तौर पर वे सदैव कठोर बने रहे।

3. द्विवेदी जी ने शिरोप के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

अथवा

दुद्विवेदी जी ने 'शिरोप के फूल' पाठ में " शिरीष के माध्यम से कोलाहल और संघर्ष से भरे जीवन में अविचल रहकर जिंदा रहने की सीख दी है। इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।

उत्तर दुद्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहते की सीख दी है। शिरीष का वृक्ष भयंकर गरमी सहता है, फिर भी सरस रहता है। उमस व लू में भी वह फूलों से लदा रहता है। इसी तरह

जीवन में चाहे जितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, मनुष्य को सदैव संघर्ष करते रहना चाहिए। उसे हार नहीं मालनी चाहिए। भ्रष्टाचार, अत्याचार, दंगे, लूटपाट के बावजूद उसे निराश नहीं होना चाहिए तथा प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाते रहना चाहिए।

4. "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है।" ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है।" ऐसा कहकर लेखक ते आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट को और संकेत किया है। आज मनुष्य में आत्मबल का अभाव हो गया है। अवधूत सांसारिक मोहमाया से ऊपर उठा हुआ व्यक्ति होता है। शिरीष भी कष्टा के बीच फलता फूलता

है। उसका आत्मबल उसे जीने की प्रेरणा देता है। आजकल मनुष्य आत्मबल में होन होता जा रहा है। वह मानव मूल्यों को त्यागकर हिंसा, असत्य आदि आसुरी प्रवृत्तियों को अपना रहा है। आज चारों तरफ तनाव का माहौल बन गया है, परंतु गाँधी जैसा अवधूत लापता है। अब ताकत का प्रदर्शन ही प्रमुख हो गया है।

5. कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत करके लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊंचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाएँ।

उत्तर लेखक का मानना है कि कवि के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय का होना आवश्यक है। उनका कहना है कि महान कवि वही बन सकता है जो अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ तथा विदग्ध प्रेमी की तरह सहृदय हो केवल छंद बना लेने से कवि तो हो सकता है, किंतु महाकवि नहीं हो सकता। संसार को अधिकतर सरस रचनाएँ अवधूतों के मुँह से ही निकलती है। लेखक कबीर व कालिदास की महान मानता है क्योंकि उनमें अनासक्ति का भाव है। जो व्यक्ति शिरीष के समान मस्त बेपरवाह, फक्कड़, किंतु सरस व मादक है, वही महान कवि बन सकता है। सौंदर्य की परख एक सच्चा प्रेमी ही कर सकता है।वह केवल आनंद की अनुभूति के लिए सौंदर्य की उपासना करता है। कालिदास में यह गुण भी विद्यमान था।

6. सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है, जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर लेखक का मानना है कि काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनो गतिशीलता बनाए रखी है। समय परिवर्तनशील है। हर युग में नयी-नयी व्यवस्थाएँ जन्म लेती है। नएपन के कारण पुराना अप्रासंगिक हो जाता है और धीरे-धीरे वह मुख्य परिदृश्य से हट जाता है। मनुष्य को चाहिए कि वह बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदल ले जो मनुष्य सुख-दुख, आशा-निराशा से अनासक्त होकर जीवनयापन करता है व विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है, वही दीर्घजीवी होता है। ऐसे व्यक्ति हो प्रगति कर सकते हैं।

7. आशय स्पष्ट कीजिए

(क) दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहे तो कालदेवता की आँख बचा पाएंगे। भोले हैं । हिलते डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की और मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

(ख) जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?..... मैं कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो।

(ग) फल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। वह इशारा है।

उत्तर (क)लेखक कहता है कि संसार में जीवनी शक्ति और सब जगह समाई कालरूपी अग्नि में निरंतर संघर्ष चलता रहता है। बुद्धिमान निरंतर संघर्ष करते हुए जीवनयापन करते हैं। संसार में मूर्ख व्यक्ति यह समझते हैं कि वे जहाँ हैं, वहीं देर तक डटे रहेंगे तो कालदेवता की नजर से बच जाएँगे। वे भोले हैं। उन्हें यह नहीं पता कि एक जगह बैठे रहने से मनुष्य का विनाश हो जाता है। लेखक गतिशीलता को ही जीवन मानता है। जो व्यक्ति हिलते डुलते रहते हैं, स्थान बदलते रहते हैं तथा प्रगति की ओर बढ़ते रहते हैं, वे ही मृत्यु से बच सकते हैं। लेखक जड़ता को मृत्यु के समान मानता है तथा गतिशीलता को जीवन ।

(ख) लेखक कहता है कि कवि को सबसे पहले अनासक्त होना चाहिए अर्थात तटस्थ भाव से निरीक्षण करने वाला होना चाहिए। उसे फक्कड़ होना चाहिए अर्थात उसे सांसारिक आकर्षणों से दूर रहना चाहिए। जो अपने किए कार्यों का लेखा-जोखा करता है, वह कवि नहीं बन सकता। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसे फक्कड़ बनना चाहिए।

(ग) लेखक कहता है कि फल व पेड़ दोनों का अपना अस्तित्व है। वे अपने-आप में समाप्त नहीं होते। जीवन अनंत है। फल व पेड़, वे किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। यह संकेत है कि जीवन में अभी बहुत कुछ है। सुंदरता व सृजन की सीमा नहीं है। हर युग में सौंदर्य व रचना का स्वरूप अलग हो जाता है।

8. शिरिष और महात्मा गांधी की तुलना किस आधार पर की गई है?

उत्तर

- दोनों बाहर से कठोर एवं दृढ़ लेकिन भीतर से कोमल।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अविचलित।
- दोनों हानि-लाभ से परे

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1.शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को 'शीतपुष्प' की संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर लेखक ने शिरीष के पुष्प को 'शीतपुष्प' कहा है। ज्येष्ठ माह में भयंकर गरमी होती है, इसके बावजूद शिरीष के पुष्प खिले रहते हैं। गरमी की मार झेलकर भी ये पुष्प ठंडे बने रहते हैं। गरमी के मौसम में खिले ये पुष्प दर्शक को ठंडक का अहसास कराते हैं। ये गरमी में भी शीतलता प्रदान करते हैं। इस विशेषता के कारण ही इसे 'शीतपुष्प' की संज्ञा दी गई होगी।

2. कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर गांधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि कोमल भावों से युक्त थे। वे दूसरे के कष्टों से द्रवित हो जाते थे। वे अंग्रेजों के प्रति भी कठोर न थे। दूसरी तरफ वे अनुशासन व नियमों के मामले में कठोर थे। वे अपने अधिकारों के लिए डटकर संघर्ष करते थे तथा किसी भी दबाव के आगे झुकते नहीं थे। ब्रिटिश साम्राज्य को उन्होंने अपनी दृढ़ता से ढहाया था। इस तरह गांधी के व्यक्तित्व की विशेषता- कोमल व कठोर भाव बन गए थे।

3. कालिदास ने शिरोष की कोमलता और दुद्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर कालिदास और संस्कृत-साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का कथन है कि "पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणाम्"- शिरीष पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं। लेकिन इससे हजारी प्रसाद द्विवेदी सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि इसे कोमल मानना भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन पर जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है तब भी शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।

4. शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक को किस महात्मा की याद आती है और क्यों ?

उत्तर शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की याद आती है। शिरीष तर अवधूत है, क्योंकि वह बाह्य परिवर्तन- धूप, वर्षा, आँधी, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित होता रहता है। इसी प्रकार महात्मा गांधी भी मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खराबे के बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे। इस समानता के कारण लेखक को गांधी जी की याद आ जाती है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्मबल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज है। आत्मा की शक्ति है। जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सका है, वैसे हो महात्मा गांधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्व वाले थे। यह वृक्ष और वह मनुष्य दोनों ही अवधूत है।

5. शिरीष की तीन ऐसी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसे 'कालजयी अवधूत' कहा है।

उत्तर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष को 'कालजयी अवधूत' कहा है। उन्होंने उसकी निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

(i) वह संन्यासी की तरह कठोर मौसम में जिंदा रहता है।
(ii) वह भीषण गरमी में भी फलों से लदा रहता है तथा अपनी सरसता बनाए रखता है।
(iii) वह कठिन परिस्थितियों में भी घुटने नहीं टेकता।
(iv) वह संन्यासी की तरह हर स्थिति में मस्त रहता है।

6. लेखक ने शिरीष के माध्यम से किस द्वंद्व को व्यक्त किया है?

उत्तर लेखक ने शिरीष के पुराने फलों की अधिकार-लिप्स खड़खड़ाहट और नए पत्ते फलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालने में साहित्य, समाज व राजनीति में पुरानी व नयी पीढ़ी के द्वंद्व को बताया है। वह स्पष्ट रूप से पुरानी पीढ़ी हम सब में नएपन के स्वागत का साहस देखना चाहता है।

7. कालिदास कृत शकुंतला के सौंदर्य वर्णन को महत्त्व देकर लेखक 'सौंदर्य' को स्त्री के एक मूल्य के रूप में स्थापित करता प्रतीत होता है। क्या यह सत्य है? यदि हाँ, तो क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर लेखक ने शकुंतला के सौंदर्य का वर्णन करके उसे एक स्त्री के लिए आवश्यक तत्त्व स्वीकार किया है। प्रकृति ने स्त्री को कोमल भावनाओं से युक्त बनाया है। स्त्री को उसके सौंदर्य से ही अधिक जाना गया है, न कि शक्ति से यह तथ्य आज भी उतना ही सत्य है। स्त्रियों का अलंकारों व वस्त्रों के प्रति आकर्षण भी यह सिद्ध करता है। यह उचित भी है क्योंकि स्त्री प्रकृति की सुकोमल रचना है। अतः उसके साथ छेड़छाड़ करना अनुचित है।

8. 'ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले- इसका भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक कहता है कि दुमदार अर्थात सजीला पक्षी कुछ दिनों के लिए सुंदर नृत्य करता है, फिर दुम गँवाकर कुरूप हो जाता है। यहाँ लेखक मोर के बारे में कह रहा है। वह बताता है कि सौंदर्य क्षणिक नहीं होना चाहिए। इससे अच्छा ती पूँछ कटा पक्षी ही ठीक है। उसे कुरूप होने की दुर्गति तो नहीं झेलनी पड़ेगी।

9. विज्जिका ने ब्रह्मा, वाल्मीकि और व्यास के अतिरिक्त किसी का कवि क्यों नहीं माना है?

उत्तर कर्णाट राज की प्रिया विज्जिका ने केवल तीन ही को कवि माना है-ब्रह्मा, वाल्मीकि और व्यास को ब्रहमा ने वेदों की रचना की जिनमें ज्ञान की अथाह राशि है। वाल्मीकि ने रामायण की रचना को जो भारतीय संस्कृति के मानदंडों को बताता है। व्यास ने महाभारत की रचना की, जो अपनी विशालता व विषय- व्यापकता के कारण विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में से एक है। भारत के अधिकतर साहित्यकार इनसे प्रेरणा लेते हैं। अन्य साहित्यकारों की रचनाएँ प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित नहीं हो पाई। अतः उसने किसी और व्यक्ति को कवि नहीं माना।

श्रम विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज

(बाबा साहब भीमराव आंबेडकर)

1. श्रम-विभाजन और जाति प्रथा

सारांश- लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपति यह है कि जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

श्रम विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

जाति प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रुचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरुचि दिखाते हैं। अतः आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज

सारांश- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलतः सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार

व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है।

1. शारीरिक वंश परंपरा,

2. सामाजिक उत्तराधिकार,

3. मनुष्य के अपने प्रयत्न ।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उतम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वंश में हैं, परंतु वंश व सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अतः वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है। एक राजनेता को अनेक लोगों से मिलना होता है। उसके पास हर व्यक्ति के लिए अलग व्यवहार करने का समय नहीं होता। ऐसे में वह व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। वह सबसे व्यवहार इसलिए करता है क्योंकि वर्गीकरण व श्रेणीकरण संभव नहीं है। समता एक काल्पनिक वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञों के लिए यही एकमात्र उपाय व मार्ग है।

पठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दें

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम- विभाजन को आवश्यक मानते हैं और क्योंकि जाति- प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति -प्रथा- श्रम- विभाजन के साथ-साथ श्रमिक- विभाजन का भी रूप लिए हुए हैं

1 गद्यांश में इनमें से किसे विडंबना कहा गया है?

क) जातिवाद का विरोध करने को

ख) इसे अनावश्यक मानने को

ग) जातिवाद का समर्थन करने और कार्यकुशलता के लिए आवश्यक मानने को

घ) जातिवाद का समर्थन करने पर कार्यकुशलता के लिए आवश्यक मानने को

उत्तर (ग) कुछ लोगों द्वारा जातिवाद का समर्थन करने और कार्यकुशलता के लिए आवश्यक मानने को

2 जाति प्रथा के पोषकों का मानना है कि-

क) जाति प्रथा और श्रम विभाजन एक नहीं हो सकते

ख) जाति प्रथा श्रम विभाजन का अन्य रूप है

ग) श्रम विभाजन का कारण जाति प्रथा है

घ) समाज में जाति प्रथा का स्थान नहीं होना चाहिए

उत्तर (ख) जाति प्रथा श्रम विभाजन का अन्य रूप है

3 श्रम विभाजन की किस कमी की ओर संकेत किया गया है?

क इससे उत्पादन में कमी आती है

ख) इससे श्रमिक अपने पेशे में रुचि नहीं लेते

ग) इस विभाजन से श्रमिकों का विभाजन हो जाता है

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) इस विभाजन से श्रमिकों का विभाजन हो जाता है

4 श्रम विभाजन का अर्थ है-

क) काम करने वालों को बांट देना

ख) काम को योग्यता अनुसार श्रमिकों में बांट देना

ग) श्रमिक और काम धंधे दोनों को बांट देना

घ) उपरोक्त तीनों

उत्तर (ख) काम को योग्यता अनुसार श्रमिकों में बांट देना

5 श्रम विभाजन का लाभ इनमें से क्या है?

क) इससे हर काम में कुशलता आती है

ख) इससे श्रमिकों की कुशलता बढ़ती है

ग) इससे काम में हानि नहीं होती है

घ) इससे श्रमिकों का अभी विभाजन हो जाता है

उत्तर (क) इससे हर काम में कुशलता आती है

2 फिर मेरी दृष्टि में आदर्श समाज क्या है ? ठीक है, यदि ऐसा पूछेंगे, तो मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता , भ्रातृता पर आधारित होगा ? क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वंचित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य है कि दूध- पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है ,और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है।

1 लेखक जिस समाज को आदर्श मानता है , उसके संबंध में असत्य अवधारणा कौन सी है ?

क) समाज में सबको स्वतंत्रता हो

ख) सब को एक समान समझा जाए

ग) समाज में गति हीनता हो जिससे लोग परिवर्तन ग्रहण न कर सकें

घ) समाज में समरसता और भाईचारा हो

उत्तर (ग) समाज में गतिहीनता हो जिससे लोग परिवर्तन ग्रहण न कर सकें

2 गद्यांश के आधार पर भ्रातृता का स्वरूप इनमें से क्या है?

क) जिसमें लोग अपना हित समझें

ख) लोग अपनी रक्षा करने में सक्षम हों

ग) लोग अपने समुदाय के लोगों को भाई समझें

घ) लोग सामूहिक रूप से एक दूसरे का हित समझें और एक दूसरे की रक्षा करें

उत्तर (घ) लोग सामूहिक रूप से एक-दूसरे का हित समझें और एक दूसरे की रक्षा करें

3 लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप इनमें से क्या है ?

क) केवल एक शासन पद्धति

ख) सामूहिक जीवन जीने का एक तरीका

ग) अनुभव को संजोकर रखना

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) सामूहिक जीवन जीने का तरीका

4 डॉक्टर अंबेडकर कैसा भाईचारा चाहते थे?

क) जिसमें लोग परस्पर दूध पानी की तरह मिलें

ख) जिसमें रुढिबद्धता हो

ग)जिसमें संबंधों में कुछ- न- कुछ बंधन हो

घ) उपयुक्त तीनों

उत्तर (क) जिसमें लोग परस्पर दूध पानी की तरह मिलें

5 'सब लोगों का उदारतापूर्वक मेल मिलाप' इसके लिए जिस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है, वह किस विकल्प में है?

क) गतिशीलता

ख) बहुविधि हित

ग) अवाध संपर्क

घ) दूध पानी का मिश्रण

उत्तर (क) गतिशीलता

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर-

1. **लेखक की दृष्टि में वर्तमान समाज में सबसे बड़ी विडंबना क्या है?**

   (क) जातिवाद के पोषकों की कमी न होना

   (ख) जातिवाद के पोषक नगण्य होना

   (ग) आर्थिक दृष्टि से जातिवाद उचित होना

   (घ) सामाजिक दृष्टि से जातिवाद उचित होना

उत्तर:- (क) लेखक की दृष्टि में वर्तमान समाज में सबसे बड़ी विडंबना जातिवाद के पोषकों की कमी न होना है।

2. **आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए किसे आवश्यक मानता है?**

   (क) धन विभाजन को

   (ख) जाति विभाजन को

   (ग) श्रम विभाजन को

   (घ) जन विभाजन को

उत्तर:- (ग) आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है।

श्रम विभाजन व जाति-प्रथा के अनुसार भारत की जाति प्रथा की विशेषता क्या है

   (क) श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन

   (ख) विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच का करार

   (ग) जाति के अनुसार दृष्टि

   (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:-(घ) श्रम विभाजन व जाति प्रथा के अनुसार श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन, विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच का करार देना तथा जाति के अनुसार दृष्टिकोण रखना आदि सभी भारत की जाति प्रथा की विशेषताएँ हैं।

3. **किस सिद्धांत में मनुष्य के प्रशिक्षण व उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना ही माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है?**

   (क) समानता के सिद्धांत में

   (ख) स्वतंत्रता के सिद्धांत में

   (ग) जाति प्रथा के दूषित सिद्धांत में

   (घ) सामाजिकता के सिद्धांत में

उत्तर:-(ग) जाति-प्रथा के दूषित सिद्धांत में मनुष्य के प्रशिक्षण व उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना ही माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

4. **'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के अनुसार भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कौन-सा एक कारण है?**

   (क) धार्मिक आस्था (ख) समानता (ग) जाति प्रथा (घ) स्वतंत्रता

उत्तर:-(ग) 'श्रम विभाजन तथा जाति प्रथा' पाठ के अनुसार भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का एक प्रमुख कारण 'जाति प्रथा' है।

5. वर्तमान समय में जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक कारण है?

(क) प्रत्यक्ष (ख) प्रमुख (ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ)इनमें से कोई नहीं

उत्तर:-(ग) वर्तमान समय में जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रत्यक्ष व प्रमुख कारण बनी हुई है।

6. जाति-प्रथा किस प्रकार से समाज के लिए हानिकारक है?

(क) आर्थिक पहलू से (ख) सामाजिक पहलू से (ग) सांस्कृतिक पहलू से (घ) ये सभी

उत्तर:-(घ) जाति-प्रथा आर्थिक पहलू, सामाजिक पहलू तथा सांस्कृतिक पहलू से समाज के लिए हानिकारक है ये सभी।

7. 'मेरी कल्पना का आदर्श-समाज' के आधार पर एक आदर्श समाज किस पर आधारित है?

(क) स्वतंत्रता पर (ख) समानता पर (ग) भ्रातृत्वता पर (घ) ये सभी

उत्तर:-(घ) 'मेरी कल्पना का आदर्श-समाज' के आधार पर एक आदर्श समाज स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्वता आदि सभी पर आधारित है ये सभी।

8. 'दूध पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा हो।' यही लोकतंत्र है, पंक्ति का आशय बताइए।

(क) भाई दूध-पानी की तरह मिले हो

(ख) भाई-भाई से प्रेम करे

(ग) दूध पानी का मिश्रण हो

(घ) साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो

उत्तर:-(घ) 'दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा हो।' यही लोकतंत्र है, पंक्ति का आशय साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव होने से है।

9. "श्रम विभाजन व जाति प्रथा के अनुसार लोकतंत्र क्या है?

(क) शासन की एक पद्धति

(ख) सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति

(ग) समाज के सम्मिलित अनुभवों का आदान-प्रदान

(घ) ख और ग दोनों

उत्तर:-(घ) 'श्रम विभाजन तथा जाति प्रथा' के अनुसार लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं है,अपितु यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।

10. हिंदू धर्म की जाति-प्रथा में व्यक्ति को क्या चुनने की स्वतंत्रता नहीं है?

(क) इच्छानुसार पेशा (ख) शिक्षा (ग) धर्म (घ) स्वतंत्रता

उत्तर:-(क) हिंदू धर्म की जाति-प्रथा में व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार पेशा चुनने की स्वतंत्रता नहीं है।

11. 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना क्या कहलाता है?

(क) दासता (ख) असमानता (ग) सामाजिकता (घ) ये सभी

उत्तर:-(क) 'श्रम विभाजन तथा जाति प्रथा' पाठ के आधार पर व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना दासता कहलाता है।

12. फ्रांसीसी क्रांति के नारे में विवाद का विषय क्या रहा है?

(क) समता (ख) स्वतंत्रता (ग) समाजवाद (घ) लोकतंत्र

उत्तर:-(क) फ्रांसीसी क्रान्ति के नारे में समता विवाद का विषय रहा है।

13. 'श्रम विभाजन व जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है?

(क) शारीरिक वंश परंपरा (ख) सामाजिक उत्तराधिकार

(ग) मनुष्य के अपने प्रयत्न (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:-(घ) 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार मनुष्य की क्षमता शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार तथा मनुष्य के अपने प्रयत्न आदि तीन बातों पर निर्भर करती है उपरोक्त सभी।

14. 'जाति-प्रथा व श्रम विभाजन' के अनुसार समता का औचित्य किस पर निर्भर करता है?

(क) समान अवसर पर (ख) समान व्यवहार पर

(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर:-(ग) 'जाति-प्रथा व श्रम विभाजन' के अनुसार समता का औचित्य समान अवसर तथा समान व्यवहार पर निर्भर करता है।

15. 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार एक राजनीतिज्ञ को बहुत बड़ी जनसंख्या से किस तरह का व्यवहार करना पड़ता है?

(क) जाति अनुसार (ख) समान व्यवहार (ग) धर्मानुसार (घ) व्यवसाय के अनुसार

उत्तर:-(ख) 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार एक राजनीतिज्ञ को बहुत बड़ी जनसंख्या से समान व्यवहार करना पड़ता है।

16. लेखक के अनुसार 'समता' किस जगत की वस्तु है?

(क) काल्पनिक जगत की (ख) वास्तविक जगत की

(ग) आर्थिक जगत की (घ) सामाजिक जगत की

उत्तर:-(क) लेखक के अनुसार 'समता' काल्पनिक जगत की वस्तु है।

वर्णनात्मक / निबंधात्मक / बोधगम्य प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक भीमराव आंबेडकर के 'जाति -प्रथा एवं श्रम-विभाजन' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

प्रश्न 2: लेखक भीमराव आंबेडकर के एक आदर्श समाज की कल्पना' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलतः सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्राति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है।

प्रश्न 3:जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

अथवा

जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर- जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं-

1. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है । सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।

2. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।

3. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।

प्रश्न 4:जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही हैं? क्या यह स्थिति आज भी हैं?

उत्तर -जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण भी बनती रही है। भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर एक पेशे से बाँध दिया जाता था। इस निर्णय में व्यक्ति की रुचि, योग्यता या कुशलता का ध्यान नहीं रखा जाता था। उस पेशे से गुजारा होगा या नहीं, इस पर भी विचार नहीं किया जाता था। इस कारण भुखमरी की स्थिति आ जाती थी। इसके अतिरिक्त, संकट के समय भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती थी। भारतीय समाज पैतृक पेशा अपनाने पर ही और देता था। उद्योग-धंधों की विकास प्रक्रिया व तकनीक के कारण कुछ व्यवसायी रोजगारहीन हो जाते थे। अतः यदि वह व्यवसाय न बदला जाए तो बेरोजगारी बढ़ती है।

आज भारत की स्थिति बदल रही है। सरकारी कानून, सामाजिक सुधार व विश्वव्यापी परिवर्तनों से जाति-प्रथा के बंधन काफी ढीले हुए हैं, परंतु समाप्त नहीं हुए हैं। आज लोग अपनी जाति से अलग पेशा अपना रहे हैं।

प्रश्न 5: लेखक के मत से ' दासता ' की व्यापक परिभाषा क्या हैं? समझाइए।

उत्तर -लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है। जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

प्रश्न 6: शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क है?

उत्तर -शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास के लिए समान अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि उत्तम व्यवहार के हक में उच्च वर्ग बाजी मार ले जाएगा। अतः सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 7: सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा हैं, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर -आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। हम उनकी इस बात से सहमत हैं। आदमी की भौतिक स्थितियों उसके स्तर को निर्धारित करती है। जीवन जीने की सुविधाएँ मनुष्य को सही मायनों में मनुष्य सिद्ध करती हैं। व्यक्ति का रहन सहन और चाल चलन काफी हद तक उसकी जातीय भावना को खत्म कर देता है।

प्रश्न 8: आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया हैं अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत है? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेगी?

उत्तर -आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है।

उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृता' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है-भाईचारा। यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारे के सहारे ही संबंध बनते हैं। कोई व्यक्ति एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकता। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचता है।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. आंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?

उत्तर -आंबेडकर की कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा।सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

प्रश्न 2. मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर होती है ?

उत्तर -मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है

1. जाति प्रथा का श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है।
2. शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।
3. सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।
4. मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

प्रश्न 3. लेखक ने जाति प्रथा की किन-किन बुराइयों का वर्णन किया हैं?

उत्तर -लेखक ने जाति-प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का वर्णन किया है –

1. यह श्रमिक-विभाजन भी करती है।
2. यह श्रमिकों में ऊँच-नीच का स्तर तय करती है।
3. यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।
4. यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही वह पेशा अनुपयुक्त व अपर्याप्त हो।
5. यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति भूखा मर जाए।
6. जाति-प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय में व्यक्ति रुचि नहीं लेता।

प्रश्न 4. लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र क्या है ?

उत्तर -लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है। वस्तुतः यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न 5: आर्थिक विकास के लिए जाति-प्रथा कैसे बाधक है?

उत्तर - भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। जबरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरुचि हो जाती है और वे काम को टालने या कामचोरी करने लगते हैं। वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का विकास नहीं होता।

प्रश्न 6: डॉ० अबेडकर समता' को कैसी वस्तु मानते हैं तथा क्यों?

उत्तर - डॉ० आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु मानते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परंतु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

प्रश्न 7 : जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है? 'श्रम-विभाजन और जाति प्रथा' के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि

1. जाति-विभाजन, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है।

2. सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है परंतु श्रमिकों के वर्गों में

विभाजन आवश्यक नहीं है।

3 जाति-विभाजन में श्रम-विभाजन या पेशा चुनने की छूट नहीं होती जबकि
श्रम-विभाजन में ऐसी छूट हो सकती है।

4. जाति प्रथा विपरीत परिस्थितियों में भी रोजगार बदलने का अवसर नहीं देती,

जबकि श्रम विभाजन में व्यक्ति ऐसा कर सकता है।

प्रश्न 8: भारत की जाति-प्रथा की क्या विशेषता है ? श्रम विभाजन व श्रमिक-विभाजन में क्या अंतर हैं?

उत्तर -भारत की जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो करती ही है, साथ ही वह इन वर्गों को एक-दूसरे से ऊँचा-नीचा भी घोषित करती है।

'श्रम-विभाजन' का अर्थ है- अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण। 'श्रमिक-विभाजन' का अर्थ है-जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निश्चित कर देना।

प्रश्न 9: आधुनिक युग में पेशा बदलने की जरूरत क्यों पड़ती हैं? पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं?

उत्तर -आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का स्वरूप बदलता रहता है। तकनीक के विकास से किसी भी व्यवसाय का रूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलना पड़ सकता है। तकनीक व विकास-प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पड़ता है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा।

प्रश्न 10: लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना हैं और क्यों? भ्रातृता के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -लेखक उस समाज को आदर्श मानता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा हो उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सभी लोग एक साथ सभी परिवर्तनों को ग्रहण कर सकें। ऐसे समाज में सभी के सामूहिक हित होने चाहिएँ तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

'भ्रातृता' का अर्थ है भाईचारा । लेखक ऐसा भाईचारा चाहता है जिसमें बाधा न हो। सभी सामूहिक रूप से एक दूसरे के हितों को समझे तथा एक-दूसरे की रक्षा करें।

प्रश्न 11: लेखक किस बात को निष्पक्ष निर्णय नहीं मानता? न्याय का तकाजा क्या है?

उत्तर - लेखक कहता है कि उत्तम व्यवहार प्रतियोगिता में उच्च वर्ग बाजी मार जाता है क्योंकि उसे शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा व व्यावसायिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त है। ऐसे में उच्च वर्ग को उत्तम व्यवहार का हकदार माना जाना निष्पक्ष निर्णय नहीं है।

न्याय का तकाजा यह है कि व्यक्ति के साथ वंश परंपरा व सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार न करके समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 12:पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं? हिन्दू धर्म की क्या स्थिति है ?

उत्तर -तकनीक व विकास प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पडला है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा।

हिंदू धर्म में जाति-प्रथा दूषित है। वह किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की आजादी नहीं देती जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो।

वितान –सिल्वर वेडिंग कहानी का सारांश

यह कहानी आज के समय की पारिवारिक संरचना और उसके स्वरूप का सही अंकन करती है। आज की परिस्थितियाँ इस कहानी की मूल संवेदना को प्रस्तुत करती हैं। आज के परिवारों में सिद्धांत और व्यवहार का अंतर दिखाई देता है।इस कहानी में, मानवीय मूल्यों-भाईचारा, प्रेम, रिश्तेदारी, बुजुर्गों का सम्मान आदि-को हाशिए पर दिखाया गया है। यशोधर पुरानी परंपरा के व्यक्ति हैं, जबकि उनके बच्चे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हैं। वे 'सिल्वर वैडिंग' जैसी पाश्चात्य परंपरा का निर्वाह करते हैं। इन सबके बावजूद यह कहानी पीढ़ी के अंतराल को स्पष्ट करती है। आज के परिवारों में भी यशोधर बाबू जैसे लोग मिल जाते हैं जो चाहकर भी स्वयं को बदल नहीं सकते। दूसरे को बदलता देख कर वे क्रोधित हो जाते हैं। उनका क्रोध स्वाभाविक लगता है |चूँकि समय और समाज परिवर्तनशील है

इसालए व्याक्त का उसक अनुसार ढल जाना चाहए। यह कहानी वतमान समय का पारवारक सरचना और स्वरूप का अच्छ ढग स प्रस्तुत करता ह। (शब्द सीमा- **166)**

'जूझ' कहानी का सारांश

जूझ' कहानी का यह अंश लेखक के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास का है। इसमें एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की अत्यंत विश्वसनीय गाथा है। इसमें निम्नमध्यवर्गीय ग्रामीण समाज और लडते–जूझते किसान–मज़दूरों के संघर्ष की भी अनूठी झाँकी है। कहानी का नायक हर कदम पर संघर्ष करता हैं। वह बचपन में स्कूल में दाखिले के लिए संघर्ष करता है, फिर कक्षा में बच्चों की शरारतों से संघर्ष करता है तथा स्कूल में स्वय को स्थापित करने के लिए मेहनत करता है। साथ ही वह घर तथा खेत के सभी काम करता है। इन सब कार्यो को अपनी जुझारूपन की प्रवृत्ति से ही वह कर पाता है। कविता लिखने में भी वह संघर्ष करता है। अत: यह शीर्षक लेखक के जुझारूपन को व्यक्त करता है। (शब्द सीमा- **135)**

'अतीत में दबे पाँव' पाठ का सारांश

अतीत में दबे पाँव' साहित्यकार ओम थानवी' द्वारा विरचित एक यात्रा-वृतांत है। वे पाकिस्तान स्थित सिंधु घाटी सभ्यता के दो महानगरों- मोहनजोदड़ो (मुअनजोदड़ो) और हड़प्पा के अवशेषों को देखकर अतीत के सभ्यता और संस्कृति की कल्पना करते हैं।सिंधु सभ्यता बहुत संपन्न सभ्यता थी। प्रत्येक तरह के साधन इस सभ्यता में थे। इतना होने के बाद भी इस सभ्यता में दिखावा नहीं थाIयहाँ प्राप्त नगर-नियोजन, धातु व पत्थर की मूर्तियाँ, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति व पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, खिलौने, आभूषण तथा सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप आदि सब कुछ इसे तकनीक-सिद्ध से अधिक कला-सिद्ध जाहिर करता है। यहाँ से कोई हथियार नहीं मिला। इस बात को लेकर विद्वानों का मानना है कि यहाँ अनुशासन जरूर था, परंतु सैन्य सभ्यता का नहीं। यहाँ पर धर्मतंत्र या राजतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाली वस्तुएँ-महल, उपासना-स्थल आदि-नहीं मिलतीं। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। इन सारी चीजों से उसका सौंदर्य-बोध उभरता हैIनदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था सिंधु घाटी की विशेष पहचान रही है। (शब्द सीमा- **176)**

'सिल्वर वैडिंग' पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न :-

1.'सिल्वर वैडिंग' कहानी में किसके विवाह की **25**वीं वर्षगांठ मनाई गई है **?**

(क) किशनदा की

(ख) यशोधर बाबू की

(ग) चड्ढा की

(घ) इनमें से कोई नहीं

2.यशोधरबाबू 'अपना रोल मॉडल किसे मानते हैं **?**

(क) अपनी पत्नी को

(ख) किशनदा को

(ग) अपने बड़े बेटे को

(घ) इनमें से कोई नहीं

3.'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू की क्या भूमिका है **?**

(क) चरितनायक की

(ख) नए परिवेश में मिसफिट होते हुए व्यक्ति की

(ग) परंपरावादी की

(घ) इनमें से तीनों|

4.निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –

(क)कथन-यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक न होते हुए भी आधुनिकता में ढल गईI

(ख)कारण-वह ऐसा बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी के कारण कर सकींI

निष्कर्ष-

(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**

(ii)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**

(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**

(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –

केवल **(i)**

केवल **(ii)**

(i) एवं **(ii)** दोनों सही

(i) एवं **(ii)** दोनों गलत

5. किशन दा का व्यक्तित्व कैसा है **?**

(क) सरल हृदयी का

(ख) सहयागा का
(ग) मार्गदर्शक का
(घ) इनमें से तीनों

6.सिल्वर वैडिंग कहानी का सन्देश क्या है **?**
(क) नई पीढ़ी अपने पूर्वजों का सम्मान करे
(ख) परम्पराओं का आदर करे
(ग) चुनौतियों के अनुसार ढलना सीखे
(घ) इनमें से सभी
7.चड्ढा कौन हैं **?**
(क) यशोधर बाबू का नौकर
(ख) उनके अधीन काम करने वाला कर्मचारी
(ग) पड़ोसी
(घ) इनमें से कोई नहीं
8. यशोधर बाबू कैसे जीवन के समर्थक हैं**?**
(क) आडम्बरपूर्ण
(ख) भक्तिपूर्ण
(ग) सरल औरसादगीपूर्ण
(घ) इनमें से कोई नहीं |
9. 'समहाउ इम्प्रोपर' वाक्यांश का प्रयोग किन सन्दर्भों में हुआ है **?**
(क) अपने से परायेपन का व्यवहार मिलने पर
(ख) वृद्धा पत्नी के आधुनिक स्वरुप को देखकर
(ग) उपरोक्त दोनों सही
(घ) उपरोक्त दोनों गलत
10.यशोधर ने किशनदा की किन परम्पराओं को जारी रखा **?**
(क) होली गवाना
(ख) जनेऊ पूजन
(ग) रामलीला मंडली का सहयोग
(घ) ये सभी |
11.किशनदा की मृत्यु का कारण उनकी बिरदारी ने क्या बताया था**?**
(क) दुर्घटना
(ख) गंभीर बीमारी
(ग) जो हुआ होगा
(घ) आत्महत्या
12. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाउ इम्प्रापर" ये दोजुमले, जो कहानी के बीजवाक्य हैं, कहानी के किस पात्र में बदलाव को असंभव बना देते हैं **?**
(क) यशोधर
(ख) किशन दा
(ग) यशोधर की पत्नी
(घ) उपर्युक्त सभी
13.'नया उन्हें कभी कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं **'** –यह वाक्य किसके लिए कहा गया है **?**
(क) यशोधर की पत्नी के लिए
(ख) उनके बच्चों के लिए
(ग) किशन दा के लिए
(घ) यशोधर के लिए
14. यशोधर बाबू अपनी पत्नी को क्या कहकर उनका मज़ाक उड़ाते थे **?**
(क) शानयल बुढ़िया
(ख) चटाई का लँहगा
(ग) बूढी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे
(घ) उपर्युक्त सभी
15.''सिल्वर वैडिंग'' कहानी की मूल संवेदना क्या है **?**
(क) पीढी का अंतराल
(ख) हाशिये पर धकेले जाते मानवीय मूल्य
(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(घ) इनम स काइ नहा

16.कहानी के अनुसार नई पीढ़ी किसे महत्व देती है **?**

(क) समाज को

(ख) भौतिकता को

(ग) नैतिकता को

(घ) इनमे से कोई नहीं

17.सिल्वर वेडिंग पाठ किस विधा में रचित है **?**

(क) निबंध

(ख) नाटक

(ग) एकांकी

(घ) कहानी

18.यशोधर बाबू कौन से पद पर नियुक्त थे **?**

(क) इंस्पेक्टर

(ख सब इंस्पेक्टर

(ग)- सफाई कर्मचारी

(घ)सेक्शन ऑफिसर

19.यशोधर बाबू अपने परिवार को किसके संस्कारों में डालना चाहते थे **?**

(क) श्रीराम

(ख) जनार्दन जोशी

(ग) भूषण

(घ) किशनदा

20.निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –

(क)कथन-यशोधर बाबू घर से ऑफिस पैदल जाते थे जबकि वह स्कूटर से जा सकते थे**I** (ख)कारण- यशोधर बाबू बहुत जिद्दी थे **I**

(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**

(ii) कथन और कारण दोनों सही हैं परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**

(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**

(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –

केवल **(i)**

केवल **(ii)**

केवल **(iii)**

(घ) **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत

21. सुमेलित कीजिये-

A	**B**
(i)यशोधर बाबू	**(i)** भौतिकता को महत्तव
(ii)चड्ढा	**(ii)** पुराने संस्कारों को मानने वाले
(iii)किशन दा	**(iii)** ऑफिस का चुहलबाज क्लर्क
(iv)नई पीढ़ी	**(iv)** सिल्वर वेडिंग कहानी का मिसफिट नायक

(क) **(i),(ii),(iii),(iv)**

(ख) **(i),(ii),(iii),(iv)**

(ग) **(iv),(iii),(ii),(i)**

(घ) **(i),(ii),(iii),(iv)**

22.निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये (क) कथन-ऑफिस से छुट्टी होने पर यशोधर बाबू बिड़ला मंदिर जाते थे **I**

(ख) कारण- यशोधर बाबू का मन अपने घर के वातावरण से खिंचा रहता था अतः वह जल्दी नहीं जाना चाहते थे **I**

निष्कर्ष-

(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**

(ii)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**

(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**

(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –

कवल **(i)**

(ख) केवल **(ii)**

(ग) **(i)** एवं **(ii)** दोनों सही

(घ) **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत

23.निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये

(क) कथन-यशोधर बाबू की बेटी शादी की उम्र होने पर भी मेडिकल की उच्च शिक्षा की पढाई के लिए अमेरिका जाना चाहती है **I**

(ख) कारण- नई पीढ़ी पहले अपने कैरियर को महत्त्व देती है शादी विवाह जैसे परम्पराओं को दरकिनार करती है **I**

निष्कर्ष-

(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**

(ii)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**

(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**

(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –

केवल **(i)**

(ख) केवल **(ii)**

(ग) **(i)** एवं **(ii)** दोनों सही

(घ) **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत

24. भूषण ने यशोधर पंत को क्या उपहार दिया **?**

(क) जीन्स

(ख) पजामा

(ग) ऊनी गाउन

(घ) कमीज

25.निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये

(क)कथन-यशोधर बाबू की अपनी पत्नी और बच्चों से तकरार होती रहती थी **I**

(ख)कारण- यशोधर बाबू पुराने संस्कारों वाले जबकि बच्चे और पत्नी पाश्चात्य संस्कृति में रच बस गए थे **I**

निष्कर्ष

कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**

कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**

(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**

(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –

(क) केवल **(i)**

(ख) केवल **(ii)**

(ग) **(i)** एवं **(ii)** दोनों सही

(घ) **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत

26.सिल्वर वेडिंग शादी का कौन सा साल होता है **?**

(क) **21**

(ख) **22**

(ग) **23**

(घ) **25**

जूझ पाठ पर आधारित वस्तुनिष्ठप्रश्न–

1-'जूझ**'** पाठ के लेखक हैं -

मनोहर श्याम जोशी

आनंद यादव

प्रेमचंद

घ- महादेवी वर्मा

2- 'जूझ', पाठ के मुख्य पात्र का क्या नाम है **?**

क-देसाई सरकार

ख- चह्वाण

ग-आनंदा

घ -रत्नाप्पा

3-'जूझ**'** पाठ किस विधा में लिखा गया है **?**

यात्रा-वृतांत

ख- रखाचित्र
आत्मकथात्मक उपन्यास
रिपोर्ताज़
4-'जूझ' पाठ के मुख्य पात्र की समस्या क्या है **?**
क-वह पढ़ना नहीं चाहता।
ख-वह खेती करके थक जाता है।
ग-भविष्य को लेकर असमंजस की स्थिति।
घ–उसके पिता उसे पढ़ाना नहीं चाहते।
5-निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –
(क) कथन-आनंदा के पिता 'ईख पेरने ' का काम जल्दी आरम्भ करते थे **I**
(ख) कारण- जल्दी ईख पेरने से गुड़ के दाम ज्यादा मिलते थे **I**
निष्कर्ष
कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**
कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**
(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**
(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**
उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –
केवल **(i)**
(ख) केवल **(ii)**
(ग) **(i)** एवं **(ii)** दोनों सही
(घ) **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत
6. सुमेलित कीजिये-

A	**B**
(i)सौन्दल्गेकर	**(i)** आनंद का सहपाठी
(ii)दत्ताजी राव	**(ii)** गुस्सैल और हिंसक
(iii) आनंद के पिता	**(iii)** गाँव के मुखिया
(iv) बसंत पाटिल	**(iv)** मराठी भाषा के शिक्षक

(क) **(i),(ii),(iii),(iv)**
(ख) **(i),(ii),(iii),(iv)**
(ग) **(iv),(iii),(ii),(i)**
(घ) **(i),(ii),(iii),(iv)**

7- देसाई सरकार के बाड़े का बुलावा दादा के लिए कैसी बात थी **?**
क- सम्मान की
ख-अभिमान की
ग-अपमान की
घ-डरने की
8- लेखक के पिताने उसकी पढाई किस कारण से छुड़वा दी थी **?**
क-जानवर चराने के लिए
ख-खेतों में पानी लगाने के लिए
ग-खेती का काम करने के लिए
घ-घर में माँ का हाथ बँटाने के लिए
9–आनंदा जल्द से जल्द पाठशाला जाना आरम्भ करना क्यों चाहता था **?**
क-वह खेती करके ऊब गया था।
ख-वह अपने मित्रों से मिलना चाहता था।
ग-वह अपना साल बर्बाद करना नहीं चाहता था।
घ-वह अपने शिक्षकों से मिलना चाहता था।
10-निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –
(क) कथन-सौन्दल्गेकर मराठी भाषा एवं साहित्य के जानकार शिक्षक थे **I**
(ख) कारण- वह बच्चों को मराठी भाषा में कविता अच्छी लय,ताल,स्वर के साथ सुनाया करते थे **I**
निष्कर्ष
(i) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**
(ii)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**
(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**
(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही है –

केवल **(i)**

(ख) केवल **(ii)**

(ग) **(i)** एवं **(ii)** दोनों सही

(घ) **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत

11–आनंदा अपने पढ़ने की बात अपने दादा से नहीं कर पाता है, क्यों? 'जूझ' कहानी के आधार पर सटीक विकल्प चुनिए।

क-क्योंकि उसके पिता उससे बात नहीं करते थे।

ख-क्योंकि उसके पिता परदेश गए हुएथे।

ग-क्योंकि उसके पिता अच्छे आचरण वाले व्यक्ति थे।

घ-क्योंकि उसके पिता अत्यधिक गुस्सेवाले व्यक्ति थे।

12- 'जूझ' कहानी का शीर्षक किस संघर्ष की अभिव्यक्ति है **?**

आनंदा द्वारा जमींदारी के विरोध का संघर्ष |

आनंदा का शिक्षा के लिए संघर्ष |

आनंदा का माँ के अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष |

सभी उत्तर सही हैं |

13- आनंदा और उसकी माँ ने दत्ताजी राव के पास जाने की क्यों सोची?**'जूझ'** कहानी के आधार पर सटीक विकल्प चुनिए।

क- ताकि दत्ताजी राव उनका लगान माफ़ कर दें।

ख- ताकि दत्ताजी राव उनकी कुछ आर्थिक सहायता कर सकें।

ग- ताकि वे लेखक को पाठशाला भेजने के लिए दादा को समझा कर राजी कर सकें।

घ-ताकि वे आनंदा को अपने खेत पर काम में लगा सकें।

14-आनंदा खेती करना क्यों नहीं चाहता था**?**

क- वह इस सत्य को जान चुका था कि खेती से जीवन भर कुछ हाथ नहीं आएगा।

ख-वह अपने पिता की बात नहीं मानना चाहता है।

ग-वह अत्यधिक परिश्रम नहीं करना चाहता है।

घ- वह खेती को तुच्छ समझता है।

15-आनंदा अपने अध्यापक से सुनी कविताएँ कब गाता था **?**

क- खेत में पानी लगाते हुए

ख- ढोर चराते हुए

ग- पढ़ाई करते हुए

घ-**'**क**'** और **'**ख**'** दोनों

16-शिलालेख पर लिखी कविता लेखक के द्वारा कब मिटाई जाती थी **?**

क- मित्रों को दिखाकर

ख-याद हो जाने के बाद

ग- मास्टर को दिखा देने के बाद

घ-मास्टर को सुना देने के बाद

17- 'जूझ' पाठ के अनुसार के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और बाद में अकेलेपन के प्रतिलेखक की धारणा में क्या बदलाव आया**?** सही विकल्प छाँटक रबताइये।

क-अकेलापन डरावना है

ख-अकेलापन उपयोगी है

ग-अकेलापन अनावश्यक है

घ-अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है

18- 'जूझ' पाठ के अनुसार पढ़ाई–लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ताजीराव का रवैया सही क्यों था**?** –सही विकल्प छाँटकर बताइये -

क- लेखक खेती-बाड़ी नहीं करना चाहता था।

ख- दोनों जानते थे कि खेती-बाड़ी में **'**लाभ**'** नहीं है।

ग- लेखक का पढ़-लिखकर सफल होना बहुत आवश्यक था।

घ-लेखक के पिता नहीं चाहते थे की वह पढ़ाई करे।

19-ईख पेरने का काम कब आरम्भ होता था**?**

क-दीवाली से महीना भर पहले

ख-दीवाली से महीनाभर बाद

ग-दशहरे से महीना भर पहले

घ-दशहरे से महीना भर बाद

20- 'जूझ' कहानी में लेखक के पिता ने उसे विद्यालय भेजने के लिए क्या शर्त रखी**?**

क-पाठशाला जाने से पहले ग्यारह बजे तक खेत में काम करना होगा तथा पानी लगाना होगा।

ख-अगर किसी दिन खेत में ज्यादा काम होगा तो उस पाठशाला नहीं जाना होगा।
ग-छुट्टी होने के बाद घरमें बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना होगा।
घ-उपरोक्त सभी
21- 'मंत्री' गणित के अध्यापक के बारे में निम्नलिखित में से कौन सी बातें असत्य है **?**
क-वह उधम करने वाले बच्चों की पिटाई कर देते थे |
ख-वह पढ़ाई करने वाले लड़कों को शाबाशी देते |
ग-बच्चे 'मंत्री' गणित के अध्यापक के डर से पढ़कर आते थे |
घ-मंत्रीअध्यापक बच्चों को रोज दो कविताएं सुनाते थे |
22- मराठी अध्यापक के अध्यापन के विषय में क्या असत्य है**?**
क-वे कविता को सुरीले गले, छंद की बढ़िया चाल, रसिकता के साथ पढ़ाते थे |
ख-वे अभिनय के साथ कविता का भावग्रहण कराते |
ग-वे प्रसिद्ध कवियों के संस्मरण भी सुनाते |
घ-(क) एवं (ख) दोनों**I**
23-मराठी अध्यापक के अध्यापन से लेखक में क्या नए परिवर्तन आए**?**
क-वह खेत में अकेले काम करते हुए मास्टर के अभिनय, यति-गति,आरोह-अवरोह की नकल करते हुए खुले कंठ से कविता गाता |
ख-लेखक को अब अकेले रहना अच्छा लग गया |
ग-लेखक धीरे-धीरे मास्टर के बताए राग से अलग भी कविताओं को गाने लगा |
घ-उपर्युक्त सभी
24-'जूझ' कहानी के नायक द्वारा पढ़ाई के साथ-साथ खेती का काम करने का क्या प्रभाव पड़ा**?**
क-उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो गई।
ख-उसका मन निराशा और खीझ से भर गया।
ग-वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा।
घ-प्रतिकूल परिस्थितियों ने उसके दृढ़निश्चय को तोड़ दिया |

25-'जूझ' कहानी में आनंदा के उच्चस्तरीय कवि बनने तक का सफर किस बात का प्रमाण है**?**
क-उसके परिश्रम एवं लगन का
ख-पिता की बात को महत्व ना देने का
ग-झूठ बोल कर पढ़ाई करने का
घ-केवल अपने मन की करने का
26- आनंदा और उसकी माँ द्वारा झूठ का सहारा ना लिए जाने की स्थिति में क्या होता **?**
क-आनंदा के जीवन में अकेलापन ठहर जाता।
ख- उसमें कविता लिखने का गुण नहीं आता।
ग-वह शिक्षित होने से वंचित रह जाता |
घ-उपर्युक्त सभी |
27- कहानी के शीर्षक 'जूझ' का अर्थहै-
क-संघर्ष
ख-चालाकी
ग-मेहनत
घ-कठिनाई
28- जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है**?**
क- पढ़ने की प्रवृत्ति का
ख-कविता करने की प्रवृत्ति का
ग-लेखन प्रवृत्ति का
घ- संघर्षमयी प्रवृत्ति का
अतीत में दबे पांव पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न -
1-कोठार किस के काम आता था
क-सुरक्षा के लिए
ख-धन जमा करने के लिए
ग-अनाज जमा करने के लिए
घ-पानी जमा करने के लिए
2-दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया है**?**
क-मुख्य नरेश
ख-धर्म नरेश
ग-याजक नरेश
घ-गौण नरेश

3-माहनजादड़ा हड़प्पा स प्राप्त हुइ नतका का मूात किस राष्ट्राय सग्रहालय म रखा हुइ ह**?**

क-इस्लामाबाद संग्रहालय में

ख-लाहौर संग्रहालय में

ग-दिल्ली संग्रहालय में

घ-लंदन संग्रहालय में

4-मोहनजोदड़ो की गलियों और घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया**?**

क- हरियाणा

ख-पंजाब

ग- उत्तर प्रदेश

घ-राजस्थान

5-मोहनजोदड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गांव की याद आयी**?**

क-कुलधरा

ख-कुलधडा

ग-बुलधरा

घ-शुभधरा

6- सुमेलित कीजिये-

A	**B**
राखालदास बनर्जी	**(i)** वी.एस. की खुदाई
जान मार्शल	**(ii)** डी.के.जी हलके की खुदाई
काशीनाथ दीक्षित	**(iii)** महानिदेशक ,भारतीय पुरातात्व सर्वेक्षण
(iv) माधोस्वरूप वत्स	**(iv)** स्तूप की खुदाई

(क**)** **(i),(ii),(iii),(iv)**

(ख**)** **(iv),(iii),(ii),(i)**

(ग**)** **(i),(ii),(iii),(iv)**

(घ**)** **(i),(ii),(iii),(iv)**

7-निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –

(क**)** कथन- सिन्धु घाटी में ज्वार**,** बाजरा ,रागी,खजूर,खरबूजे अंगूर की खेती के प्रमाण मिले हैं **I**

(ख**)** कारण- सिन्धु घाटी के लोग कृषि से ज्यादा व्यापर में रुचि लेते थे **I**

निष्कर्ष

(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**

(ii) कथन और कारण दोनों सही हैं परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है **I**

(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**

(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –

केवल **(i)**

केवल **(ii)**

(ग**)** केवल **(iii)**

(घ**)** **(i)** एवं **(ii)** दोनों गलत

8-सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है **?**

क-सौंदर्य बोध

ख-संस्कृति बोध

ग-सभ्यता बोध

घ-नागर बोध

10- लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य बोध को क्या नाम दिया**?**

क-राज पोषित

ख-धर्म पोषित

ग-समाज पोषित

घ-व्यापार पोषित

11-मोहनजोदड़ो अपने काल में किस का केंद्र रहा होगा**?**

क-सभ्यता का

ख- राजनीति का

ग-धर्म का

घ-व्यापार का

12-सुमेलित कीजिये-

A	B
(i)कार्बूजिए	(i) कामगारों की बस्ती
(ii)इरफ़ान हबीब	(ii) आधुनिक वास्तुकार
(iii)पूरब की बस्ती	(iii) प्रसिद्ध इतिहासकार
(iv) दक्षिण की बस्ती	(iv) रईसों की बस्ती

(क) (i),(ii),(iii),(iv)
(ख) (iv),(iii),(ii),(i)
(ग) (i),(ii),(iii),(iv)
(घ) (ii),(iii),(iv),(i)

13-निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो में कला या सुरुचि का महत्व ज्यादा था **I**
सिन्धु घाटी सभ्यता राज्पोषित या धर्म पोषित न होकर समाज पोषित थी **I**
सिन्धु घाटी सभ्यता में औजार के साथ साथ हथियार भी मिले हैं **I**
सिन्धु घाटी सभ्यता में अनुशासन के वाजाय सैन्य सत्ता पर आधारित थी **I**
उपरोक्त कथनों में से कौन -सा /कौन- से कथन असत्य हैं **?**
केवल (**i**)
केवल (**iii**)
केवल (**i**) और (**iii**)
केवल (**i**) और (**ii**)

14-निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –
(क) कथन-मुआन्जोड्डोंके किसी घर में खिडकियों या दरवाजों पर छज्जों के चिन्ह नहीं है **I**
(ख) कारण- यहाँ के निवासी घरों को हवादार करने की कला से अनभिज्ञ थे **I**निष्कर्ष
(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**
(ii) कथन और कारण दोनों सही हैं परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं
करता है **I**
(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**
(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**
उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –
केवल (**i**)
(ख) केवल (**ii**)
(ग) (**i**) एवं (**ii**) दोनों सही
(घ) (**i**) एवं (**ii**) दोनों गलत

15-निम्नलिखित कथन और कारणों पर विचार कीजिये एवं उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिये –
(क) कथन- सिन्धु घाटी सभ्यता को उसके बेजोड़ पानी निकासी की व्यवस्था के कारण जल संस्कृति के नाम से भी जान सकते हैं **I**
(ख) कारण- सिन्धु घाटी में **700** से ज्यादा कुँए,नदी,कुंड,स्नानागार के व्यवस्थित प्रमाण मिले हैं **I**
निष्कर्ष
(i)कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है **I**
(ii) कथन और कारण दोनों सही हैं परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं
करता है **I**
(iii) कथन सही किन्तु कारण गलत है **I**
(iv) कथन गलत किन्तु कारण सही है **I**
उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा /कौन से विकल्प सही हैं –
केवल (**i**)
(ख) केवल (**ii**)
(ग) (**i**) एवं (**ii**) दोनों सही
(घ) (**i**) एवं (**ii**) दोनों गलत

16-निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
नगर नियोजन मुआन्जोड्डों की अनूठी मिसाल है **I**
आज के वास्तुकार मुआन्जोड्डों की नगर व्यवस्था को ग्रिड प्लान कहते हैं **I**
सिन्धु नदी स्तूप वाले चबूतरे से **10** कि.मी. बहती थी **I**

स्तूप क दाक्षण म जा टूट फूट घरा का झमघट ह ,वह कामगारा का बस्ता रहा हागा I
उपरोक्त कथनों में से कौन -सा /कौन- से कथन असत्य हैं ?
(क) केवल (i)
(ख) केवल (iii)
(ग) केवल (i) और (iii)
(घ) केवल (i) और (ii)

17– सुमेलित कीजिये-

A	B
(i)सिंध	(i) तांबा
(ii)राजस्थान	(ii) पत्थर
(iii) मिश्र	(iii) प्रसिद्ध पुरातत्त्वी
(iv) शीरीं रत्नागार	(iv) चकमक और लकड़ी के व्यापार

(क) (ii),(i),(iv),(iii)
(ख) (iv),(iii),(ii),(i)
(ग) (i),(ii),(iii),(iv)
(घ) (ii),(iii),(iv),(i)

18-सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी इसका क्या प्रमाण है?
क- कपास के बीज
ख- सूती कपड़ा
ग-गर्म कपड़ा
घ-ऊन

19-अतीत में दबे पांव पाठ के रचयिता का नाम क्या है ?
क-ओम थानवी
ख-मनोहर श्याम जोशी
ग-फणीश्वर नाथ रेणु
घ-हजारी प्रसाद द्विवेदी

20-लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो की आबादी लगभग कितनी थी ?
क-20 हजार
ख- 65 हजार
ग-85 हजार
घ-50 हजार

21-मोहनजोदड़ो की सभ्यता और संस्कृति वर्तमान में किस की शोभा बढ़ा रहे हैं ?
क-लाहौर की
ख-लंदन की
ग-दिल्ली की
घ-अजायबघर की

22-मोहनजोदड़ो नगर को भारत का सबसे पुराना क्या कहा गया है
क-नगर
ख-कस्बा
ग-लैंडस्केप
घ-गांव

23-मोहनजोदड़ो की वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है?
क-दिल्ली से
ख-जयपुर से
ग-चंडीगढ़ से
घ-बीकानेर से

24-दक्षिण में टूटे-फूटे घरों का जमघट किसकी बस्ती मानी गई है ?
क-अमीरों की
ख-भिक्षुओं की
ग-कामगारों की
घ-शिक्षकों की

25-महाकुंड के पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था थी ?
क-पानी का नहर

ख-तालाब
ग-पानी की नाली
घ- कुआं
26-महाकुंड की गहराई कितनी थी**?**
क-**8** फुट
ख-**6** फुट
ग-**9** फुट
घ-**7** फुट
27-महाकुंभ की चौड़ाई कितनी है **?**
क-**15** फुट
ख- **25** फुट
ग- **20** फुट
घ-**30** फुट
28-मोहनजोदड़ो नगर की खुदाई के समय कौन-कौन सी वस्तुएं मिली थी
क- चाक पर बने चित्रित भांड
ख- सड़कें
ग- क और ख दोनों
घ- उपरोक्त में से कोई नहीं
29-मोहनजोदड़ो शब्द का क्या अर्थ है **?**
घास का टीला
मिट्टी का टीला
ग- रेत का टीला
मुर्दों का टीला
30- सबसे ऊंचे चबूतरे पर क्या है**?**
बौद्ध स्तूप
अनाज के कूप
स्नानागार
उपरोक्त में से कोई नहीं है

उत्तरमाला

सिल्वर वेडिंग

1-ख	**2-**ख	**3-**ख	**4-**क	**5-**घ	**6-**घ	**7-**ख	**8-**ग	**9-**ग	**10-**घ
11-ग	**12-**क	**13-**घ	**14-**घ	**15-**क	**16-**ख	**17-**घ	**18-**घ	**19-**घ	**20-**ग
21-ग	**22-**क	**23-**क	**24-**ग	**25-**क	**26-**घ				

जूझ

1-ख	**2-**ग	**3-**ग	**4-**ग	**5-**क	**6-**ग	**7-**क	**8-**ग	**9-**ग	**10-**क
11-घ	**12-**ख	**13-**ग	**14-**क	**15-**घ	**16-**ख	**17-**ख	**18-**ख	**19-**ख	**20-**घ
21-क	**22-**घ	**23-**घ	**24-**ग	**25-**क	**26-**घ	**27-**क	**28-**घ		

अतीत में दबे पांव

1-ग	**2-**ग	**3-**ग	**4-**घ	**5-**क	**6-**ख	**7-**ग	**8-**क	**9-**ग	**10-**घ
11-घ	**12-**ख	**13-**ख	**14-**ख	**15-**क	**16-**ख	**17-**क	**18-**ख	**19-**क	**20-**ग
21-क	**22-**ग	**23-**ग	**24-**ग	**25-**ग	**26-**घ	**27-**ख	**28-**ग	**29-**घ	**30-**क

हिन्दी (आधार) कक्षा-12वीं (2022-23)

प्रश्न पत्र प्ररूप एवं अंक विभाजन

- **प्रश्न पत्र दो खंडों- खंड 'अ' और 'ब' का होगा**
- **खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे**

भारांक-100 **निर्धारित**

समय - 3 घंटे

खंड 'अ' वस्तुपरक प्रश्न

	विषयवस्तु	**भार**
1.	**निम्नलिखित गद्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों कस चयन कीजिये**	**10**
2.	**निम्नलिखित दो काव्यांश में से किन्ही एक को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों केउत्तर लिखिए-**	**05**
3.	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**	**05**
4.	**पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए-**	**05**
5.	**पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए-**	**05**
6.	**वितान पाठों के आधार पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-**	**10**
खण्ड ब (वर्णनात्मक प्रश्न)		
7.	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए –**	**06**
8.	**किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए**	**06**
9.	**निम्नलिखित 3 में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए-**	**08**
10.	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में-**	**06**
11.	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में-**	**04**
12.	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में-**	**06**
13.	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में-**	**04**
	श्रवण तथा वाचन	**10**
	परियोजना कार्य	**10**
कुल अंक		**80**

प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र -1 (2022-23)

विषय हिंदी (आधार)
(विषय कोड 302)
कक्षा - बारहवीं
निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम**
अंक-80

सामान्य निर्देश:-

- प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब' । कुल प्रश्न 13 हैं ।
- खंड 'अ' में 45 वस्तु परक प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे।

खंड-'अ' (वस्तु परक प्रश्न)अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

[1X10=10]

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती तो। प्रथम वह जो हमें जीवन- यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से है का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं है।

कोई भी नहीं चाहेगा कि परावलंबी हो; माता-पिता, परिवार के सभी सदस्य, जाति या समाज पर पहली विद्या से या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं किया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाला व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा , उसमें यदि वह जीवन शक्ति नहीं तो; जो उसके अपने जीवन को तो सत्य पथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है , तो उसका जीवन भी मानव- जीवन का अभिधान नहीं पा सकता । वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूंछ - सीगविहीन पशु कहा जाता है। वर्तमान भारत में दूसरी विद्या भी प्राय:अभाव दिखाई देता है ,परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है न ही उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है ; सुशिक्षित सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।

यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है , हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाम मात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीवकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियां लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता। जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए; जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो ।ये तीनों सीढ़ियां एक के बाद एक आती है, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए । इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव -जीवन का चारू प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाने के समान है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो' विद्या का सार' कहा था वह सर्वथा समीचीन ही था।

(i) किन लोगों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है?
  (1) इतिहास वेत्ताओं के विद्या
  (2) भूगोल वेत्ताओं के अनुसार
  (3) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार
  (4) काव्य -शास्त्रियों के विद्या

(ii) द्वितीय विद्या हमें क्या सिखाती है?
  (1) ज्ञान

(2) मरना
(3) ध्यान
(4) जीना

(iii) किस विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है ?
(1) तीसरी विद्या
(2) चौथी विद्या
(3) दूसरी विद्या
(4) पहली विद्या

(iv) पूंछ - सीगविहीन पशु किसके लिए प्रयोग हुआ है?
(1) पशु के लिए
(2) पूँछ के लिए
(3) संसार के लिए
(4) विद्याहीन मनुष्य के लिए

(v) वर्तमान भारत में किस विद्या का प्रभाव दिखाई देता है?
(1) तीसरी विद्या
(2) चौथी विद्या
(3) दूसरी विद्या
(4) पहली विद्या

(vi) 'सुसभ्य' शब्द 'सु' में क्या है?
(1) उपसर्ग
(2) प्रत्यय
(3) संधि
(4) समास

(vii) निम्नलिखित प्रश्न पर विचार कीजिए:-
आज का युवक अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है ?

(1) घर-घर जाकर शिक्षा देने में
(2) अपनी विद्वता दिखाने के चक्कर में
(3) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही
(4) इनमें से कोई नहीं उपर्युक्त कथनों में से कौन- सा /कौन- से सही /सहीं हैं-
(1) केवल 1
(2) केवल 3
(3) केवल 1 और 2
(4) केवल 1 और 3

(viii) निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A) भारतीय विद्यार्थियों को सर्वप्रथम उपयोगी शिक्षा दी जानी चाहिए।
कथन (R) उपयोगी शिक्षा जीवन के लक्ष्य का
निर्धारण करती है

(1) कथन A तथा कारण R और दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन A गलत है लेकिन कारण R सहीं है
(3) कथन A तथा कारण R दोनों गलत है।
(4) कथन A सहीं है लेकिन कारण R उसकी गलत व्याख्या करता है।

(ix)'भारतीय' शब्द में 'ईय' क्या है?
(1) उपसर्ग
(2) प्रत्यय

(3) संधि
(4) समास

(x) वर्तमान शिक्षा पद्धति की विशेषताओं को..... है।
(1) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता
(2) सर्वथा नकारा भी जा सकता है
(3) इनमें से दोनों
(4) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

[1X5=5]

फिर से नहीं आता समय, जो एक बार चला गया।
जग में कहो बाधा रहित कब कौन काम हुआ भला।
बहती नदी सूखे अगर उस पार मैं इसके चलूं।
इस सोच में बैठा पुलिन पर, पार जा सकता भला?
किस रीती से काम, कब करना बनाकर योजना,
मन में लिए आशा प्रबल दृढ़ जो वही बढ़ जाएगा।
उसको मिलेगा तेज बल अनुकूलता सब और से
कब कर्मयोगी, वीर, अनुपम साहसी सुख पायेगा।
यह वीर भोग्या, जो हृदय तल में बनी वसुधा सदा,
करती रही आह्वान है, युग वीर का पुरुषत्व का।
कठिनाइयों में खोज का पथ, ज्योति पूरित जो करें,
विजय वही होता धरणि-सुत वरण अमरत्व का।

(i) निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार कीजिए:-
दृढ़ निश्चयी वीर को क्या लाभ प्राप्त होते हैं ?
(1) सफलता प्राप्त करता है
(2) सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करता है
(3) जीवन में निरंतर आगे बढ़ता है
(4) उपरोक्त सभी

उपर्युक्त कथनों में से कौन- सा/ कौन – सी / सही है-
(1) केवल 1
(2) केवल 4
(3) केवल 1 व 3
(4) केवल 1 व 2

(ii) कविता में धारणी-सूत किसे कहा गया है?
(1) वीर व्यक्ति को
(2) किसान को
(3) उपरोक्त दोनों को
(4) दोनों में से कोई नहीं

(iii) 'पुलिन' शब्द का क्या अर्थ है?
(1) पानी
(2) नदी
(3) किनारा
(4) वृक्ष

(iv)"अनुकूलता" शब्द में प्रत्यय है

(1) कुलता

(2) ता

(3) लता

(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

(v) 'वसुधा' का अर्थ है-

(1) वाक्

(2) धरती

(3) अमृत

(4) आकाश

अथवा

करोगे अब ? समय का
जब प्यार नहीं है
सर्वसहा पृथ्वी का
आधार नहीं रहा
न वाणी साथ है
न पानी साथ है
न वाणी का साथ
जब सब कुछ मैला है, आसमान
गंदगी बरसाने वाले
एक अछोर फैला है
कही चले जाओ
विनती नहीं है
वायु प्राणप्रद
आदमकद आदमी
सब जग से गायब है

(i) कवि ने धरती के बारे में क्या कहा है ?

(1) रतनगर्भा

(2) आधारशिला

(3) सर्वसहा

(4) माँ

(ii)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)-'आदमकद आदमी' से क्या तात्पर्य है
संपूर्ण मानवीय गुणों से विभूषित।
कथन(ख)- मानवीय गुणों विभूषित व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र का उत्थान कर सकता है।

(1) मानवीयता से भरपूर आदमी

(2) ऊंचे कद का आदमी

(3) सम्पूर्ण मनुष्य

(4) सामान्य आदमी

(क) कथन कथन A तथा R दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है

(ख) कथन A गलत है लेकिन R कारण सही है।

(ग) कथन A तथा कारण R दोनों गलत है।

(घ) कथन A सही है लेकिन कारण R उसकी गलत व्याख्या करता है।

(ii) आसमान की तुलना किससे से की गयी है…

(1) समुद्र से

(2) नीली झील से

(3) पतंग से

(4) गंदगी बरसाने वाले थैले से

(iii)प्राणदान का तात्पर्य है

(1) प्राणों को पूर्ण करने वाला

(2) प्राण दान करने वाला

(3) प्राणों को प्रणाम करने वाला

(4) प्राणों को छीन लेने वाला

(iv)कवि समय से कब और क्यों कतराना चाहते हैं?

(1) किसी के पास बात करने का समय नहीं

(2) किसी को दो क्षण बैठने का समय नहीं

(3) किसी को प्यार करने का समय नही

(4) किसी को गप मारने का समय नहीं

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- [1X5=5]

(i) छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है?

(1) जे. एल. बेयर्ड तो

(2) गुटेनबर्ग को

(3) पं. जुगल किशोर को

(4) जी. मारकोनी तो

(ii) संचार के किस माध्यम को श्रव्य और दृश्य माध्यम कहा जाता है?

(1) रेडियो

(2) समाचार-पत्र

(3) टेलीवीजन

(4) दूरभाष

(iii) समाचार के तत्वों में शामिल हैं-

(1) नवीनता

(2) प्रभावकारिता

(3) निकटता

(4) उक्त तीनों

(iv) भारत में सबसे पहले छापाखाना कहाँ खुला?

(1) कोलकाता में

(2) मुंबई में

(3) दिल्ली में

(4) गोवा में

(v) फ्रीलांसर पत्रकार हेतु सही शब्द के चयन के लिए निम्नलिखित शब्दों पर विचार कीजिए।

(i) अंशकालिक पत्रकार

(ii) स्वतंत्र पत्रकार

(iii) पूर्णकारिक पत्रकार

(iv) समाचार पत्र विशेष से न जुड़कर अलग-अलग समाचार पत्रों के लिए कार्य करने वाले पत्रकार

उपर्युक्त शब्दों में से कौन-सा /कौन-से सही है/ सही है

(1) केवल 1

(2) केवल 2

(3) केवल 3

(4) केवल् 4

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए।

[1X5=5]

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पथी भी जल्दी-जल्दी चलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं!
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचला?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विहवलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

(i) दिन ढलने के साथ बच्चे कहाँ से झाँकने लगे होंगे ?
(1) खिड़की से
(2) छत से
(3) दरवाजे से
(4) नीड़ों से

(ii) मुझसे मिलने को कौन विकल ? 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत का यह प्रश्न उर में क्या भरता है ?
(1) शिथिलता
(2) चंचलता
(3) विह्वलता
(4) उपर्युक्त सभी

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन- से सही/ सही हैं-(क) केवल 1
(ख)केवल 3
(ग) केवल 4
(घ) केवल 1 और 2

(iii)किसके बच्चे प्रत्याशा में होंगे ?
(1) गाय के
(2) कवि के
(3) पंथी के
(4) चिड़िया के

(iv)किसका ध्यान करके चिड़िया के परों में चंचलता आ जाती है ?
(1) खाने का
(2) अपने साथी का
(3) अपने बच्चों का
(4) सभी का

(v) 'मंजिल भी तो है दूर नहीं'- यह विचार किस के मन में आ रहा है
(1) पंथी के
(2) पर्वतारोही के
(3) सैनिक के
(4) खिलाड़ी के

प्रश्न 5. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए। **[1X5=5]**

'काले मेघा पानी दे' पाठ में प्रचलित विश्वास विज्ञान के अस्तित्व का चित्रण किया गया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास की अपनी क्षमता। इनके महत्त्व के विषय में पढ़ा-लिखा वर्ग परेशानी में है। लेखक ने इसी दुविधा को लेकर पानी के संदर्भ में धारणा रची है। आषाढ़ का पहला पखवाड़ा (15 दिन) बीत चुका है। ऐसे में खेती व अन्य कार्यों के लिए पानी न हो तो, जीवन चलाना मुश्किल हो जाता है। यदि विज्ञान इन चुनौतियों का निबटारा नहीं कर पाता तो भारतीय समाज किसी-न-किसी जुगाड़ में लग जाता है, छल करता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग बच्चे शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। यह दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लँगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं-

काले मघा पानी दे
पानी दे, गुड़धानी दे
गगरी फूटी बैल पियासा
काले मेघा पानी दे।

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर 'पानी' की पुकार लगाती थी तो घरों में रखे हुए पानी से इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। गर्मी से कुएं सूख चुके होते थे| नलों में बहुत कम पानी आता था, लू से व्यक्ति बेहोश होने लगते थे। बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता था। जब पूजा-पाठ आदि काम नहीं आते थे, तो इंदर सेना आखिरी उपाय के तौर पर निकलता था और इंद्र देवता से पानी की माँग करते थे। लेखक समझ नहीं पाता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों फेंकते थे? ऐसे अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है। अगर यह सेना इंद्र की है, तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते? इसी कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए। लेखक मेढक-मंडली वालों की उम्र का ही था। वह आर्यसमाजी था, कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था और समाज सुधारक था। अपनी जीजी से उसे चिढ़ थी| जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-पाठों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं। इन्हीं अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था।

(i) इंदर सेना या मेंढक-मंडली में कितनी उम्र के किशोर होते हैं?
(1) 6-7
(2) 8-9
(3) 10-12
(4) 14-15

(ii) बच्चे लोगों के घरों के बाहर रूककर किस चीज़ की माँग करते थे?
(1) चाय
(2) दूध
(3) खाने
(4) पानी

(iii)मेंढक-मंडली से आपका क्या तात्पर्य है?
(1) होनहार बच्चे
(2) शोर-शराबा करते बच्चे
(3) सीधे-साधे बच्चे
(4) फिसड्डी बच्चे

(iv)'काले मेघा पानी दे' के लेखक कौन हैं?
(1) फणीश्वर नाथ रेणु
(2) जयशंकर प्रसाद
(3) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(4) धर्मवीर भारती

(v) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से एक विकल्प चुनकर लिखिए:-
कथन (A) काले मेघा पाठ "समाज" का पुनर्जागरण है।
कथन (R) वैचारिक स्वतंत्रता मौलिक अधिकार है।

(1) अंधविश्वास समाप्त करना
(2) मनोरंजन करना
(3) ग्रीष्म ऋतु का वर्णन करना

(4) बच्चों की गतिविधियों को दर्शाना

(1) कथन A तथा कारण R और दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(2) कथन A गलत है लेकिन कारण R सही है।

(3) कथन A कारण R दोनों गलत है।

(4) कथन A सही है लेकिन कारण R उसकी गलत व्याख्या करता है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए।

[1X10=10]

(i) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल क्यों रहते हैं?

(1) वे किशन दा के आदर्शों के अनुरूप जीना चाहते हैं

(2) वे परंपरावादी हैं

(3) वे नवीनता को अपनाने के पक्षधर नहीं हैं

(4) इनमें से तीनों

(ii) यशोधर बाबू ने दफ्तर के बाद कहाँ जाने की नई रीति अपनाई है?

(1) दोस्तों के पास

(2) कनाट प्लेस घूमने

(3) बिड़ला मंदिर जाने

(4) किशन दा को याद करते हुए एक पार्क में बैठने की

(iii)भूषण ने यशोधर जी की शादी की 25 वीं सालगिरह पर अपने पिता जी को क्या उपहार दिया?

(1) कपड़ा

(2) ड्रेसिंग गाउन

(3) धोती

(4) फ्रिज

(iv)लेखक की पढाई किसने छुड़वा दी थी ?

(1) दादा ने

(2) चाचा ने

(3) मामा ने

(4) भाई ने

(v) पाठशाला भेजने से पहले दादा ने लेखक से क्या वचन लिया ?

(1) स्कूल जाने से पहले खेत में काम करना

(2) ढोर चराना

(3) ज्यादा काम होने पर पाठशाला से गैर हाज़िर होना

(4) उपरोक्त सभी

(vi)लेखक को मराठी कौन पढ़ाते थे ?

(1) सौंदलेकर

(2) रणनवरे

(3) दादा

(4) इनमे से कोई नहीं

(vii) मोहनजोदड़ो नगर कहाँ पर बसा हुआ था ?

(1) टीले पर

(2) मैदान पर

(3) पहाड़ों पर

(4) पर्वतों पर

(viii) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक चुनकर लिखिए।

कथन (A) मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने शहर माने जाते हैं।

कारण (R) प्राचीन भारत के नगर नियोजन (ग्रिड शैली) को आज भी पूरी दुनिया में अपनाया जा रहा है

(1) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या है।
(2) कथन (A) गलत है लेकिन कारण(R) सहीं हैं।
(3) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है।
(4) कथन (A)सही है लेकिन कारण(R) उसकी गलत व्याख्या है।

(ix)ग्रिड शैली के शहर का एक उदाहरण है-
(1) भोपाल
(2) दिल्ली
(3) कोलकाता
(4) चंडीगढ़

(x) हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं क्योंकि-
(1) वहाँ जल का अभाव है।
(2) वहाँ जल की अधिक आवश्यकता थी।
(3) वहाँ नदी, कुएं, स्नानागार और जल की बेजोड़ निकासी व्यवस्था मिली है।
(4) वहाँ हर बार बार आती थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन-सी सही/ सही है:-
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) केवल 4
(4) केवल 3

खंड-'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्रश्न 7. दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। **[6X1=6]**

(1) पुस्तकालय ज्ञान का सागर है।
(2) स्वच्छता आज की अनिवार्य आवश्यकता है।
(3) जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि
(4) आज़ादी का अमृत महोत्सव: स्वर्णिम 75 साल

प्रश्न 8. निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए। **[3X2=6]**

(1) कहानी का नाट्य रूपांतरण कैसे किया जाता है?
(2) फीचर क्या है? अच्छे फीचर की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(3) रेडियो नाटक क्या है और इसके प्रमुख तत्व कौन- कौन से हैं?

प्रश्न 9. निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए – **[4X2=8]**

(1) समाचार क्या है? समाचार के प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए?
(2) फीचर लेखन क्या है? इनके प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
(3) उल्टा पिरामिड शैली से क्या तात्पर्य है? इसके प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं?

प्रश्न 10. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए। **[3X2=6]**

(1) "जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास" , कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?
(2) कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?
(3) हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

प्रश्न 11. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

[2X2=4]

(1) 'अशानि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया है?

(2) कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

(3) छोटे चौकोने खेत की कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

प्रश्न 12. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

[3X2=6]

(1) "बाज़ारूपन" से क्या तात्पर्य है ? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें हैं ?

(2) लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं , बल्कि यही ढोल है ?

(3) शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क है?

प्रश्न 13. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

[2X2=4]

(1) भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और दिया होगा?

(2) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

(3) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

अनिल कुमार शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक, हिंदी
केंद्रीय विद्यालय, नारायणपुर
रायपुर संभाग

-------000------

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र- 2022-23

विषय- हिंदी (आधार)

कक्षा -बारहवीं

अंक योजना-1

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक- 80**

सामान्य निर्देश:-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ट बनाना है।
- खंड- अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।
- खंड- ब मैं वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है। यह सुझावात्मक एवं सांकेतिक है ।
- यदि परीक्षार्थी इन संकेतिक बिंदुओ से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दें तो उन्हें अंक दिए जाएं ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड-'अ' वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम संख्या		**उत्तर**	**अंक विभाजन**
प्रश्न 1.	(i)	(3) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार	**1**
	(ii)	(4) जीना	**1**
	(iii)	(4) पहली विद्या	**1**
	(iv)	(4) विद्याहीन मनुष्य के लिए	**1**
	(v)	(3) दूसरी विद्या	**1**
	(vi)	(1)उपसर्ग	**1**
	(vii)	(ख) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही	**1**
	(viii)	(4)जो आवश्यक हो	**1**
	(ix)	(2)प्रत्यय	**1**
	(x)	(1)सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता	**1**
प्रश्न 2.	(i)	(ख) केवल 4	**1**
	(ii)	(2)किसान को	**1**
	(iii)	(3)किनारा	**1**
	(iv)	(2)ता	**1**
	(v)	(2)धरती	**1**
		अथवा	
	(i)	(क) कथन (A)तथा कारण(R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या है	**1**

	(ii)	(1)मानवीयता से भरपूर आदमी	**1**
	(iii)	(1)समुद्र से	**1**
	(iv)	(2)प्राण दान करने वाला	**1**
	(v)	(3)किसी को प्यार करने का समय नही	**1**
प्रश्न 3.	(i)	(2)गुटेनबर्ग को	**1**
	(ii)	(3)टेलीवीजन	**1**
	(iii)	(4)उक्त तीनों	**1**
	(iv)	(3)गोवा में	**1**
	(v)	(घ) केवल- 4	**1**
प्रश्न 4.	(i)	(4)नीड़ों से	**1**
	(ii)	(ख) केवल -3	**1**
	(iii)	(4) चिड़िया के	**1**
	(iv)	(3) अपने बच्चों का	**1**
	(v)	(1) पंथी के	**1**
प्रश्न 5.	(i)	(3) 10-12	**1**
	(ii)	(4) पानी	**1**
	(iii)	(2) शोर-शराबा करते बच्चे	**1**
	(iv)	(4) धर्मवीर भारती	**1**
	(v)	(क)	**1**
प्रश्न 6.	(i)	(4) इनमें से तीनों	**1**
	(ii)	(3) बिड़ला मंदिर जाने	**1**
	(iii)	(2)ड्रेसिंग गाउन	**1**
	(iv)	(1) दादा ने	**1**
	(v)	(4) उपरोक्त सभी	**1**
	(vi)	(1) सौंदलेकर	**1**
	(vii)	(1) टीले पर	**1**
	(viii)	(क)	**1**
	(ix)	(4) चंडीगढ़	**1**
	(x)	(घ) केवल -3	**1**

खंड-'ब' वर्णात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 7. किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख **(6x1=6)**

आरंभ – 1 अंक

विषय वस्तु – 3 अंक

प्रस्तुति – 1 अंक

भाषा – 1 अंक

प्रश्न 8. (1) कहानी के नाट्य रूपांतरण का एक दृश्य की कथावस्तु, कथानकद्ध को सामने रखकर एक-एक घटना को चुन-चुनकर निकाला जाता है और उसके आधार पर दृश्य बनता है तात्पर्य यह कि यदि एक घटना, एक स्थान और एक समय में घट रही है तो वह एक दृश्य होगा। स्थान और समय के आधार पर कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जाता है। **(3x2=6)**

(2) फीचर किसी रोचक विषय का मनोरंजक शैली में विस्तृत विवेचन है। फीचर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाला किसी विशेष घटना , व्यक्ति , जीव – जंतु , स्थानीय परिवेश से संबंधित व विशिष्ट आलेख है।

एक अच्छे फीचर लेखन की विशेषता:-

- मनोरंजक होना चाहिए।
- ज्ञानवर्धक होना चाहिए।
- मानवीय रुचि पर आधारित होना चाहिए।
- चित्रात्मक भाषा शैली होनी चाहिए।

(3) रेडियो नाटक मंच की सीमाओं से मुक्त नाटक है। दृश्य सीमाबद्ध है अदृश्य सीमाहीन। रेडियो नाटक अदृश्य है फलतः इसका क्षेत्र सीमाहीन है। श्रव्य नाटक में ऐसे दृश्य बड़ी सहजता से सम्मिलित किए जा सकते हैं।

इसके प्रमुख तत्व:-

- कथा बीच
- पात्र योजना
- संवाद
- मौन
- ध्वनि प्रभाव

प्रश्न 9. (1) समाचार नवीनतम घटनाओं और समसामयिक विषयों पर अद्यतन सूचनाओं को कहते हैं, जिन्हें मुद्रण, प्रसारण, अंतर्जाल या अन्य माध्यमों की सहायता से आम लोगों यानी, पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है। **(4x2=8)**

समाचार लेखन के तत्व:

- नवीनता
- सत्यता
- स्पष्टता
- संक्षिप्ता
- सुरुचि

(2) फीचर का सामान्य अर्थ होता है – किसी प्रकरण संबंधी विषय पर प्रकाशित आलेख है। लेकिन यह लेख संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले विवेचनात्मक लेखों की तरह समीक्षात्मक लेख नही होता है।

फीचर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाला किसी विशेष घटना, व्यक्ति, जीव – जन्तु, तीज – त्योहार, दिन, स्थान, प्रकृति – परिवेश से संबंधित व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित वह विशिष्ट आलेख होता है जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। अर्थात फीचर किसी रोचक विषय पर मनोरंजक ढंग से लिखा गया विशिष्ट आलेख होता है।

फीचर के प्रकार:-

- व्यक्तिपरक फीचर
- सूचनात्मक फीचर
- विवरणात्मक फीचर
- विश्लेषणात्मक फीचर
- साक्षात्कार फीचर
- इनडेप्थ फीचर
- विज्ञापन फीचर
- अन्य फीचर

(3) किसी समाचार को लिखने या कहने का वह तरीका है जिसमें उस घटना, विचार, समस्या के सबसे अहम तथ्यों या पहलुओं के सबसे पहले बताया जाता है और उसके बाद घटते हुये महत्व क्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना का ब्यौरा कालानुक्रम के बजाये सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरु होता है।

इसके तीन महत्त्वपूर्ण चरण होते हैं –

1. मुखड़ा –

यह समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है , जिसके अंतर्गत समाचार का संपूर्ण सार नहीं होता है। मुखड़ा के अंतर्गत क्या , कौन , कहाँ , कब आदि बिंदुओं पर विचार किया जाता है।

2. बॉडी –

इसके अंतर्गत समाचार के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया जाता है और घटना को उजागर करते हुए उसके कारण आदि को उद्घाटित किया जाता है। बॉडी के अंतर्गत कैसे, क्यों के रहस्य को उद्घाटित किया जाता है।

3. समापन –

यह समाचार का अंतिम बिंदु होता है। जिसमें समाचार लिखने वाला समाचार के कारणों को सामने रखते हुए पाठकों के लिए विचारणीय बिंदु छोड़ जाता है, जो काफी संक्षिप्त रूप में होता है। साथ ही इसमें तथ्य का स्रोत भी छिपा होता है।

प्रश्न 10. (1) उपरोक्त पंक्ति में कवि पतंग उड़ाते बच्चों का दौड़ना-भागना और खुशी से उछलना देखकर उनकी तुलना कपास के साथ करते हुए कहते हैं कि जिस तरह कपास मुलायम , शुद्ध और सफेद होती हैं। ठीक उसी प्रकार बच्चों का मन व भावनाएं भी स्वच्छ , कोमल और पवित्र होती हैं। अर्थात बच्चे जन्म से ही अपने साथ निर्मलता , कोमलता लेकर आते हैं। उनके मन में किसी के लिए भी राग-द्वेष की भावना नहीं होती हैं। **(3x2=6)**

(2) कविता और बच्चों के क्रीड़ा-क्षेत्र का स्थान व्यापक होता है। बच्चे खेलते-कूदते समय काल, जाति, धर्म, संप्रदाय आदि का ध्यान नहीं रखते। वे हर जगह, हर समय व हर तरीके से खेल सकते हैं। उन पर कोई सीमा का बंधन नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल यह् है। शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य आदि उपकरण मात्र हैं। इनमें नि:स्वार्थता होती है। बच्चों के सपने असीम होते हैं, इसी तरह कवि की कल्पना की भी कोई सीमा नहीं होती।

(3) ‘हम समर्थ शक्तिमान’ पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडिया कमी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं

तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफ़ के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है।

प्रश्न 11. (1) 'अशानि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में कवि ने पूंजीपति वर्ग की ओर संकेत किया है। बिजली गिरने का अर्थ क्रांति से है। **(2x2=4)**

(2) कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।

(3) छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में यही अर्थ निहित है कि कवि ने कवि कर्म को खेत में बीज रोपने की तरह माना है। इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि कविता रचना सरल कार्य नहीं है। जिस प्रकार खेत में बीज बोने से लेकर फ़सल काटने तक काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है, उसी प्रकार कविता रचने के लिए अनेक प्रकार के कर्म करने पड़ते हैं।

प्रश्न 12. (1) बाजारूपन का अर्थ हैं पैसे के बल पर सिर्फ दिखावे के लिए बाज़ार से गैर जरूरी सामान खरीदना। **(3x2=6)**

गैर जरूरी सामान खरीद कर व्यक्ति ना तो खुद फायदा उठाता है और ना ही बाज़ार को सही सार्थकता देता है। बाज़ार की सार्थकता तभी है जब व्यक्ति केवल अपनी जरूरत का सामान खरीदें। बाज़ार हमेशा ग्राहकों को मौन निमंत्रण देता है। अपनी चकाचौंध से आकर्षित करता है। व्यक्ति का अपने मन पर नियंत्रण होना चाहिए।

(2) लुट्टन सिंह का वाकई में कोई भी पहलवान गुरु नहीं था। वह ढोलक को ही अपना गुरु मनाता था। उसे महसूस होता था कि ढोलक ही हर थाप उसे कुश्ती में दाँव-पेंच लड़ने के निर्देश दे रही हैं।और वह उन दिशा निर्देशों को ध्यान से सुनता था। ढोलक के ध्वन्यात्मक शब्द उसके मन में कुश्ती लड़ने वक्त एक नया जोश व उत्साह भर देते थे और फिर वो दोगुने साहस के साथ कुश्ती लड़ता और जीत हासिल करता था।

उसने ढोल बजाकर ही अपने दोनों बेटों और गाँव के बच्चों को कुश्ती के गुर सिखाए। महामारी के वक्त उसकी ढोलक की आवाज दुखी व निराश लोगों के मन में संजीवनी शक्ति भर देती थी। ढोलक ही उसके जीवन का

सच्चा साथी था।

(3) शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने के पीछे यह तर्क देते हैं कि समाज के सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए, सबको अपनी क्षमता को विकसित करने तथा रुचि के अनुरूप व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। राजनीतिज्ञ को अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत लाने की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। उन्हें समान अवसर दिए जाए ताकि उनमें मानसिक स्तर पर भेदभाव उत्पन्न न हो।

प्रश्न 13. (1) भक्तिन का वास्तविक नाम था-लछमिन अर्थात लक्ष्मी। लक्ष्मी नाम समृद्ध व ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता है, परंतु यहाँ नाम के साथ गुण नहीं मिलता। लक्ष्मी बहुत गरीब तथा समझदार है। वह जानती है कि समृद्ध का सूचक यह नाम गरीब महिला को शोभा नहीं देता। उसके नाम व भाग्य में विरोधाभास है। वह सिर्फ़ नाम की लक्ष्मी है। समाज उसके नाम को सुनकर उसका उपहास न उड़ाए इसीलिए वह अपना वास्तविक नाम लोगों से छुपाती थी। भक्तिन को यह नाम लेखिका ने दिया। उसके गले में कंठी-माला व मुँड़े हुए सिर से वह भक्तिन ही लग रही थी। उसमें सेवा-भावना व कर्तव्यपरायणता को देखकर ही लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रखा। **(2x2=4)**

(2) यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है।

(3) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत के समान माना है। दोनों में अनेक समानताएँ है। अवधूत (संन्यासी) को संसार के सुख-दुख, मोह माया का कोई लगाव नहीं होता, इसी प्रकार शिरीष भी गर्मी-सर्दी के मौसम में समभाव से जीवित रहता है। एक संन्यासी भगवान (सृष्टिकर्ता) से प्रेरणा प्राप्त करके विपरीत और कठोर परिस्थितियों में ध्यान

मग्न रहता ह। भाषण आर ावकट गमा म भूम स कुछ भा प्राप्त न हान का स्थात म शराष वातावरण स रस चूसकर सदा हरा-भरा रहता है। शिरीष आँधी-लू और गर्मी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल और अटल होकर कोमल पुष्पों का सौंदर्य बिखेरता रहता है। इसी कारण लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है।

केंद्रीय विद्यालय

हिन्दी (आधार)

प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र -2 (2022-23)

कक्षा-12वीं

- **प्रश्न पत्र दो खंडों – खंड 'अ' और 'ब' का होगा |**
- **खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे |**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे |**

भारांक-80 **निर्धारित समय : 3 घंटे**

(खंड – अ)

प्र.1 निम्नलिखित गद्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों कस चयन कीजिये – (10)

परिश्रम कल्पवृक्ष है। जीवन की कोई भी अभिलाषा परिश्रम रूपी कल्पवृक्ष से पूर्ण हो सकती है। परिश्रम जीवन का आधार है, उज्ज्वल भविष्य का जनक और सफलता की कुंजी है। सृष्टि के आदि से अद्यतन काल तक विकसित सभ्यता और सर्वत्र उप्रति परिश्रम का परिणाम है। आज से लगभग पचास साल पहले कौन कल्पना कर सकता था कि मनुष्य एक दिन चाँद पर कदम रखेगा या अंतरिक्ष में विचरण करेगा पर निरंतर श्रम की बदौलत मनुष्य ने उन कल्पनाओं एवं संभावनाओं को साकार कर दिखाया है। मात्र हाथ पर हाथ घरकर बैठे रहने से कदापि संभव नहीं होता।

किसी देश, राष्ट्र अथवा जाति को उस देश के भौतिक संसाधन तब तक समृद्ध नहीं बना सकते जब तक कि वहाँ के निवासी उन संसाधनों का दोहन करने के लिए अथक परिश्रम नहीं करते। किसी भूभाग की मिट्टी कितनी भी उपजाऊ क्यों न हो, जब तक विधिवत परिश्रमपूर्वक उसमें जुताई, बुआई, सिंचाई, निराई-गुड़ाई नहीं होगी, अच्छी फसल प्राप्त नहीं हो सकती। किसी किसान को कृषि संबंधी अत्याधुनिक कितनी ही सुविधाएं उपलब्ध करा दीजिए, यदि उसके उपयोग में लाने के लिए समुचित श्रम नहीं होगा, उत्पादन क्षमता में वृद्धि संभव नहीं है। परिश्रम से रेगिस्तान भी अत्र उगलने लगते हैं हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात हमारी प्रगति की द्रुतगति भी हमारे श्रम का ही फल है। भाखड़ा नांगल का विशाल बाँध हो या युबा या श्री हरिकोटा के रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र, हरित क्रांति की सफलता हो या कोविड 19 की रोकथाम के लिए टीका तैयार करना, प्रत्येक सफलता हमारे श्रम का परिणाम है तथा प्रमाण भी है।

जीवन में सुख की अभिलाषा सभी को रहती है। बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में है। उसे वास्तविक और स्थायी शांति नहीं मिलती। गांधीजी तो कहते थे कि जो बिना श्रम किए भोजन ग्रहण करता है, वह चोरी का अत्र खाता है। ऐसी सफलता मन को शांति देने के बजाए उसे व्यथित करेगी। परिश्रम से दूर रहकर और सुखमय जीवन व्यतीत करने वाले विद्यार्थी को ज्ञान कैसे प्राप्त होगा? हवाई किले तो सहज ही बन जाते हैं, लेकिन वे हवा के हल्के झोंके से ढह जाते हैं। मन में मधुरकल्पनाओं के संजोने मात्र से किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती। कार्य सिद्धि के लिए उद्यम और सतत उद्यम आवश्यक है। तुलसीदास ने सत्य ही कहा है-सकल पदारथ है जग माहीं करमहीन न पावत नाहीं।अर्थात इस दुनिया में सारी चीजें हासिल की जा सकती हैं लेकिन वे कर्महीन व्यक्ति को कभी नहीं मिलती हैं। अगर आप भविष्य में सफलता की फसल काटना चाहते हैं, तो आपको उसके लिए वीज आज ही बोने होंगे|आज बीज नहीं बोयेंगे, तो भविष्य में फ़सल काटने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? पूरा संसार कर्म और फल के सिद्धांत पर चलता है इसलिए कर्म की तरफ आगे बढ़ना होगा। यदि सही मायनों में सफल होना चाहते हैं तो कर्म में जुट जाएं और तब तक जुटे रहें जब तक कि सफल न हो जाएँ। अपना एक-एक मिनट अपने लक्ष्य को समर्पित कर दें। काम में जुटने से आपको हर वस्तु मिलेगी जो आप पाना चाहते हैं-सफलता, सम्मान, धन, सुख या जो भी आप चाहते हों।

(i) गद्यांश में परिश्रम को कल्पवृक्ष के समान बताया गया है क्योंकि इससे

(क) भौतिक संसाधन जुटाए जाते हैं (ख) परिश्रमी व्यक्ति वृक्ष के समान परोपकारी होता है

(ग) इच्छा दमन करने का बल प्राप्त होता है (घ) व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ण पूर्ति संभव है

(ii) गद्यांश में अच्छी फ़सल प्राप्त करने के लिए कहे गए कथन से स्पष्ट होता है कि-

(क) भौतिक संसाधनों का दोहन करना आवश्यक है

(ख) संसाधनों की तुलना में परिश्रम की भूमिका अधिक है

(ग) ज्ञान प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है

(घ) कष्ट करने से ही कृष्ण मिलते हैं

(iii) भारत के परिश्रम के प्रमाण क्या-क्या बताए गए हैं?

(क) बाँध, कोविड 19 की रोकथाम काटीका, प्रक्षेपण केंद्र

(ख) कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र, रेगिस्तान

(ग) कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र, हवाई पट्टियों का निर्माण

(घ) वृक्षारोपण, कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

(iv) कैसे व्यक्ति को अंधकार में बताया गया है?

(क) श्रमहीन व्यक्ति (ख) विश्रामहीन व्यक्ति

(ग) नेत्रहीन व्यक्ति (घ) प्रकाशहीन व्यक्ति

(v) हवाई किले तो सहज ही बन जाते हैं, लेकिन ये हवा के हल्के झोंके से दह जाते हैं।"

इस कयन के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि-

(का तेज़ चक्रवर्ती हवाओं से आवासीय परिसर नष्ट हो जाते हैं

(ख) हवा का रुख अपने पक्ष में परिश्रम से किया जा सकता है

(ग) हवाई कल्पनाओं को सदैव संजोकर रखना असंभव है

(घ) परिश्रमहीनता से वैयक्तिक उपलब्धि नितांत असंभव है

(vi) सतत उद्यम से क्या तात्पर्य है.

(क निरंतर तपता हुआ उद्यम (ख) निरंतर परिश्रम करना

(ग) सतत उठते जाना (घ) ज्ञान का सतत उद्गम

(vii) किस अवस्था में प्राप्त सफलतामनको व्यथित करेगी ?

(क) सकल पदार्थ द्वारा प्राप्त करने पर (ख) भौतिक संसाधनों द्वारा प्राप्त करने पर

(ग) दूसरों द्वारा किए गए अथक प्रयासों से (घ) आसान व श्रमहीन तरीके से प्राप्त करने पर

(viii) स्वतंत्रता शब्द में उपसर्गव प्रत्यय अलग करने पर होगा-

(क) स्व+तंत्र+ता (ख) सु+तंत्र +ता

(ग) स + वतंत्र +ता (घ) स्+वतं+ता

(ix) समुचित' शब्द का अर्थ है-

(क) उपर्युक्त (ख) उपयुक्त

(ग) उपभोक्ता (घ) उपक्रम

(x) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है-

(क) परिश्रम और स्वतंत्रता (ख) परिश्रम सफल जीवन का आधार

(ग) परिश्रम और कल्पना (घ) परिश्रम कल्पना की उड़ान

प्र.2 निम्नलिखित पद्यांशो में से किसी एक पद्यांश से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (5)

आज की शाम, जो बाजार जा रहे हैं, उन से मेरा अनुरोध है
एक छोटा सा अनुरोध, क्यों ना ऐसा हो कि आज शाम |
हम अपने थैले और डोलचियाँ
रख दे एक तरफ और सीधे धान की मंजरियों तक चलें |
चावल जरूरी है, जरूरी है आटा दाल नमक,

पर क्या ना एसा हा ाक आज शाम
हम सीधे वही पहुँचे, एकदम वहीं |
जहाँ चावल दाना बनने से पहले, सुगंध की पीड़ा से छटपटा रहा हो,
उचित यही होगा कि हम शुरू में ही, आमने-सामने बिना दुभाषिये के
सीधे उस सुगंध से बातचीत करें, यह रक्त के लिए अच्छा है |
अच्छा है भूख के लिए, नींद के लिए, कैसा रहे, बाजार ना आए बीच में।

1.प्रस्तुत काव्यांश में कवि क्या अनुरोध कर रहा है?
(i) बाजार में जाने का (ii) सीधे किसान से वस्तुएं खरीदने का
(iii) बाजार से वस्तुएँ खरीदने का (iv) बाजार के जाल में ना फसने का

2. कवि सीधे कहाँ पहुँचने के लिए कह रहा है?
(i) दुकानों पर (ii) सड़कों पर (iii) किसानों के खेतों पर (iv) गांव के घरों पर

3. चावल दाना बनाने से पहले किस पीड़ा से छटपटाता है?
(i) दयनीय (ii) दुर्गंध (iii) सुगंध (iv) असामाजिक

4. कवि के अनुसार उचित क्या होगा?
(i) सीधे उत्पादक से संपर्क करना (ii) स्वयं उत्पादक बनाना
(iii) बिचौलियों उनसे संपर्क करना (iv) बातचीत करना

5.'बाजार में आए बीच में' पंक्ति का क्या आशय है?
(i) कभी बाजार में आ जाना (ii) बाजार जाना पर कुछ खरीद करना लाना
(iii) ग्राहक और उत्पादक के बीच में बाजार का ना आना
(iv) बाजार का अस्तित्व समाप्त कर देना

अथवा

है जन्म लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही-सी चांदनी है डालता |
मेह उन पर है बसरता एक-सा,
एक सी उन पर हवाएँ है बही
पर सदा ही यह दिखता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं |

छेदकर कांता किसी की उँगलियाँ
फाड़ देता है किसी का वार वसन,
प्यार-डूबी तितलियाँ का पर क़तर
भँवर का है भेद देता श्याम तन |

फूल लेकर तितलियाँ को गोद में
भँवर को अपना अनूठा रस पिला
निज सुगंधों और निराले ढंग से
है सदा देता कली का जी खिला

है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर शीश पर,
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर |

1. प्रस्तुत काव्यांश किससे संबंधित है ?
(क) फूल और तितलियाँ से (ग) पौधे और चाँदनी से

(ख) फूल और पौधे से
(घ) बड़प्पन की कहानी से

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

i. सद्गुणों के करण ही मानुस प्रेम का पात्र बनता है |
ii. परिवेशगत समानता सदैव अव्यवस्था को जन्म देती हैं |
iii. भौगोलिक परिस्थितियाँ प्राकृतिक मित्रता का करण हैं |
उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है ?
(क) केवल (i)
(ख) केवल (iii)
(ग) (i) और (ii)
(घ) (ii) और (iii)

3. इस काव्यांश से हमें क्या सिख मिलती है ?

(क) मनुष्य के कर्म उसे प्रसिद्धि दिलाते है |
(ख) समान परिवेश में रहते हुए मनुष्य समान आदर पते है |
(ग) किसी भी कुल में जन्म लेने से ही मनुष्य बड़ा हो सकता है |
(घ) समान पालन-पोषण होने पर अलग व्यक्तियों के स्वभाव समान होते है |

4. 'फाड़ देता किसी का वर वसन' में 'वसन' शब्द का अर्थ है-

(क) व्यसन
(ख) वस्त्र
(ग) वास
(घ) वासना

5. कवितानुसार फूल निम्न में से कौन-सा कार्य नहीं करता ?

(क) भँवरों को अपना रस पिलाता है |
(ख) तितलियों को अपनी गोद में खिलाता है |
(ग) फल बनकर पशु-पक्षियों और मनुष्यों का पेट भरता है |
(घ) सूत्रों के शीश पर सोहता है |

प्र.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए सहज उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए (5)

1. मुद्रित माध्यमों के लेखन में सहज प्रवाह के लिए जरूरी है-

(क) तारतम्यता
(ख) उपलब्धि
(ग) एकरेखीयता
(घ) साध्यता

2. संबंधित घटना के दृश्य बाइट व ग्राफिक द्वरा खबर को संपूर्णता से पेश करना कहलाता है –

(क) एंकर विजुअल
(ग) एंकर पॅकेज
(ख) एंकर बाइट
(घ) ड्राई एंकर

3. छह ककार के लिए उचित क्रम का चयन कीजिए-

(क) क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों, कैसे
(ख) किसने, कब, क्यों, कैसे, कहाँ, किधर
(ग) कैसे, किससे, कब, क्यों, कितना, कौन
(घ) क्यों, कैसे, कब, कहाँ, किससे, किसने

4. कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए

कॉलम 'अ'	कॉलम 'ख'
(i) बीट रिपोर्टर	(i) निवेशक
(ii) फीचर	(ii) संवाददाता
(iii) कारोबार	(iii) घुटने टेकना
(iv) खेल	(iv) कथात्मक

(क) (i)-(iii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(ii)
(ख) (i)-(ii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(iii)
(ग) (i)-(iv), (ii)-(iii), (iii)-(ii), (iv)-(i)
(घ) (i)-(ii), (ii)-(i), (iii)-(iv), (iv)-(iii)

5. विशेष लेखन के लिए सबसे जरूरी बात है-

(क) चील-उडान और शब्द-विवेक
(ख) गिद्ध-दृष्टि और पक्का इरादा
(ग) शब्दावली और उपलब्धियाँ
(घ) प्रभावशाली और बुद्धिमत्ता

प्र.4 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए- (5)

तव प्रताप उर राखा प्रभु जहउ नाथ तुरत।
अब कहि आयसु पाई पद बंदि चलेगी हनुमंत
भरत बाहुबल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार
मन महु जात सराहत पुनि-पुनि पवन कुमार।

1.काव्यांश में हनुमान जी ने किससे चलने की आज्ञा मांगी
(क) श्री राम जी से (ख) लक्ष्मण जी से
(ग) भरत जी से (घ) सुग्रीव जी से

2. हनुमान जी भरत जी के किस गुण से प्रभावित थे
(क) बाहुबल से (ख) शील स्वभाव से
(ग) भाई के प्रति आदर एवं प्रेम से (घ) उपर्युक्त सभी

3. हनुमान ने भरत जी को आश्वासन दिया कि-
(क) आपका प्रताप हृदय में रख समय पर पहुंच जाऊंगा
(ख) आप की आवभगत से मन हृदय प्रफुल्लित है
(ग) मैं प्रभु से आपकी प्रशंसा करूंगा
(घ) शीघ्र ही प्रभु को आपसे मिलने के लिए राजी कर लूंगा।

4. हनुमान जी की भेंट भरत जी से कहां पर हुई थी
(क) पंचवटी में। (ख) अयोध्या में।
(ग) चित्रकूट में। (घ) लंका में

5-प्रभु पद प्रीति में अलंकार है
(क) पुनरुक्ति अलंकार (ख) वक्रोक्ति अलंकार
(ग) अनुप्रास अलंकार (घ) रूपक अलंकार रूपक अलंकार

प्र.5 निम्नलिखित गद्यांशो को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए- (5)

मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, क्षमता ,भ्रातृत्व पर आधारित होगा क्या यह ठीक नहीं है ?भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ?किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके ।ऐसे समाज के बहु विधि हितों में सब का भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सजग रहना चाहिए सामाजिक जीवन में अबाद संपर्क के उनके साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए ।तात्पर्य यह कि दूध पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है शासन की पद्धति ही नहीं है लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवन चर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है ।इनमें यह आवश्यक है कि। अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो ।

1.गतिशीलता से लेखक का अभिप्राय है
(क) परिवर्तन से (ख) क्रांति से
(ग) सुधार से (घ) योगदान से

2. लेखक ने भाईचारे की वास्तविक रूप को किसके समान बताया है
(क) चाय पानी के युग्म के समान (ख) दूध पानी के मिश्रण के समान
(ग) चाचा भतीजे के रिश्ते के समान (घ) दिन रात की समान

3-आदर्श समाज के हित में सबकी भागीदारी और सजगता आवश्यक है ताकि
(क) सबका विकास हो (ख) संपर्क के साधन व अवसर मिलते रहे
(ग) धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा हो सके (घ) रोजगार के अवसर पैदा हो सके

4. आदर्श समाज के लिए गतिशीलता क्यों आवश्यक है?
(क) ताकि सबको अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा सके
(ख) बेरोजगारी दूर हो सके
(ग) लोगों में धर्म के प्रति आस्था व विश्वास उत्पन्न हो सके
(घ) ताकि सभी को परिवर्तन का लाभ मिल सके

5. आदर्श समाज किस पर आधारित होना चाहिए

(क) स्वतंत्रता पर (ख) क्षमता पर
(ग) भ्रातृता (घ) सभी पर

प्र6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए.- (10)

1. सिल्वर वेडिंग' कहानी की मूल संवेदना आप किसे मानेंगे-

(क) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (ख) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

(ग) पीढ़ी अंतराल (घ) सिल्वर वेडिंग के परिणाम

2. सिल्वर वेडिंग' पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य का अर्थ है

(क) पाश्चात्य विचारधारा के संदर्भ में (ख) परिवार की संरचना के संदर्भ में

(ग) किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में (घ) यशोधर बाबू की नियुक्ति के संदर्भ में

3. दादा कोल्हू जल्दी क्यों लगाना चाहते थे?

(क) काम जल्दी समाप्त करने के लिए (ख) दूसरी फसल के लिए

(ग) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए (घ) खेत में पानी देने के लिए

4. 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में लिखा गया है?

(क) हिंदी (ख) अंग्रेज़ी

(ग) मराठी (घ) गुजराती

5. लेखक आनंद यादव की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है।

(क) कुत्ते के समान (ख) शेर के समान

(ग) जंगली सूअर के समान (घ) चीते के समान

6. सिंधु घाटी की सभ्यता के संबंध में कौन सा कथन सही नहीं है?

(क) सिंधु घाटी की सभ्यता प्राचीनतम सभ्यता थी।

(ख) सिंधु घाटी की सभ्यता आडंबरहीन सभ्यता थी।

(ग) सिंधु घाटी की सभ्यता छोटी होते हुए भी महान थी।

(घ) सिंधु घाटी की सभ्यता में राजतंत्र स्थापित नहीं था।

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(i) महाकुंड स्तूप में उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं।

(ii) मोहनजोदड़ो सभ्यता में सूत की कताई, बनाई और रंगाई भी होती थी।

(iii) सिंधु घाटी सभ्यता में जल निकासी की व्यवस्था अत्यंत बुरी थी।

(iv) मोहनजोदड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट बहुत छोटा था।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है। हैं?

(क) केवल i

(ख) केवल iii

(ग) i, ii और iii

(घ) I, ii और IV

8. राखालदास बनर्जी कौन थे?

(क) शिक्षक (ख) भिक्षुक (ग) पुरातत्त्ववेत्ता (घ) व्यापार

9. जूझ कहानी लेखक की किस प्रवृत्ति को उद्घाटित करती है?

(क) कविता करने की प्रवृत्ति

(ग) लेखन की प्रवृत्ति

(ख) पढ़ने की प्रवृत्ति

(घ) संघर्षमयी प्रवृत

10. किशोर दा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता क्यों नहीं कर पाए थे?

(क) यशोधर बाबू की पत्नी किशन दा से नाराज़ थी।

(ख) यशोधर बाबू का अपना परिवार था, जिसे वे नाराज़ नहीं करना चाहते थे।

(ग) यशोधर बाबू के घर में किशन दा के लिए स्थान का अभाव था।

(घ) किशन दा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा था, जिसे किशन दा ने |

(खंड – ब)

प्र.7 दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए (6)

(क) लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

(ख) दिया और तूफ़ान : मानव जीवन का सत्य

(ग) झरोखे से बाहर

(घ) आज़ादी का अमृत महोत्सव: स्वर्णिम 75 साल

प्र.8 किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए (6)

(क) कहानीकार द्वारा कहानी के प्रसंगों या पात्रों के मानसिक द्वंद्वों के विवरण के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में काफ़ी समस्या आती है। इस कथन के संदर्भ नाट्य रूपांतरण की किन्हीं तीन चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।

(ख) रेडियो श्रव्य माध्यम है। यह ध्वनि के माध्यम से ही संप्रेषण करता है। इसलिए नाटक में ध्वनि संकेतों का विशिष्ट महत्व है। रेडियो नाटक में ध्वनि संकेतों कीमहत्ता स्पष्ट करते हुए कोई तीन बिंदु अवश्य लिखिए।

(ग) रटत या कुटेव को बुरी लत क्यों कहा गया है? नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन द्वारा इस लत से कैसे बचा जा सकता है?

प्र9. निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए- **(8)**

(क) समाचार लेखन की एक विशेष शैली होती है। इस शैली का नाम बताते हुए समाचार लेखन की इस शैली को स्पष्ट कीजिए।

(ख) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

(ग) फीचर क्या है? फीचर को परिभाषित करते हुए अच्छे फीचर की किन्ही तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्र.10 काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर | लगभग 60 शब्दों में लिखिए- **(6)**

(क) आत्मपरिचय कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है?

(ख) रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है ?

(ग) विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते पंक्ति में विप्लव से क्या तात्पर्य है? 'छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है?

प्र.11 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए- (4)

(क) पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं-बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध है?

(ख) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते है किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधीबात भी टेढ़ी हो जाती है कैसे?

(ग) कवितावली के छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

प्र.12 गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए- **(6)**

(क) बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म, क्षेत्र नहीं देखता, बस देखता है सिर्फ उसकी | क्रय शक्ति को, और इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है।आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट करके लिखिए।

(ख) कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

(ग) जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती जा रही है? क्या यह स्थिति आज भी है ? स्पष्ट कीजिए।

प्र.13 गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए (4)

(क) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

(ख) लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक-मडली ना म किस आधार पर दिया? __यह टोली अपने आप को इंद्रसेना कहकर क्यों बुलाती थी?

(ग) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

अंक-योजना (2)

विषय-हिन्दी (आधार)

विषय कोड संख्या : 302

प्र.1 निम्नलिखित गद्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों कस चयन कीजिये – (10)

1. **((i) (घ) व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ण पूर्ति संभव है**

(ii) (ख) संसाधनों की तुलना में परिश्रम की भूमिका अधिक है

(iii) (क) बाँध, कोविड 19 की रोकथाम काटीका, प्रक्षेपण केंद्र

(iv) (क) श्रमहीन व्यक्ति

(v) (घ) परिश्रमहीनता से वैयक्तिक उपलब्धि नितांत असंभव है

(vi) (ख) निरंतर परिश्रम करना

(vii) (घ) आसान व श्रमहीन तरीके से प्राप्त करने पर

(viii) (क) स्व+तंत्र+ता

(ix) (ख) उपयुक्त

(x) (ख) परिश्रम सफल जीवन का आधार

प्र.2 निम्नलिखित पद्यांशो में से किसी एक पद्यांश से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (5)

1. (ख) सीधे किसान से वस्तुएं खरीदने का
2. (ग) किसानों के खेतों पर
3. (ग) सुगंध
4. (क) सीधे उत्पादक से संपर्क करना
5. (ग) ग्राहक और उत्पादक के बीच में बाजार का ना आना

अथवा

1. (घ) बड़प्पन की पहचान से
2. (क) केवल ।
3. (क) मनुष्य के कर्म उसे प्रसिद्धि दिलाते हैं।
4. (ख) वस्त्र
5. (ग) फल बनकर पशु-पक्षियों और मनुष्यों का पेट भरता है

प्र.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए सहज उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए (5)

1. (क) तारतम्यता
2. (ग) एकर पैकेज
3. (क) क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों, कैसे
4. (ख) (1)-(11), (ii)- (iv), (111)- (1), (iv) - (111)

5. (ख) गिद्ध-दृष्टि और पक्का इरादा

प्र.4 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए- (5)

1. (ग) भरत जी
2. (घ) उपर्युक्त सभी
3. (क) आपका प्रताप हृदय में रख समय पर पहुंच जाऊंगा
4. (ख) अयोध्या में
5. (ग) अनुप्रास अलंकार

प्र.5 निम्नलिखित गद्यांशो को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए- (5)

1. (क) परिवर्तन से
2. (ख) दूध पानी के मिश्रण के समान
3. (ख) संपर्क के साधन व अवसर मिलते रहे
4. (घ) ताकि सभी को परिवर्तन का लाभ मिल सके
5. (घ) यह सभी पर

प्र6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए.- (10)

1. (ग) पीढ़ी अंतराल
2. (ग) किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में
3. (ग) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए
4. (ग) मराठी
5. (ग) जंगली सूअर के समान
6. (घ) सिंधु घाटी की सभ्यता में राजतंत्र स्थापित नहीं था।
7. (घ) I,II और Iv
8. (ग) पुरातत्त्ववेत्ता
9. (घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति ।
10. (ख) यशोधर बाबू का अपना परिवार था, जिसे वे नाराज नहीं करना चाहते थे।

(खंड 'ब')

प्र.7 दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए (6)

लिखिए:- आरंभ -1

अंक विषयवस्तु --3 अंक

प्रस्तुति -- 1 अंक

भाषा -- 1 अंक

प्र.8 किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए (6)

(क) नाट्य रूपांतरण की चुनौतियां-

• पात्रों के मनोभावों की

• मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की

• पात्रों की सोच के प्रस्तुतीकरण की उदाहरण के लिए ईदगाह कहानी का वह हिस्सा जहाँ हामिद इस द्वंद में है कि क्या खरीदे, क्या ना खरीदे

(ख) रेडियो नाटक में ध्वनि संकेतों की महत्ता-

• मंच नाटक लेखन, फ़िल्म की पटकथा और रेडियो नाटकलेखन में काफी समानता

• रेडियो में ध्वनि प्रभावों व संवादों के ज़रिये ही दृश्य का माहौल पैदा किया जाना

• इसलिए संवाद व ध्वनि सबसे महत्वपूर्ण होना

• दृश्य की जगह कट/हिस्सा लिखा जाना • दृश्यों को ध्वनि -संकेतों से दिखाया जाना

(ग) रटंत का अर्थ है-दूसरों के द्वारा तैयार सामग्री को याद करके ज्यों- का-त्यों प्रस्तुत कर देने की आदत।

लत कहे जाने के कारण

• असली अभ्यास का मौका ना मिलना

• भावों की मौलिकता समाप्त हो जाना

• चिंतन-शक्ति क्षीण होना

• सोचने की क्षमता में कमी होना

• दूसरों के लिखे पर आश्रित होना

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन द्वारा इस लत से बचा जा सकता है क्योंकि इससे अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है । नए विषयों पर विचार अभिव्यक्ति से मानसिक और आत्मिक विकास होता है।

प्र9. निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए- (8)

(क) समाचार लेखन की एक विशेष शैली का नाम उलटा पिरामिड शैली है, जिसमें क्लाइमैक्स बिल्कुल आखिर में आता है। इसे उल्टा पिरामिड इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना सबसे पहले दी जाती है और तत्पश्चात उससे कम महत्त्वपूर्ण और फिर सबसे कम महत्त्वपूर्ण समाचार लिए जाते हैं। इसमें इंट्रो, बॉडी और समापन समाचार प्रस्तुति के तीन चरण होते हैं।

. (ख) * बीट रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टर कोविशेष संवाददाता कहते हैं।

* बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र की जानकारी और उसमें दिलचस्पी होना ही पर्याप्त है। उसे केवल सामान्य खबरें ही लिखनी पड़ती हैं जबकि विशेषीकृत रिपोर्टर को अपने विषय-क्षेत्र की घटनाओं, मुद्दों व समस्याओं का बारीक विश्लेषण करके उसका अर्थ भी स्पष्ट करना होता है। .

* बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करना आवश्यक है।

* बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग से संबंधित उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।

(ग)* फीचर एक सुव्यवस्थित सृजनात्मक और आत्मिक लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ-साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

* फीचर समाचार की तरह पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं कराता।

* समाचारों से विपरीत फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है।

*फीचर लेखन कथात्मक शैली में किया जाता है।

प्र.10 काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर | लगभग 60 शब्दों में लिखिए- (6)

(क) *कवि का सांसारिक कठिनाइयों से जूझने पर भी इस जीवन से प्यार करना।

*संसार और विपरीत परिस्थितियों की परवाह ना करना

*उसे संसार का अपूर्ण लगना

*अपने सपनों का अलग ही संसार लिए फिरना

(ख) *रचना कर्म का अक्षयपात्र कभी खाली नहीं होता।

* रचना कर्म अविनाशी और कालजयी ।

* कवि की रचनाएँ हमेशा अमर रहती हैं ।पाठकों को अच्छा संदेश और जीवन में सही मार्ग दिखाती हैं।

* बार-बार पढ़े जाने पर भी कविता का रस समाप्त ना होना।

* इन्हीं विशेषताओं के कारण रचना कर्म को रस का अक्षयपात्र कहना

(ग) * 'विप्लव-रव से कवि का तात्पर्य क्रांति से है।

* क्रांति गरीब लोगों या आम जनता में जोश भर देती है।

* गरीब और आम जनता ही शोषण का शिकार होती है।

* समाज में क्रांति इन्हीं से आरंभ होती है, इसीलिए यही क्रांति के जनक होते हैं।

* क्रांति का आगाज होते ही ये नए और सुनहरे भविष्य के सपने संजोने लगते हैं, जिसकी चमक इनके चेहरे पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होना।

* इसीलिए छोटे ही क्रांति (विप्लव- रव) के समय शोभा पाते

प्र.11 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए- (4)

(क) * बच्चों को पतंग का बहुत प्रिय होना।

* आकाश में उड़ती पतंग देखकर बच्चों के मन का उड़ान भरना

* पतंग की भाँति बालमन का ऊँचाइयों को छूने की चाह

* आसमान से पार जाने की चाह

* पतंग की उड़ान का बच्चों के रंग-बिरंगे सपने के समान होना बालकों का मन चंचल होना।

(ख)* बात भाव है और भाषा उसे प्रकट करने का माध्यम।

* बात और भाषा में चोली-दामन का साथ

. * कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढी होना।

* मनुष्य का शब्दों के चमत्कार में उलझकर इस गलतफहमी का शिकार होना कि कठिन और नए शब्दों के प्रयोग से अधिक प्रभावशाली ढंग से बात कही जाती है।

* भाव को भाषा का साधन बना लेना।

* भाव की अपेक्षा भाषा पर अधिक ध्यान दिए जाने के कारण भाव की गहराई समाप्त होना। (ग)* तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ थी क्योंकि कवितावली में उनके द्वारा

• समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण

• समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण .

* गरीबी के कारण लोगों द्वारा अपनी संतान तक बेच देने का वर्णन .

* दरिद्रता रूपी रावण का हाहाकार दिखाना .

* किसानों की हीन दशा का मार्मिक वर्णन

प्र.12 गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए- (6)

(क) उचित स्पष्टीकरण पर उचित अंक दिए जाएँ

हम इस कथन से पूर्णतः सहमत हैं क्योंकि - .

- बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म और क्षेत्र नहीं देखता सिर्फ ग्राहक की क्रय-शक्ति देखता है।
- उसे इस बात से कोई मतलब नहीं कि खरीदार औरत है या मर्द, हिंद्र है या मुसलमान,उसकी जाति क्या है या वह किस क्षेत्र-विशेष से है।
- यहाँ हर व्यक्ति ग्राहक है।
- आज जबकि जीवन के हर क्षेत्र में भेदभाव है ऐसे में बाज़ार हर एक को समान मानता है।
- बाजार का काम है वस्तुओं का विक्रय,उसे तो ग्राहक चाहिए फिर चाहे वह कोई भी हो।

इस प्रकार यह सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है

(ख)* कहानी के आरंभ में लुट्टन के माता-पिता का चल बसना और सास द्वारा पालन-पोषण किया जाना।

* कहानी के मध्य में दंगल जीतकर उसका मशहूर पहलवान बन जाना, सुख-सुविधा के सब सामान पास होना, दो जवान बेटों का पिता बन जाना पर पत्नी का स्वर्ग सिधारना।

* कहानी के अंत में हैजे से दोनों बेटों की मृत्यु और स्वयं भी हैजे का शिकार होकर संसार से चला जाना।

(ग) • जाति-प्रथा के बंधन के कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं होती।

* इसी कारण उसे भूखों मरने तक की नौबत आ जाती है।

* जाति-प्रथा पैतृक पेशा अपनाने पर जोर देती है, भले ही वह इस पेशे में पारंगत ना हो।

* जाति-प्रथा व्यक्ति को पेशे विशेष से बाँधकर रखती है, जो समाज में बेरोज़गारी और भुखमरी का कारण बनता है।

* आज समाज की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। आज व्यक्ति को अपना पेशा चुनने और बदलने का अधिकार है। .

प्र.13 गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए (4)

(क) * संन्यासी की तरह ही सुख-दुख की परवाह ना करना

* जीवन की अजेयता के मंत्र की घोषणा करना .

* बाहर की गर्मी, धूप,बारिश से प्रभावित ना होना

• धैर्य के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों में अजेय जीवन व्यतीत करना

* भावनाओं की भीषण गर्मी में भी अजेय रहना

(ख) * गाँव के लोगों का किशोर लड़कों की उछल-कूद से चिढ़ना

* उनकी वजह से होने वाले सड़क के कीचड़ से चिढ़ना 1

* इंद्रसेना कहे जाने के कारण

* भगवान इंद्र से वर्षा की विनती करना

. * स्वयं को इंद्र की सेना के सैनिक मानना

(ग) भक्तिन भोली-भाली,बुद्धिमान, सेवाभाव वाली थी किंतु उसकी भक्ति में कुछ दुर्गुण भी थे,

जैसे- पैसों को भंडार घर की मटकी में छुपाकर रखना

लेखिका से बेवजह तर्क-वितर्क करना

लेखिका से झूठ बोलना

शास्त्रों में लिखी बातों की व्याख्या अपने अनुसार करना

केंद्रीय विद्यालय

प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र -3 (2022-23)

हिन्दी (आधार)

कक्षा-12वीं

- **प्रश्न पत्र दो खंडों – खंड 'अ' और 'ब' का होगा |**
- **खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे |**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे |**

भारांक-80 **निर्धारित समय : 3 घंटे**

(खंड – अ)

प्र.1 निम्नलिखित गद्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों कस चयन कीजिये – (10)

दबाव में काम करना व्यक्ति के लिए अच्छा है या नहीं, इस बात पर प्रायः बहस होती है | कहा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक दबाव में नकारात्मक भावों को पाने ऊपर हावी कर लेता है, जिससे उसे अकसर कार्य में असफलता प्राप्त होती है | वह अपनी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो बैठता है | दबाव को यदि ताकत बना लिया जाए, तो न सिर्फ सफलता प्राप्त होती है, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है | ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जब लोगों ने अपने काम के दबाव को अवरोध नहीं, बल्कि ताकत बना लिया | 'सुख-दुःख, सफलता-असफलता, शांति-क्रोध और क्रिया-क्रम हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है |' जोस सिल्वा इस बात से सहमत होते हुए अपनी पुस्तक 'यू द हीलर' में लिखते है कि 'मन मस्तिष्क को चालता है और मस्तिष्क शरीर मन के आदेश का पालन करता हुआ काम करता है |'

दबाव में व्यक्ति यदि सकारात्मक होकर काम करें, तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है | दबाव के समय मौजूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करते और बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचा जाए कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली है, जो एक कठिन चुनौती को पूरा करने के लिए तत्पर है, तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठती है | हमारा दिमाग जिस चीज पर भी अपना ध्यान केंद्रित करने लगता है, वह हमें बढती प्रतीत होती है | यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे, तो वे और बढ़ी होती महसूस होंगी | इस बात को हमेशा ध्यान केंद्रित करेंगे, तो वे भी बढ़ी महसूस होंगी | इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि 'जितना एक आदत है, पर अफ़सोस ! हारना भी आदत ही है |'

(i) दबाव में कार्य करने पर व्यक्ति ..... हो जाता है |

(क) आलसी | (ख) सक्रिय |

(ग) नकारात्मक | (घ) मूर्ख |

(ii) अपनी कमजोरी को अपनी ताकत बना लेने का क्या परिणाम होता है ?

(क) सफलता प्राप्त होती है | (ख) शरीर में ताकत आ जाती है |

(ग) नकारात्मक आती है | (घ) कमजोरी और बढ़ जाती है |

(iii) हमें समस्याओं के बजाय कहाँ ध्यान केंद्रित करना चाहिए ?

(क) अपनी कमजोरियों पर | (ग) वातावरण पर |

(ख) शक्तियों पर | (घ) पुस्तकों पर |

(iv) लोगों ने अपने कार्य के दबाव को अवरोध की जगह ताकत बना लिया | रचना के आधार पर वाक्य है –

(क) इच्छा वाचक | (ख) संदेह वाचक |

(ग) मिश्र वाकया | (घ) सरल वाकया |

(v) 'सुख-दुःख में प्रयुक्त समास है-

(क) द्वंद्व समास | (ख) बहुव्रिही समास |

(ग) दिगु समास | (घ) कर्मधारय समास |

(vi) सुख-दुःख, शांति-क्रोध और क्रिया-कर्म किस पर निर्भर करते है ?

(क) वातावरण पर | (ख) द्रष्टिकोण पर |

(ग) आर्थिक स्थिति पर | (घ) दबाव पर |

(vii) 'यू द हीलर' पुस्तक के लेखक कौन है ?

(क) हेनरी सिल्वा | (ख) जोस केनरी |

(ग) हेनरी केनरी | (घ) जोस सिल्वा |

(viii) दबाव में ..... होकर ही व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है |

(क) सकारात्मक | (ख) स्वावलंबी |

(ग) कार्यरत | (घ) इनमें से कोई नहीं |

(ix) लेखक के अनुसार हारना क्या है ?

(क) कोशिश | (ख) आदत |

(ग) चुनौती | (घ) प्रक्रिया |

(x) समस्याओं के बारे में लगातार सोचने का क्या परिणाम होगा ?

(क) स्वयं समाप्त हो जाएंगी | (ख) ज्यों की त्यों रहेगी |

(ग) हमें परेशान करती रहेंगी | (घ) और बढ़ जाएंगी |

ग.2 निम्नलिखित दो काव्यांश में से किन्ही एक को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए-(5)

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु विधान किए |
तुम प्राप्त करो उनको न अहो ,
फिर है किसका वह दोष कहो ?
समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो न निराश करो मन को |
किसी गौरव के तुम योग्य नहीं,
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं ?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब है जिसके अपने घर के |
फिर दुर्लभ क्या है उसके मन को ?
नर हो, न निराश करो मन को |
करके विधि-वाद न खोद करो,
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो |
बनता बस उद्दम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है |
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को,
नर हो, निराश करो मन को |

(i) वांछित वस्तुओं को प्राप्त न कर सकने में किसका दोष है ?

(क) अकर्मण्य मनुष्यों का (ख) समाज में व्याप्त असमानता का

(ग) निराश नर-नारियों का (घ) निराशाजनक परिस्थितियों का

(ii) विधि वाद का खेद कौन व्यक्त करते है ?

(क) भाग्यवादी लोग | (ख) विधिवक्ता लोग |

(ग) परिश्रम लोग | (घ) भाग्यशाली लोग |

(iii) इस काव्यांश से क्या प्रेरणा मिलती है ?

(क) नर है, अंत: निराश न हो |

(ख) आशा के साथ जगदीश्वर पर भरोसा रखे |

(ग) लक्ष्य है, अंत: पाने का प्रयास करें |

(घ) नियति निश्चित है, अंत: प्रतीक्षा करें |

(iv) इस काव्यांश से कवि के कौन-से विचारों का परिचय मिलता है ?

(क) कवि अलभ्य धन अर्जित कर गौरव प्राप्ति के लिए प्रेरणा दे रहा है |

(ख) कवि बता रहे है कि भगवान जी के लिए सभी जन एक समान है |

(ग) कवि कर्मण्येवाधिकारस्ते का मार्ग अपना कर्म करने को कह रहे है |

(घ) कवि कह रहे है निराशा त्यागकर नियति स्वीकार करनी चाहिए |

(v) कवि आस्तिक है, इसका पता कौन-सी पंक्ति से चलता है ?

(क) समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो न निराश करो मन को |

(ख) करके विधि-वाद न खोद करो,
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो |

(ग) जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब है जिसके अपने घर के |

(घ) बनता बस उद्दम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है |

अथवा

यादें होती है गहरी नदी में उठे भँवर की तरह
नसों में उतरती कडवी दावा की तरह
या खुद के भीतर छिपे बैठे साँप की तरह
जो औचाक्के में देख लिया करता है
यादें होती है जानलेवा खुशबू की तरह
प्राणों के स्थान पर बैठे जानी दुश्मन की तरह
शरीर में धंसे उस कांच की तरह
जो कभी नहीं दिखता
पर जब-तब अपनी सत्ता का
भरपूर एहसास दिलाता रहता है
यादों पर कुछ भी कहना
खुद को कठघरे में खड़ा करना है
पर कहना मेरी मजबूरी है

(i) कवि ने किसे जानी दुश्मन की तरह माना है ?

(क) मित्रों को

(ख) यादों को

(ग) नदी को

(घ) खुशबू को

(ii) खुद पर कुछ भी कहना खुद को ..... समान है ?

(क) कठघरे में खड़ा करने के |

(ख) सम्मानित करने के |

(ग) नेता समझने के |

(घ) दिन-हीन दिखाने के |

(iii) यादों को मन में हलचल पैदा कर अतीत की गहराइयों में ले जाने के कारण कवि उन्हें क्या कहा है ?

(क) जानी दुश्मन की तरह |

(ख) भीतर छिपे साँप की तरह |

(ग) नदी में उठे भँवर की तरह |

(घ) कडवी दवा की तरह |

(iv) कवि ने यादों के लिए किन-किन विशेषताओं का प्रयोग किया है ?

(क) शरीर में धँसे कांच की तरह |

(ख) नदी में उठे भँवर की तरह |

(ग) 'जानलेवा खुशबू की तरह |

(घ) उपर्युक्त सभी |

(v) यादों के बारे में कुछ भी कहना कवि कि ..... है ?

(क) इच्छा |

(ख) कर्तव्य |

(ग) मजबूरी |

(घ) आदेश |

प्र.3 अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (5)

(i) उलटा पिरामिड शैली में समाचार कितने भागों में बनता जाता

(क) तीन

(ख) चार

(ग) पांच

(घ) दो

(ii) सर्वाधिक खर्चीला जनसंचार माध्यम कौन सा है ?

(क) रेडियो (ख) टेलीविज़न

(ग) समाचार पत्र (घ) इंटरनेट

(iii) हिन्दी में नेट पत्रकारिता का आरम्भ ..... से हुआ –

(क) भास्कर (ख) जागरण

(ग) वेब दुनिया (घ) प्रभा साक्षी

(iv) बहुत अल्प समय बके लिए किसी समाचार संगठन में कार्य करने वाली पत्रकारिता कहलाती है –

(क) पेज थ्री (ख) पीत पत्रकारिता

(ग) अंशकालिक (घ) ये सभी

(v) छिपे कैमरे द्वारा रिकॉर्ड कर भ्रष्टाचार को उजागर करना क्या कहलाता है ?

(क) ब्रेकिंग न्यूज (ख) वोइस् ओवर

(ग) स्टिंग ऑपरेशन (घ) ये सभी

प्र.4 पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए-(5)

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ !
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तारने को नाव बनाए
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ !

(i) 'निज उर के उद्गार' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(क) कवि के अपने हृदय के भाव (ख) अपने रिश्तेदारों के हृदय के भाव

(ग) अपने पड़ोसियों के हृदय के भाव (घ) अपने बच्चों के हृदय के भाव

(ii) कवि कैसा संसार लिए फिरता है ?

(क) यथार्थ का (ख) सपनों का

(ग) भौतिकता का (घ) आदर्श का

(iii) कवि दुखों के संचार रूपी समुद्र में किस प्रकार मस्त बहा करता है ?

(क) दुःख में ज्यादा दुखी होकर

(ख) दूसरों के सुख से दुखी होकर

(ग) दुखों की पीड़ा को हृदय में दबाकर व सांसारिक सुख-दुःख की परवाह न करके

(घ) स्वार्थी बनकर, अपने सुखों को प्राप्त करके

(iv) कवि का हृदय कौन-सी अग्नि से जल रहा है ?

(क) असंतोष व व्याकुलता की अग्नि (ख) शत्रुता की अग्नि

(ग) क्रोध की अग्नि (घ) बुरे भावों की अग्नि

(v) कवि के अनुसार मनुष्य को संसार में किस प्रकार रहना चाहिए |

(क) लड़ाई झगडे करके (ख) शांतिपूर्वक

(ग) कष्टों को हँसते हुए सहकर (घ) दूसरों पर दोषारोपण करके

प्र.5 पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए- (5)

यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते है, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से

केवल एक विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग की शक्ति ही बाजार को देते हैं | न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं | वे लोग बाजार का बाजारुपन बढ़ाते हैं|

जिसका मतलब हैं कि कपट बढ़ाते है | कपट की बढती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी | इस सद्भाव के हास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते है और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं |

(i) बाजार को सार्थकता कौन दे सकता है ?

(क) जिसके पास पैसे की पावर है
(ख) संयमी व्यक्ति
(ग) जिसे अपनी आवश्यकता की जानकारी है
(घ) जिसे बाजार आकर्षित करता है

(ii) खरीदने की शक्ति का घमंड बाजार को क्या प्रदान करता है ?

(क) सार्थकता
(ख) विनाशक शक्ति
(ग) सद्भाव
(घ) संतुष्टि

(iii) बाजार की सार्थकता से अभिप्राय है-

(क) ग्राहकों को संतुष्ट करना
(ख) ग्राहकों को अपने मायाजाल में फंसाना
(ग) पर्चेजिंग पावर को बढ़ावा देना
(घ) ग्राहकों को चमक-दमक से आकर्षित करना

(iv) जो व्यक्ति यह नहीं जानता कि वे क्या चाहते है वे ..... बढ़ाते है |

(क) सार्थकता
(ख) पावर
(ग) बाजारूपन
(घ) सद्भाव

(v) 'सार्थकता' में प्रत्यय है-

(क) सा
(ख) स
(ग) अता
(घ) ता

प्र.6 वितान पाठों के आधार पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-

(i) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू का अपने परिवार से मतभेद क्यों रहता था ?

(क) गरीब रिश्तेदारों के प्रति उपेक्षा का भाव रखना
(ख) प्राचीन संस्कारों को भूल आधुनिकता के रंग में रंगना
(ग) पुराने विचारों के पक्षधर
(घ) महत्वाकांक्षा और प्रगतिशील होना

(ii) किशन दा का वास्तविकता नाम क्या था ?

(क) किशन पंत
(ख) कृष्णानंद पांडे
(ग) केशवनाथ शर्मा
(घ) कृष्ण नारायण पंत

(iii) यशोधर बाबू को अपने बड़े बेटे की नौकरी समझ क्यों नहीं आती थी ?

(क) कार्यानुसार वेतन कम होने से
(ख) प्रतिभानुसार पद नहीं मिलने से
(ग) प्रतिभानुसार वेतन अधिक मिलने से
(घ) कम्पनी के विश्वसनीय न होने से

(iv) 'जूझ' पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाओ से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया ? सही वि प छांटिए-

(क) अकेलापन डरावना है
(ख) अकेलापन उपयोगी है
(ग) अकेलापन अनावश्यक है
(घ) अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है

(v) लेखक के पिता के लिए किसका बुलावा सम्मान्य बात थी ?

(क) देसाई का
(ख) गणपा का
(ग) सौंदलगेकर का
(घ) बोरकर का

(vi) लेखक पुन: पाठशाला जाकर किस कक्षा में बैठा ?

(क) चौथी
(ख) पाँचवीं
(ग) छठी
(घ) सातवीं

(vii) न. वा. सौंदलगेकर किस विषय के अध्यापक थे ?

(क) मराठी
(ख) गणित
(ग) संगीत
(घ) अंग्रेजी

(viii) 'मुअनजो-दड़ो' और हडप्पा किस सभ्यता से संबंधित नगर हैं ?

(क) मेसोपोटामिया
(ख) सिंधुघाटी-सभ्यता
(ग) दजला-फरात की सभ्यता
(घ) मिस्र की सभ्यता

(ix) 'मुअनजो-दड़ो' का क्या अर्थ है ?

(क) मुहाने पर स्थित
(ख) पक्के मकानों का शहर
(ग) मुर्दों का टीला
(घ) मोहन का नगर

(x) 'मुअनजो-दड़ो' में किसकी खेती की जाती थी ?

(क) रबी का
(ग) (क) वा (खा) दोनों की
(ख) खरीफ की
(घ) केवल कपास की

(खंड – ब)

प्र.7 दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए – (6)

(क) मोबाइल खेलो के बढती लत
(ख) एक हृदयस्पर्शी घटना
(ग) जब मैं फेल हो गया
(घ) विकाश की पथ पर भारत

प्र.8 किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए (6)

(क) कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित कर सकते है |
(ख) रेडियो नाटक की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ?
(ग) फीचर क्या है? अच्छे फीचर की किन्ही तीन गुणों का उल्लेख कीजिए ?

प्र.9 निम्नलिखित 3 में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए- (8)

(क) पत्रकारिता लेखन क्या है ? पत्रकार कितने प्रकार के होते है ? स्पष्ट कीजिये |
(ख) विशेष रिपोर्ट कैसे लिखी जाती है ? स्पष्ट कीजिए |
(ग) पत्रकारिता में 'बीट' शब्द का क्या अर्थ है ? बीट रिपोर्टर की रिपोर्ट कब विश्वसनीय मानी जाती है?

प्र.10 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में (6)

(क) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत के माध्यम से वस्तुत: कवि क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए |
(ख) जन्म से ही वे अपने साथ लाते है कपास-कपास के बारे में सोचे कि कपास से बच्चों का सम्बन्ध कैसे बन सकता हैं ?
(ग) कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं ?

11 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में (4)

(क) कवि ने गोरी देह के झिलमिलाने की तुलना किससे की है ?
(ख) तुलसीदास के समय तत्कालीन समाज कैसा था ?
(ग) 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है ?

प्र.12 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में (6)

(क) 'बाजारुपन' से आप क्या समझते है ? कैसे लोग बाजार को सार्थकता प्रदान करते है?
(ख) शिरीष को 'अद्भुत अवधूत' क्यों कहा गया है ?
(ग) डॉ. अंबेडकर ने जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप क्यों माना है |

प्र.13 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में (4)

(क) काले मेघा पानी दे पाठ के लेखक किस कार्य को व्यर्थ मानता है और क्यों ?
(ख) लुट्टन पहलवान ने ढोल को अपना गुरु क्यों कहा है ?
(ग) 'हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है |' प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें

श्रवन तथा वाचन (10)
परियोजना कार्य (10)

अंक-योजना (3)

विषय-हिन्दी (आधार)

विषय कोड संख्या : 302

प्र.1 निम्नलिखित गद्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार विकल्पों कस चयन कीजिये – (10)

(i) (ग) नकारात्मक |

(ii) (क) सफलता प्राप्त होती है |

(iii) (ख) शक्तियों पर |

(iv) (घ) सरल वाकया |

(v) (क) द्वंद्व समास |

(vi) (ख) द्रष्टिकोण पर |

(vii) (घ) जोस सिल्वा |

(viii) (क) सकारात्मक |

(ix) (ख) आदत |

(x) (घ) ज्यों की त्यों रहेगी |

प्र.2 निम्नलिखित दो काव्यांश में से किन्ही एक को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (5)

(i) (क) अकर्मण्य मनुष्यों का

(ii) (क) भाग्यवादी लोग |

(iii) (ग) लक्ष्य है, अंत: पाने का प्रयास करें |

(iv) (ग) कवि कर्मण्येवाधिकारस्ते का मार्ग अपना कर्म करने को कह रहे है |

(v) (ग) जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब है जिसके अपने घर के |

अथवा

(i) (ख) यादों को

(ii) (क) कठघरे में खड़ा करने के |

(iii) (ग) नदी में उठे भँवर की तरह |

(iv) (घ) उपर्युक्त सभी |

(v) (ग) मजबूरी |

प्र.3 अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (5)

(i) (क) तीन

(ii) (घ) इंटरनेट

(iii) (ग) वेब दुनिया

(iv) (ग) अंशकालिक

(v) (ग) स्टिंग ऑपरेशन

प्र.4 पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए-(5)

(i) (क) कवि के अपने हृदय के भाव

(ii) (ख) सपनों का

(iii) (ग) दुखों की पीड़ा को हृदय में दबाकर व सांसारिक सुख-दुःख की परवाह न करके

(iv) (क) असंतोष व व्याकुलता की अग्नि

(v) (ग) कष्टों को हँसते हुए सहकर

प्र.5 पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए- (5)

(i) (ग) जिसे अपनी आवश्यकता की जानकारी है

(ii) (ख) विनाशक शक्ति

(iii) (क) ग्राहकों को संतुष्ट करना

(iv) (ग) बाजारूपन

(v) (घ) ता

प्र.6 पठित पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न- (10)

(i) (ग) पुराने विचारों के पक्षधर

(ii) (ख) कृष्णानंद पांडे

(iii) (ग) प्रतिभानुसार वेतन अधिक मिलने से

(iv) (ख) अकेलापन उपयोगी है

(v) (क) देसाई का

(vi) (ख) पाँचवीं

(vii) (क) मराठी

(viii) (ख) सिंधुघाटी-सभ्यता

(ix) (ग) मुर्दों का टीला

(x) (क) रबी का

(खंड-ब)

प्र.7 दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए – (6)

भूमिका (1)

विषयवस्तु (4)

भाषा (1)

प्र.8 किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए (6)

(क) * कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके |

* कहानी में घटित घटनाओं के आधार पर द्रश्यों का निर्माण |

* ध्वनि और प्रकाश की व्यवस्था करके |

* ध्वनि और प्रकाश की व्यवस्था करके |

(कोई तीन बिंदु अपेक्षित)

(ख) * रेडियो नाटक में पत्रों से सम्बंधित सभी जानकारियों संवादों के माध्यम से मिलती है |

* पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर की जाती है |

* रेडियो नाटक का पूरा कथानक संवादों पर आधारित होता है

* इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है |

(ग) फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेकन है |

फीचर के मुख्य गुण –

- विश्वसनीयता
- सरसता एवं सहजता
- प्रचलित शब्दावली का प्रयोग

प्र.9 निम्नलिखित 3 में से किन्ही 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए- (8)

(क) अख़बार या अन्य समाचार माध्यमों में कार्य करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते है, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते है | पत्रकारीय लेखन तीन प्रकार के होते है –

* पूर्णकालिक पत्रकार – पूर्णकालिक पत्रकार से तात्पर्य किसी समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतन-भोगी कर्मचारी से है

* अंशकालिक पत्रकार - अंशकालिक पत्रकार वह होता है जो किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर कार्य करता है

* फ्रीलांसर अथवा स्वतंत्र पत्रकार - फ्रीलांसर अथवा स्वतंत्र पत्रकार किसी महत्वपूर्ण समाचार-पत्र से सम्बंधित नहीं होता है बल्कि वह समाचार-पत्रों में भुगतान के आधार पर लेख लिखता है |

(ख) विशेष रिपोर्ट गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या का परिणाम होता है | इन्हें किसी विशेष समस्या, मुद्दे या घटना की छानबीन के बाद लिखा जाता है | यह लेखन-कार्य तथ्यों पर पूर्णत: आधारित होता है | रिपोर्ट लेखन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दे-

* विशेष प्रकार का लेखन कार्य उल्टा पिरामिड शैली में किया जाता है |

* कभी-कभी रिपोर्ट को फीचर-शैली में भी लिखा जाता है |

* बहुत विस्तृत रिपोर्ट में उल्टा पिरामिड और फीचर शैली को कभी-कभी आपस में मिला लिया जाता है |

* कई बार लम्बी रिपोर्ट को श्रंखलाबद्द करके कई दिन चाप जाता है

(ग) समाचारों में, राजनीति, अपराध, खेल, आर्थिक, फिल्म, तथा कृषि सम्बन्धी होते है | संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा उनके ज्ञान एवं रुचि के आधार किया जाता है | मीडिया की भाषा में इसे ही 'बीट' कहते है | बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा उसकी पुष्टि करके विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए | तब ही उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है |

प्र.10 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में (6)

(क) * जीवन के अकेलेपन की पीड़ा की अभिव्यक्ति

* कर्मरत पथिक की थकान इस विचार से दूर हो जाती है कि उसके परिजन उसकी प्रतीक्षा में है

* अकेलेपन का बोध लौटते कदमों को शिथिल एवं मन को विह्वल करता हैं |

(ख) कवि कहता है कि बच्चे बिलकुल कपास की भांति होते ही होते है; जैसे कपास अपने छोटे रूप में कोमल और गूदेदार होता है उसी प्रकार बच्चे भी कोमल स्वभाव के होते है | जब बच्चे पतंग को आसमान में पहुँचाने के लिए हवा में कूदते है तो पतंग के साथ-साथ खुद भी उड़ने का प्रयास करने लगते है | ऐसा प्रतीत होता है की मानो बच्चे नहीं बल्कि कपास का टुकड़ा हवा में उड़ने का प्रयास कर रहा हो |

(ग) कवि कुंवर नारायण के अनुसार कविता कभी नहीं मुरझाती है | वह अमर होती है | वह युगों-युगों तक मानव समाज को प्रभावित करती थी | कविता की इसी जीवतंता के करण इसकी महक कभी कम नहीं होती सदैव बरकरार रहती है | कविता के माध्यम से जीवन मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते है|

प्र.11 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में (4)

(क) कवि ने प्रात:कालीन सूर्य की समानता गोरी देह के झिलमिलाने से की है | प्रात:काल के समय वातावरण के साफ़ व नमी युक्त होने के कारण सूर्य चमकता प्रतीत होता है |

(ख) तुलसीदास के समय में सामाजिक मान्यताएँ व परम्पराएं नष्ट हो रही थीं | समाज में धार्मिक अंधविश्वास फ़ैल रहा था जिनमें पूरा समाज फंसता जा रहा था | समाज में नारी की स्थिति शोचनीय है |

(ग) अक्षय का अर्थ है नष्ट न होने वाला | रस का अक्षयपात्र कभी भी खाली नहीं होता वह जितना बटा जाता है उतना ही भरता जाता है | यह रस चिरकाल तक आनंद देता है | खेत का नाज तो ख़त्म हो जाता है, लेकिन काव्य का रस कभी खत्म नहीं होता |

प्र.12 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 60 शब्दों में (6)

(क) बाजारुपन से बाजार में कपट भाव बढ़ता है और अपनापन के अभाव में आपस में उचित व्यवहार में कमी आ जाती है | ग्राहक और विक्रेता के सम्बन्ध केवल व्यावसायिक ही रह जाते है |

जो अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझ कर बाजार का उपयोग करते है | यदि हम बाजार की चमक-दमक में फंस कर रह गए तो वह हमें असंतोष तृष्णा घृणा एवं ईर्ष्या से घायल कर बेकार बना देता है |

(ख) अवधूत वह सन्यासी होता है जो विषय वासनाओं से ऊपर उठ जात जाता है | सुख-दुःख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता फूलता है | वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन रस बनाए रखता है, इसी तरह शिरीष का वृक्ष है | वह भयंकर गर्मी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है

(ग) डॉ. अंबेडकर ने जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप माना है क्युकि यह श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन करती है ऐसा विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं होता |

व्यक्ति की कार्य दक्षता योग्यता एवं क्षमता का विचार किए बिना माता पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार यह जन्म से ही उनका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है |

प्र.13 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए लगभग 40 शब्दों में (4)

(क) लेखक सूखे के समय मेंढक मण्डली पर पानी फेंकना व्यर्थ मानता है | दिन-दिन गहराते पानी के संकट के समय मेंढक मण्डली पर पानी फेंकना पानी की बरबादी है |

(ख) कुश्ती खेलने में लुट्टन का कोई गुरु नहीं, स्वयं ही दाव-पेच सीखे, ढोल की आवाज से उसे लड़ने का जोश मिलता है |

(ग) कभी-कभी कठोर व्यवहार करना आवश्यक हो जाता है, और कठोर व्यवहार करने से हम कभी-कभी ठगे जाने भी बच जाते है |

प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र- 4 2022-23

विषय हिंदी (आधार)

(विषय कोड 302)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक-80**

सामान्य निर्देश:-

- प्रश्न पत्र दो खंडों- खंड 'अ' और 'ब' का होगा।
- खंड 'अ' में 45 वस्तु परक प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे।

खंड-'अ' (वस्तु परक प्रश्न)अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

[1X10=10]

मित्रता को निभाना भी मुश्किल कार्य है। इसे ईर्ष्या, द्वेष, अपमान, तिरस्कार, उपहास मानसिक व हार्दिक संकीर्णता तथा संदेह से बचाना जरूरी है। दोस्ती की सौंधी-सी सुगंध से जीवन सराबोर -रखना है, तो कुछ बातों को ध्यान में रखना होगा। मित्र ऐसा हो जो सही मार्गदर्शन कर सके, आपके लिए सही अर्थों में हमदर्द बन सके जो आपको नेक सलाह दें और आपके दुख दर्द में सम्मिलित हो सके। जो आपको निराशा और हताशा का शिकार ना बनने दें, बल्कि आशावाद और ऊर्जावान बनाने में सहायता करें। सच्चाई, ईमानदारी, परस्पर साझीदारी, प्रेम, विश्वास, निस्वार्थ भावना, एक दूसरे के लिए हर पल सर्वस्व त्याग की भावना मित्रता को सफलता के उच्चतम पायदान पर पहुंचा देते हैं। अतः इनको ध्यान में रखें मित्रता में धन को कभी ना आने दे, ऐसा वक्त आने पर सभी संबंधों को तोड़ने में अहम भूमिका अदा करता है। दोस्ती में कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए, दोस्ती जहां तक संभव हो अपनी बराबरी वालों से ही करनी चाहिए अन्यथा कभी-कभी बातों में किसी प्रकार का अहम मित्रता को जार-जार कर सकता है। सच्ची मित्रता में एहसान और मेहरबानी का कोई स्थान नहीं होता, सिर्फ मित्रता होती है। ऐसी-वैसी कोई बात घटित हो जाए तो उसका जिक्र तीसरे के सामने नहीं करें संदेह व अविश्वास को कभी पनपने ही ना दें। मित्रता कितनी भी अटूट वह घनिष्ठ क्यों ना हो, कभी भी मित्र को किसी गलत कार्य के लिए प्रेरित या उत्साहित ना करें। यदि किसी परिस्थितिवश या अन्य कारण विशेष से वह कोई अनैतिक किया गलत राह पर जा रहा हो तो तत्काल मार्ग प्रशस्त करें व नेक सलाह व उचित मार्गदर्शन दें।

(i) मुश्किल कार्य क्या है?
- (1) मित्रता को निभाना
- (2) मित्रता करना
- (3) उपरोक्त दोनों
- (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ii) मित्रता को किससे बचाना आवश्यक है?
- (1) ईर्ष्या द्वेष से
- (2) अपमान तिरस्कार
- (3) उपहास मानसिक संकीर्णता
- (4) उपरोक्त सभी

(iii) मित्र कैसा होना चाहिए?
- (1) जो सही मार्गदर्शन कर सके
- (2) हमदर्द हो नेक सलाह दे
- (3) हताशा व निराशा से बचाए
- (4) उपरोक्त सभी

(iv) मित्रता के मध्य किसे नहीं आने देना चाहिए?
- (1) धन
- (2) विश्वास

(3) त्याग की भावना

(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

(v) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक चुनकर लिखिए:-

कथन (A) सच्चा मित्र औषधि के समान है।

कथन (R) सच्चा मित्र के समान जीवन में सहीं राह दिखाता है।

(1) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(2) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सहीं है।

(3) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है।

(4) कथन (A) सही है लेकिन कारण R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(vi) निम्नलिखित प्रश्न पर विचार कीजिए:-

मित्रता को सफल बनाने वाले गुण कौन से हैं?

(1) सच्चाई ईमानदारी त्याग की भावना

(2) प्रतिस्पर्धा की भावना

(3) संदेह की भावना

(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /कौन-से सही/ सही है

(1) केवल 1

(2) केवल 2

(3) केवल 1 और 2

(4) केवल 1 और 3

(vii) परिस्थिति शब्द में उपसर्ग है ?

(1) पर

(2) परि

(3) प्र

(4) पर्

(viii) निम्नलिखित विलोम शब्द के युग्म में गलत युग्म का चयन कीजिए ?

(1) सुगंध-खुशबू

(2) नैतिक-अनैतिक

(3) अविश्वास-विश्वास

(4) मित्रता-शत्रुता

(ix) मित्रता शब्द है ?

(1) विशेषण

(2) भाववाचक संज्ञा

(3) क्रिया

(4) क्रिया विशेषण

(x)गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक का चयन कीजिए?

(1) मित्र

(2) मित्रता

(3) मित्र का त्याग

(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

फिर से नहीं आता समय, जो एक बार चला गया। **[1X5=5]**

जग में कहो बाधा रहित कब कौन काम हुआ भला।

बहती नदी सूखे अगर उस पार मैं इसके चलूं।
इस सोच में बैठा पुलिन पर, पार जा सकता भला?
किस रीती से काम, कब करना बनाकर योजना,
मन में लिए आशा प्रबल दृढ़ जो वही बढ़ जाएगा।
उसको मिलेगा तेज बल अनुकूलता सब और से
कब कर्मयोगी, वीर, अनुपम साहसी सुख पायेगा।
यह वीर भोग्या, जो हृदय तल में बनी वसुधा सदा,
करती रही आह्वान है, युग वीर का पुरुषत्व का।
कठिनाइयों में खोज का पथ, ज्योति पूरित जो करें,
विजय वही होता धरणि-सुत वरण अमरत्व का

(i) एक बार जाने के बाद क्या वापस लौटकर नहीं आता है ?
(1) धन
(2) राज्य
(3) समय
(4) स्वास्थ्य

(ii) निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार कीजिए।
बहती नदी के माध्यम से कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?
(1)जल का महत्त्व
(2) नदी का महत्त्व
(3) बाधाओं से युक्त जीवन
(4) समय का अभाव

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन-से सही/ सही है:-
(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) केवल 1 और 2
(4) केवल 1 और

(iii) जीवन में कैसे व्यक्ति प्रगति करते हैं ?
(1) जो योजना बनाकर कार्य करते हैं
(2) जिसके मन में आशा का प्रबल भाव होता है
(3) उपरोक्त दोनों
(4) दोनों में से कोई नहीं

(iv) वसुंधरा किसका आह्वान करती है?
(1) कर्मयोगी और वीर पुरुषों का
(2) भयभीत और का पुरुषों का
(3) भाग्यवादी व्यक्ति का
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

(v) दृढ़ निश्चयी वीर को क्या लाभ प्राप्त होते हैं ?
(1) सफलता प्राप्त करता है
(2) सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करता है
(3) जीवन में निरंतर आगे बढ़ता है
(4) उपरोक्त सभी

अथवा

प्रभु ने तुमको कर दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है किसका वह दोष कहो?
समझो ना अलभ्य किसी धर्म को
नर हो ना निराश करो मन को
किस गौरव के तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जन हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घट के
फिर दुर्लभ क्या उसके मन को?
नर हो, ना निराश करो मन को
करके विधि-वाद ना भेद करो
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो ना निराश करो मन को।

(i) प्रभु ने मनुष्यों को क्या दान में दिया है?

(1) हाथ
(2) धन
(3) सफल जीवन
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ii) निम्नलिखित प्रश्न पर विचार कीजिए:-

वांछित वस्तुओं को प्राप्त न कर सकने में किसका दोष है?

(1) परिश्रमी मनुष्य का
(2) आधुनिकतावादी प्रवृत्ति का
(3) कर्म व श्रम ना करने वाले मनुष्य का
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन-से सही/ सही है:-

(1) केवल 1
(2) केवल 3
(3) केवल 3 और 4
(4) केवल 1 और 2

(iii)विधिवाद का खेद कौन व्यक्त करते हैं?

(1) परिश्रम करने वाले
(2) भाग्यवादी मनुष्य
(3) कर्म निश्ड एवं साहसी
(4) उदार चित वाले

(iv)काव्यांश में क्या प्रेरणा दी गई है ?

(1) निराश ना होने की
(2) लक्ष्य प्राप्ति का उचित प्रयास करने की
(3) कर्म निष्ठा एवं साहसी बनने की
(4) उपरोक्त सभी

(v) कवि किस प्रकार के जीवन को धिक्कार योग्य मानता है?

(1) उद्यम पूर्ण जीवन
(2) सुख भोग पूर्ण जीवन
(3) खेद पूर्ण जीवन
(4) निष्क्रिय जीवन

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- [1X5=5]

(i) विशेष लेखन के लिए किस प्रकार की भाषा शैली अपेक्षित है?

(1) साहित्यिक भाषा

(2) सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा

(3) बाजारू भाषा

(4) हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा

(ii) हिन्दी में नेट पत्रकारिता किसके साथ आरंभ हुई?

(1) वैब दुनिया के साथ

(2) दैनिक जागरण के साथ

(3) दैनिक भास्कर के साथ

(4) राजस्थान पत्रिका के साथ

(iii)भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर कब आरंभ हुआ?

(1) 2001 में

(2) 2002 में

(3) 2003 में

(4) 2004 में

(iv) इनमें समाचार पत्र की आवाज़ किसे माना जाता है?

(1) फीचर

(2) संपादक के नाम पत्र

(3) संपादकीय

(4) स्तंभ लेखन

(v) निम्नलिखित कथन कारण को कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक चुनकर लिखिए:-

कथन (A) फीचर सृजनात्मक लेख है।

कथन (R) फीचर में आत्मनिष्ठता होती है।

(1) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(2) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) गलत है।

(3) कथन (A) तथा को कारण (R) दोनों गलत है।

(4) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए।

[1X5=5]

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या हैं
जल्दी बताइए वह दुख बताइए

सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता हैं
कैसा
यानी कैसा लगता हैं
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)

बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कायक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं

(I)कैमरे में बंद कविता में कवि ने किसका चित्रण किया है ?

(1) अपाहिज का
(2) रोगी का
(3) भगत जी का
(4) इनमे से कोई नहीं

(II)कैमरे में बंद अपाहिज कविता में दुर्बल को हम कहाँ ले जाएंगे ?

(1) अस्पताल
(2) स्टूडियो
(3) बंद कमरे में
(4) मैदान में

(III) अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा ?

(1) अपनी कहानी
(2) अपना दुःख
(3) अपना सुख
(4) अपनी जानकारी

(IV)दूरदर्शन वाले किसकी संवेदना से खिलवाड़ कर रहे हैं ?

(1) कैमरा वाले की
(2) अपाहिज की
(3) खुद की
(4) दर्शकों की

(V)निम्नलिखित प्रश्न पर विचार कीजिए:-

कैमरे में बंद अपाहिज कविता में हम दूरदर्शन पर क्या बोलेंगे ?

(1) हम बलवान हैं
(2) हम समर्थ और शक्तिवान हैं
(3) हम कमज़ोर हैं
(4) हम दुर्बल हैं

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /कौन-से /सही सही है:-

(1) केवल 1
(2) केवल 2
(3) केवल 3 और 4
(4) केवल 1 और 4

प्रश्न 5. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए। [1X5=5]

जाड़े का दिन। अमावस्या की रात- ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे पीड़ित गाँव । भयभीत शिशु की तरह थर- थर काँप रहा था ।पुरानी और उजड़ी बांस - फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य। अंधेरा और निस्तब्धता। अंधेरी रात चुपचाप आंसू बहा रही थी ।निस्तब्धता करुण सिसकियों और आँखों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश पर तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उनकी भावुकता अथवा असफलता पर खिल खिलाकर हँस पड़ते थे। सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी गाँव कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर दे दी थी। गाँव की झोपड़ियों में कै करने की आवाज़, हे राम हे! भगवान! की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी ।बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ- माँ' पुकार कर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी।

(i) पाठ का प्रारंभ किस ऋतु के दिनों से होता है?

(1) बसंत।

(2) ग्रीष्म ।

(3) जाड़ा।

(4) पावस

(ii) किसकी ठंडी रात थी?

(1) चौदस ।

(2) पूर्णिमा

(3) अष्टमी

(4) अमावस

(iii) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
उसके दिए दिए गए विकल्पों में से कोई एक
चुनकर लिखिए।

कथन (A) पूरे गांव में अंधकार और सन्नाटा का साम्राज्य था।

कथन (R) इस भयंकर वातावरण से आशा और उत्साह
समाप्त हो रहा था।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A)गलत है लेकिन कारण (R) सही है

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है

(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है

(iv)किसकी आवाज़ निस्तब्धता को भंग कर रही थी?

(1) सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़

(2) लोगों की आवाज़

(3) शेर की आवाज़

(4) पानी की आवाज़

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए।

(i) यशोधर बाबू अपने बच्चों तथा पत्नी से क्या चाहते थे?

(1) पैसा

(2) सम्मान

(3) परंपराओं का पालन

(4) मुक्ति

(ii) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के कथानायक का नाम क्या है?

(1) यशोधर बाबू
(2) भूषण
(3) किशनदा
(4) चड्ढा

(iii)यशोधर बाबू किसको अपना आदर्श मानते थे?
(1) भूषण को
(2) किशनदा को
(3) अपनी पत्नी को
(4) अपने साले भी

(iv) यशोधर बाबू का अपने बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार था?
(1) स्नेहपूर्ण
(2) ईष्यापूर्ण
(3) घृणापूर्ण
(4) अलगाव भरा

(v) निम्नलिखित प्रश्न पर विचार कीजिए।
लेखक का दादा जल्दी कोल्हू क्यों चलाता था?
(1) जल्दी काम खत्म करने के लिए
(2) अधिक पैसे के लिए
(3) अपनी आवारागर्दी के लिए
(4) आराम करने के लिए

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन-से सही/ सही है

(क) केवल 1
(ख) केवल 2
(ग) केवल 3
(घ) केवल 3 और 4

(vi)पढ़ाई के लिए लेखक अपनी माँ के साथ किसके पास गया?
(1) दत्ता जी राव
(2) दादा
(3) सौंदलगेकर
(4) इनमें से कोई नहीं

(vii) लेखक की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है?
(1) कुत्ते के समान
(2) शेर के समान
(3) जंगली सूअर के समान
(4) चीते के समान

(viii) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A) मुअनजो-दड़ो के बारे में धारणा है कि वह अपने दौर में घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा।
कथन (R) पाँच हजार साल पहले यह आज के "महानगर" की परिभाषा को भी लाँघता होगा।
(क) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है

(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है

(ix) मुअनजो-दड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है?

(1) 1000 साल

(2) 2000 साल

(3) 3000 साल

(4) 5000 साल

(x) मुअनजो-दड़ो से सिंधु नदी कितनी दूरी पर बहती है?

(1) 4 किलोमीटर

(2) 5 किलोमीटर

(3) 10 किलोमीटर

(4) 6 किलोमीटर

खंड-'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्रश्न 7. दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

[6X1=6]

(1) सोशल मीडिया का जाल

(2) परीक्षा के दिन

(3) दहेज प्रथा एक सामाजिक समस्या

(4) कन्या भ्रूण हत्या

प्रश्न 8. निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए। [3X2=6]

(1) कहानी का नाट्य- रूपांतरण करते समय किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

(2) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए ?

(3) रेडियो नाटक क्या है? तथा रेडियो नाटक कैसे बनता है?

प्रश्न 9. निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए। [4X2=8]

(1) उल्टा पिरामिड शैली क्या है? इसके भागों का उल्लेख कीजिए।

(2) पत्रकारिता में बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है?

(3) फीचर कितने प्रकार के होते हैं?

प्रश्न 10. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

[3X2=6]

(1.)तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी ?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ/काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ। इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आती?

(2)"हम"समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे" पंक्ति के माध्यम से कवि ने दूरदर्शन के कार्यक्रमों की व्यवसायिकता पर तीखा व्यंग्य किया हैं।

(3)'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

प्रश्न 11. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

[2X2=4]

(1) सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

(2) 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता'-पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

(3) "परदे पर वक्त की कीमत है" कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?

प्रश्न 12. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

[3X2=6]

(1) भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

(2) बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

(3) इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व है?

प्रश्न 13. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

[2X2=4]

(4) गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा ?

(5) हाय, वह अवधूत आज कहाँ है? ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

(6) लेखक के मत से दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 4- 2022-23

विषय- हिंदी (आधार)

कक्षा -बारहवीं

अंक योजना

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक- 80**

सामान्य निर्देश:-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ट बनाना है।
- खंड- अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।
- खंड- ब मैं वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है। यह सुझावात्मक एवं सांकेतिक है ।
- यदि परीक्षार्थी इन संकेतिक बिंदुओ से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दें तो उन्हें अंक दिए जाएं ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड-'अ' वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम संख्या		उत्तर	अंक विभाजन
प्रश्न 1.	(i)	(4) उपरोक्त में से कोई नहीं	**1**
	(ii)	(4) उपरोक्त सभी	**1**
	(iii)	(4) उपरोक्त सभी	**1**
	(iv)	(4) उपरोक्त में से कोई नहीं	**1**
	(v)	(क) कथन (A) कथन तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	**1**
	(vi)	(1) केवल 1	**1**
	(vii)	(2) परि	**1**
	(viii)	(1) सुगंध-खुशबू	**1**
	(ix)	(2) भाववाचक संज्ञा	**1**
	(x)	(2) मित्रता	**1**
प्रश्न 2.	(i)	(3) समय	**1**
	(ii)	(क) केवल 1 जल का महत्त्व	**1**
	(iii)	(3) उपरोक्त दोनों	**1**

	(iv)	(1) कर्मयोगी और वीर पुरुषों का	**1**
	(v)	(4) उपरोक्त सभी	**1**
		अथवा	
	(i)	(1) हाथ	**1**
	(ii)	(3) कर्म व श्रम ना करने वाले मनुष्य का	**1**
	(iii)	(2) भाग्यवादी मनुष्य	**1**
	(iv)	(4) उपरोक्त सभी।	**1**
	(v)	(4) निष्क्रिय जीवन	**1**
प्रश्न 3.	(i)	(2) सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा	**1**
	(ii)	वेब दुनिया	**1**
	(iii)	(3) 2003 में	**1**
	(iv)	(3) संपादकीय	**1**
	(v)	(4) उपरोक्त तीनों	**1**
प्रश्न 4.	(i)	(1) अपाहिज का	**1**
	(ii)	(3) बंद कमरे में	**1**
	(iii)	(2) अपना दुःख	**1**
	(iv)	(2) अपाहिज की	**1**
	(v)	(ख) केवल 2	**1**
प्रश्न 5.	(i)	(3) जाड़ा।	**1**
	(ii)	(4) अमावस	**1**
	(iii)	(1) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	**1**
	(iv)	(1) अँधेरी रात	**1**
	(v)	(1) सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़	**1**
प्रश्न 6.	(i)	(2) सम्मान	**1**
	(ii)	(1) यशोधर बाबू	**1**
	(iii)	किशनदा	**1**

(iv)	(4) अलगाव भरा	**1**
(v)	(ख) केवल-2 अधिक पैसे के लिए	**1**
(vi)	(1) दत्ता जी राव	**1**
(vii)	(3) जंगली सूअर के समान	**1**
(viii)	(2) कथन (A)तथा कारण® दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	**1**
(ix)	(4) 5000 साल	**1**
(x)	(2) 5 किलोमीटर	**1**

खंड-'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्रश्न 7. किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख **(6x1=6)**

आरंभ – 1 अंक

विषय वस्तु – 3 अंक

प्रस्तुति – 1 अंक

भाषा – 1 अंक

प्रश्न 8. (1) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना- **(3x2=6)**

- कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
- नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।
- नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
- कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहि
- कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है

(2) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए-

- जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
- विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।
- विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए।
- विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए।
- अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए।

(3) रेडियो श्रव्य माध्यम है। और दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है। श्रव्य माध्यम के अंतर्गत श्रव्य काव्य के अंतर्गत आने वाले नाटक का प्रसारण कैसे हो सकता है ? यह बाद का प्रश्न है। ऐसे नाटक की रचना कैसे होगी यह पहला प्रश्न है? नाटक का रंगमंच से सीधा संबंध है लेकिन रेडियो नाटक रंगमंच के लिए या मंचन लिए नहीं लिखा जाता। श्रव्य माध्यम पर श्रोताओं के लिए इस नाटक का प्रसारण होता है। यह दृश्य से वंचित हो जाता है और भी बहुत कुछ इसकी परिधि में नहीं आ सकता।

मंचीय नाटक रंगमंच पर अभीहित होता है और केन्द्र में दर्शक होते हैं। दर्शकों के लिए लोकरंजन की व्यवस्था नाटक के तत्वों और उपकरणों के माध्यम से की जाती है। घटना विन्यास ऐसा होता है कि कौतूहल बना रहे । तनाव का सृजन हो पात्रों का प्रभावशाली अभिनय हो सके। प्रकाश व्यपस्था और संगीत का अतिरिक्त योगदान होता है। प्रस्तुतिक्रम में निर्देशकीय परिकल्पना महत्वपूर्ण होती है लेकिन दर्शकों के सामने अभिनेता हो होता है। उसे त्वरित प्रतिक्रियाएँ मिलती है। इन्ही प्रतिक्रियाओं के आधार पर नाटक सफल या असफल होता है। रंगमंच पर नाटक कई पात्रों और रंग व्यवस्थापको के माध्यम से प्रस्तुत होता है और दर्शकों को सामूहिक रूप से कलास्वादन का अवसर मिलता है।

प्रश्न 9. (1) उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन की ऐसी शैली है जिसमें सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं जैसे कौन, कब, कैसे, कहां, क्यों के बारे में पहले लिखा जाता है और बाद में समाचार से जुड़ी हुई अन्य जानकारियों को लिखा जाता है जिससे समाचार पढ़ने वाला व्यक्ति समाचार को जल्दी समझ सके। उल्टा पिरामिड शैली को हेड लाइन, इंट्रो और बॉडी में बांटा गया है, इन्हीं तीन भागों को मिलाकर उल्टा पिरामिड शैली बनती है। **(4x2=8)**

(2) संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाना बीट कहलाता है।

बीट रिपोर्टिंग अपने बीट में जो कुछ दिखता है, जिस में कोई खबर है, वह देना बीट रिपोर्टिंग। आम तौर पर यह सर्वसाधारण खबरें होती है, जो कई समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई दिखती है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग स्पष्ट करता है कि, इस रिपोर्ट के लिए पत्रकार ने कुछ ज़्यादा मेहनत और अभ्यास किया हो। वह उसकी विशेष खबर होती है

(3) फीचर के निम्नलिखित प्रकार होते हैं-

- व्यक्तिगत फीचर
- समाचार फीचर
- त्यौहार पर्व संबंधी फीचर
- रेडियो फीचर
- विज्ञान फीचर
- चित्रात्मक फीचर
- व्यंग्य फीचर
- यात्रा फीचर

प्रश्न 10. (1) तुलसीदास के युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर हो गए थे। तुलसी के संबंध में भी समाज ने उनके कुल व जाति पर प्रश्नचिहन लगाए थे। कवि भक्त था तथा उसे सांसारिक संबंधों में कोई रुचि नहीं थी। वह कहता है कि उसे अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से नहीं करना। इससे किसी की जाति खराब नहीं होगी क्योंकि लड़की वाला अपनी जाति के वर ढूँढ़ता है। पुरुष-प्रधान समाज में लड़की की जाति विवाह के बाद बदल जाती है। तुलसी इस सवैये में अगर अपनी बेटी की शादी की बात करते तो संदर्भ में बहुत अंतर आ जाता। इससे तुलसी के परिवार की जाति खराब हो जाती। दूसरे, समाज में लड़की का विवाह न करना गलत समझा जाता है। तीसरे, तुलसी बिना जाँच के अपनी लड़की की शादी करते तो समाज में जाति-प्रथा पर कठोर आघात होता। इससे सामाजिक संघर्ष भी बढ़ सकता था। **(3x2=6)**

(2) "हम समर्थ शक्तिमान" में "हम" शब्द का प्रयोग दूरदर्शन के कार्यक्रम के संचालक के लिए किया गया है। दूरदर्शन व मीडिया के लोग अपने आप को बहुत सामर्थ्यवान , शक्तिवान व ताकतवर समझते है। जिससे उनकी मानसिकता का पता चलता है। उन्हें लगता हैं कि वो कार्यक्रम को जैसे चाहेंगे वैसे दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर देंगे। यहां तक कि वो किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं।

"हम एक दुर्बल को लाएँगे" पंक्ति में दूरदर्शन के कार्यक्रम के संचालक अपने सामने बैठे व्यक्ति या आम जनमानस को कमजोर समझते हैं। जिनसे वो अपने बेतुके सवाल पूछकर कर उन्हें रुला भी सकते हैं।

(3) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – वाक्य की कई बार आवृत्ति कवि ने की है। इससे आशय है कि जीवन बहुत छोटा है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने के बाद अस्त हो जाता है ठीक वैसे ही मानव जीवन है। यह जीवन प्रतिक्षण कम होता जाता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक न एक दिन समाप्त हो जाएगा। हर वस्तु नश्वर है। कविता की विशेषता इसी बात में है। कि इस वाक्य

के माध्यम से कवि ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। चाहे राहगीर को अपनी मंजिल पर पहुँचना हो या चिड़ियों को अपने बच्चों के पास। सभी जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते हैं। उन्हें डर है कि यदि दिन ढल गया तो अपनी मंजिल तक पहुँचना असंभव हो जाएगी

प्रश्न 11. (1) प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होता रहता है। जब तेज़ बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की गरमी भी चली गई। इसके बाद आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। इस महीने में प्रकृति में अनेक परिर्वन आते हैं – **(2x2=4)**

- सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश की आँखों जैसी दिखती है।
- शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। गरमी समाप्त हो जाती है।
- प्रकृति खिली-खिली दिखाई देती है।
- आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।
- फूलों पर तितलियाँ मँडराती दिखाई देती हैं।
- सभी लोग खुले मौसम में आनंदित हो रहे हैं।

(2) इस कविता में कवि ने 'और' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया है। इस शब्द की अपनी ही विशेषता है जिसे विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया गया है। मैं और में इसमें और शब्द का अर्थ है कि मेरा अस्तित्व बिल्कुल अलग है। में तो कोई अन्य ही अर्थात् विशेष व्यक्ति हूँ। और जग' में और शब्द से आशय है कि यह जगत भी कुछ अलग ही है। यह जगत भी मेरे अस्तित्व की तरह कुछ और है। तीसरे 'और' का अर्थ है के साथ। कवि कहता है कि जब मैं और मेरा अस्तित्व बिलकुल अलग है। यह जगत भी बिलकुल अलग है तो मेरा इस जगत के साथ संबंध कैसे बन सकता है। अर्थात् मैं और यह संसार परस्पर नहीं मिल सकते क्योंकि दोनों का अलग ही महत्त्व है।

(3) "पर्दे पर वक्त की कीमत है" यह कथन दूरदर्शन के कार्यक्रमों की व्यावसायिक को दिखता हैं। और समय की कमी टेलीविजन के महत्व को दर्शाती है। दरअसल टेलीविजन वालों के पास हर कार्यक्रम के लिए एक निश्चित समय होता हैं । और संचालक भी यह बताने की कोशिश कर रहा है कि दूरदर्शन पर किसी कार्यक्रम को दिखाना कितना महंगा पड़ता है और वह खुद कितने महत्वपूर्ण संचार माध्यम में काम कर रहा है। कार्यक्रम के संचालक को विकलांग व्यक्ति के दुःख दर्द से कोई मतलब नहीं है ।उसे तो अपने कार्यक्रम को लोकप्रिय बना कर कम से कम समय में अधिक से अधिक पैसा कमाना हैं।

प्रश्न 12. (1) भक्तिन का वास्तविक नाम था-लछमिन अर्थात लक्ष्मी। लक्ष्मी नाम समृद्ध व ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता है, परंतु यहाँ नाम के साथ गुण नहीं मिलता। लक्ष्मी बहुत गरीब तथा समझदार है। वह जानती है कि समृद्ध का सूचक यह नाम गरीब महिला को शोभा नहीं देता। उसके नाम व भाग्य में विरोधाभास है। वह सिर्फ़ नाम की लक्ष्मी है। समाज उसके नाम को सुनकर उसका उपहास न उड़ाए इसीलिए वह अपना वास्तविक नाम लोगों से छुपाती थी। भक्तिन को यह नाम लेखिका ने दिया। उसके गले में कंठी-माला व मुँड़े हुए सिर से वह भक्तिन ही लग रही थी। उसमें सेवा-भावना व कर्तव्यपरायणता को देखकर ही लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रखा। **(3x2=6)**

(2) बाजार का जादू इंसान के अंदर आंखों के रास्ते प्रवेश करता है। जब व्यक्ति बाजार में जाता है तो वह बाजार में बहुत ही करीने से सजी हुई वस्तुओं को देखकर आकर्षित होता है और फिर उन सभी वस्तुओं को खरीदने के लिए उसके मन में तीव्र इच्छा होने लगती है।

इसके बाद वह जरूरी वस्तुओं के साथ गैर जरूरी वस्तुओं को भी खरीदने लगता है। उस वक्त उन वस्तुओं को खरीदने में उसे एक आत्मिक संतोष महसूस होता है। घर आने के पश्चात उसे महसूस होता है कि उसने बाजार से आकर्षित होकर कई सारी गैर जरूरी वस्तुएं खरीद ली है जो उसके किसी काम की नहीं है। और फिर उसे इस बात पर पछतावा होने लगता है।

(3) वर्षा न होने पर इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है। इसका कारण यह है कि भारतीय जनमानस में गंगा, नदी को विशेष मान-सम्मान प्राप्त है। हर शुभ कार्य में गंगाजल का प्रयोग होता है। उसे 'माँ' का दर्जा मिला है। भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का बहुत महत्त्व है। देश के लगभग सभी प्रमुख बड़े नगर नदियों के किनारे बसे हुए हैं। इन्हीं के किनारे सभ्यता का विकास हुआ। अधिकतर धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र भी

नदी-तट पर ही विकसित हुए हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी, बनारस, आगरा आदि शहर नदियों के तट पर बसे हैं। धर्म से भी नदियों का प्रत्यक्ष संबंध है। नदियों के किनारों पर मेले लगते हैं। नदियों को मोक्षदायिनी माना जाता है।

प्रश्न 13. (1) महामारी के वक्त भुखमरी , गरीबी और सही उपचार न मिलने के कारण लोग रोज मर रहे थे। घर के घर खाली हो रहे थे और लोगों का मनोबल दिन प्रतिदिन टूटता जा रहा था।ऐसे में लुट्टन सिंह की ढोलक की आवाज निराश , हताश , कमजोर और अपनों को खो चुके लोगों में संजीवनी भरने का काम करती थी। पहलवान की ढोलक की आवाज ही लोगों को उनके जिंदा होने का एहसास दिलाती थी। **(2x2=4)**

अपने दोनों बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन सिंह ढोल बजाता रहा ताकि गांव वालों के मन में उत्साह का संचार होता रहे और वो अपने लोगों की मृत्यु से निराश व हताश न हो।

(2) लेखक कहता है कि आज शिरीष जैसे अवधूत नहीं रहे। जब-जब वह शिरीष को देखता है तब-तब उसके मन में 'हूक-सी' उठती है। वह कहता है कि प्रेरणादायी और आत्मविश्वास रखने वाले अब नहीं रहे। अब तो केवल देह को प्राथमिकता देने वाले लोग रह रहे हैं। उनमें आत्मविश्वास बिलकुल नहीं है। वे शरीर को महत्त्व देते हैं, मन को नहीं। इसीलिए लेखक ने शिरीष के माध्यम से वर्तमान सभ्यता का वर्णन किया है।

(3) लेखक के मत से 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। दासता की व्यापक परिभाषा है-किसी व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ है-उसे दासता में जकड़कर रखना। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

****